THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_178054
UNIVERSAL LIBRARY

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर सीरीज़

रोमाञ्चक रूसमें

लेखक—

डाक्टर सत्यनारायण

प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई

पहली बार
सितम्बर १९३९

मुद्रक—
रघुनाथ दिपाजी देसाई,
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,
६ केलेवाडी, गिरगाँव, बम्बई नं. ४

बेला, नाद्या, वान्का, निकिता
तथा अन्यान्य

सोवियत युवा-युवतियोंको—

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक वास्तवमें 'आवारेकी यूरोप-यात्रा' * का दूसरा भाग है। कहानीका सिलसिला भी उसीके आगेका है। यूरोप-यात्रा नैपल्समें समाप्त होती है और वहींसे रूस-यात्रा शुरू होती है। दोनों यात्राओंके ढंग बहुत कुछ एक-से ही हैं।

अपने देश और विशेषकर साहित्यिकोंकी यात्रा-प्रणाली याद कर मुझे भय होता है, शायद ये दोनों ही यात्रायें कुछ लोगोंको बेढंगी जँचें। फिर भी मुझे हिन्दी पाठकोंकी बढ़ती हुई रुचिपर काफी भरोसा है। इसलिए ये यात्रायें कहाँतक सफल हुई हैं इसका निर्णय हम उनके ही ऊपर छोड़ते हैं।

इस पुस्तकका नामकरण मेरे एक बड़े भाईने किया है। प्रेसमें जानेके पहले इसे आद्योपान्त देख डालनेका कष्ट भी उन्होंने उठाया है तथा इसके गीतोंका श्रेय भी उन्हींको है। किन्तु, वे नहीं चाहते कि मैं उनका नाम दूँ और न मैं ही 'कोरे कागद' पर धन्यवादके दो शब्द लिख कर उनके स्नेहका मूल्य चुकाना चाहता हूँ।

उनके अतिरिक्त श्रीयुत भागवतशरण उपाध्याय एम० ए०, एलएल० बी० को उनकी सलाहों तथा श्री धनुषधारीजी प्रभृति काशी विद्यापीठके छात्रोंको उनकी सहायताओंके लिए इस स्थलपर याद न करके मैं कृतघ्नताका दोषी नहीं बनना चाहता। मैं उन सभीका आभारी हूँ। साथ ही यह लिख देना भी आवश्यक समझता हूँ कि उनकी सहायताओंका मूल्य मेरे तुच्छ धन्य-वादसे कहीं अधिक है।

लखनऊ
अक्टूबर १९३९

सत्यनारायण

---

* यह पुस्तक पिछले साल पुस्तक-भंडार, लहेरियासरायसे निकली है।

सूची

प्रथम खण्ड

तवारिश १
पहली झलक १५
डोन कोजाक १८
लीजा ३३

द्वितीय खण्ड

बेला ६९
खोखोल प्रोफेसर ८२
सोवियट-विरोधी ९५
वान्का ११२
अपराधियोंकी शिक्षा १३१
नये जीवनकी ओर १५२

तृतीय खण्ड

वोल्गा १५९
जर्मन वोल्गा १७२
निझनी १८४

चतुर्थ खण्ड

मास्को १९५
मास्को आँसुओंसे नहीं पिघलता २०६
नाद्या २३१

पंचम खण्ड

सफाई २४७
नई दुनिया २५३
पहली मई २५८
लेनिनग्राद २७२
सफ़ेद रात्रिका संगीत २७७

" साश्का "

रोमाञ्चक रूसमें

तवारिश *

१

" तवारिश...तवारिश..."

किसी अपरिचित युवतीका कंठस्वर—

" तवारिश ! "

समुद्रका किनारा, श्मशान-घाट, आधी रात,—प्रकृतिके ऐसे तांडव-नृत्यके समय यह कैसी आवाज़ !

" तवारिश, उठो तवारिश ! "

---

* रूसी शब्द ' तवारिश ' दोस्त, भाई, मित्रके अर्थमें प्रयोग किया जाता है। साधारण समाजमें व्यवहार किये जानेवाले इस शब्दको लेनिनने अपने साथियोंको संबोधन करनेके लिए प्रचलित किया था। अँग्रेज़ीका ' कामरेड ' शब्द रूसी ' तवारिश ' का पूर्णतया द्योतक नहीं है।

इस बार उसने मेरा हाथ पकड़कर खींचा। मैं जग पड़ा। वास्तवमें एक युवती सामने खड़ी थी। उसने अपने हाथोंका सहारा दे मुझे खड़ा किया। वह क़दमें मुझसे थोड़ी छोटी थी। उसका चेहरा निकट रहनेपर भी अंधकारके कारण धुँधला दीख रहा था।

सरके बाल पतले रूमालके भीतरसे चमक जाते थे। ललाटकी बाईं ओरके बाल अब भी सँवारी हुई अवस्थामें थे। कुर्ती भी काले रंगकी थी। गला अँग्रेजी अक्षर V के रूपमें दीख रहा था। मुखका आकार गोल, आँखें बड़ी बड़ी, नाक थोड़ी चिपटी-सी दीखती थी। हाव-भावमें स्त्री-सुलभ कोमलताके साथ ही साथ साहस और बहादुरीके भाव टपक रहे थे।

" तू कौन ? " मैंने पूछा।

" तवारिश। "

" मुझे क्यों जगाया ? " मेरा स्वर रूखा हो चला।

वह मुसकराई।

" मेरी संगिनी कहाँ गई ? " चारों तरफ देखकर मैंने पूछा।

" उसे मेरे साथी सुरक्षित स्थानपर ले गये। "

" आखिर कहाँ ? "

बिना कुछ उत्तर दिये वह मुझे खींच ले चली।

" नहीं, " बाधा देते हुए मैंने कहा, " उसे छोड़कर मैं नहीं जा सकता। "

" आओ, चलो भी तो सही। "

" नहीं, नहीं, उसके बिना मै नहीं,—हरगिज़ नहीं..."

" यह क्या बच्चोंकी तरह पाँव पटक रहे हो ! " उसने गंभीर होकर कहा, " क्या यह भी भावुकता दिखलानेका समय है ? "

वह मुझे खींच ले चली।

" मुझे ले कहाँ जा रही हो ? "

" वहाँ । " उसने जहाजकी रोशनी दिखलाते हुए कहा ।

धुँधली-सी चेतना आई । वास्तवमें आज ही तो मेरा जहाज खुलनेवाला था । पर वह तो शामके ही समय खुल गया होगा !

" लेकिन वह तो मेरा जहाज नहीं," रोशनीकी ओर थोड़ा ध्यानसे देखकर मैंने कहा ।

" खैर, वहाँ तक चलो तो सही ! "

" किस लिए ? " मैं रुक गया ।

" भावुकता छोड़ो, " वह भी तन कर खड़ी हो गई और तीव्र शब्दोंमें बोली, " भावुकता ही जीवन नहीं । "

उसने मेरे कंधेपर हाथ रखा । मुझे बिजली-सी लगी । हाथ हटा देनेका साहस नहीं हुआ । उसकी भी आगेकी बातें शरारती बच्चोंको फुसलानेकी भाँति होने लगीं ।

उसके साथ चलनेके लिए मैं बाध्य हुआ ।

२

" भाई मेरे ! " रास्तेमें अपने छोटे भाईकी भाँति वह मुझे समझाने लगी, " बड़ी बेरहमीके संग्रामका ही नाम जीवन है । इस संग्राममें विश्राम नहीं, अस्त्र रखना नहीं, सन्धिकी आशा नहीं । अगर तुम मनुष्य बने रहना चाहते हो तो सोते-जागते, उठते-बैठते अहर्निशि तुम्हें जूझते ही रहना पड़ेगा । "

" लेकिन संगिनीको... "

" तुम चाहो या न चाहो, उसे छोड़ तुम्हें जीवित रहना ही पड़ेगा ।" उसने बात काटते हुए कहा, " प्रेम और आनन्द धोखा देनेवाले क्षणिक मित्र हैं; उनका एकमात्र काम हृदयको दुर्बल बना डालना है । सबसे बड़ी लड़ाई तो यहीं हुआ करती है । तुम्हें अपनी ओरसे ललकार कर

कहते रहना पड़ेगा, 'संसारकी कोई भी शक्ति हमें दुर्बल नहीं बना सकती! मैं दुर्बल नहीं बनता, नहीं बनता, हरगिज नहीं बनता!'"

मेरी आँखोंके सामने इस समय भी अँधेरा था। संसार वीरान बन चुका था। दुर्बलता, निरुत्साह और हताशाको ही मै प्रकृतिका नियम मान सकता था,—संग्रामको हरगिज नहीं। इसीलिए मैंने कहा भी—

"संग्रामसे होता ही क्या है? सबका अंत तो मृत्यु ही है!" मैं एक दीर्घ साँस लेने जा रहा था।

"यह क्यों भूल जाते हो," उसने टोका, "तुम एक धातु-विशेषके बने हो। यदि यों ही कीड़े-मकोड़ोंकी तरह मरना रहता और वही यदि उचित भी होता तो तुम अपनेको 'मनुष्य' कहलानेका अधिकारी नहीं मानते। इस नामका हक़दार तुम अपनेको समझते हो इसीलिए आओ, मृत्युसे भी एक पकड़ भिड़ जाओ! भय कैसा? तकलीफें बर्दाश्त करो, हृदयको टुकड़े टुकड़े हो जाने दो, मर्म-स्थल भिद जाने दो: पर बने रहो वही जो रहना तुम्हारा कर्तव्य है! यह क्यों भूल जाते हो कि तुम आदमी हो?

"—'आदमी' कहलानेके हक़दार संग्रामके लिए ही जीते हैं। तुम सुख और आरामके लिए नहीं बनाये गये। किसीके प्रेम-पात्र बने रहनेका मिथ्या स्वप्न देखते रहना—उसीमें भूले रहना तुम्हारा काम नहीं। तुम बनाये गये हो आदमी बने रहनेके लिए। इस अधिकारको कायम रखनेकी लड़ाईमें डटे रहना तुम्हारा स्वाभाविक लक्षण है। तुम्हारे लिए विश्राम नहीं, थकावट नहीं, पीछे हटना नहीं, हार नहीं। संग्रामका ही दूसरा नाम मनुष्य-जीवन है भाई!"

३

किलेकी घड़ीने दो बजाया। नैपल्सकी सड़कोंपर सन्नाटा था। आँधी शान्त हो चुकी थी। बिजली बहुत दूर समुद्रके उस पार क्षितिजमें चमक

रही थी। स्वयं समुद्र किसी जंगलमें छिपी झीलकी तरह मूक बन रहा था। 'बीत गया'—'बीत गया' के स्वरमें चहचहाता हुआ एक पक्षी हमारे सरसे गुजर गया। उस भयानक बवंडरके वक्त उसने शायद अपना जीवन अन्त हुआ-सा समझा था पर अब वही फिरसे नये जीवनकी ताकमें उमंग-भरी उड़ान लगाता जा रहा था।

जहाज-घाटकी रोशनीके पास पहुँचते ही मैं भी बहुत कुछ सम्हल चुका था। एक बिजलीके खम्भेके पास ही जहाज-घाटका फाटक था। वहाँ खड़े संतरियोंने हमें फाटकसे घुसते देखा। इटालियन ज़बानमें उन्होंने कुछ पूछा। तवारिशने उसका चलते चलते ही कुछ उत्तर दे दिया। हम लोग डॉक तक बेखटके आ पहुँचे।

एक धीमी रोशनीके नीचे हम जा खड़े हुए। मैंने उसके चेहरेकी ओर देखा: भरा हुआ। कंधे गोल, ललाट उन्नत। यदि उसकी आँखें उतनी बड़ी न होतीं तथा उनमें उतनी तीव्रता न रहती तो अवश्य ही उसकी गिनती विशेष सुन्दरियोंमें की जा सकती। चेहरेकी रेखाओंमें थोड़ी सख्ती थी।

"तुम हिन्दुस्तानी हो?" उसने सरसे रूमाल खोल बाल ठीक करते हुए पूछा।

"हाँ, क्यों?"

"मैं तुम्हारा इतिहास जानती हूँ।"

"सो कैसे?"

"यहाँकी अपनी पार्टीद्वारा।"

मुझे थोड़ा संतोष हुआ।

"हम यहाँ किस लिए खड़े हैं?" मैंने पूछा।

"उस जहाज़में सवार होनेके लिए।"

"वह कहाँ जायगा?"

"तुम जाना कहाँ चाहते हो?" उसने मुसकराते हुए पूछा।

" मातृ-भूमि ! पर आज न...। "

जहाजसे उतरकर एक व्यक्ति हमारे पास आया और उसने साथ चलनेका इशारा किया।

मैं अपने स्थानपर ही रुका रहा। उसने धीरे पर तीव्र शब्दोंमे कहा—

" आओ तवारिश. डरनेकी कोई बात नहीं। "

४

उन्होंने मुझे एक बड़े ही संकीर्ण स्थानमे छिपा दिया। उस स्थानको कोठरी न कह कर लोहेका बड़ा सन्दूक कहना ही अधिक उपयुक्त होगा! वहाँ तनकर खड़े होनेकी गुंजायश नहीं थी। पाँव फैलाकर लेटा भी नहीं जा सकता था। किसी तरफ उचकना भी कठिन था क्योंकि वहाँ लोहेकी कीलें निकली हुई थीं।

उस पिंजड़ेका फाटक बन्द करनेके पहले तवारिशने मुझे सूचित किया कि इटालियन मजदूर पार्टीके आदेशानुसार मैं सोवियट यूनियन भेजा जा रहा हूँ। यह इच्छा मैंने वास्तवमें कई बार प्रकट की थी पर वह ठीक इस मौकेपर सफलीभूत होगी, इसकी आशा नहीं थी। तवारिशने जाते जाते कहा—

" फैसिस्ट सिपाही जाँच करने आयँगे, इसलिए तुम्हे छिपाना पड़ रहा है। "

बिना जायज पासपोर्टके सफर करनेवालोंके सामने बहुत तरहकी दिक्कतें आया करती हैं, यह मैं जानता था। इसीलिए उसकी बातोंपर मैंने विश्वास भी कर लिया।

" जहाज खुलेगा कब ? " मैंने पूछा।

" मालकी चढ़ाई खतम होते ही। "

" वह कब तक खतम होगी ? "

" सबेरा होनेके पहले ही, " जहाजकी रेलिंगसे बाहर झाँकते हुए उसने कहा, " अब अधिक देर नहीं । "

वह चली गई । दरवाजा बंद होते ही तरह तरहकी कल्पनायें मनमें आने लगीं । अपने आपसे कहने लगा, " क्या मेरे भाग्यमें सदा इसी प्रकारसे यात्रा करना बदा है ? दुनियामें हज़ारों आदमी सफर करते हैं; पर, इस प्रकार तो किसीको तकलीफ झेलनी नहीं पड़ती ! "

जहाज खुला । मैं अपने आपको बहुत देर तक उस पिंजरेमें कोसता रहा । समयका अंदाज़ लगाते हुए अनुमान किया कि धूप अवश्य ही बाहर निकल आई होगी । हमारे पिंजरेमें उस समय भी घना अंधकार था । धूप और स्वच्छ हवाकी कीमत इसी समय महसूस हो रही थी । मुझे माल्रूम पड़ रहा था मानो मेरा दम घुटा जा रहा है । अवस्था काबूके बाहर होती जा रही थी और प्रत्येक क्षण ही मूर्छा आ जानेकी नौबत आई दीखती थी ।

मैं अपनेको अचेत हो गया समझने लगा था । ठीक उसी समय दरवाजा खुला ।

५

" अब तुम स्वतंत्र हवामें साँस ले सकते हो तवारिश ! " कहते हुए उसने मुझे छिपनेके स्थानसे बाहर निकाला, " अब कोई चिन्ता नहीं ! हम लोग नैपल्सकी खाड़ी पार कर आये । अब यहाँसे ही तुम अपनेको स्वतंत्र सोवियत भूमिमें पहुँच गया समझो । "

बाहर धूप निकली हुई थी । झुंडके झुंड पक्षी स्वतंत्र हवामें चहचहाते हुए जहाजके साथ बाजी लगा कर उड़ते चले आ रहे थे ।

हम दोनों साथ ही डेकपर आये । पिंजरेकी गीली सर्दीसे बाहर निकलनेपर धूप बड़ी ही अच्छी लग रही थी । शांत समुद्रमें जहाज आगे बढ़ता जा रहा था । इटलीका किनारा अभी भी आँखोंके ओझल नहीं हो

पाया था। हम लोग किनारा दिखलाई देनेवाली ओरके रेलिंगके सहारे जा खड़े हुए।

हवा उसके 'स्कर्ट' (घाँघरे) के साथ खेलने लगी। इस समय उसने अपने बालोंको दो भागोंमें बाँट उन्हें गूँथ अपने दोनों कंधोंपर लटका रखा था। एक पाँव रेलिंगपर रख थोड़ा आगे झुक वह मुझे किनारेकी ओर दिखलाने लगी। इस झुकावके कारण उसके शरीरकी एक विशेष प्रकारकी सुन्दर लचक स्पष्ट दिखलाई देने लगी। घुमावकी गोल रेखायें बहुत नरम थीं। कंधे और छातीके बीचके कपड़े ढीले हो गये थे और उनके भीतरसे उसकी खिली जवानी झाँकने लगी थी।

उसके चेहरेसे यह भी अंदाज़ लगा कि कलका मेरा अनुमान बहुत कुछ ग़लत था। वह वैसी गंभीर प्रकृतिकी नहीं थी। प्रौढ़ विचारोंके भी चिह्न उसके चेहरेपर नहीं थे। मुखके पासकी रेखायें कल रातको शायद अन्धकारके ही कारण सख्त दीख रही थीं।

वास्तवमें उसका चेहरा चिन्तामुक्त, निष्कपट तथा पूर्णरूपसे खिला हुआ था। उस चेहरे जैसा स्वाभाविक, अछूता तथा आडंबररहित सौन्दर्य यूरोपकी सुन्दरियोंमें विरल ही दिखाई देता है। पहली दृष्टिमें वह सौन्दर्य एशियाई जान पड़ा।

उसकी आँखें किनारेपरके किसी विशेष स्थानको ढूँढ़ रही थीं।

"नेपल्स बहुत पीछे छूट गया!" पंचम स्वरकी तरह सुरीली आवाज़में उसने कहा।

मैं चुप रहा।

"आप इतने उदास क्यों हैं?" उसने मेरी आँखोंमें ताकते हुए पूछा।

"तान्या!" पासकी केबिनसे किसीने पुकारा।

उसने आवाज़ अनसुनी कर दी और मुझसे कहा, "संगिनीके छूटनेका दुःख मैं समझ सकती हूँ, लेकिन उससे अलग होनेका तुम

व्यर्थ ही अफ़सोस कर रहे हो। तुम अभी भी नवजवान हो और तुम्हें वैसी बहुत-सी संगिनियाँ मिल सकती हैं।" कहकर वह हँसने लगी।

उसकी ये बातें यूरोपीय ढंगकी थीं। उसके सौन्दर्यके एशियाई होनेमें भी मुझे संदेह होने लगा।

पासकी केबिनसे उसीकी उम्रकी एक दूसरी लड़की हम लोगोंके पास आकर कहने लगी, "तान्या! तू तो बिल्कुल भाव विभोर—"

उसका यह कहना इस ढंगका हाव-भाव दिखलाते हुए हुआ कि हँसी रोक रखना कठिन था।

"नाद्या, तुझे तो हर वक़्त थियेटर ही लगा रहता है!"

"थियेटर ही क्यों?—मैं तो उस वक़्तसे ही तुझे देख रही हूँ। तू तो बिल्कुल भाव-विभोर हो रही है! तुझे पुकारती हूँ तो सुनती तक नहीं! 'तान्या और ॲनेगिनका आलाप' किसी तरह भी समाप्त होते न देखा, तो अब मजबूर होकर टोकने आई हूँ।"

"ॲनेगिन तो तुझे भूलता ही नहीं। रोज स्टेजपर..."

"हाँ, मैं तो स्टेजपर जाती हूँ पर तू तो अभी गा रही थी,—'तुम ही मम जीवन-धन...प्राण..."

"चुप भी रह।" कहते हुए तान्या उसे मारने दौड़ी। नाद्या कुछ दूर जा खड़ी हुई और वहाँसे चिढ़ा चिढाकर गाने लगी—

"मेरे प्राण...मेरे प्राण...
तुम ही मम..."

देर तक उनका दौड़ना, चिढ़ाना, खदेड़ना चलता रहा। उनकी चपलता यूरोपीय लड़कियोंसे भी अधिक थी। अवस्था बीसके लगभग रहनेपर भी सात-आठ वर्ष जैसी वे दीख रही थीं। भारतवर्षमें तो उनकी अवस्थाकी युवतियाँ गंभीरताके कारण बूढ़ी-सी दीखती हैं। पर उनकी तो बात ही दूर रही, चपल स्वभाव दिखलानेवाली देविका रानी जैसी अभिनेत्रियोंके लिए भी इन लड़कियोंसे प्रतिद्वंदिता कर पाना असंभव था।

जहाजके कप्तानके उधरसे आ निकलनेपर दोनों रेलिंगके सहारे चुपचाप जा खड़ी हुईं। कप्ताननें नाद्याकी ओर देख मुसकराते हुए कहा—

'मैं आपको बाधा नहीं देना चाहता! आप गाना जारी रखें!'

"तुम हो मम जीवन-धन प्राण..." नाद्याने बूढ़े कप्तानकी ओर देख उसे बनाते हुए गाया।

"और मैं अँनेगिनका पार्ट पूरा करूँ..." कप्ताननें मोटे स्वरमें आरंभ किया—

"क्या जाने कल फिर क्या होगा
मेरा जीवन स्वर्ण समान"

"लेकिन ऐसे गर्दभ स्वरमे तो तान्या राजी न होगी!" नाद्याने तान्याको चिढ़ाते हुए कहा।

"अब बूढ़ोंको पूछता कौन है? और वह भी सोवियत भूमिमें?—ज़माना तुम्हारा है!" कहता और मुसकराता हुआ कप्तान एक ओर चला गया।

"अगर दाढ़ी मुड़ा लीजिए तो थोड़ी पूछ हो सकती है!" कहकर नाद्या केबिनमें जा छिपी।

६

चाय पीनेके कमरेमे मैं जिस समय पहुँचा वहाँ बड़ा शोर-गुल मचा था। सेव, नींबू, रोटीके टुकड़े आदि फेंक कर एक दूसरेको मारना और ठहाका लगाना चल रहा था। उनमें अधिकांशकी पोशाक खाकी रंगकी तथा एक ही काटकी थी। यह अवश्य ही उनकी वर्दी रही होगी।

"तुम तो भाई, नवजवान हो और इसीलिए हम लोगोंके साथ तुम्हें खेलना ही पड़ेगा।" एक युवकने यह कहते हुए मेरा हाथ पकड़ कर मुझे एक कुरसीपर बैठा दिया।

"काला सागर तो अभी दूर है," एक युवतीने टोका, "पर आपने

अभी कहाँ डुबकी लगा ली जो इतने काले बन गये? " यह वाक्य रूसी भाषामें कहा गया था। मेरे पास बैठे युवकने जर्मनमें अनुवाद कर बतलाया और मेरी ओरसे वकालत की—

" इसका जवाब माँगनेके पहले तुम्हें इन्हें रूसी भाषा सिखलाना पड़ेगा। "

" और यह काम तवारिश वेरा ही अच्छी तरह कर सकती हैं। " एक दूसरी लड़कीने कहा।

" तवारिश! " पहलीने टोका, " आपसे मैं स्पष्ट कहे देती हूँ, यदि आप वास्तवमें ही रूसी भाषा सीखना चाहते हैं तो आपको सबसे पहले यहाँकी लड़कियोंसे परिचय प्राप्त करना होगा। "

" अभीसे आप दोस्ती करना आरंभ करें " मेरे बगलके युवकने कहा।

" अरे, इन्हें यह भी समझानेकी जरूरत पड़ेगी? " वेराने कहा, " ये खुद ही सीख जायँगे। अगर मैं सच कहूँ, तो मुझे सफ़ेद चमड़ेकी अपेक्षा काला ही अधिक सुन्दर मालूम पड़ता है! "

उसकी ओर देख नाद्या रूसमें खूब प्रचलित राग गुनगुनाने लगी—

" ओई चोरनिये ग्लाझा (अरी काली आँखें...) "

सब हँसने लगे।

" लेकिन तवारिश चुप क्यों हैं? " सबने मुझसे पूछा।

" क्या आपकी शादी हो चुकी है? " दूसरीने टोका।

" शादी हो जानेसे क्या होता है? " तीसरीने टोका।

" तू क्या जाने, " दूसरीने उत्तर दिया, " बोर्जुआ लोगोंके देशमें, जैसा मैंने सुना है, विवाहित पुरुष यदि अविवाहित युवतियोंकी तरफ भूलसे भी देख लेते हैं तो उन पुरुषोंका सतीत्व नष्ट हो जाता है! "

" लेकिन तवारिश तो बोर्जुआ नहीं। "

" नहीं नहीं, हमारी तरफ़ देखो! " नाद्याने लोगोंका ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा, " यह सिर्फ हमारे ही देशकी प्रथा है कि औरतें

जब अपने पतियोंसे अलग होती हैं तो बड़ी खुश रहती हैं। देखो न, हमारी कात्याने अपने पतिको एक सालसे नहीं देखा, इसीलिए वह कितनी मोटी हो गई है!"

"यह तो सच कहती हो," वेराने कहा, "पति खटमलोंकी जाति है,—दोनों बराबर खून चूसते हैं। खुदा ही हमें उनसे बचाये रखे।"

मेरी ओर देख उसने कहा, "तवारिश, शादी करनेकी भूल कभी न करना। जर्मनीमें लोग ठीक ही कहते हैं कि शादी करनेसे बढ़कर दूसरी बड़ी बेवकूफी हो नहीं सकती।"

शोर काफी मच रहा था इसलिए नाद्याने खड़े होकर कहा, 'तवारिश, तुम अभी नवजवान हो। शादी मत करना। ॲनेगिन बने रहना। नहीं तो तान्या गायगी कैसे—

"मैं चिर-विरहिन निशिदिन तड़पूँ—"

७

"यह तान्या और ॲनेगिन कौन-सी बला है जिसे आप हमेशा ढोती चलती हैं?" मैंने मास्को विश्वविद्यालयकी एक विद्यार्थिनीसे पूछा जो औरोंकी अपेक्षा गंभीर दीखती थी और अपना अधिकाश समय डेकपर किताबें पढ़ते रहनेमें बिताती थी।

"तान्या ही तो हम रूसी लोगोंकी जान है। संसारका हम सब कुछ भूल सकते हैं पर तान्या नहीं।" उसने उत्तर दिया, "संसारका सारा माधुर्य-लालित्य,—यहाँ तक कि कल्पनामें भी आप सौन्दर्यकी जिस सीमापर पहुँच सकते हैं उसे, यदि रूसी लोगोंके सामने व्यक्त करना चाहें तो केवल 'तान्या' कह देना पर्याप्त है।"

"यह है हमारे साहित्यका सबसे चमकता हुआ हीरा। हमारे सर्वश्रेष्ठ कवि पुश्किनने अपनी इस कृतिमें हमारे समाजको अमर कर दिया है। यह हमारा सामाजिक इतिहास है। इतना ही नहीं, मनुष्यके भाव कितने

ऊँचे उठ सकते हैं, यह उसने इस यात्रीके साकार रूपमें रख दिया है। अगर आप हम रूसी लोगोंकी मनोभावना जानना चाहते हों,—हमारा इतिहास, हमारी सभ्यता तथा हमारी संस्कृतिका अध्ययन करना चाहते हों,—एक शब्दमें यदि आप हमें पूरा पूरा जानना चाहते हों तो पुश्किनका 'अनेगिन', जिसका नाम वास्तवमें 'तान्या' होना चाहिए, पढ़िए। यह है हमारे रूसी साहित्यका विश्वकोष।"

वह इतना कहते कहते अपनेको नहीं रोक सकी। उस ग्रंथकी नायिका तान्याके मुखसे निकले गाने गाकर सुनाने लगी और अंतमें समूचा ग्रंथ ही सुना डाला।

यह लगभग सात हज़ार पंक्तियोंका एक पद्य-उपन्यास है। अनेगिन शहरका रहनेवाला था पर अपने चाचाकी बीमारीके कारण एक गाँवमें निवास करने आया था। वहीं ज़मींदारकी बड़ी लड़की तान्यासे उसका परिचय हुआ।

तान्या भोली-भाली देहाती लड़की थी। वह अनेगिनके प्रति आकर्षित हुई। अपने भाव एक पत्रमें व्यक्त कर उसने उसके पास भेजे। अनेगिनने उत्तर नहीं दिया। उल्टे एक दिन साक्षात होनेपर उसने तान्यासे कहा, "अपना हृदय किसीके सामने खोलना मूर्खता है। मैं विवाहके झंझटोंमें फँसना नहीं चाहता।"

तान्या दिल मसोस कर रह गई।

अनेगिन मन ही मन इस सिद्धान्तपर विश्वास रखता था कि जितना ही कम हम औरतोंको प्यार करते हैं, वे उतनी ही अधिक हमारे प्रति आकर्षित होती हैं।

अनेक वर्ष बाद एक दिन सेण्ट पिटर्सबर्गमें तान्याकी पुनः अनेगिनसे मुलाकात होती है। तान्याका इस बीच एक अफ़सरसे विवाह हो चुका होता है। इस बार अनेगिन तान्याके प्रति आकर्षित होता है और कई प्रेम-पत्र लिखता है।—कोई उत्तर नहीं। एक दिन चार आँखें होनेपर वह स्पष्ट कहती है—

" मैं अपनेको तुम्हें अर्पण नहीं कर सकती। मैं तुम्हें प्यार करती थी और अब भी करती हूँ,—पर मेरा विवाह हो चुका है। मैं अपने पतिके प्रति सच्ची रहूँगी। "

दोनोंके ही मनमें उठता है—

" हमारा सौभाग्य कितना निकट और सभव था; पर...आह..."

लेखक अपने पात्र-पात्रियोंसे विदा लेता है।

कहानी समाप्त करनेपर उस विद्यार्थिनीने कहा—

" रूसी भाषाके सिवा और किसी भाषामें भी इतने साधारणसे विषय-पर ऐसा महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखा जाना संभव नहीं हो सकता। आप इसे प्रत्येक भावुक रूस निवासीकी ज़बानपर पायेंगे। "

" मेरी बरबादी ही सही। "

डेकपरसे तान्याका गाना सुनाई दे रहा था।

" देखिए! " विद्यार्थिनीने कहा, " यह तान्याका ख़त है। "

देखते देखते उसे रोमांच हो आया।

८

आमोद-प्रमोदके साथ ही साथ उस जहाजमें राजनीतिक शिक्षाका भी समुचित प्रबंध था। एक बड़ी-सी केबिनको लोग 'लेनिनका कोना' अथवा 'लाल कोना' कहा करते थे। उसमें चारों तरफकी दीवारोंपर मार्क्स, ऐंगेल्स, लेनिन, स्टालिन, वोरोशिलोव, बुदयोनी आदि प्रख्यात लोगोंके चित्र टँगे थे। मेज़पर समाचार-पत्र और मासिक-पत्रिकायें रखी थीं। आलमारियाँ नाना भाषाओंकी किताबोंसे भरी थीं। रेडियोद्वारा प्राप्त हुए संसारके मुख्य समाचार टाइप कर उस कमरेमें टाँग दिये जाते थे।

कभी कभी उस केबिनमें बाजा-क्लास भी लगा करता। जो अर्धशिक्षित थे उन्हें शिक्षित बनानेका भार जहाजके ही कुछ कर्मचारियोंने ले रखा था।

मेरा भी रूसी भाषा सीखनेका क्लास उसी केबिनमें आरंभ हुआ। समय

बहुत आरामके साथ कटने लगा। खेल-कूद, हँसी-मज़ाकके लिए साथियोंकी कमी नहीं थी। निश्चिन्त और आरामकी यात्रा मेरे लिए यह जीवनमें पहली ही थी।

९

"जेमली! जेमली!" (जमीन! ज़मीन!) हठात एक दिन बड़े तड़के नींद टूटते ही चारों तरफसे आवाज़ सुनाई पड़ने लगी।

जहाजके सब लोग डेकपर आ इकट्ठे हुए थे। जितनी खुशी सोवियत भूमि देख कर उस दिन हम लोगोंको हो रही थी उतनी शायद कोलंबसको भी पहले पहल अमेरिका दिखाई पड़नेपर न हुई होगी।

"दा ज्द्रास्त्व्युते सोवियत्स्की सायूज! (सोवियत यूनियन ज़िन्दाबाद!)" सब युवा-युवती एक स्वरसे तीन बार चिल्ला उठे।

बहुतेरे खुशीके मारे उछलने लगे, कितने एक दूसरेको आलिंगन कर नाचने लगे। नाद्याने इस विशेष उपलक्षके लिए पहलेसे ही एक विशेष प्रकारका नाच निर्धारित कर रखा था: वह उसे ही दिखाने लगी।

यह उमंग बड़ी देर तक रही। सब लोग अपने अपने परिवार, इष्ट मित्रोंका चित्र उस धरतीपर देखने लगे। धीरे धीरे बातूम शहर भी दिखाई देने लगा। अपने दोस्तसे किस प्रकार वे थोड़ी देर बाद लिपट जायँगे यह सोच वे कितने गद्गद होने लगे! कई अपनी उमंग न रोक सकनेके कारण जो पासमें मिला उसीसे कस कर लिपटने लगे!

१०

जहाज किनारे लगनेपर मेरा स्वागत एक दूसरे प्रकारसे हुआ। पुलिसकी वर्दी पहने चमकती हुई राइफल लटकाये एक विशालकाय व्यक्तिने मुझे अपने साथ आनेके लिए कहा।

वह मेरे आगे आगे चला। मुझे सन्देह होने लगा : कहीं मैं गिरफ्तार

तो नहीं कर लिया गया ? आँखोंके सामनेका दृश्य बिलकुल ही पलट गया। संदेह हो जानेके कारण जहाजका सब कुछ,—सारा जीवन ही एक नये रूपमें दीखने लगा।

इटलीमें रूसी खुफियाके विषयमें सुनी हुई बहुतेरी बातें याद आने लगीं। उनके विषयमें सबसे पिछली अफ़वाह यह सुनी थी कि जिन लोगोंको रूसमें मृत्यु-दण्ड दिया जाता है उन्हें और देशोंकी भाँति जल्लाद सीधे तलवारके घाट नहीं उतारते, अथवा उन्हें सामने खड़ाकर गोली नहीं मार देते, बल्कि उनके मरनेके कई दिन पहलेसे उनके पास कुछ सुन्दरियाँ रखी जाती हैं। निश्चित दिन आनेपर ये ही सुन्दरियाँ अपराधीको अनजानेमें गोली मार देती हैं।

मैं भयभीत हुआ-सा डेकपर पहुँचा। गे० पे० ऊ० (रूसी खुफिया विभाग) के एक नायक रेलिंगके पास सिगरेट पीते हुए मिले। मुझे देखकर वे खिलखिलाकर हँसे। उनकी यह हँसी बनावटी नहीं थी, यह भावना दृढ़ कर लेनेसे मैं अपनेको नहीं रोक सका।

"कहिए, कैसी समुद्र-यात्रा रही ?" कसकर शेक-हैंड करते हुए शुद्ध जर्मन भाषामें उन्होंने पूछा।

"अच्छी ही।"

"आप इतने सहमे हुए क्यों हैं? अब तो आप सोवियत भूमिमें हैं, स्वतंत्र हैं!"

मुझे उनकी बातोंपर विश्वास हुआ और कुछ मिनट पहले जिस प्रकारकी शंका हुई थी, उसकी मैं मन ही मन मखौल उड़ाने लगा।

हम लोग कप्तानकी केबिनमें जा बैठे। इधर उधरकी बातें हो जानेपर गे० पे० ऊ० कमांडरने कहा—

"मोप्रकी हिदायतोंके अनुसार आपको आज शामकी गाड़ीसे रोस्टो-वके लिए रवाना हो जाना चाहिए।"

"यह 'मोप्र' कौन है ?"

" यह है सोवियत यूनियन स्थित विदेशी क्रान्तिकारियोंकी सहायता करनेवाली संस्था। उसीके प्रयत्नसे आप यहाँ पहुँच सके हैं। इसीलिए हम भी आपको अपना समझते हैं। यदि विदेशीकी हैसियतसे आते तो फिर हम आपको यों ही यहाँ नहीं उतरने देते। उस हालतमें आपकी बहुत जाँच-पड़ताल की जाती।"

" जहाजमें इनके साथ हमारा कैसा बर्ताव रहा है, इससे तो ये स्वयं ही वाकिफ़ हैं।" जहाजके कप्तानने कहा।

इसी समय तान्याने भी केबिनमें प्रवेश किया। उसकी ओर इशारा करते हुए कप्तानने कहा, " हम लोग तुम्हारे तवारिशको तुमसे अलग कर रहे हैं तान्या! इसकी तुम्हें नाराज़गी तो नहीं?"

तान्याके चेहरेपर ललाई छाती जा रही थी। उसने धीमे स्वरमें पूछा—

" इन्हें कहाँ भेज रहे हैं?"

" रोस्टोव।"

" तब तो यह हमारे खारकोवके रास्तेमें ही है। मैं इन्हें रोस्टोव तक पहुँचा दे सकती हूँ।"

" हम बूढ़ोंपर तुम्हारा विश्वास नहीं! खैर, हमें इसमें कोई ऐतराज़ नहीं।" कहकर कमांडर और कप्तान दोनों ही हँसने लगे।

पहली झलक

१

शृंखला-रहित कतारोंमें बनाये गये मकान। अधिकांश बेमरम्मत। चूना धुलता जा रहा था, वर्षाका रंग उनपर चढ़ता जा रहा था। रास्तोंके पत्थर सर ऊँचा कर झाँक रहे थे। फिटनकी जैसी गाड़ियाँ उनपर उछलती-कूदती घर्र घर्र करती चली जाती थीं; कितने रास्ते ऐसे संकीर्ण थे कि एक ही तरफसे गाड़ी निकल सकती थी।

लोगोंकी वेश-भूषा शहरके मकानों और सड़कोंके ही समान। औरत-मर्द दोनोंका ही अपना अपना निजका अलग अलग फैशन। कितनी औरतोंके स्कर्ट घाँघरे और कितनोंके स्पोर्टड्रेसका स्वरूप ले रहे थे। चेहरोंपर पाउडर-क्रीमका नामोनिशान नहीं। बाल रूखे-सूखे बिखरे हुए।

मर्दोंकी पोशाक भी विचित्र। चुस्त रंगीन पाजामेपर तीन-कलिया ओछा कुर्ता।—बटनके स्थानपर कसीदा; गलेके चारों ओर भी कसीदा और वहाँपर दिखावटी बटन। पाँवोंमें ऊँचे ऊँचे बूट-जूते। सरपर चार-छह अंगुलकी कसीदेदार टोपी।

लोगोंका रंग-रूप सिंध प्रदेशके मुसलमानोंसे मिलता-जुलता। डील डौल भी बहुत कुछ वैसा ही। फर्क केवल इतना कि इनके चेहरे मुसल-मानोंके चेहरेकी अपेक्षा कहीं कम मुहर्रमी थे।

यह था बातूम शहर; मेरे लिए सोवियत भूमिकी पहली झलक।

इटलीमें सुन रखा था कि कौम्युनिस्टोंके आधिपत्य होनेके बादसे

सोवियत भूमिके लोग हँसना ही भूल गये हैं; पर यहाँ सबके सब अपने रंगमें मस्त,—ठहाके लगाते, जोरोंसे बातें करते और झूमते झामते चलनेवालोंकी ही बहुतायत दिखाई पड़ती। उनकी चाल ही ऐसी स्वाभाविक मस्तानी थी कि किसी भी प्रकारकी सरकारके लिए उसे बदल देना असंभव था।

बातूम यूरोपके शहरोंसे कम पर एशियाके पुराने शहरोंसे अधिक मिलता-जुलता था। कई बार तो मुझे ऐसा भ्रम हो जाता मानो मैं एक ब एक हिन्दुस्तान पहुँचा दिया गया हूँ।

जल-पानके बाद अकेला घूमने निकला। जहाज़में कई आदमियोंने शहर घुमानेका वादा किया था, पर वह तरीक़ा मुझे पसंद नहीं आया। सबसे अच्छा तरीक़ा किसी नये स्थानसे परिचय प्राप्त करनेका मुझे यह दिखाई दिया कि जिधर दो आँखें जायें उधर आदमी घूमने निकल जाय और शहरमें अपने आपको खो जाने दे। यदि वहाँकी भाषा न भी जानता हो तब भी लोगोंसे इशारेसे अथवा चाहे जिस प्रकार भी हो कुछ बातचीत करनेका प्रयत्न करे। भोजन भी वहींके लोगोंका और उन्हींके साथ बैठ कर करे। ये छोटी बातें भी किसी स्थान-विशेषसे भली भाँति परिचय करा देनेमें बड़ी ही लाभदायक सिद्ध होती हैं।

२

बड़ी देर तक अपने ही तरीक़ेसे बातूमकी सड़कोंपर भटकता रहा। लोगोंकी नई ज़बान मेरे कानोंपर एक विशेष प्रकारका आघात किया करती पर उसका कुछ भी सारांश नहीं निकाल पाता। मेरी यूरोपीय ढंगकी और ठिकानेसे कटी हुई पोशाक देखकर ही लोग समझ लेते कि मैं विदेशी हूँ। उनका ध्यान ख़ामख़्वाह मेरी ओर आकर्षित होता। यह विदेशी होना उनकी अपेक्षा मुझे स्वयं कहीं अधिक खटक रहा था।

कमसे कम उनकी जैसी एक टोपी तो लगा लूँ, यह सोच कर मैं एक टोपीकी दुकानमें घुसा। मैंने उन्हें वह टोपी दिखलाई, पाकेटसे सोवियतमें

चलनेवाले नोट निकाल कर दिखाये और खरीदनेकी इच्छा प्रकट की; पर वे सिर्फ 'कार्तोच्की कार्तोच्की'—मालूम नहीं क्या बिना मतलबकी बात दुहराते रहे। उन्होंने मुझे टोपी नहीं दी।

कैसी विचित्र दूकानदारी है! सोचता हुआ बाहर निकल आया। एक खिड़कीमें नये ढंगकी रोटी देखी। उसे खरीदने भीतर गया। वहाँ बड़ी भीड़ लगी थी। जो नये लोग आते वे एक कतारमें पीछे खड़े हो जाया करते और अपनी बारी आनेपर एक तरहका टिकट और कुछ रूसी सिक्के देते और रोटी लेकर चले जाते।

आधे घंटे तक उसी प्रकार कतारमें खड़े रहनेके बाद मेरी भी बारी आई। मैंने सिर्फ एक तीन रूब्लका नोट दूकानदारके सामने पेश किया। उसने भी दुहराया "कार्तोच्की,—कार्तोच्की"। मैंने झुँझला कर उससे कहा, "यह कौन-सी कनचटकी तुम चाहते हो, मेरी समझमें नहीं आता।"

उसने एक टिकट दिखलाते हुए मुझसे वैसा ही काग़ज़ माँगा। मेरे पास वह नहीं था। रोटी भी मुझे नहीं मिली। निराश होकर बाहर निकल रहा था कि उसी समय एक नाटे क़दके जॉर्जियनने सामनेसे आ जर्मन भाषामें मुझे समझाकर कहा कि यहाँ आप कोई भी चीज़ बिना टिकटके नहीं खरीद सकते। रोटी, मक्खन, कपड़े, जूते आदि सभी चीज़ें टिकट दिखानेपर ही मिल सकती हैं।"

"पर ये टिकट मिलते कहाँ हैं?"

"जहाँ मज़दूर काम करते हैं वहीं। बिना टिकटके भी आप कुछ चीज़ें खरीद सकते हैं, पर वैसी दूकानें शहरमें एक या दो ही हैं।"

वे दूकानें वहाँसे दूर थीं। मुझे भूख भी ज़ोरोंकी लगती आ रही थी। उस जॉर्जियनने मेरा मतलब समझ लिया और अपने घरपर कमसे कम चाय पी लेनेके लिए कहा।

जिस घरमें हम लोगोंने प्रवेश किया उसे घर न कह एक खंडहर कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। उसी खंडहरके एक टूटे-फूटे कमरेमें

सारा परिवार रहा करता था। हम लोग एक बेंचपर बैठे। सामोवार (चाय तैयार करनेकी रूसी लोगोंकी विशेष प्रकारकी मशीन) में पानी खौल रहा था। बहुत जल्दी चाय बन गई पर चीनी नदारद। बिना किसी पशोपेशके घरवालीने कहा—

" महीनेमें हमें केवल आध सेर चीनी मिलती है, उसे बच्चे पहले दिन ही ख़तम कर देते हैं; अब तो सालोंसे हमारी आदत बिना चीनीके ही चाय पीनेकी हो गई है। "

खानेके लिए हमें जो रोटी मिली वह भी बिलकुल काली; पर भूखके कारण उसमें बहुत स्वाद आ गया था। इस रोटीका जला हुआ हिस्सा भी लोग खाते अथवा अगली बारके लिए सम्हालकर रख दिया करते।

कैसे दरिद्र परिवारके यहाँ पहुँचा,—मैं सोच रहा था। शायद वह किसी निम्न-श्रेणीके मज़दूरका घर रहा होगा। पर बातचीत, शिष्टाचार और आसपासकी किताबोंपर दृष्टि पड़नेपर यह धारणा निर्मूल-सी जान पड़ी।

" अच्छा, अब हमें स्कूल जानेकी इजाज़त दीजिए। मुझे आज पहले घंटेसे ही पढ़ाना है। " घरके मालिकने कहा। अब मुझे पता चला कि वे बातूमके एक बहुत बड़े स्कूलके प्रधान-शिक्षक हैं।

शिक्षकोंके घरमें इतनी दरिद्रता और उसे भी छिपा रखनेकी चेष्टा न की जाय! देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था।

" आप लोगोंका जीवन तो बड़ा ही कठोर होगा? " मैंने दबी ज़बानमें पूछा।

" पर यह कठोर क्यों है, हम जानते हैं। इसीलिए वह हमें महसूस ही नहीं होता। "

मास्टर साहब बहुत जल्दीमें थे फिर भी जानेके पहले मुझसे कहते गये—

" इसे आप अपना घर समझिए और रास्ता चलते यदि भूख लग आए तो फिर यहाँ आकर खा लीजिए। "

घरवालीसे पता चला कि आदमी पीछे रोज़ाना केवल तीन पाव रोटी उन्हें मिलती थी ! पर उस हालतमें भी इनका आतिथ्य-सत्कार संभव है ! यह मेरे लिए नई बात थी । उनके घरसे निकलते समय मन ही मन बार बार दुहराता रहा—

" ये लोग अवश्य ही विचित्र काँटेके आदमी हैं । "

३

शहर घूमते समय जो समस्या मेरे मनमे आने लगी थी उसीको और भी कुछ आदमियोंको हल करते पाया । होटलके भोजनालयमें दो विदेशी बैठे थे । हाव-भाव और ज़बानसे वे अमेरिकन दीखते थे । मैं उनकी बातें भली भाँति सुन पानेके लिए भूख न रहनेपर भी उनके पासकी एक खाली कुरसीपर जा बैठा ।

" खाते क्यों नहीं आर्नोल्ड ? " एकने अपने साथीसे पूछा ।

आर्नोल्डने उत्तर दिया, " सोवियट यूनियनमें जो भोजन मजदूरोंको मिलता है उसे अमेरिकाके सुअर भी खानेसे इन्कार करेंगे । देखते नहीं इस सूप (दालके जैसी चीज़) की शक्ल ही वमन की गई जैसी दीखती है। मछलीकी आँख और सर इसमें तैर रहे हैं, किसी प्रकारकी तरकारीका नामोनिशान नहीं । यह काली रोटी तो मिट्टीसे भी बदतर है । "

" खाओ ! खाओ ! यह है मज़दूरोंका स्वर्ग ! " पहलेने ताना देते हुए कहा ।

" अरे, यहाँके काम करनेवाले मज़दूरोंसे तो हमारे यहाँके सालोंसे बेकार बैठे मज़दूर हज़ार गुना अच्छी तरह रहते हैं । यहाँ जैसा दुर्भिक्ष कहीं भी दुनियामें नहीं ! "

हम लोगोंके पास ही फटे कपड़े पहने एक रूसी मजदूर वही सूप जिसे अमेरिकनने अभी सुअरोंके भी अयोग्य साबित किया था बड़े चावसे खा रहा था । समय समयपर काली रोटीका एक बड़ा-सा टुकड़ा अपने पीले

शृंखलारहित दाँतोंसे काट लिया करता। अपने भोजनमें वह ऐसा निमग्न दीखता था कि पुकारनेपर भी वह शायद ही मुँह ऊपर उठाता; पर अमेरिकनकी बातोंसे वह वास्तवमें ही चौंक पड़ा, टूटी फूटी अँग्रेजीमें उसने अमेरिकनसे पूछा, " क्या आप सचमुच यह विश्वास करते हैं कि अमेरिकामें लोग भूखों नहीं मरते ? "

" अमेरिकाके भिखमंगे तक जो रोटी कूड़ेखानेमें फेंक देते हैं, वह भी यदि यहाँके मज़दूरोंको मयस्सर होने लगे तो वे अपना अहोभाग्य समझेंगे।" सूप देख देख पुनः नाक सिकोड़ते हुए अमेरिकनने कहा।

" आप तो सोवियत यूनियनके बड़े ही विरोधी मालूम पड़ते हैं ? " मजदूरने दुहराया।

" पहले नहीं था " अमेरिकनने उत्तर दिया—" पर यहाँ आकर हो गया। यहाँ आनेपर तो मुझे विश्वास हो गया है कि जर्मन अख़बारोंमें जो कुछ भी छपता है वह अक्षरशः सत्य है।"

" कौन-सी बातें ? " मजदूरने रोका।

" यही दुर्भिक्षका ही लीजिए।" अमेरिकनने अपनी जेबसे अखबारका एक काटा हुआ अंश निकालकर पढ़ सुनाया। उसमें लिखा था—

" सोवियत रूसमें दुर्भिक्ष पड़ा है। वहाँकी सरकारने सब बुड्ढोंको मरवा डाला और उनका गोश्त करूँ तेलमें भुनकर खानेके लिए लाल सेनाको दे दिया। स्वयं स्टालिनने अपने पुराने साथियोंको मारकर उनका गोश्त खाया। रूसी अब बर्बरताकी पराकाष्ठा...।"

" आप इस झूठकी पराकाष्ठाको भी सत्य मानते हैं ? " मजदूरने बीचमें ही रोकते हुए पूछा।

" यह तो कुछ भी नहीं ! " कहते हुए अमेरिकनने पाकेटसे अख-बारका दूसरा कतरा निकाला। मोटे अक्षरोंमें उसका शीर्षक था—

" सोवियतमें व्यभिचारकी चरम सीमा! शादीकी प्रथा सदाके लिए उठा दी गई ! औरतें और वस्तुओंकी ही भाँति सामूहिक सम्पत्ति बना

दी गई। सभ्यताका शत्रु सोवियत......"

मज़दूर शीर्षक पूरा पढ़े जानेके पहले ही उछल पड़ा—"ये अंधे हमारे यहाँके सुन्दरसे सुन्दर व्यवहारोंका भी स्वरूप ऐसे घृणित रूपमें दुनियाके सामने पेश करते हैं ? औरतें बोर्जुआ लोगोंके देशमें मज़ाककी वस्तु हैं; उनका मूल्य खरीद-बेचकी वस्तुओंके समान है। हमारे यहाँ उन्हें पूरा—पुरुषोंके बराबर ही अधिकार है, वे मनुष्य समझी जाती हैं। इसीलिए अब फैसिस्टोंके पेटमें अन्न नहीं पच रहा है।"

मजदूरका गुस्सा देख अमेरिकन मुसकराने लगा। उसने कहा—"पहले पूरा सुन भी तो लीजिए !"

"क्या सुनूँ ?" मजदूरने आवेशमें आकर कहा—"आप ऊँचे हैं। आप अपनी आँखोंसे भी ज्यादा विश्वास इन अखबारोंका करते हैं। कहीं आप लोग आपसमें झूठ बोलनेकी बाज़ी लगाकर तो हमारे यहाँ नहीं आते ?"

"आप इन सब बातोंको झूठ मानते हैं ?"

"मजदूरकी उत्तेजना और भी अधिक बढ़ गई। उसने कहा—

"आप जिस अमेरिकन स्वर्गकी बातें कर रहे हैं वह मैं देख चुका हूँ।"

"अगर देखा होगा तो हमारी बातें अवश्य ही सच मानेंगे। पर हमें विश्वास नहीं होता कि आप अमेरिका..."

"जी मैं सोवियत जहाजमें कोयला झोंकता हूँ और उसी सिलसिलेमें अमेरिका गया हूँ। मैंने अपनी आँखों देखा है कि आपके स्वर्गके अस्पताल, रास्ते गली कूचे सब गरमी सुजाफ़ जैसी भयंकर बीमारियोंसे भरे हैं। इस गंदगीकी ओर आपका ध्यान पहले क्यों नहीं जाता कि आप हमारे यहाँकी गंदगी देखने निकले हैं ?"

दोनोंकी बहस बड़ी देर तक चलती रही। आखिरमें जब घूँसा चलनेकी नौबत आती दिखाई देने लगी तो दोनोंने एक तीसरे व्यक्तिको पंच माना। उस पंचने झगड़ा शांत करनेके सिलसिलेमें अमेरिकनसे

कहा, " सोवियत रूसका यदि आप वास्तविक स्वरूप देखना चाहते हैं तो आपके लिए सबसे पहले इस बातकी आवश्यकता है कि जितना कुछ भी इस भूमिके बारेमें आपने पढ़ा या सुना है उसे बिलकुल ही भुला डालिए।"

" ऐसा क्यों ? " अमेरिकनने टोका—" आप तो पूरे दार्शनिक दीखते हैं ! "

" खैर ! मेरी यही सलाह है, क्यो कि जब तक आपका हृदय वास्तवमें ही पक्षपातरहित नहीं रहेगा आप वास्तविकता नहीं पा सकते। यदि आपका दृष्टिकोण भिन्न रहा तो यहाँकी केवल स्वाभाविक बातें ही नहीं बल्कि सब चीजें आपको व्यंग-चित्रके समान दीखेंगी। और देशोंका चश्मा खोलकर पहले हमारी दृष्टिसे हमें देखें और इसके बाद ' अच्छा ' वा ' बुरा ' खिताब लगायें। "

" आप इस सूपकी शक्ल देखकर भी यही चाहते हैं कि मैं इसे बुरा न कहूँ ? " झुंझला कर अमेरिकनने कहा—" आपको अवश्य ही गे० पे० ऊ० द्वारा पकड़े जानेका भय है, नहीं तो आप इस प्रकारकी पंचायत न करते। "

" आपको जितना अमेरिकन डालर-पतियोंका भय है उतना हमें गे० पे० ऊ० का नहीं। हाथ-कंघनको आरसी क्या ? क्यों नही अमेरिकन डालरका चश्मा उतार कर एक बार हमारे देशको देखते ? "

" आपके देशमें तो यही वमन किया हुआ सूप है ! " अमेरिकनने मखौल उड़ाते हुए कहा।

" खैर ! यहाँकी बातें आपकी समझके बाहर हैं। "

पंचायतीका फैसला देनेवाला तथा झगड़नेवाला मजदूर दोनों ही मुझे अभी कुछ घंटे पहले जिस शिक्षकके घर चाय पी आया था उसीके समान विचित्र काँटेके व्यक्ति दीख रहे थे। इन लोगोंकी आँखोंमें वास्तवमें ही कुछ छिपा था जिसे ठीक ठीक समझ पाना मेरे लिए कठिन हो रहा था।

४

"यह तो जौर्जियन नहीं।" मेरे सामने बैठे सज्जनने दरवाज़ेकी ओर देखकर कहा।

"कोजाक होगी!"

"अभी खून गरम है।" पहलेने टिप्पणी की।

मैंने पीछे फिर कर देखा—तान्या थी। वह मेरे बगलमें आकर बैठ गई।

"तुम क्या वास्तविक रूसिन हो?" मैंने धीरेसे उससे पूछा।

"क्यों?"

"यों ही!"

"नहीं।"

"कोजाक?"

"हाँ।" उसने मुसकराते हुए कहा, "लेकिन तुमने पहचाना कैसे? क्या और भी कोजाक तुमने देखे हैं? एक दिनमें ही सोवियत रूसमें बसनेवाली विभिन्न जातियोंको पहचानने लग गये?"

"नहीं। औरोंकी अपेक्षा तुम्हारे बाल अधिक काले हैं, मुखका आकार भिन्न है और आँखें हमारे देशकी लड़कियोंके समान हैं।" मैंने बातें बना दीं।

"और कोई विशेषता?"

"और देखा तो नहीं, पर सुना है कि कोज़ाक-खून बहुत गरम होता है।"

उसने मेरा हाथ कसके दबाया और जोरोंसे हँस पड़ी। थोड़ा सम्हलनेपर कहा—

"मालूम नहीं कितनी शताब्दियोंसे हम कुचले जाते रहे हैं। हम

रूसी सम्राटोंके गुलाम थे। अक्टूबरकी क्रान्तिने हमें स्वतंत्र बना दिया। आज हमारी सबके साथ बराबरकी हैसियत है। क्रान्तिने स्वच्छंद रूपसे विकास करनेका हमें हक़ दिया।

"जीवनके प्रति हमारे किस प्रकारके ताजे स्वच्छ निर्मल भाव हैं, आज हम इन्हें सारे संसारको खोल कर दिखला सकते हैं। हममें कितनी छिपी हुई शक्ति थी उसे प्रकाश करनेका हमें मौका मिला है। ज़ारकी तथा दूकानदारोंकी औपनिवेशिक नीतिके कारण हमारी गिनती 'आदिम निवासियों'की श्रेणीमें की जाती थी। हमारी सभ्यता तथा संस्कृति कुचली जाती थी। आज हम बंधन-मुक्त हैं। उतने दिनोंका बँधा हुआ आवेग, उमंग हमारे भीतरसे फटा पड़ता है। तुम्हीं बतलाओ, इस प्रवाहके कारण हमारा खून नहीं तो और किसका गरम होगा?"

हमारी बातचीत धीमे शब्दोंमें हो रही थी फिर भी पास बैठे अमेरिकनोंको सुनाई दे गई। एकने यह समझकर कि हम उनकी ज़बान नहीं समझ पायँगे तान्याकी बातोंपर टीका-टिप्पणी करते हुए कहा—

"ये बातें स्टालिनकी सिखलाई हैं। अगर इस प्रकारकी ये बातें न करें, तो उसी दिन स्टालिन इन्हें सूलीपर चढ़ा दे।"

तान्याकी कानोंमें भी ये बातें पड़ीं। वह हँसने लगी। अमेरिकन कहता गया—"सच्ची बातें कहनेके लिए हजारों सच्चे निर्दोष आदमी गोलीसे भून दिये गये। इन्हें सिर्फ़ कौम्युनिस्ट प्रचारकी बातें सिखाई जाती हैं। खास कर विदेशियोंसे बातें करते समय तो इन्हें खास हिदायत रहती है कि ये केवल प्रचारकी बातें किया करें।"

"नहीं, नहीं," तान्याने उन्हें सुना कर कहा—"यह आपका भ्रम है। हमें डर किस बातका? हम तो अब फैसिस्ट भूमिमें नहीं। यह तो है हमारी स्वतंत्र सोवियत भूमि!"

"तुम्हारी भूमि? सरासर झूठ!" अमेरिकनने हाथ मेजपर पटकते

हुए कहा—" बतलाओ तो, स्टालिनने तुम्हारे लिये कौन-सी सुविधा दी है ?"

" यदि और कुछ नहीं तो इतना अवश्य है कि अपने भीतर छिपी हुई शक्तियोंके पूर्ण विकास करनेके लिए जितने प्रकारकी सुविधायें हैं वे सब हमें प्राप्त हैं; इससे बढ़ कर विकासके लिए और क्या कोई दूसरी बात हो सकती है ?"

" और खानेके लिए यह कीचड़से भी बदतर सूप दिया है !" अमेरिकनने ताना दिया।

" जी नहीं ! यह विशाल रूस, यहाँकी अगाध सम्पत्ति; छिपे हुए खजाने आदि सबके मालिक मालकिन हम हैं। सोवियत भूमिके मजदूरके नाते हम उस भूमिके कर्ता-धर्ता भाग्य-विधाता हैं। यह तो प्रचार नहीं।"

५

सन्ध्या हो चुकी थी। स्टेशन जानेका समय भी निकट आ गया था।

" आलसी ! तुम अबतक नहीं उठे !" कहते हुए तान्याने मेरी चादर खींचकर आधी स्वयं ओढ़ते हुए कहा—" उठो, अब स्टेशन चलो !"

वह दोनों हाथोंसे मेरा गला पकड़ मुझे ऊपर उठानेकी कोशिश करने लगी। मैंने बाधा डाली। वह स्वयं अपना मुँह बिलकुल निकट ला मेरे कानमें कहने लगी, " तुम्हें मालूम है, मुझे सीधे खारकोव जाना पड़ेगा। कल सुबह तुम रोस्टोव पहुँच जाओगे। वहीं तुमसे विदाई..."

" रोस्टोव ही क्यों नहीं उतर जातीं ?"

" पार्टीका हुक्म है। वहाँ मुझे आवारोंके स्कूलमें परसोंसे ही काम शुरू कर देना है।"

" आवारोंका कैसा स्कूल ?"

" तुम्हें मालूम नहीं, सोवियत सरकार मनुष्योंकी बड़ी कदर करती है।

यदि कोई व्यक्तिविशेष समाज-विरोधी भाव रखता है अथवा अपने कार्योंद्वारा समाजको हानि पहुँचाता है तो भी यहाँ उसे जेल भेजकर यंत्रणा नहीं दी जाती। जेलोंमें बन्द रखने अथवा यंत्रणा देनेसे वे व्यक्ति खराब हो जाते हैं। हमारी चेष्टा यह होती है कि हम उन्हें शिक्षित करें और उन्हें फिरसे समाजके लिए उपयोगी बनायें।"

"पर क्या वे कभी सुधरते भी हैं?"

"क्यों नहीं, इसीके लिए तो हमारा स्कूल है। हम उन्हें पग पगपर 'तुम कुत्ते हो! तुम बुरे हो!' कहकर ठुकराते नहीं; उनकी आत्म-ग्लानि बढ़ाते नहीं बल्कि उन्हें यह कहते हैं कि 'तुम भी आदमी हो और तुम्हारी शक्तियोंकी भी मजदूर-समाजको आवश्यकता है।' एक बार अच्छे रास्तेपर आ जानेपर ये लोग गजबका काम करते हैं। बिना उन्हें एक बार अपनी आँखों देखे तुम्हें उनके विषयमें पूरी वाकफियत देना असम्भव है।"

"फिर मैं भी तुम्हारे साथ ही खारकोव चला चलूँ।"

"यह अपनी मर्जीसे कैसे? गे० पे० ऊ० से इसके लिए अनुमति लेनी होगी। उन्हीं लोगोंके संरक्षणमें वह स्कूल चलता है और उसकी पूरी जिम्मेवारी भी उन्हींपर है।"

"तब तुम्हारे स्कूलमें भर्ती होनेके लिए आवारा बन कर आऊँगा। उस हालतमें तो तुम मुझे नहीं रोक सकोगी!"

"चलो, छत पर जायँ! अभी गाड़ीमें देर है।" उसने हँसते हुए हाथ पकड़कर मुझे खड़ा कर दिया।

६

तारे जगमगाने लगे थे। एक एकमें हजारों हीरोंकी ज्योति थी। होटलके गोल गुम्बजपर हँसिये, हथौड़े और सोवियत तारेसे युक्त लाल

झंडा फहरा रहा था। वह बहुत ऊँचेपर बँधा था फिर भी उसके फरफरानेकी आवाज़ हमें सुनाई दे रही थी।

"कितनी सुन्दर संध्या है!" मेरे मुँहसे निकल पड़ा।

"बड़ी रोमांचक, क्यों?" कह कर वह हँसी और मेरे सरके बालोंके साथ खेलने लगी।

"तू हँसी क्यों?"

"जो हमारी मातृ-भूमिसे परिचित नहीं वह इस संध्याके सौन्दर्यको नहीं समझ सकता!"

"ऐसा क्यों? ऐसी संध्या तो ससारके हर देशमें देखनेको मिलती होगी!"

"उससे क्या! बोर्जुआ समाज उसका स्वरूप बहुत ही संकुचित बना देता है।"

"यह क्यों कर?"

"यह तो मैंने बोर्जुआ देशोंमे देखा है। ऐसी संध्याके समय वे अपना प्रेम-स्रोत चाहे वह सूखा ही क्यों न हो उड़ेलनेकी कोशिश करते हैं। उसमें कृत्रिमता रहती है, आडंबर रहता है, वह हास्यास्पद दीखता है। हम सोवियत-वासियोंको यह सन्ध्या जागृतिका पाठ पढ़ाती है। हरएक मजदूरको उसे इतिहासने जो कर्तव्य पूरा करनेके लिए बनाया है उसका पाठ सिखाती है, क्रान्तिकारी कार्योंकी याद दिलाती है, उसे मजदूर और सच्चा मनुष्य बननेके लिए प्रेरित करती रहती है। हमारा प्रेम अफ़ीमके नशे जैसा अकर्मण्य नहीं बनाता बल्कि कर्तव्यकी ओर आगे बढ़ाता जाता है।

"इसके सिवा यह भी तो खयाल करो—सिर्फ़ अपने अकेलेकी चिन्ता करते रहना कितना स्वार्थपर, ज़हरीला, घृणास्पद मालूम होता है। एक प्रेमी प्रेमिकामें खटपट हो गई तो वे अपने साथ ही साथ सारे संसार-को ही जहन्नुममें घसीटते जाना चाहते हैं।

"जरा इसकी तुलना हमारे आनन्दसे तो करो! हम क्रान्तिद्वारा, अपने कार्योंद्वारा सारे मनुष्य-समाजका दुख दूर करना चाहते हैं। सोवियत यूनियनमें रहते समय तो हम अपनेको कभी अकेला पाते ही नहीं। मनुष्य-समाजका दुख दूर करनेवाले महान यंत्रके हम भी एक पुर्जे हैं। मैं रोस्टोवके एक लोहेके कारखानेमें काम करती थी। मुझे काम सिखलानेवाले मास्टर अकसर कहा करते—'जानती हो तान्या! तुम्हारे हाथका तैयार किया हुआ एक एक यंत्र मनुष्य-समाजकी गुलामीकी जंजीर काटनेमें तेजसे तेज हथियारका काम करेगा। दूसरे देशके मजदूरोंसे उनके ही पाँवोमें बेड़ियाँ डालनेके लिए उनसे जंजीरें तैयार कराई जाती हैं। हम सोवियतवासी उन्हीं जंजीरोंके काटनेके अस्त्र बनाते हैं।'

"विदेश घूमनेके बाद मास्टर साहबका कथन मैं अक्षर अक्षर सत्य पा रही हूँ।"

७

हम लोग नरम बिस्तरा लगे डब्बेमें सवार हुए। उसमें सिर्फ दोकी ही जगह थी। थोड़ा अँधेरा हो जानेपर गाड़ी खुली। तान्याने डब्बेकी रोशनी बुझा दी और मुझे सो जानेके लिए कहा।

वह स्वयं खिड़कीके पास जा खड़ी हुई और बाहर झाँकने लगी। उसके चेहरेसे यह स्पष्ट झलक जाता था कि उसके भीतर द्वन्द्व चल रहा है। इस प्रकारका द्वन्द्व उसके भीतर भी आरम्भ हो सकता है शायद इसपर भी उसका विश्वास नहीं हो रहा था।

मैं चुपचाप जाकर उसकी बगलमें खड़ा हो गया। उसने मेरे कंधेपर हाथ रखा। जहाज-घाटकी रोशनी दिखाई दे रही थी। कोई बात अधूरी रह गई हो और वह उसे पूरा करना चाहती हो उस भाँति उसने कहा—

"हमारा परिचय बड़े ही रोमांचक ढँगसे हुआ है! अच्छा था यदि वह इस मौकेपर नहीं होता। 'रोमांच' के पीछे मैं बहुत समय नष्ट

कर चुकी हूँ। अब पार्टीका हुक्म है कि मैं अपनी सारी शक्ति उस स्कूलके काममें लगाऊँ।"

वह देरतक अँधेरेमें देखती रही। इंजिनके कोयलोंकी चपेट असह्य हो जानेपर रूमालसे अपना चेहरा पोछ कहने लगी—

"लेकिन 'रोमांच' भी तो जीवनका अंग है, उसे छोड़कर कैसे रहा जा सकता है? उससे कभी कभी ताकत भी तो मिलती है?"

मेरी ओरसे कोई उत्तर न पा वह चुप रही।

"छोड़ो! जाने दो इन बातोंको—" कह हम लोगोंने सोनेका प्रयत्न किया।

नींद नहीं आई। बड़ी देर तक करवटें बदलते रहे। आधी रातको उठकर उसने मुझे चादर उढ़ा दी, शायद वह नीचे जा रही थी।

भली भाँति सबेरा न हो पाया था उसी समय मैंने पूछा—

"रोस्टोव अभी दूर है?"

"नहीं, अब वही आ रहा है।"

मैं झपटकर उठ बैठा। खिड़कीसे बाहर झाँककर देखा—स्टेशनपरका सिगनल दिखाई दे रहा था। तान्या भी उठी। उसने धीरेसे मेरे दोनों हाथ अपने हाथोंमें ले लिये और कसकर दबाते हुए कहा—

"खारकोवसे मैं तुम्हें लिखूँगी।"

उसने मेरे हाथ अपने गालोंपर रखे। वे जल रहे थे। मैं काँप उठा।

किसीने डब्बेका दरवाजा खोल दिया था। हवा और भाफ़के साथ ही साथ स्नो (रूईके फाहेके समान बरफ़) ने भी भीतर रेल दिया।

डोन कोजाक

१

'इस टर्कको कहाँसे पकड़ लाये? चेहरेका रंग कैसा भद्दा है! और इसने कपड़े कैसे बेढंगे तरीकेसे पहन रखे हैं! ज़िन्दगीमें मैंने जितने टर्क, तातार, मंगोल देखे—यह तो उनमें किसीके भी समान नहीं!'

इन शब्दोंद्वारा बूढ़े कोजाक बोरोदातीने मेरा स्वागत किया।

यह बूढ़ा पन्द्रहवीं शताब्दीका आदमी था। सरके सब बाल सफ़ेद हो चुके थे। रेखाओंके धँसे रहनेके कारण चेहरेकी झुर्रियाँ बहुत दूरसे ही नजर आती थीं। निकटकी चीज़ें धुँधली दीखती थीं, इसलिए किसीको ठीकसे पहचान पानेके लिए उन्हें दो तीन कदम पीछे हटना पड़ता था। शायद बुजुर्गीके इन्हीं लक्षणोंके कारण डोन इलाकेके सब कोजाक इनकी बहुत खातिर करते थे।

ये पहले कोजाकोंके हेटमैन (सरदार) रह चुके थे। युवावस्थामें जब ये घुड़दौड़में भाग लिया करते तो हमेशा अव्वल आया करते। अपने साथियोंके घूँसोंकी मारसे इनकी नाक चिपटी हो चुकी थी और ऊपरका होंठ संगीनके वारसे कट चुका था, पर दाढ़ी-मूछ खूब बढ़े रहनेके कारण ये विशेषतायें दिखाई नहीं देती थीं। हाव-भाव बहुत ही सरल, आँखें निष्कपट तथा हँसी छोटे बच्चोंके समान हुआ करती थी। ठहाका लगाते समय उनकी आँखें अंतर्ध्यान हो जाया करतीं। मेरे पास आ

उन्होंने मेरे दोनों कंधोंको जोरसे झकझोरते हुए कहा—

" यह तो कोजाक हड्डी नहीं ? हमारी हड्डियाँ तुम्हारी ही उम्रमें घोड़ेकी सवारी करते करते लचकदार हो जाया करती हैं। तुम्हारी हड्डियाँ तो देवदार जैसी सख्त और तुनुक बन रही हैं।"

रोस्टोवसे पार्टीके सेक्रेटरी मुझे वहाँ लाये थे। उनकी ओर देख बूढ़ेने कहा, " तुम लोग अपना नाम रखते हो 'बल्शोई' (बोल्शेविक) जिसका मतलब होता है विशाल या बड़ा; पर हो तुम सबके सब लिलिपुटीयन। छिः, तुम्हें शरम नहीं आती ? "

"पढ़ने लिखनेका काम करनेवालोंका ऐसा ही शरीर रहता है दादा ! " सेक्रेटरीने कहा।

" यही पढ़ना लिखना लेकर तो तुम दुनियाको रसातलकी ओर ले जा रहे हो ! तुम्हारी जितनी किताबें कागज हैं, जितने स्कूल मदरसे हैं सब पर थूः... तुम्हारे शास्त्र दर्शन सब पर मैं थूकता हूँ। ये सब चीजें आदमीका दिमाग़ खराब कर देती हैं, पागल बना देती हैं ! ये सब बिना कामकी चीज़ें हैं। कामकी चीज़ें हैं खुला मैदान और घोड़े ! और वह हमारी बंदूक देखते हो—वह है हमारा साथी ! ये चीज़ें तुम मुझसे नहीं छीन सकते ! "

बूढ़ेको इस वक्त अपनी छिनती हुई जवानी याद आ रही थी। कुछ सुन्दर संस्मरण एक पलके लिए उसकी आँखोंके सामने बिजलीके समान नाच गये !

उसने अपनी युवावस्थाके कुछ सुन्दर वर्ष कोजाकोंके अपने निजी ढंगके प्रजातंत्रवादी कैंपमें बिताये थे। इसी लिए उस कैंपकी शिक्षाके सिवा और किसी भी प्रकारकी शिक्षा उसे पसंद नहीं थी। उस कैंपकी सबसे बड़ी विशेषता वहाँकी आज़ादी हुआ करती थी। सुबहसे आधी रात तक लोग खूब जी भर कर हल्ला मचाया करते, शराब पीते और गप्पें लड़ाया करते। ये गप्पें चंडू-खानेकी गप्पें नहीं बल्कि बहादुर कोजाकोंकी

जीवन-गाथायें रहा करतीं। हल्ला मचाते समय औरतोंकी बेइज्जती नहीं हुआ करती—उनके कैंपका यह नियम ही था कि औरतें उसके आसपासमें भी नहीं फटक सकती थीं। शराब अधिकतर यहूदी बेचा करते और उनसे जो कोजाक जितना शरीरसे मजबूत रहा करता उतनी आसानीसे छीन लिया करता। मोल तोल कहीं भी नहीं हुआ करता। जबतक कोजाकोंके पाकेटमें पैसे रहते उन्हें वे लुटाया करते और न रहनेपर जिधर दो आँखें गईं धावा बोल दिया करते।

कोजाकोंको सबसे ज्यादा पसंद आनेवाली बात कई हजार घोड़ोंकी दौड़ रहा करती। इसमें आगे आनेके लिए अकसर ही घूँसा-घूँसी तक हो जाया करती। हमेशा लड़ते रहना उनके लिए एक खास सिफत थी। कितने ऐसे कोजाक थे जिन्हें बिना लड़े एक दिन बितानेमें भी अपनी बेइज्जती मालूम हुआ करती।

इसी प्रकारकी लड़ाई, मुठभेड़ आदिमें कोजाकोंका शरीर मजबूत हुआ करता और उनकी युद्ध-कलाका विकास होता। बड़े बड़े युद्धोंमें भी ये कोजाक बहुत प्रवीण साबित हुआ करते, पर यह शिक्षा उन्हें मिलिटरी कैंपोंमें नहीं मिला करती। शांतिके दिनोंमे मिलिटरी ढंगपर मार्च सीखना, युद्ध-कलाका अभ्यास करना आदि बातें उन्हें बहुत ही नापसंद रहा करतीं। वे वास्तविक युद्ध-क्षेत्रमें ही इनका अभ्यास किया करते।

कोजाक कैंपमें हमेशा जाग्रत जीवन उमड़ा करता। उसी जीवनकी ओर इस समय उस बूढ़ेका मन उड़ता जा रहा था। कोजाक हमेशा केवल एक ही बातपर रो पड़ते हैं—"जवानी हमेशा ही क्यों नहीं आबाद रहती।"

अपना बूढा होना स्वीकार कर लेना उनके लिए कठिन होता है। बोरोदातीने अपने दोनों हाथोंके आस्तीन चढ़ा लिये और दो कदम आगे आकर कहा, "बहुत दिनोंपर आज लड़नेकी इच्छा हो रही है। आओ थोड़ा लड़ें।"

उसने पार्टी-सेक्रेटरीके कपार, छाती, पीठ, बगल, जिधर सुविधा

मिली उधर निशाना करते हुए प्रवीण 'बौक्सर'की भाँति घूँसे चलाना आरंभ किया। सेक्रेटरी शरीरसे दुर्बल था और घूँसे चलानेकी कलामें भी निरा अनाड़ी साबित हुआ। अपनेको बचानेकी कोशिश करनेपर भी कई घूँसे खा गया और उसके दाँतोंसे खून निकलने लगा। बूढ़ेने हुक्म दिया, "खून घोंट जाओ और थूक फेंक दो...नहीं, तुम्हें लड़ना भी नहीं आता। तुम सात जन्ममें भी कोजाकोंकी बराबरी नहीं कर सकते।"

हाँफते हुए वह फिर अपने स्थानपर जा बैठा। परिश्रम होनेके कारण पसीना निकलने लगा था। सरपर लगाई फरकी टोपी उतार उसने सामने मेजपर पटका और हुक्म दिया, "वोदका! (रूसी शराब जो बहुत ही तेज होती है) वोदका लाओ!" तुरत ही हँस पड़ा और कहने लगा,—"अब वोदकाकी वह बहार कहाँ? अब तो तुम लोगोंका जमाना है। तुम लोग मैदा, केक, गुड़ और मालूम नहीं क्या क्या बेतुकी चीजें खाया करते हो। यह कोजाकोंकी खुराक नहीं। हमारे सामने आना चाहिए एक उसनी हुई पूरी भेड़, भुना हुआ पूरा बकरा और पागलोंकी भाँति फेनसे उबलता हुआ वोदका।"

बूढ़ेको याद आया कि कैंपमें वैसे भी कोजाक थे जो रोज एक पूरा बकरा खा जाया करते और कठौता-भर शराब पीते थे। उसने मन ही मन कहा, "वे कितने अच्छे कोजाक थे!"

२

मेरे रहनेकी व्यवस्था बूढ़े बोरोदातीके ही घरमें हुई। उन्होंने विधिपूर्वक अपने यहाँ मेरा गृह-प्रवेश कराया।

"तुम्हें डोन-भूमि प्यारी है?" उन्होंने मुझसे प्रश्न किया।

"हाँ।"

"सोवियत-राज्यमें विश्वास है?"

"हाँ।"

" डोन और सोवियत राज्यके लिए खून दोगे ?"

" हमेशा ! "

" बहुत अच्छा। अब मेरे घरमें जो कोई भी कमरा तुम्हें पसंद आये उसमें तुम रह सकते हो। "

विधि समाप्त हुई। अपने घरका सबसे सुन्दर कमरा मुझे दिखानेके लिए वे मेरे साथ आये। उस कमरेमें कोई औरत झाड़ू लगा रही थी। वह हम लोगोंकी आहट पा बाहर भाग निकली। उसकी चालसे मालूम हुआ शायद वह बूढ़ेसे डरती थी। नहीं तो परदा रखनेका उसे अभ्यास नहीं था।

कमरा झोंपड़ेसे मिलता जुलता था। दीवालें रंगीन मिट्टीसे चुपड़ी थीं। उनपर तरह तरहके हथियार और खेतीके औजार टँगे थे। हथियार मध्यकालीन युग जैसे दीखते थे और कितने ही संथालोंकी कुल्हाड़ीसे मिलते जुलते थे। दूसरी दीवालपर मछली पकड़नेका जाल टंगा था। बैठनेके लिए दो तीन बेंचें इधर उधर रखी थीं जिनमें केवल एकपर कुछ कम धूल थी। शायद अकेला वही व्यवहारमें लाया जाता था। ठीक उसी बेंचके ऊपर दीवालमें एक तलवार और बहुत पुराने ढँगकी एक बंदूक लटक रही थी।

एक छोटी तिपाईपर दूसरे देशोंसे लाई गई याददाश्तकी चीजें रखी थी। उनमें टूटे हुए काँचके टुकड़े, नकशा किये हुए निकलके गिलास और तंबाकू पीनेका लंबा-सा पाइप प्रधान स्थान ले रहा था। उन चीजों पर बूढ़ेका खास ध्यान नहीं था। उनकी दृष्टि कोनेमें रखे हुए एक गिलास और नीले रंगकी बोतलपर गई। उन्हें दिखाते हुए उन्होंने कहा, "तुर्कोंके साथकी लड़ाईमें मेरे पिता इस्ताम्बूल तक गये थे, वहींसे ये चीजें लाई गई हैं। सुनता हूँ कि इस बोतलकी शराब हमारे वोदकासे भी तेज थी। शैतानके घर जायें ये टर्क ! भला कोजाकोंसे भी तेज वोदका ? "

मैंने बोतल हाथमें लेकर देखा। मामूली स्पिरिटकी बोतल थी।

" और अब तुम्हें एक अजीब-सी चीज दिखाता हूँ " कहते हुए उन्होंने हाथमें एक पुरानी दूरबीन ली—" यह देखो, नहीं, अभी नहीं, तीसरे पहर ! तीसरे पहरसे बेला अपनी खिड़कीसे अपने प्रेमियोंको बुलाना शुरू करती है। कभी कभी उसके प्रेमी उसके पास भी आते हैं। उन लोगोंको भली भाँति देख पानेके लिए मैंने एक बूढ़े तातारसे यह दूरबीन खरीद रखी है ।"

जो लड़की कमरेसे बाहर गई थी उसके गुस्सेमें पाँव पटकते हुए टल जानेकी आहट सुनाई दी।

" मैं जानता हूँ, वह जरूर बाहर खड़ी सुनती होगी। " दरवाजेकी ओर निहारते हुए बूढ़ेने कहा, " इसी लिए तो कहता हूँ कि सचाई तो तुम पढ़े लिखे लोगोंमें है ही नहीं। हृदय न हो सच्चा रहता होगा पर उसे भी तो माथा ही घोड़ेकी लगामकी तरह घुमाता है। माथेको नचाती हैं किताबें और वे ही सारी खुराफातकी जड़ हैं। उनके मारे तो सादगी और सच्चाईका नाम ही उठता जाता है। हर आदमीके दिमागमें कीड़े पड़ते जा रहे हैं...थू...! ये कीड़े बचपनसे ही डाले जाते हैं। देखो न ! बेलाका काम ही है बच्चोंको पढ़ाना—वह है मास्टरनी, फिर वह ऐसी न हुई तो दूसरा और कौन होगा ?"

" दादा, आपको बेलासे इतनी चिढ़ क्यों है ?" पार्टी-सेक्रेटरीने पूछा।

" चिढ़ न हो तो क्या हो ? हमारी कोजाक लड़कियाँ कहीं अधिक ख़ूबसूरत होती हैं—वह है खोखोल (उक्रैनवासियोंका चिढ़ानेवाला नाम), फिर भी मैंने उससे कहा—तू अब सयानी हुई, कोई कोजाक तुझे अब ढूँढ़ लेना चाहिए। बस इतना कहनेके कारण ही उसने मुझसे बोलना तक बंद कर दिया। और रोज शामको नया नया ढूँढ़ने निकलती है। थू ..! वह शैतानके घर जाय ! अब इतनी बदनामी होजाने पर उसे पूछेगा ही कौन ?"

" बहुतसे मिलेंगे ! " पार्टी-सेक्रेटरीने साहस कर टोका।

" उसमें पूछने लायक बात ही क्या है कि मिलेंगे ! दो बड़ी बड़ी काली काली शैतान-सी आँखें, न छाती है न मोटे मोटे पाँव ! और चेहरा ? पीला। आँखें ? उनका क्या पूछना है—हमेशा डबडबाई हुई ! उसे शैतान ले जाय ! और तो और, मुझे शक होता है, वह कभी कभी मर्दोंका पाजामा पहन कर बाहर निकलती है ! "

" आपको देखनेमें ग़लती हुई होगी । "

" कभी नहीं । मैं शर्तिया कह सकता हूँ वह निकीता गुस्काका नीली धारियोवाला होटल-खानसामावाला पाजामा था । उस वेशमें उसे देखकर मेरा खून गरम हो जाता है । चाहता हूँ कि जितनी जल्दी इसकी सादी हो जाय अच्छा । पर यह उसके लिए तैयार ही कहाँ है ! तुम किताबी लोगोंका तो यह ढंग ही है कि जब तक लड़कियोंके बच्चे पैदा न हो जायँ तुम लोग शादी ही नहीं करते ! थूः ... " उन्होंने इस बार वास्तवमे ही गुस्सेमें आकर थूक दिया, पर उसका बहुत बड़ा हिस्सा उनकी दाढ़ीमें अटक गया । उन्हें उसे पोछनेकी परवा नहीं थी ।

हम लोग हँसने लगे। बूढ़को यह हँसी बुरी लगी । अब वे बेला द्वारा जो कुछ भी कोजाकोंका अनिष्ट हुआ था एक एक कर गिनाने लगे—

" देखो, सबसे पहले हमारी ही बात लो। हमारी एक बहुत पुरानी सुन्दर गाय थी । बेलाने जिस दिन उसे दुहा उसके दूसरे दिनसे ही गाय बीमार । वह अब तक बीमार है । बलवानोवके घोड़ेको वह एक दिन डोनमें पानी पिलाने गई, उसी दिन शामको उस घोड़ेकी टाँग टूट गई । अब तो गाँवमें यह भी शिकायत सुना करता हूँ कि बेला डायन है और उसका जादू मर्दों तकको तबाह कर सकता है। "

" ये सब पुरानी बातें हैं दादा ! " सेक्रेटरीने कहा—" इन पर तो तुम्हें कतई विश्वास नहीं करना चाहिए ! "

" यह तो खूब कहा ! आँखसे देखकर भी विश्वास न करूँ ? वह रोज रातको डोन किनारे अंधेरेमें घंटों घूमा करती है । जिस अँधेरी

रातमें हम बूढ़े बहादुर कोजाकों तकको नदी किनारे जानेमें भय लग सकता है, उसी समय यह किनारे किनारे मालूम नहीं कहाँ जाया करती है। कभी कभी तो सबेरा होनेपर घर लौटती है। मैं तो सोचता हूँ कि बूढ़ा तातार फिर आया तो उससे अँधेरेमें भी दिखाई पड़नेवाला दूरबीन खरीदूँगा! मुझे शैतानके घर जाना पड़े यदि मैंने वैसी दूरबीन न खरीदी। फिर यहाँसे ही बैठ कर उसकी सारी करामात देखा करूँगा। उसकी करामात देखनेके लिए तुम्हें भी बुलाऊँगा।"

बूढ़ेने आखिरी बात बहुत ही चुपके चुपके कही। वहाँसे चलते चलते उन्होंने मुझे भी आधी धमकी और आधा सावधान करानेके रूपमें कहा—

"खबरदार! बेलासे खूब सावधान रहना!"

३

डोन कोजाक विदेशियोंको अपनानेके मामलेमें उदार दिल नहीं होते— यही सोचता हुआ मैं अपनी कोठरीमें लेटा था। दीवाल बहुत पतली थी। मेरी पड़ोसिनकी छोटीसे भी छोटी हलचल मुझे ज्ञात हो जाया करती। उसके करवट बदलनेकी सूचना उसकी खाट ही दे दिया करती; जिस समय वह जमीनपर सोती, उसका निःश्वास सुनाई देता। जब वह चलती फिरती तो दीवाल हिलने लगती और जिस बेंचपर मैं होता उसके साथ ही साथ मैं भी हिल जाया करता।

इतने निकट रहनेपर भी मालूम होता था मानों मैं उससे उतना ही दूर हूँ जितना मेरी खिड़कीसे आसमानके तारे। लुक छिप कर उसका चेहरा एकाध बार देख लिया था। चार आँखें होनेपर लज्जा छिपानेके लिए उसने एक बार मुझे ज्द्रास्त्व्युते (नमस्कार) भी दबी जबानसे किया था। पर अबतक हम दोनों परिचित नहीं हो पाये थे।

एक दिन सन्ध्या होनेके पहले मैंने खिड़कीसे झाँककर देखा वह एक झाड़ीके पास खड़ी बनबेरी तोड़कर खा रही थी। मैं झपटकर उसके

पासके रास्तेपरसे जाने लगा। निकट पहुँचनेपर उसे नमस्कार करना चाहा पर गला सूखने लगा। उसने मेरी हिचक समझ ली और धीरेसे कहा, "रुकिये नहीं, बूढ़ेके पास दूरबीन है। नदी किनारे मैं अभी आती हूँ।"

नदी किनारे उसका चेहरा भलीभाँति देखा। नवयुवती थी। और सब अठारह सालकी नवयुवतियोंके समान। चेहरे और काटके ऐश्वर्यकी तुलनामें दरिद्री कपड़े: पर ऐश्वर्य और दरिद्रता दोनोंके ही प्रति उदासीन।

दिलचस्पी हाथकी बनबेरियोंको एक एक कर मुँहमें डालते जानेमें। मुसकराते हुए उसने दो चार बेर मेरी ओर भी बढ़ाये। साथ ही उसके चेहरेकी लाली भी घनी होती जाती थी। हाथ आगे बढ़ाये रख उस लालीको छिपानेका उसका प्रयत्न विफल था।

सचमुच बड़ी बड़ी काली आँखें। चमड़ेका रंग नये पड़े हुए तुषार पर उगते सूर्यकी किरणोंके समान। मर्दोंके जैसी आधी बाँहवाली खुले हुए कालरकी कमीजके भीतरसे विद्रोहीके रूपमें जवानी उमड़ी पड़ती थी।

पाकेटसे एक मुट्ठी बनबेरी निकाल मेरी ओर बढ़ाते हुए उसने कहा—

"और भी लो।"

कुछ भी बोलना मेरे लिए जरूरी हो गया था।

"आप......" बात अटक गई।

"बेला।" निःसंकोच भावसे हँसते हुए उसने उत्तर दिया।

"कोजाक कन्या?"

"नहीं।"

"फिर?"

"उक्रैनकी।"

और कोई प्रश्न मेरे मुँहसे नहीं निकलता देख उसने कहा—

"अब मैं परीक्षा लूँगी। आप..."

मैं सोचने लगा।

" पहले सवालमें आप फेल। अब दूसरा। तुर्की ? "

" नहीं। "

" फारसी ? "

" वह भी नहीं। "

" उजबेक ? "

मैं मुसकराने लगा।

" इस बार मैं स्वयं फेल। अब आपसे कोई प्रश्न नहीं करूँगी। हम लोग परिचित हो गये। आप चाहे जो हों मैं 'साश्का' कह कर पुकारूँगी।

उसने हाथ बढ़ाया। हाथ मिलाये ही हम लोग आगे बढ़े।

" तुम्हें मछली पकड़ने आता है ? " उसने पूछा।

" हाँ। "

" फिर पकड़ते क्यों नहीं ? "

" कैसे ? "

" हुक लगाकर। "

" हुक कहाँ है ? "

" मेरे पास। "

" बेला ! " थोड़ी दूरीसे बूढ़ेकी आवाज़ आई। बेलाने झट अपना हाथ छुड़ा लिया और बूढ़ेकी ओर देखकर कहा, " कल मछली पकड़नेकी हम सोच रहे थे दद्दू ! तुम भी बन-बेरी खाओगे ? यह लो...। "

४

कोजाकोंके बीच रहते कई महीने बीत गये। बेला मुझे रूसी भाषामें प्रवीण बनाने लगी। सुबहको तो वह गाँवमें छोटे बच्चोंको पढ़ाया करती और तीसरे पहरका समय मेरे लिए खाली रखती। बूढ़ेने भी इसके लिए इजाजत दे रखी थी। यह भी बड़े आश्चर्यकी बात थी क्योंकि वे

बेला और किताब पढ़ना दोनोंके ही खिलाफ थे, किन्तु मुझसे पहले ही वादा भी ले लिया था कि आगे चलकर मैं सच्चा कोजाक बन जाऊँगा।

मेरी कोटरीमें पश्चिम ओरकी खिड़कीसे जिस समय थोड़ी थोड़ी धूप आने लगती उस समय मैं बेलाके कमरेमें पढ़नेके लिए जाया करता। हमारी पढाई भी कुछ निराले ही ढंगसे आरम्भ हुई। पुस्तक खुली हुई हमारे सामने रहती पर हम दोनोंका एक साथ उस ओर ध्यान बहुत ही कम जाया करता। जब कभी मैं अक्षरोंकी ओर देखता वह हमारी ओर चुपके चुपके देखा करती और जब उसका ध्यान किताबकी ओर जाता मैं उसकी ओर एकटक लगाये देखता। यदि यह चोरी कभी पकड़ जाया करती तो हम दोनों जी खोल कर हँसने लगते।

दूसरे ही दिन उसने खुलकर कहा—

"अब यह लुकाना चुराना कैसा? तुम्हारा चेहरा कुछ भयानक थोड़े ही है कि मैं उस ओर न देखूँ। जरूर देखूँगी। चलो पहले हम लोग एक दूसरेको अच्छी तरह देख लें, उसके बाद पढ़ना शुरू करें।"

उसका संकोच तो बहुत ही जल्दी टूट गया पर मैं काठकी मूर्तिकी तरह बैठा रहा। उसने बहुत तरहके खेल खेलना शुरू किया। कभी अपने गलेमें पहनी हुई गुरियोंकी माला मुझे पहनाती, कभी अपने कानका गहना खोल मेरे कानमें बाँधनेकी कोशिश करती और कभी मस्लिन चादरसे ढक कर बैठाती। ये खेल बच्चो जैसे खेले जाते।

पढ़नेका समय हम लोग बड़ी आज़ादीके साथ बिताते। बूढ़ेको ताश और वोदका देकर वह पहले ही पड़ोसियोंके घर लड़ाईकी कथायें कहनेके लिए भेज दिया करती। यदि कभी संध्याके पहले लौट भी आते तो केवल इतना कहते "अब बस करो। ज्यादा पढ़नेसे पागल हो जाओगे।"

तब तक हम लोगोंके टहलने जानेका समय हो गया होता।

बेलाके पास मुँहसे बजाई जानेवाली एक छोटी हारमोनिका थी।

वह उसे बजा कर मुझे कोजाकोंका नाच दिखाया करती। नाच-गानेका शौक उसे बचपनसे ही था और किसी भी जातिके भीतरी भावोंको नाच-द्वारा प्रकट करने अथवा किसीकी नकल उतारनेमें वह बड़ी ही प्रवीण थी। उसने अपनी कल्पना-शक्तिसे 'बरोदाती-नृत्य' 'घुड़दौड़-नृत्य' 'कोजाक-प्रेम-नृत्य' 'कोजाक विवाह-नृत्य' 'कोजाक तांडव-नृत्य' आदि कितने ही प्रकारके नृत्य निकाले थे जो वास्तवमें ही कोजाकोंका आन्तरिक जीवन प्रकट करते थे। इन नृत्योंका ताँता कभी टूटता दिखाई नहीं देता। रोज ही वह नये नये प्रकारके नृत्य निकाला करती। मेरे कोजाकोंके बीच पहुँचनेके बारेमें भी उसने एक नाच दिखाया जिसका नाम उसने 'साश्का' रखा था। दूसरा नृत्य 'साश्काकी पढ़ाई' वह तैयार करने जा रही थी। 'कोजाक साश्का' में वह मेरे चाल ढाल स्वभाव आदिकी पूरी पूरी नकल उतारनेकी चेष्टा कर रही थी।

यदि कुछ प्रकट नहीं होने देना चाहती थी तो वह था उसका अपना स्वभाव। अपने विषयमें वह कभी किसी प्रकारकी चर्चा चलने ही नहीं देती। फिर भी एक दिन मैंने उसे टोका, "और बेला-नृत्य कब दिखाओगी?"

"वह एक खास मौकेके लिए रख छोड़ा है।"

"कौन-सा मौका?"

"यह अभी नहीं बताऊँगी। तुम पहले बताओ—तुम्हारी शादी हो चुकी है?"

"पूछनेका मतलब?"

"यों ही, मुझे जाननेकी उत्सुकता है।"

"नहीं।"

"फिर यहाँ कर लो। यहाँकी बहुत-सी लड़कियाँ तुम्हें पसंद करती हैं।"

"चुप!..."

"सच कहती हूँ। कोजाक लड़कीसे शादी करनेमें तुम फायदेमें रहोगे।"

"यह कैसे ?"

"देखो, कपड़ोंके चिल्लर मारनेमें वे बड़ी प्रवीण होती हैं। कोजाक तो खास कर उसीके मारे शादी करते हैं। संसारकी कोई भी दूसरी औरत यह काम कर सकती है ? इनकी इसी कलापर मैंने एक खास नाच निकाला है जिसे किसी बड़े शहरमें दिखाया जाय तो एक दिनमें आना पावलोवा (नृत्य-कलामें सबसे प्रवीण और प्रख्यात रूसिन) की जैसी ख्याति मिल जाय।"

"ख्याति तो तुम्हे मिले और मैं बनूँ बेवकूफ ?"

"नहीं जी, तुम बेवकूफ कैसे बनोगे ? बहुत सस्ते रहोगे। दो चार तकिये, एक आध खाट, दो एक लहँगेमें ही तो तुम्हें खूबसूरत कोजाक लड़की मिल जायगी। वह भी इस प्रकारकी कि तुम उसे चाहे जितना ही क्यो न पीटो वह तुम्हें छोड़कर नही जा सकती। भला इतनी सस्ती लड़की संसारमें और कहाँ तुम्हें मिलेगी ?"

"हमें सस्ती नहीं चाहिए।"

"अच्छा ! मँहगी ही तुम्हारे लिए..." मेरी आँखोंमें देखते हुए उसने कहा, "ठीक करूँ ?"

बाहरसे बूढ़ेके खाँसनेकी आवाज़ आई। बेलाने उनके पास जाकर कहा, "दद्दू ! साश्काके लिए एक शादी ठीक करो।"

५

कोजाक समाजकी कई विशेषतायें हैं। उनका स्वभाव, रहन-सहन, चाल-ढाल समझ पानेके लिए अकसर ही पन्द्रहवीं शताब्दी तक पीछे जाना पड़ता है। उस वक्त उनके स्वभावमें जो फर्क आया वे आज तक उसे भुला नहीं सके हैं और इसकी भी कम उमीद है कि अगली कई पीढ़ियों तक वे अपनी उस विशेषताको पूर्णतया भुला डालनेमें समर्थ हो सकेंगे।

पंद्रहवीं शताब्दीके समय आघातद्वारा पक्की की हुई विशेषता आज भी कोजाकोंमें ज्योंकी त्यों वर्तमान है। उस वक़्त मंगोल लुटेरोंकी सेनाओंने दक्षिणी रूस उजाड़ दिया था। वे जहाँ भी गये गाँवके गाँव जलाते गये, क़त्लेआमका हुक्म देते गये, जितनोंको पाया गुलाम बना लिया और देश वीरान कर छोड़ने लगे।

दक्षिणी रूसवालोंको इनका सामना करना पड़ा। सदा आफ़तकी परिस्थितिने उन्हें ऐसा निर्भय बना दिया कि उनके कोषसे 'भय' शब्द ही उठा जाने लगा। दबावके कारण उनके भीतर एक नई शक्ति जागृत होने लगी। अपनी रक्षाके लिए वे बिखर कर बसने लगे, खासकर वैसे स्थानोंपर वे जा बसे जहाँ उस समयकी दृष्टिसे शत्रुओंके हमलेसे अपनेको बचानेमें सुगमता थी। उनकी सारी शक्ति अपनेको खतरेके जीवनसे बचाते चलनेमें खर्च होती थी।

पुराने शहर, गाँव, मुहल्ले-टोले टूटने लगे और उनके स्थानपर कोजाकोंके उपनिवेश बसने लगे। इन उपनिवेशोंको उन्होंने सैनिक दृष्टिसे संगठित किया और इनका नाम कुरेन (कोजाक गाँव) पड़ा। ये कुरेन हर वक्त लड़ाईका सामना करनेके लिए तैयार रहते थे। इनकी कोई स्थायी सेना नहीं होती थी। फिर भी लड़ाई या विद्रोहके समय एक हफ्तेके ही भीतर अपने बीचके सब लड़ाके जवानोंको घोड़ेकी पीठपर चढ़ा लड़ाईके मैदानमें खड़ा कर दे सकते थे। इनका संगठन वर्तमान 'रिक्रूटिंग' अफ़सरोंके संगठनसे कहीं अधिक पुख्ता था।

इस प्रकारके संगठनमें खर्चकी कोई विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती थी। प्रत्येक कोजाक अपने खर्चका आप बंदोबस्त कर लेता था। लड़ाईसे लौटनेके बाद वे फिर अपने रोजमर्रेकी खेती या व्यवसायमें लग जाते थे। परिस्थितिने ही उन्हें अपने आपके ऊपर निर्भर करनेके लिए वाध्य किया था और इसीलिए शायद ही कोई वैसा आवश्यक शिल्प होगा जिसे कोजाक न जानते हों। वे स्वयं अपनी शराब बनाते,

घोड़ा गाड़ी तैयार करते, बारूद बनाते और बंदूकें तक तैयार कर लिया करते।

वैसे शान्तिके दिनोंमें वे खूब शराब पीकर मस्त रहा करते पर ज्यों ही उनके सरदारकी डुगडुगी पिटती—“ अब पीना बंद करो, कोजाकपर मुसीबत आई है, अपनी रक्षाके लिए लड़ाईके मैदानमें आ जुटो—” शायद ही लड़ने योग्य कोई व्यक्ति अपने घरमें टिक पाता।

सबसे पहले पोलैंडके राजाओंने कोजाकोंकी शक्ति परखी और उसका अपने लाभके लिए उपयोग करनेका रास्ता सोचा। उन्होंने कोजाक सरदारोंको अपनी ओर मिलाया और उनके ही जरियेसे, उनको ही अपना हेटमैन (सैनिक अफसर, कोजाक सरदार) मुकर्रर कर कोजाकोंपर अपना कब्ज़ा रखा।

आगे चलकर रूसके जारने कोजाकोंकी बहादुरी और उनके खतरेसे न घबरानेवाले स्वभावका अपने लिए उपयोग किया। ज़ारकी सेनामें सबसे अच्छे, हमेशा फ़र्मांवरदार, विश्वासी सैनिक कोजाक ही हुआ करते थे। उन्हें जारशाहीका अस्त्र बनाये रखनेके लिए शिक्षित होनेसे रोका गया। जल्लादीका भी काम उनसे ही लिया जा सके इसलिए आदमी-यतसे जितना संभव हो सका उतना दूर उन्हें रखा गया।

कुछ दिनोंबाद कोजाक किसानोंपर जारका आर्थिक अंकुश भी फिरने लगा। दो तीन बार कोजाकोंने विद्रोह कर अपनेको जारकी हुकूमतसे स्वतंत्र बनानेकी कोशिश की, पर असफल रहे। उनके स्तेंका राजिन और पुगाचोव जैसे बहादुर नायकोंने वीरतामें कोई कसर उठा नहीं रखी पर फिर भी वे जारके सामने नहीं टिक सके। उनका सर आम चौकपर जारके सामने कुल्हाड़ेसे काटकर धड़से अलग किया गया।

रूसी क्रान्तिके पहले तक ये कोजाक जारके द्वारा बहुत अधिक सताये जाते रहे। उन्हें भी स्वतंत्र करनेवाली रूसी क्रान्ति ही हुई। आरंभमें क्रान्तिके मक़सदको न समझ सकनेके कारण कोजाक उसके खिलाफ़

लड़े। बादमें भी मजदूर सरकारके विरोधियोंने कई बार भड़काकर उन्हें विद्रोही बनाया। पर अंतमें जब वे स्वयं इस बातका अनुभव करने लगे कि क्रान्ति उनके लिए आज़ादी दिलानेकी पक्षपाती है और आर्थिक अवस्था भी सुधारनेवाली है तो वे अब मजदूर सरकारके समर्थक हो गये हैं।

पर फिर भी पुरानी पीढ़ीवाले अपने सामाजिक मामलोंमें सोवियत सरकारका किसी प्रकारका भी दखल माननेके लिए तैयार नहीं। ऐसे ही लोगोंमें हमारे बूढ़े दादा भी थे। उन्हें अभी भी कोजाकोंका साधारण अनपढ़ जीवन सबसे अधिक पसंद आता था। दैनिक जीवनमें मास्को फैशनके माननेवालोंके ये सख्त विरोधी थे।

इसी लिए जब बेलाने मज़ाकमें शादीकी बात उनके सामने छेड़ी तो उन्होंने उत्तर दिया, " यह तो बड़ी ही शरमकी बात है। इस छोकरेने तो अबतक लड़ाईका मैदान देखा नहीं और अभीसे औरतोंके बारेमें सोचने लगा—छिः छिः। भला इससे अधिक शरमकी बात और क्या होगी? यदि कोई कोजाक छोकरा हमारी पीढ़ीका होता तो यह खयाल आनेके पहले ही वह चुल्लू-भर पानीमें डूब मरता; और नहीं तो मैं ही उसका सर खीरेकी तरह काट डालता। "

वह देर तक बिगड़ते रहे। उसी दिनसे मेरा पढ़ना लिखना बंद कर दिया गया।

६

अब बेलासे मेरी मुलाकात सिर्फ मछली मारनेके समय हुआ करती। गाँवसे थोड़ा हट कर डोन किनारे एक छोटा-सा टीला था। वही हम लोगोंके मिलनेका स्थान रहा करता। वह स्थान कई दृष्टिसे हमारे लिए बड़ा ही उपयुक्त था। उधर गाँवके लोग बहुत ही कम जाया करते। उसी ओर शायद क़ब्रगाह भी था इस लिए उस ओर निगाह पड़नेपर भी लोग और खासकर बूढ़े क्रासका निशान बनाया करते।

जिस टीलेपर मैं बेलाकी प्रतीक्षा करता उसके विषयमें भी बहुत तरहकी बातें लोग किया करते। कोई कहता कि बहादुर स्तेंका राजिनके साथी कोज़ाक जिन्होंने रूसी ज़ारके खिलाफ हथियार उठाया था वहाँ गाड़े गये हैं। कोई कहता कि किसान-विद्रोहके नेता पुगाचोवके साथी कोजाकोंकी वह क़ब्र है, और किसीका कथन था कि पीटरके साथ युद्ध करनेवाले एक महान कोजाक हेटमैनकी वह समाधि है। जो भी हो, वह एक ऐसा ऐतिहासिक स्थान था, जिसके नामसे लोग भय खाया करते थे। कितने अंध-विश्वासी लोगोंने तो यह भी फैला रखा था कि सब मरे हुए क्रान्तिकारी कोजाक अब भी आधी रातके समय वहाँ अपनी सभा किया करते हैं। इसी लिए वह स्थान बिलकुल ही एकान्त रख छोड़ा गया था।

वहाँसे डोनका सौन्दर्य भी बड़ा ही अद्भुत था। चाँदनी रातमें किनारेकी हरियाली बड़ी ही मधुर मालूम देती। बालू दूधके रास्ते-सी दिखाई देती। जो घोड़े पानी पिलानेके लिए ले जाये जाते उनका हिन-हिनाना कभी कभी सुनाई देता। किनारेकी मछलियाँ अकसर ही छपछप कर छोटी मछलियोंको पकड़नेकी चेष्टा किया करतीं। गाँवके सामनेके किनारेसे बड़ा ही करुण विरही कोजाक-राग सुनाई पड़ता।

बेलासे जिस समय मिलनेका वादा होता उसके बहुत पहले ही मैं उस टीलेपर जा बैठता। बेला अपने स्कूलकी एक छोटी-सी नौका ले कर आया करती। हम लोग खेते हुए 'शैतानोंके टापू'की ओर चले जाते। घर लौटते लौटते प्रायः ही आधी रात हो जाया करती।

बूढ़े दादा बहुत पहले ही ताश और वोदका खतम कर घर आ गये होते। एक दिन उन्होंने मेरे कमरेमें आ कर कहा, "देख साश्का!" उनके चेहरेकी झुर्रियाँ बहुत गहरी हो चली थीं—"मैंने सुना है कि तुझे भी बेलाने..."

"कुछ भी नहीं बूढ़े दादा, हम मछली पकड़ने जाते हैं।"

"खबरदार !" अब उन्होंने थोड़े कर्कश और गुस्सा-भरे शब्दोंमें कहा—"लोग यह भी कहते हैं कि तुम गाँवकी लड़कियोंको भी बिगाड़ा करते हो। यह मैं वर्दाश्त नहीं कर सकता। बहुत-से हमारे पड़ोसी हैं। मैं तुम्हें लेकर किसीसे मार-काट नहीं करना चाहता—।"

"सरासर झूठ है दादा।"

"चुप रहो। पहले मेरी सुनो। अगर फिरसे शिकायत सुननेमें आई तो शामको तुम्हारा घरसे निकलना बंद कर दूँगा।"

बेलाको भी इसी प्रकारकी डाँट दी गई। वह इसकी अभ्यस्त हो चुकी थी। उसने मुझे सोचमें पड़ा देख अलग ले जाकर कहा, "बूढ़ेको बकने दो न! उसके बकनेसे हमारा घूमना थोड़े ही बंद होगा।"

लीजा

१

मुर्गेने पहली बाँग दी थी। खिड़कीसे किसीने छड़ीद्वारा खोंचते हुए मुझे जगाया—" साश्का ! साश्का ! ऐ साश्का ! "

बेलाकी आवाज़ थी। मैं झपटकर उठ बैठा।

" मछली पकड़ने नहीं चलते ? "

" अभी... "

मैं उसी खिड़कीसे कूद कर बाहर आया। आसमानमें अब भी तारे जगमगा रहे थे। उनका रंग फीका हो चला था, मालूम पड़ता था मानो किसी खलिहानमें अन्न बिखेर दिया गया हो। डोनका सारा दृश्य चाँदनीमें धुल रहा था। किसीने वैसे धुले रास्तेको पार किया होगा इसमें सन्देह था।

हम लोग अपनी आहट बचाते हुए चले जिसमें गाँवके कुत्ते न जाग पड़ें। चारों तरफ़ बिलकुल सन्नाटा था। कभी कभी केवल किसी बूढ़े कोजाकके जोरोंसे खर्राटे लेनेकी आवाज़ आ जाती थी। एक खिड़कीसे भी कानाफूसी जैसी आवाज़ आई—" बेला दीदी ! मैं भी आऊँ ? "

" कौन ? लीजा ? "

" हाँ। "

" आ न ! इसमें लगा क्या है ! "

" तुम्हारे साथ यदि पकड़ी गई तो आफत आयगी। चलो मैं पीछे

पीछे आती हूँ। नाव बिना मेरे आये न खोल देना !

बेला नावमें बैठ चुकी थी। लीजा किनारेपर खड़ी अनाड़ी जैसी कहने लगी—"कैसे आऊँ ? कपड़े गीले हो जायँगे।"

पानी बहुत कम रहनेके कारण नाव किनारे नहीं सटाई जा सकती थी। बेलाने कहा—"ठहरो, तुम्हें साश्का उठाकर रख देगा।"

"नही—" कहते हुए उसने मेरा गला दोनों हाथोंसे पकड़ लिया। मैंने उसे हलकेसे उठाया। वह धीरेसे चीख उठी—

"वहाँ नहीं ! थोड़ा और नीचे हाथ रखो।"

मैं कुछ समझ नहीं सका। वह नावके एक सिरेपर जा बैठी। कोजाकोंके बीच भी ऐसा सौन्दर्य पाया जा सकता है इसपर हठात् विश्वास नही हो रहा था। जीवनमें बनावटी पुतलियाँ बहुत देख चुका था और शायद पहली झलकमें उन्हें सौन्दर्यकी रानी भी कह उठा था, पर यह सौन्दर्य उससे कहीं बढ़ा-चढ़ा था। बनावटी निकटसे देखनेमें अच्छी नहीं लगतीं इसी लिए उनका माप मैंने गजके हिसाबसे रखा था—जैसे सौ गज, पचीस, दस, पाँच गजपरका सौन्दर्य। उतने फासलेसे निकट आ जाने पर उनका वह सौन्दर्य रह नहीं जाता था, शायद कुछ अंशमें वे भद्दी भी हो चलती थीं।

पर लीजामें यह सिफत नहीं थी। कृत्रिमता तो उसमें छूतक नहीं गई थी। उलटे उसने कपड़े बेढंग और अनाड़ी तरीकेसे पहन रखे थे—मालूम पड़ता था जैसे हीरा सूखी घासमें लपेट कर रखा गया हो।

स्वभाव भी वैसा ही सरल। बैठते न बैठते ही उसने कहा—

"कल रातको भी मुझे बड़ी मार लगी है। आज तड़के उन्हें गेहूँ बेचने शहर जाना था। इस लिए रात-भर न खुद सोये और न मुझे सोने दिया। जब जब झपकी टूटती मुझे घूँसोंसे मारा करते। जाते जाते भी छातीमें दो धौल ऐसी दी हैं कि मुझे मूर्छा-सी आ गई थी।"

उसने बिना किसी संकोचके छातीका कपड़ा हटाके दिखला दिया। जिस

जगह घूँसा लगा था उसके चारों तरफ दूर तक काला निशान हो गया था।

वह रेलवे-स्टेशनसे बहुत दूर एक कोजाक गाँवकी रहनेवाली थी। अभी तीन ही महीने हुए वलोद्या कत्ल्यारोव नामके एक ढलती जवानीके धनी कोजाकके साथ माता पिताने दो गाय और एक बंदूक पचीस कारतूसोंके साथ लेकर उसकी शादी कर दी थी।

जिस दिनसे वह कत्ल्यारोवके घर आई वह इसे पीटा करता। पीटते वक्त पेट, पीठ, छाती आदिका कुछ भी खयाल नहीं रखता। खयाल उसे सिर्फ यह रहता कि दाग बाहरसे न दिखाई दें, नहीं तो सोवियत राज्य है उसे सज़ा अवश्य हो जायगी।

लीजाका कसूर सिर्फ इतना था कि उसके एक बड़े भाईने गृह-युद्धके समय विरोधी कोजाकोंका साथ न दे सोवियत सरकारका साथ दिया था और राजीन्स्की गाँवके दो कोजाकोंको लड़ाईमें मार डाला था। कत्ल्या-रोव उस समय भी सोवियतके खिलाफ लड़ा था पर अंतमें माफी माँग लेनेके कारण छोड़ दिया गया था। अब भी यदि उसका बस चलता तो वह सोवियतको नुकसान पहुँचाता, पर उतनी शक्ति उसमें नहीं थी। इसी लिए अपना सारा गुस्सा लीजाके ऊपर उतारा करता। कभी कभी वह पीटते पीटते कहता भी—"यह लो, यह है तुम्हारे भाईके लिए! यह है दो कोजाकोंके मारनेका प्रतिशोध! और यह है सोवियत सरकारके तरफसे लड़नेका प्रतिशोध!"

लीजा जिस प्रकारके समाजमें बड़ी हुई थी उससे भिन्न कुछ सोच भी नहीं सकती थी। कत्ल्यारोव कहता—"कोजाक औरतें बिना मारे ठीक नहीं रह सकतीं, औरतोंको पीटना कोजाक-परंपरा है, भला मैं यह भंग कैसे करूँ?"

लीजा पहले इन बातोंको स्वाभाविक मानती। केवल बेलाकी संगतिमें आनेपर वह सोचने लगी थी कि वे बातें भी अस्वाभाविक हो सकती हैं। अब वह थोड़ा बहुत यह भी समझने लगी थी कि औरतोंकी भी मनुष्यकी

श्रेणीमें गिनती की जा सकती है, फिर भी पतिका पत्नीके ऊपर सब तरहका अधिकार होता है यह बात वह अपने मनसे नहीं हटा पाती थी।

बेलाने उसे यह भी सिखलाया था कि औरतोंका साधारण स्त्रीकी हैसियत रखनेके सिवा भी कुछ धर्म है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। यह 'कुछ' लीजा अभी पूरा पूरा नहीं समझ पा रही थी पर इतना अवश्य अनुभव करती थी कि उसमें स्वतंत्रता और सुखका समावेश अवश्य है। अब कभी कभी वह अपने आपसे प्रश्न भी किया करती—

"हमारे इस तनिक सुखसे संसारको इतनी जलन क्यों? क्या यह अपराध है?"

"हाँ है।" उसका कोजाक हृदय उत्तर देता और वह काँप जाती।

उस दिन नावपर भी उसके चेहरेसे झलक रहा था कि वह आज़ादीका पूरा पूरा सुख भोग पानेमें समर्थ नहीं हो रही है। अपना ही दिल उसे सहमा रहा है। वह नावपर बैठी थी। डूबनेका भय नहीं था, फिर भी वह रह रह कर काँप जाती थी। साथ ही दूसरे क्षण एक विचित्र मुसकराहट भी उसके चेहरेपर दिखाई दे जाती। यह आनन्द और भयका मिलन उसके चेहरेको और भी सरल, मधुर और सुन्दर बना दिया करता था। उसका हृदय वास्तवमें कितना सच्चा और निष्कलंक है यह शीशेकी तरह झलक रहा था।

बेला उसे पहले कई बार सलाह दे चुकी थी कि वह वैसे पतिको छोड़ दे। लीजा जिसे एक बार पति मान चुकी थी उसे छोड़नेके ख़याल मात्रसे ही काँप जाती। बेला उसे समझाया करती—

"तुम्हारी शादी तुम्हारे पिताने दो गायें और एक बंदूक लेकर कर दी है, तुम खुद कमा कर आसानीसे ये चीजें कत्ल्यारोवको लौटा दे सकती हो। रहा सवाल आगेका, सो क्रान्तिने सारे रूसके औरत-मर्द दोनोंको ही समान अधिकार दे रखा है। और तू भी अपनी योग्यतानुसार कमा कर स्वतंत्रतापूर्वक—बिना पतिपर निर्भर किये जी सकती है।"

उसने लीजाको कई बार घरसे भाग निकलनेकी भी सलाह दी थी पर उसे बहुत डर लग रहा था। डर वास्तवमें किस प्रकारका था वह स्वयं नहीं समझ पा रही थी। बेलाने उसे समझाया था, " यदि तुम्हें यह डर है कि भागनेमें सफल न हुई और पकड़ी गई तो तुम कहींकी नहीं रहोगी, तुमपर खूब मार पड़ेगी तो यह भय छोड़ दो। सबसे निकट जो सोवियत सिपाही या पार्टीका सदस्य मिले उसे सूचित करो, वह तुम्हारी रक्षा करेगा। कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा। "

बेला इस प्रकारकी सहायता करनेके लिए स्वयं कष्ट उठानेको तैयार थी, पर लीजाका डर इस प्रकारका नहीं था। उसका कोजाक-हृदय ही उसे रोकता था जिसके खिलाफ़ उसकी एक भी दलील नहीं चल पाती थी।

यही कोजाक-हृदय उसे नावपर भी सता रहा था। वह सहम कर बैठी थी। मानो अपना मुँह छिपा लेना चाहती हो। बरफ़-जमी नदीको मार्च महीनेमें अकेले चलकर पार करते समय जैसा डर लगता है वैसा लीजाको इस समय नावपर बैठे बैठे लग रहा था।

वह बड़ी देरतक चुपचाप बैठी रही। हममेंसे किसीने उसे नहीं टोका। नौकाको प्रवाहमें बढ़ते जानेके लिए छोड़ दिया था। हवा कभी कभी लीजाकी गफलतमें कपड़ हटा दिया करती और उसी क्षण उसकी छातीका घाव झलक जाया करता।

बहुत दूर निकल जानेपर वह हँसी। उस हँसीका कारण शायद उसे भी अज्ञात था।

" आज कितना सुन्दर प्रभात है—" उसने उगते सूर्यकी ओर देखकर कहा—" लेकिन क्यों......आः...बेला!..."

२

हम लोगोंके घर लौटते लौटते सूरज बहुत ऊपर उठ चुका था। डोन किनारे गाँवके अनेकों आदमी दिखाई देने लगे थे। कोई गायें चर

रहा था, कोई घोड़ोंको पानी पिला रहा था—कितनी ही औरतें कपड़ा धो रही थीं। इन सबकी दृष्टि बचाना असंभव था।

लीजाको उसके घरके सामने उतार दिया। नावसे ही हम लोगोंने देखा वह पिछवाड़ेके रास्ते भीतर चली गई।

घर जाकर देखा—बूढे दादा अपनी ही उम्रके एक दूसरे बूढ़े कोजाकके साथ बैठे वोदका पी रहे थे। इस दूसरे कोजाककी भी उम्र पचासके ऊपर रही होगी। शरीर पतला और चेहरा क्राइस्टके चेलोंके इटालियन चित्रकारो द्वारा आँके गये चित्रोंसे मिलता जुलता था। सफेद दाढ़ी छाती तक लटक रही थी। कानके पास घुँघराले बाल भी सफेद रेशम-से चमक रहे थे। ललाटके ऊपरका भाग दूरतक चिकना था। आँखोंमें बुद्धिमानी भरी थी; हाव-भाव नरम और दयालु।

हमारे पहुँचते पहुँचते दादा उनसे प्रश्न कर रहे थे—

"अच्छा, ईवान निकोलायविच! यह तो बतलाओ, १९०५ सालमें तुम कहाँ थे?"

"उस साल पिटर्सबुर्गमे था।"

"किसके रेजिमेंटमें?"

"बगदानोवके।"

"बगदानोवके?"

"वही तो कहा।"

"तब तो ९ जनवरीको जो क़त्लेआम राजप्रासादके सामने हुआ था उसमें तुम भी रहे होगे?"

"था तो! उस दिनकी कई घटनायें मुझे आजतक याद हैं। मैं उस दिन सबेरे......"

"और मैं था उस वक्त तुग्नानबायविचके रेजिमेंटमें—" दादाने टोकते हुए कहा—"था तो सिपाही लेकिन धाक रखता था कप्तान-की..."

" सबेरे हम लोग परेड करके नाश्ता करने जा रहे थे। उसी समय पगली घंटी हुई।"

" कप्तानसे कम मेरी धाक हर्गिज नहीं थी—" दादाने झुँझला कर कहा। उन्हें पहले अपनी बात कहनी थी और ईवान निकोलायविच पहले अपनी कहना चाहते थे। पगली घंटीका नाम सुन कर दादा रुक गये और गंभीर होकर पूछा, " पगली घंटी! पगली घंटी किस लिए?"

" जो लोग महलकी ओर ज़ारके पास दरख्वास्त पेश करने आ रहे थे उनपर गोली चलाने और संगीनसे उनका मांस नोच लेनेके लिए..."

" उसके ठीक दो दिन पहले मैं जापानके साथके युद्धमें घायल हो जानेके कारण ईर्कुट्स्कके अस्पतालमें भर्ती किया गया था।"

" जिस वक़्त संगीन ताने हुए हम लोग भीड़की ओर जा रहे थे एक जवान लड़का—शायद वह विद्यार्थी रहा होगा—दौड़ता हुआ हमारी ओर आया और बोला—' मत मारो! मैं भी कोजाक हूँ। मेरा घर नेवो चेरकास है। तुम रुपयेके लोभमें नौकरी करते हो, हमारी जान लेते हो—लो ये रुपये...जितने मेरे पास हैं लुटाये देता हूँ!' एक हजार रुब्लका नया कड़कड़ाता हुआ नोट वह हाथमें लिये था। उसपर ज़ारकी छपी हुई तसवीर हमें दूरसे ही दिखाई पड़ी। हमारे सेनानायकने वह नोट ले लिया और अपने ऐडजूटांटको कहा—' यह जवान ज़ारका सबसे बड़ा बागी है—उसका सर काट कर ले चलो!' दूसरे क्षण उस विद्यार्थीका सर धड़से अलग था।"

" कोजाक जवानको इस तरह मार डाला?" दादाने आँख लाल कर कहा।

" हाँ, हाँ, कोजाकको मार डाला। मैंने उसका खून देखा था। वह औरोंके बनिस्बत ज्यादा गाढ़ा और ठीक हमारे तुम्हारे जैसा था।"

" शैतान...पाजी...हराम..."

" उसी दिनसे मैं ज़ारके खिलाफ हो गया। बहुत दिन तक ज़ार

निकोलाईकी जानका प्यासा रहा पर वहाँ मुझे ड्यूटी और नहीं मिली। मैं भेज दिया गया पागलखानेमें। सात वर्ष पागलोंके बीच रह कर यहाँ आया। यहाँसे भी मैं यही बाट जोहता रहा कि ज़ारका तख्त उलटनेवाला दिन आये और मैं अपने साथियोंको हुक्म दूँ—" आगे... चलो...मारो...काटो..."

ये बातें सुन कर नींदमें ही दादा दाँत पीसने लगे और वे ही बातें अस्पष्ट शब्दोंमें दुहराने लगे।

३

दोनों बूढ़ोंकी नींद गाँवके नारद—कोश्काने तोड़ी। सारे गाँवमें यह हल्ला हो चुका था कि लीजा कत्ल्यारोवा भ्रष्ट हो चुकी है। कितनी औरतोंने इसे आँखों देखा था। इसकी वे शपथ खा सकती थीं। कितनी दावेके साथ यह कहनेको तैयार थीं कि वह जबसे शादी कर लाई गई है किसी भी रात घरपर नहीं रही। उसे दंड देनेके लिए गाँव-भरके लोगोंकी पँचायत होनेवाली थी।

" ईवान निकोलायविच ! ईवान निकोलायविच ! " कोश्काने जगाते हुए कहा—' अपनी पतोहूका हाल सुना है ? "

" उसे किसने काट डाला ? किसने ? उसे मारो ! काटो ! मत छोड़ो ! " दाँत पीसते हुए बूढ़े दादा भी जग पड़े।

" काटा नहीं, वह भगा ली गई। "

" भगा ली गई ? " ईवानने आश्चर्यमें आकर पूछा–" कौन ले गया ?"

" कोजाक औरतको भगानेवाला कहाँ जन्मा है ? " दादाने दाँत पीसते हुए कहा—" हम कोजाकोंने तुर्की, उक्रैनियन, फारसी सब तरहकी औरतोंकी लूट की है, पर हमारी औरतोंको कोई लूट ले जाय यह तो कभी नहीं सुना। बेहूदे कहींके ! तू झूठ बोलता है—तुझे शैतान ले जाय—थू...! " उन्होंने दाँत पीस कोश्काकी पीठपर एक धौल जमा दी।

कोश्का अलग हटकर जल्दी जल्दी कहने लगा—"उसे किसीने लूटा नहीं—वह खुद लुट गई! खुद भाग गई!"

"तू फिर झूठ बोलता है!" इस बार ईवान निकोलायविचने कहा—"जब वह भाग गई तो उसे तूने देखा कहाँ?"

"भाग गई माने अपने पतिको छोड़कर उसने दूसरी शादी कर ली।"

"चुप रह लुच्चे! यह भी आज तक कोजाकोंमें कहीं हुआ है?" इस बार दोनों बूढ़ोंने वास्तवमें नाराज होकर कहा।

दादा फिर मारने दौड़े। कोश्का भाग गया।

४

राजीन्सकी गाँव डोनके ठीक किनारे बसा था। इसी लिए ज़मीनमें बालूका अंश अधिक रहनेके कारण मकानोकी नीवें मजबूत नहीं थीं। थोड़ी तेज हवा चलनेपर ही मकान हिलने लगते थे।

उस दिन संध्यासे कुछ पहले जोरोंकी आँधी आई। घने बादलोंके कारण सबेरे ही गाँव अंधकारमें छिपने लगा। फेनसे भरी डोनकी लहरें किनारेपर जोरोंसे आघात करती और साथ ही हमारे मकानको भी हिला देतीं। बूढ़े घरोंमें जा बैठने लगे। बच्चे और जवान बाहर निकल नाचने और उत्सव मनाने लगे।

डोन किनारेके चौराहेपर बहुत देरसे युवा-युवती इकट्ठे हुए थे। लीजा भी उनके चारों ओर खड़े लोगोंके बीच मुँह छिपाये चुपकेसे जा खड़ी हुई। उसीके कदके एक युवकने उसे देख लिया और उसका हाथ पकड़ बीचमें खींच लाते हुए कहा—"कोजाक नृत्यके लिए मेरी तुम्हारी जो जोड़ी बनेगी—वह सारे गाँवके लिए देखने योग्य होगी।"

लीजाके बाँयें हाथमें किसीने एक रूमाल पकड़ा दिया। युवक टिहुनियाँ रोप नाचने लगा। तुरत दो कदम पीछे हट पावोंको नाचके तालमें फेंकते हुए बड़ी कलापूर्ण आकृति बना लीजाको आगे आगे नचाता स्वयं उसके

पीछे पीछे चलने लगा। लीजा नाचद्वारा शायद नदीका पार करना दिखाना चाहती थी। पानीमें प्रवेश करनेके पहले जैसी कनकनी मालूम होती है वह उसने दिखाई, फिर अपने नीचेके कपड़े गीले होनेसे बचानेके लिए ऊपर उठाये और तुरन्त ही भय छोड़ एक छलाँग दे तैरने लगनेके समान हाथ और पाँव दोनोंके चलनेकी रफ्तार खूब बढ़ा दी। बाजेवालेने भी अपनी रफ्तार उसी हिसाबसे बढ़ाई।

चारों ओरसे 'वाह वाह' होने लगी और तालियाँ पिटने लगी। लीजा बहुत देर तक नाचती रही। उसका चेहरा लाल हो आया, वह पसीने पसीने हो चली फिर भी उसने नाचना नहीं छोड़ा। उसके चेहरेपर आनन्द और मुसकराहट थी। वह उस दिन दिल खोलकर नाच रही थी।

हठात् उसकी दृष्टि भीड़को चीरते हुए आगे आनेकी चेष्टा करते हुए एक व्यक्तिपर पड़ी और वह पत्थरकी तरह खड़ी हो गई। कत्ल्यारोवने उसके बाल जोरोंसे पकड़ खींचते हुए कहा—"पापिन! डायन कहींकी! मेरे मुँहमें कालिख लगा कर यहाँ नाच रही है!"

उसे पंचायतके सामने ले जाकर खड़ा किया गया। बहुतसे बूढ़े कोजाक न्याय करनेके लिए वहाँ आ बैठे थे। बाहर जोरोंका पानी बरस रहा था और कभी कभी बिजली भी चमक जाया करती थी। एक बार ठनका बहुत जोरोंका हुआ। मालूम पड़ा जैसे सरपर ही आकर गिरेगा, लेकिन नहीं, केवल मकानको हिलाकर चला गया। लोगोंने अपने होंठ दाँतोंसे दबा रखे थे।

पंचायतके लिए बैठे लोग दो विभागोंमें बँट चुके थे। पुरानी पुश्त लीजाको पूर्णतया अपराधी करार दे रही थी और उसके लिए सज़ाकी व्यवस्था करना चाहती थी। दूसरी ओर नई पुश्त लीजाके पति कत्ल्यारोवको ही अपराधी ठहराती और उसे सज़ा दिए जानेके लिए जोर दे रही थी।

बहुत देरतक झगड़ते रहनेके बाद बूढ़ोंने अपने बीचके एक बुजुर्गको संबोधन करते हुए कहा—" सिरगे एरमिलाई! तुम ही क्यों नहीं इस

मामलेका फैसला कर देते ? तुम बूढ़े भी हो, साथ ही हमारे डाक्टर भी हो—घोड़ोंका इलाज सारे डोन इलाकेमें तुम्हारे जैसा कोई भी नहीं कर पाता। तुम बाइबिल भी पढ़ सकते हो। तुमसे बढ़कर चतुर और दुनिया-भरमें कौन हो सकता है ! "

" हमारी राय चाहते हो तो सुनो ! " घोड़ोंके डाक्टरने सबको शान्त करते हुए कहा—" हमारे कोजाक उपनिवेशका दंड-विधान इस प्रकार हुआ करता था—यदि कोई औरत अपने पतिको उसके तन्दुरुस्त और ज़िन्दा रहते छोड़ दूसरी शादी करती तो यह सारे कोजाक वंशके ऊपर कलंककी बात समझी जाती। "

" ठीक है, हम अपने वंशपर कभी कलंक नहीं लगा सकते ! " बूढ़ोंने डाक्टरको प्रोत्साहित करते हुए कहा।

" और सज़ा इस कलंकके लिए बहुत सख्त थी—" डाक्टरने कहा—" औरतको एक * खंभेसे बाँधा जाता और उसके पास ही एक चाबुक नमकमें भिगोकर रख दिया जाता। जो आदमी उस रास्तेसे निकलता उस औरतको एक चाबुक लगा दिया करता। यह तब तक जारी रखा जाता जब तक उस औरतकी मृत्यु नहीं हो जाती। "

" बहुत ठीक। "—सब बूढ़े एक साथ ही बोल उठे—" लीजाको यही सजा दी जानी चाहिए। "

" हमारे पितामहोंके जमानेमें और एक प्रकारकी सज़ा थी " डाक्टरने कहना शुरू किया " पति अपनी औरतको भगा ले जानेवालेका गला अपने हाथोंसे काटता और इसके बाद एक गढ़ा खोदा जाता। उस गढ़ेमें ज़िन्दी औरत रखी जाती और उसके ऊपर कटे हुएकी लाश। फिर उन दोनोंको मिट्टीसे ढक दिया जाता। "

---

* कोजाक लोग इस खम्भेको लज्जाका खम्भा Pillar of Shame कहते हैं।

इन दो तरहकी सज़ाओंमेंसे कौन-सी काममें लाई जाय बूढ़े इसी पशोपेशमें पड़े थे। नवजवान उनके खिलाफ़ थे। उनका कहना था कि सोवियत सरकारके रहते स्वयं इस प्रकारकी सज़ा देनेका हक कोजाकोंको नहीं है। बूढ़ोंकी यह दलील थी कि सोवियत सरकारको कोजाकोंके सामाजिक मामलोंमें दखल देनेका कोई हक़ नहीं। नवजवान कहते— यह हक़ जरूर है और न्यायाधीशके आसनपर रोस्टोवमें बैठनेवाले कोजाकके पास मामला जाना चाहिए।

डाक्टरने देखा कि नवजवानोंकी आवाज़ बुलंद होती जा रही है। मार-पीट हो जानेकी भी तैयारी हो रही थी। यदि हाथ छूटने लगते तो बूढ़े बुरी तरह पिट जाते। उनमें भी सबसे अधिक मार डाक्टरपर पड़ती। उन्होंने इसका ख़याल कर अपनेको सम्हालते हुए कहा—

"लेकिन एक बात और। यह सज़ा ज़ारके ज़मानेमें दी जाती थी। ज़ारकी सल्तनत इसे प्रोत्साहित करती थी। इसका एक भारी कारण था। हम कोजाकोंको दबाये रखनेके लिए हमारे इलाकेमें रूसी सेना रखी जाती थी और उस सेनाके लिए ज़ारको औरतें जुटाना पड़ता था। खराबी किस समाजमें थोड़ी बहुत नहीं रहा करती? पर कोजाकोंमें भयंकर दंड-विधानके डरसे औरतें पहले ही घरसे भाग जाया करतीं और ज़ार उन्हें अपने सैनिकोंके लिए वेश्या बनाकर रख लिया करता।

"भाइयो! उस समय हम गुलाम थे। हमारी गिनती असभ्य लोगोंमें हुआ करती थी। आज हम स्वतंत्र हैं, हमारी गिनती सभ्य लोगोंके बीच होती है। आज हमें औरतोंको उस प्रकार सज़ा देनेकी ज़रूरत ही नहीं।"

"बहुत ठीक कहा—" इस बार सब नौजवान एक स्वरसे बोल उठे। एकसे जोश नहीं रोका गया। वह कहने लगा—

"भाइयो! ज़ारशाहीके ज़मानेमें हम अपनी ग़रीबी, गुलामी और अपने ऊपर होनेवाले सब तरहके जुल्मोंका सारा गुस्सा अपनी औरतोंपर उतारा

करते थे। अब हम खुद राजा हैं। सिर्फ डोन इलाका नहीं, सारा रूस हमारा है। हमारे ही गाँवके मार्शल बुदयोनी—लाल सेनाके उतने ऊँचे ओहदेपर मास्कोमें बैठे हैं। उनके डरसे सब बोर्जुई डरते हैं। हमारी ग़रीबी दिनों दिन दूर होती जा रही है, हमपर जुल्म करनेवालोंका खात्मा हो चला है। फिर अब हम अपना गुस्सा औरतोंपर क्यों उतारें?"

"यदि बूढ़ोंको गुस्सा है तो वे अपनी बुढ़ियोंपर उतारा करें—।" एक दूसरा नवजवान बोल उठा।

सब लोग हँस पड़े। जीत नवजवानोंकी रही।

पर बूढ़े इसे उतनी आसानीसे माननेवाले नहीं थे। हमारे बूढ़े दादा भी उन्हींके दलमें थे। उन्हें जब घर चलनेके लिए कहा तो उन्होंने डाँटते हुए कहा—"तुम यहाँसे भाग जाओ। हम लोगोंने तुम्हें कोजाक प्रथाके अनुसार कल सज़ा देना तय किया है।"

मुझे विश्वास हो गया कि इस बार यह निरी धमकी नहीं है।

५

टपटपकर बूँदाबाँदी हो रही थी। बेलाने उस दिन मेरा बिछावन घास रखे जानेवाले घरमें किया था। डोनके तरफकी खिड़की खुली थी। अंधकार धीरे धीरे कम होता जा रहा था। डोनका किनारा धुँधला पर दूर तक दिखाई देता था। मेरा परिचित टीला भी दूरपर मस्तक ऊँचा किये समूचे डोन प्रदेशकी निगरानी कर रहा था। इस वक्त मालूम नहीं क्यों, वह मुझे जीवित मालूम पड़ा।

गाँवकी ओरसे किसीके चीखनेकी आवाज़ आई। उस ओर एकटक देखने लगा। कुछ भी दिखाई नहीं दिया। धीरे धीरे आकाश बिलकुल साफ हो गया। चाँदनी खिलखिलाकर हँसने लगी। मैं अब भी जंगलेके पास खड़ा सामने देख रहा था।

कत्ल्यारोवके घरकी खिड़कीके पास कुछ हलचल दिखाई दी। उसका

खिड़कीसे बाहर निकलनेका ढंग परिचित था। पिछले दिनकी अपेक्षा भी अधिक सावधानीसे वह बाहर निकली, सीधे डोनकी ओर चली।

मुझे संदेह हो रहा था, उसके पीछे पीछे तो कोई नहीं जा रहा है। कोई भी नहीं। डोन तरफ़वाली खिड़कीसे झाँककर देखा—वह मेरे परिचित टीलेकी ओर जा रही थी। अब उसने अपनी रफ़्तार भी तेज कर ली।

मुझे बिजली-सी लगी। खिड़कीके बाहर कूद आया। एक बार और चारों ओर देख लिया। कोई भी नहीं। चारों तरफ़ स्तब्ध। शायद झाड़ी, वृक्ष, नदी सब स्तब्ध एकटकसे यही देखना चाहते थे कि वह क्या करती है। वह स्वयं भी किसी झाड़ीकी आड़में छिप गई थी। मैं भी रुक गया।

"मैंने तो कुछ नहीं किया—" दूर पर धीमे, करुण काँपते हुए स्वरमे सुनाई दिया—"भगवान! सबसे अन्यायी तुम्हारा कानून है। क्यों नहीं आँख खोलकर देखते? नहीं, तुम देखोगे कैसे? तुम तो स्वयं अन्यायका साथ देनेवाले हो। अन्यायी तुम खुद, तुम्हारा सारा दल, तुम्हारी सारी दुनिया! जो तुममें विश्वास नहीं रखते उनका जीवन जरूर तुमपर निर्भर रहनेवालोंसे ज्यादा सुखी है। मैंने न्यायका भरोसा तुम्हारे ऊपर छोड़ दिया था। तुमपर विश्वास किया—उसीका यह सब नतीजा है। ऐसे अन्यायीपर मेरा विश्वास नहीं।"

आवाज़ सिसकके रूपमें परिणत हो गई। थोड़ी देरमें वह भी बंद। मुझे भ्रम होने लगा, क्या वास्तवमें ही कोई ईश्वरसे बातें कर रहा था!

वह टीलेकी चोटीपर खड़ी दिखाई पड़ी। भयके मारे मेरे पाँव जमीनमें गँथ गये।

"अन्यायी समाज...क्रूर सँसार..."

और छलाँग। छप! डोनमें जोरोंकी आवाज़। किनारेपर जोरोंकी खलबली। हठात सब शान्त। जाकर देखा। वर्षाके कारण पानी बहुत बढ़

आया था। प्रवाह भी बहुत तेज था। एक क्षणमें वह किसीको कहाँसे कहाँ बहा ले जा सकता था।

टीलेके नीचे प्रकाड भँवर-सा बन रहा था। प्रवाहकी ओर लपका। दौड़ने लगा। दूर तक गया। कुछ भी नहीं। किनारेके पास काली-सी चीज़। औरतोंके लम्बे बालों जैसी। पकड़कर खींचा। घास। धीरे धीरे फिर टीलेकी ओर लौटा। वहाँ कोई खड़ी नीचे झाँक रही थी। मेरे पास पहुँचते ही मेरी छातीसे लिपट गई। अपना सर मेरी कमीजमें छिपा लिया। कमीज गीला हो चला तब उसने कहा—

"साश्का! आ...साश्का..."

६

हम लोग फिर बूढ़े दादाके यहाँ नहीं लौटे। हम नही चाहते थे कि उनका कथन सत्य निकले।

पैदल उत्तरकी ओर चले। जंगल ही जंगल। जहाँ मैदान थे और जो कभी जोते नहीं गये थे। वहाँ सिर्फ घोड़ोंकी टापोंके कुछ चिह्न विद्यमान थे। जहाँ तक दृष्टि जाती सोनेसे रंगा हुआ हरा समुद्र-सा दिखाई देता। उसी समुद्रमें बहुत तरहके फूल बिखेर रखे गये थे।

एक बार और पीछे फिर कर देखा। डोन दृष्टिसे ओझल हो गया था।

द्वितीय खंड

बेला

१

मनुष्यके मन और हृदय दोनोंकी एक ही हालत रहती है। ये कभी चुप नहीं बैठ सकते। यदि उनसे कोई चीज़ जबर्दस्ती छीन ली जाती है तो वे तुरत ही उसी प्रकारका या उससे मिलता जुलता ढूँढ़ लेते हैं। जीवित रहनेके लिए तथा हृदयको मजबूत बनाये रखनेके लिए पुरानी खोई वस्तुके ही समान नईका ढूँढ़ लेना शायद अनिवार्य हो जाता है।

मनुष्य बड़े परिश्रमसे ऊँची पहाड़ीपर चढ़ता है। दृश्य सुन्दर मालूम होने लगता है, वह स्थान छोड़नेकी उसे इच्छा नहीं होती। वह वहीं बड़े परिश्रमसे एक झोपड़ी तैयार करने लगता है। खर, लकड़ी, बाँस औजार जुटानेके लिए मालूम नहीं उसे कितना कष्ट उठाना पड़ता है। वह तैयार हो जाती है। मनुष्यके हृदयमें उसके लिए एक विशेष प्रकारका खिंचाव हो जाता है। एक शब्दमें—उसे वह अपने आनन्दका भंडार मानने लगता है।

तेज बवंडर आया। झोपड़ी उड़ गई। उस स्थानपर थोड़ेसे टूटे फूटे बाँस खूँटे स्मृति-चिह्नके स्वरूप शेष रह जाते हैं। वियोगमें हृदय रो उठता है। स्मृति-चिह्न उसे और भी अधिक रुलाते हैं। विरक्ति आ जाती है। सब अंत हुआ समझ पड़ने लगता है।

थोड़ा समय बीतता है। मनुष्य फिरसे साहस करता है। धैर्यसे काम

लेता है। उसी स्थानपर पहलेसे भी सुन्दर झोपड़ी खड़ी हो जाती है। जीवनमें फिरसे रस मिलने लगता है।

यह चक्र सदा चलता रहता है।

२

हम लोगोंके दोनों कमरे ट्रीपर नदीकी ओर थे। अपनी खिड़कीसे हम दरियाका पूरा पाट देख सकते थे। उस पार अर्धचंद्राकार घना जंगल और कहीं कहीं मैदान दिखाई देता था।

बेला अकसर मेरी खिड़कीपर आकर बैठ जाती। राजीन्स्की छोड़नेके बाद उसका चेहरा मुझे कुछ परिवर्तित हुआ दिखाई देता। यदि और कुछ नहीं तो चेहरा कुछ अधिक गंभीर अवश्य ही दीखता जो बेलाकी प्रकृतिके विरुद्ध था। जब उसे यह पता चल जाता कि मैं उसके इस परिवर्तनके विषयमें कुछ पूछने जा रहा हूँ वह तुरत कोई दूसरी चर्चा छेड़ देती—" तुम्हें मालूम है, मैं इस मकानमें पहले भी रह चुकी हूँ। उस समय माँ जिन्दा थी। हमारा जीवन भिक्षुणियोंके जैसा था।"

" भिक्षुणियों जैसा ? यह तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।"

" हाँ, असलमें ही। कमरेकी सजावट आज जैसी ही थी। किसी भी चीजमें चक-दक नहीं। पाउडर, क्रीम, सेंटकी तो बात ही छोड़ो, आई-ना भी कहीं नहीं था जिसे देख कर तुम अंदाजा लगा सकते कि यहाँ कोई युवती रहा करती है।"

" तुम्हारा खर्च कैसे चलता था ?"

" क्यों उसकी क्या चिन्ता ? मैं स्कूलमें पढ़ती थी, वहाँसे ही मुझे वजीफा मिलता और माँ उस सामनेके कारखानेमें काम किया करती थी। हमारा खर्च ही बहुत सामान्य था।"

वह अपने सादे जीवनकी कथा विस्तारपूर्वक कहा करती।

३

कभी कभी वह बड़ी रात तक मेरे कमरेमें बैठी रहती। कोई भी बात छिपा सकना उसके स्वभावके विपरीत था। इसी लिए बात-चीतकी सामग्रीकी कमी नहीं रहा करती। दूसरे हमारे बारेमें क्या कहते हैं कभी कभी वह इसकी भी चर्चा किया करती। एक दिन उसने कहा—" तुम्हें मालूम है—हमारे पड़ोसी हम लोगोंका संबंध स्वामी-स्त्रीका समझा करते हैं। मैं उन्हें कितना भी इसके विपरीत समझा आती हूँ, कितनी ही दलील देती हूँ वे और कुछ माननेके लिए तैयार नहीं। मानेंगे कैसे? सबके सब खोखोल (उक्रैन प्रदेशके लोगोंको रूसी लोग इसी नामसे चिढ़ाया करते थे) ही तो ठहरे।"

उसने दोष खोखोलपनेपर लाद दिया पर मैं विचारमें पड़ गया। सामाजिक बंधनोंको थोड़ा ढीला करने पर उक्रैनिया ही क्यों, संसारके किसी भी हिस्सेके लोग यही समझते। फिर उक्रैनियावालोंके लिए तो वैसा समझ सकना एक प्रकारसे और भी आसान था। उन दिनों सोवियत निवासियोंको विवाहादि रस्मोंको ही संसारमें सबसे अधिक महत्त्व देनेकी फुर्सत नहीं रह गई थी। उन्हें वे बड़े ही स्वाभाविक रूपमें लिया करते। इसीलिए उसके उपलक्षमें कोई बड़ी धूमधामकी क्रिया नहीं होती। युवा-युवती नई विचार-धाराके अनुसार रहा करते और इसी लिए गिरजाघरमें पादरीके सामने जाकर विवाह करनेकी भी उन्हें आवश्यकता नहीं होती। वे जाया करते रजिस्ट्री आफ़िसमें और वहीं नाम लिखा लेने पर शादीशुदा समझे जाते। बिना इस रस्मके अदा किये भी कुछ लोगोंकी 'शादी' हुई रहती यदि वे स्वयं केवल उसे स्वीकार करनेको तैयार होते। पर इस प्रकारके उदाहरण बहुत ही कम पाये जाते थे।

" उक्रैनियन दिमाग अब भी संकुचित है—" बेला कहती गई—" यदि उन लोगोंने यह चर्चा न छेड़ी होती तो शायद हमारे दिमागमें

ये बातें कभी उठती ही नहीं।"

उसने मेरी ठोढ़ी पकड़ ठीक अपनी आँखोंमें देखनेके लिए वाध्य करते हुए कहा—"क्यों साश्का!"

"हूँ।"

'हूँ क्या?" वह जोरोंसे हँस पड़ी—"तुम्हें देख कर तो मालूम पड़ता है अभी तुम्हारे दूधके ही दाँत नहीं टूटे। अभीसे शादी—वाह, वाह! और मैं दुलहिन...खूब!"

हँसते हँसते उसकी आँखोंसे पानी टपकने लगा। मैंने बातचीतका रुख बदल दिया था। रात भी बहुत अधिक हो चली थी। वह कई बार अपने कमरेमें जानेके लिए उठी पर तुरत कुछ याद आ जानेके कारण रुक गई।

थोड़ी देर वह खिड़कीसे द्वीपरकी ओर देखती रही। फिर मेरी ओर देख बोली—"दैनिक जीवनके संकुचित बंधनोंको पार कर जानेपर जीवन कैसा सुखी बन जाता है! लोग इसे क्यों नहीं समझते? क्यों उस सुखसे जान-बूझकर अपनेको दूर रखनेकी चेष्टा करते हैं? मुझे तो उनकी ये बातें समझमें नहीं आतीं।

"पिता-माता अपने बच्चोंको प्यार करते हैं, बच्चे अपने पिता-माताको प्यार करते हैं—भला इसमें आश्चर्य ही क्या? जानवर भी इतना समझते हैं और इस नियमपर चलना उनके लिए भी स्वाभाविक है। आदमियोंकी कुछ विशेषता होनी चाहिए। इनका परस्परका संबंध खूनके रिश्ते नातेसे नहीं बल्कि विचारके नाते होना चाहिए।"

वह मेरी चारपाईपर आकर बैठ गई। वहींसे उसने एक बार खिड़कीके बाहर देखनेका प्रयत्न किया। द्वीपरमें दूरपर कोई जहाज जा रहा था। उसकी रोशनी दिखाई पड़ी। चक्कोंके पानी काटनेकी आवाज़ मनुष्य-हृदयकी गतिके तालमें सुनाई पड़ी।

पड़ोसियोंने घरकी रोशनी बुझा ली थी। मेरी रोशनी भी उसने बुझा

दी। मुझे भली भाँति चादरसे लपेट दिया और 'अब सोओ' कहकर चली गई।

४

जब वह अपने बचपनकी बातें याद किया करती तब सबसे पहले उसके सामने चित्र आया करता—छोटी-सी अँधेरी कोठरी। बीचमें किसी दुकानदारके यहाँसे उठा लाया गया देवदारका बाक्स जो मेजका काम देता था। उसीके दोनों ओर लकड़ीके दो कुंदे जिनपर उसके माता-पिता बैठा करते। कभी कभी उस मेजपर एक टूटा हुआ चिनी मिट्टीका बड़ा-सा कठौता रहा करता जिससे भाफ़ निकलती।

बेला अपनी माँकी छातीसे चिपटी रहती। माँके शरीरपरका छोटा-सा कोट बहुत-से छेदोंसे भरा था फिर भी उसीसे बेलाको ढक रखनेका माँ प्रयत्न किया करती। जब वह सर्दीके कारण चीख उठती तो माँ उसके मुँहमें काठके चम्मचसे मेजपर रखे भाफ़ उठते कठौतेसे माँड़ जैसी चीज डाल दिया करती। स्वाद कडुआ मालूम होता। पर गरम रहनेके कारण उसे निगलना ही अच्छा लगता।

"नीमेच! नीमेच! (जर्मन! जर्मन आये!") दूर पर कहींसे आवाज आई।

माँ बेलाको छातीसे चिपकाये दरवाजेपर आ खड़ी हुई। कोटके छेदोंसे सर्दी भीतर घुस हड्डियोंको हिलाने लगी। रूईके फाहेके समान बरफ पर सूरजकी किरणोंके पड़नेके कारण दृष्टि नहीं टिकाई जा सकती थी। आसपासके क्रूसमस झाड़ सफेद, मोटा, ठंढा, नरम दुशाला ओढ़े कान लगाये मालूम नहीं किसकी प्रतीक्षामें दम साधे खड़े थे।

कहीं दूर पर सैनिक संगीत बज रहा था। उधरसे ही सैनिकोंके मार्च करनेकी आवाज़ आ रही थी। पिता उस ओर दूर आगे बढ़ उन्हें देखने चले गये थे। माँकी छाती जोरोंसे धड़क रही थी।

थोड़ी देरमें खाकी वर्दी पहने जर्मन सिपाही आये। उन्हें हुक्म देनेवाला एक विशाल-काय लाल मुँहवाला खूँखार अफ़सर था। उसका चेहरा देख बेलाको डर लगा। उसने अपना मुँह माँके जाकेटमें छिपा लिया।

बड़ी हो जानेपर उसने उस दिनका यह वृत्तान्त सुना।

खूँखार अफ़सरने गाँवके बहुत-से नौजवान और १९०५ सालकी क्रान्तिमें भाग लेनेवाले लोगोंको पकड़ मँगवाया। यदि उनके घरकी औरतोंने बाधा दी तो उन्हें ढकेल कर अलग कर दिया। वे खड़ी हो सिसक सिसक रोने लगीं।

जर्मन अफ़सरने पकड़े गये लोगोंको गाँवके बाहर खड़ा किया। उन्हीं लोगोंमे बेलाके पिता भी थे। ज़ारके वक्तके एक रूसी जासूसने जो इस समय जर्मन अफ़सरका मंत्री बन रहा था बेलाके पिताकी ओर उँगली दिखाते हुए कहा—"इस शहरका सबसे बड़ा बाग़ी। १९०५ की क्रान्तिमें भाग लेनेवाला। साइबेरिया भेजा जानेवाला। मजदूर। बोलशेविक।"

"तुम्हारा नाम?" जर्मन अफ़सरने डाँटते हुए बूढ़ेसे पूछा।

"मिखाइल कुकुबेंको।"

रूसी जासूसकी बताई सिफ़तें प्राण-दंडके लिए पर्याप्त थीं। पकड़े गये लोगोंसे क़ब्रके समान गढ़े खुदवाये गये। एक एक आदमी प्रत्येक गढ़ेके किनारे खड़ा किया गया। आठ जर्मन सैनिक उनकी ओर बंदूक तानकर खड़े हुए।

"फ़ायर!" अफ़सरने हुक्म दिया।

चार लाशें खड्डेमें गिर गईं। बाकी पन्द्रह अब भी अपने स्थानपर खड़े थे।

"और गोलियाँ इन बेहूदोंके लिए नहीं खर्च की जायँगी—" अफ़सरने अपने सिपाहियोंको संकेत कर कहा—"बंदूकके कुंदों और संगीनोंसे काम लो।"

कुंदे और संगीन चार्ज हुए। मरे अधमरे सब एक साथ गढ़ोंमें ढकेल

दिये गये। औरतें जिन्हें कुछ सिपाहियोंने अलग ढकेल रखा था—चिल्लाती हुई विपरीत दिशाकी ओर भाग चली।

खड्डेमें ढकेले गये लोगोंपर मिट्टी डाली जाने लगी। उनका छटपटाना कुछ दूरसे ही दिखाई पड़ रहा था। मिखाइलका सर ऊँचा होनेके कारण पहचाना भी जा सकता था। उसने हाथ टेक ऊपर निकलनेकी कोशिश की। अफ़सरने स्वयं उसके गढ़ेमें मिट्टी डालते हुए कहा—

"मिट्टी वहीं तुम्हारे पास पहुँचा दी जाती है। और तकलीफ़ करनेकी जरूरत नहीं।"

"प्यारी उक्रैन! साथी लेनिन! कात्या...बेला..."

मिट्टीसे गढ़े भरे जाने लगे। अपना नाम सुन बेला उधर देखने लगी। दाढ़ीवाला शांत चेहरा उधरसे नहीं निकला। बेलाने उसे उस दिनके बाद और कभी देखा ही नहीं।

५

उन दिनों कीवमें रहनेका अर्थ था—रूसी आस्ट्रियन फ्रंटपर रहना। भय, आतंक, लूट-खसोट, जोर-जुल्म, निर्दयता आदि जितनी चीजें युद्धके साथ साथ आया करती हैं वे सब उन दिनों कीवमें हमेशा ही वर्तमान रहा करतीं। रूसी क्रान्तिने उनका अंत किया तो उसके थोड़े ही दिनों बाद गृह-युद्ध आया। जर्मन लोगोंका कब्जा उक्रैनपर होने लगा। साधारण जनताकी अवस्था महायुद्धके समयसे भी बदतर होने लगी।

पहली स्मृतिके इतने कठोर रहने पर भी बेलाके मनमें कीवके प्रति बड़ा आकर्षण था। उसे वह मन ही मन दुनियाका सर्वश्रेष्ठ शहर मानने लगी थी। इसका कारण शायद यह था कि यहींपर उसने जनताको अपने ऊपर किये गये अत्याचारोंका प्रतिशोध लेते भी देखा था।

कीवसे जर्मनोंका आधिपत्य मिटानेके वक्त उसने देखा था कि वहाँकी जनता—सारी जनता इन्साफ़ और अपनी रक्षाके लिए एक सूत्रमें बँध

कर लड़ रही थी। साथ ही जनता यह भी समझती थी कि वह लड़ाई उनकी मातृ-भूमि उक्रैनको शत्रुओंद्वारा रौंदी जानेसे बचानेके लिए चल रही है। लोग सोवियत शक्ति और तवारिश लेनिनके लिए लड़ रहे थे जिसका अर्थ था अपने निजके लिए लड़ना। इसी शहरमें बेलाने पुत्रको पिताका, भाईको भाईके खूनका बदला लेते देखा था। अन्यायपूर्वक बहाये गये रूसी रक्तका पूरा पूरा प्रतिशोध इसी शहरमें लिया गया था।

बड़ी हो जाने पर बेलाको अभिमान था कि उसका जन्म वैसे मौके पर हुआ और वह वैसे बहादुरोंकी औलाद है। कीवमें जिस किसी व्यक्तिपर उसकी दृष्टि जाती उसका उज्ज्वल इतिहास उसे तुरत याद आ जाया करता। जिस प्रकार वह उस शहरकी ईंट ईंटसे परिचित थी उसी प्रकार वह वहाँके व्यक्ति व्यक्तिसे अपनेको परिचित—उनके साथ एक समझा करती।

६

काम हम दोनोंको ही मिल गया था। उसे सूती कारखानेके बुनाई विभागमें और मुझे एक प्रेसमें अनुवाद करनेका। उसका कारखाना चौबीस घंटे चालू रहता इसलिए वह प्रत्येक सप्ताह पारी पारी सुबह, दोपहर और रातको कामपर जाया करती। मेरा काम बहुत ही हल्का था। आफ़िससे प्रायः ही कागज घर लाकर अनुवाद किया करता।

उसका सख्त काम मुझे बहुत खटका करता। खासकर उस दिन जब उसकी रातमें काम करनेकी बारी होती। नौ बजे रातको जब मैं सोनेकी तैयारी करता वह कामपर जाती। जब सुबहको मेरे उठनेका समय होता वह कारखानेसे सारी रात जगनेकी थकावट साथ लिये आती। उस दिन भी वह मुझे घरका कोई काम नहीं करने देती। औरतोंका मर्दोंके बराबर स्थान रखनेके सिद्धांतकी कट्टर पोषक होनेपर भी जिन कामोंको साधारणतया लोग औरतोंका काम कहते हैं, वह स्वयं ही किया

करती। झाड़ू लगाना, कपड़े धोना, रसोई बनाना आदि सारा भार उसपर ही रहा करता। पर इन सब कामोंसे सख्त काम था रोटी लाना।

रोटीकी दुकानोंपर सौ सौ, डेढ़ डेढ़ सौ आदमियोंकी लंबी कतारें खड़ी रहतीं। कभी कभी घंटों खड़ा रहनेपर रोटी मिला करती। पानी बरसने अथवा स्नो पड़ते रहनेके दिन और भी अधिक तकलीफ़ होती। पर यह काम भी बेलाने अपने लिए ही रख छोड़ा था।

जिस दिन वह रातकी बारी समाप्त कर आती उसका चेहरा मुर्झाया रहता, होठोंपर पपड़ी पड़ी रहती, आँखे कान्तिहीन दीखतीं—फिर भी बिना आराम लिये तुरत ही जब वह रोटी लाने निकलती, मैं उसे टोकता। पर हमेशा वह उत्तर देती—"निचीवो!" (परवा नहीं, सब ठीक है।)

वह अपनी जिदपर अड़ी रह जाती और मुझे रोटी नहीं लाने देती।

इतना अधिक सख्त जीवन और परिश्रम होते हुए भी मैंने उसके चेहरेपर झुँझलाहट नहीं देखी। थोड़ा आराम कर लेनेके बाद फिरसे उसकी स्वाभाविक चपलता और चेहरेकी लाली कान्ति लिये लौट आती।

रूखा सूखा भोजन और सख्त कामपर ध्यान देते हुए उसके चेहरेकी प्रसन्नता, उसके भीतरका उल्लास, उसकी बिजलीकी भाँति शक्ति बड़ी ही अद्भुत दिखाई देती। पर सबसे अद्भुत होता उसका मौके मौके-परका कहना—"निचीवो!"

यह उच्चारण करते समय उसके चेहरेपर बड़ी ही सुन्दर मुस्कराहटकी रेखायें रहतीं।

मैं पहचान जाता, यही वास्तविक बेला है।

७

उस दिन हम दोनोंकी छुट्टी थी। शामको 'लेनिनकी पहाड़ी' पर टहलने गये। आज सुन्दर मौसिम और छुट्टीका दिन एक साथ ही पड़

जानेके कारण वहाँ काफी भीड़ थी। कीव आनेके बाद जितने लोगोंकी शक्ल सूरतसे वाकिफ़ हो चुका था वे उस दिन सबके सब वहाँ इकट्ठे हुए दीखते थे।

आज उन लोगोंने टहलनेका एक अच्छा ढग निकाल रखा था। पहाड़ीकी चोटीपर एक सुन्दर पार्क था। उसका आकार अंडेकी शक्लका था। उसके चारों तरफ़के रास्ते चौड़े और दोनों किनारे फूलकी क्यारियोंसे सजे थे। झुंडके झुड आदमी कतार बाँध उस पार्कके फेरे लगा रहे थे। पुरुषोंकी अपेक्षा औरतोंकी संख्या कुछ अधिक रही होगी। न जाने कितने आदमी इस प्रकारका पाँच सात चक्कर लगाते और दूसरी ओर चले जाते। उनका स्थान नये दूसरे आदमियोंसे भर जाता।

पहली दृष्टिमें मालूम होता शायद कोई सैनिक अफ़सर इस प्रकार सामूहिक रूपसे टहलनेका अभ्यास करा रहा है, अथवा लोग कोई रस्म अदा करते जा रहे हैं। पर नहीं, यह तरीक़ा पार्कमें जगह कम होने और एक दूसरेसे परिचय प्राप्त करनेकी इच्छासे आपसे आप निकल आया था।

पार्कके दूसरे किनारेसे लाल सेनाके किसी जत्थेके बाजा बजानेकी आवाज़ आई। बहुतसे लोग उधर जाने लगे। कुछ लोग पासके मैदानमें उसी बाजेके तालपर नाचने लगे। बेलाके पाँवोंमें भी बिजली दौड़ने लगी।

दस बजा। बाजेवाले घर चले। भीड़ भी खिसकने लगी। पहाड़ीपर बहुत थोड़ेसे आदमी बच गये।

बेला मुझे ट्रामपरकी ओर जानेवाले ढलुए रास्तेपर खींच ले चली।

"मेरा मन आज घूमनेसे नहीं भरा" उसने कहा—"अब नाच भी पुराना होता जाता है, उससे संतोष नहीं होता। मालूम है तुम्हें कोल्याने मुझे नाचके समय क्या कहा? उसने कहा—'बेला बुड्ढी हो चली।' कोजाकोंके बीच रहते रहते मैं बूढ़ी होनेसे बहुत घबराने लगी हूँ।

"अभी ही बूढ़ी हो चलीं? अभी तो दिलमें जवानीके बहुतसे अरमान बाकी हैं। इस टहलनेसे ही मन नहीं भरता। इच्छा होती है

दिल खोलकर मौज करूँ, हँसूँ, खेलूँ। यह देखो पार्कमें बच्चोंके झूलनेके लिए जो झूला लगा है उसपर बैठकर झूलनेकी इच्छा होती है।"

"फिर झूलती क्यों नहीं?"

"वह तो बच्चोंके लिए बना है, मुझे उसपर झूलती देख दुनिया क्या कहेगी! और केवल वही तो नहीं, जिस प्रकारसे मौज करना चाहती हूँ अगर दिल खोल कर वैसा करने लगूँ तो समाज तो मुझे पागलकी पदवी देने लगेगा।"

"पागल कहने दो न! उनके कहनेसे बिगड़ा ही क्या जाता है?"

"तुम्हारी भी यही राय है? ठीक कहते हो, वैसा ही करूँगी। लेकिन...लेकिन तब तो अपनेको पूरा पूरा बदल लेना पड़ेगा!"

"बदल लो न!"

"नहीं, यही अधिकार तो मुझसे छिन गया है। बल्कि ऐसा कहो कि मैंने जान बूझकर छोड़ दिया है। मैं हूँ आज कल अपने कारखानेके कौमसोमोल (युवा कौम्यूनिस्ट दल) की सेक्रेटेरिन। यह बहुत जिम्मेवारीका काम है। मैं क्या करती हूँ क्या नहीं, इसपर बहुतसे लोगोंकी निगाह लगी रहती है। नहीं, पागल कहे जानेका, जी खोलकर मौज करनेका मेरा अधिकार नहीं।"

"चलो अब घर लौट चलें। जैसा जीवन कट रहा है वैसा ही कटने दो।"

हम लोग घरकी ओर लौट चले। आज उसके भीतरके चलते हुए संघर्षकी थोड़ी बहुत आभा मुझे दिखाई पड़ी। जिस विचारको वह बराबर दबाये रखना चाहती थी वह विद्रोहीकी भाँति फट कर निकलना चाहता था।

८

"तुम्हें स्वप्न देखना अच्छा लगता है, साश्का?" उसने मेरे सरपर हाथ फेरते हुए पूछा।

" कैसा स्वप्न ? "

" खूब सुन्दर । "

" भला किसे पसंद नहीं होगा ? "

" नहीं, मेरा मतलब साधारण लोगोंके स्वप्नसे नहीं है । उस प्रकारका स्वप्न जिसका एकमात्र आदर्श रहता है प्रेमी प्रेमिकाका एकांत रमणीय स्थानमें मिलना और एक दूसरेको आलिंगन करते हुए कहना—' यदि सारा जीवन ही ऐसा होता ? '—मेरा मतलब ऐसे स्वप्नसे नहीं है । "

" ऐसे स्वप्नमें खराबी ही क्या है ? "

" मैं खराबीकी बात नहीं कह रही हूँ । संभव है मैं स्वयं ही कभी कभी ऐसा स्वप्न देखनेकी तीव्र इच्छा रखती होऊँ, पर यही स्वप्न ऐसा नहीं जिसके लिए अपना सारा जीवन न्योछावर कर दिया जाय । "

" क्या ऐसा भी स्वप्न हो सकता है—" मैंने आश्चर्यमें आ पूछा— " जिसके लिए वास्तविक जीवनका सारा आनन्द भी न्योछावर कर दिया जाता हो ? "

" यह है मेरा भविष्यका संगीतमय स्वप्न । जागते हुए भी कभी कभी मैं इस प्रकारका स्वप्न देखा करती हूँ; उस समयसे बढ़कर और कोई दूसरे आनन्दकी मैं कल्पना ही नहीं कर सकती । ओः—वह आनन्दका जादूभरा संगीत-स्रोत है ।

" सौन्दर्य कौन नहीं पसंद करता ? पर उसे पूरा पूरा उपभोग करनेका हमें मौका ही कहाँ मिलता है—और उसके भलीभाँति समझ पानेकी ही शक्ति कितने लोगोंमें है ! यदि मैं साफ खोल कर कहूँ तो हम अपना ही उदाहरण क्यों न लें ! मैं हूँ उक्रैनियन, तुम हो भारतीय। हम दोनोंका मिलन बड़े ही रोमांचक तरीक़ेसे और बड़े ही अद्भुत समयमें हुआ । अब स्वाभाविक ही यदि हम दोनों एक दूसरेके प्रेम-सूत्रमें बँध जायँ तो क्या वह कोई गुनाह होगा ? "

उसने मेरा सर अपनी गोदमें लेकर दबाया और तुरत ही जैसे उसे

बिजली लग गई हो उस प्रकार अपनेको अलग करते हुए कहा—

" लेकिन नहीं। समाज हमें वह अधिकार नहीं देता। क्रान्तिने अभी हमारे देशका बन्धन इन मामलोंमें थोड़ा ढीला अवश्य किया है, पर वह पर्याप्त नहीं। लोग इसे स्वाभाविक नहीं मानेंगे। क्योंकि तुम्हारा रंग-रूप दूसरा है इसलिए कोई भी नहीं चाहेगा कि मैं तुम्हारे साथ किसी सूत्रमें बँधूँ—शायद तुम स्वयं इसे अच्छा नहीं मानोगे। मेरा जन्म यदि उक्रैनमें हुआ तो क्या उसी कारण मेरे सरपर उतने अपराधका पहाड़ लद गया है कि मैं किसी मनुष्यको मनुष्यकी दृष्टिसे नहीं देख सकूँ?

" क्या ही सुन्दर होता यदि लोग मनुष्यको उसके रंग, देश और वेषके आधार पर नहीं बल्कि उसे मनुष्य होनेके नाते देखते! क्या वह समय आयगा जब मनुष्योंका हृदय वैसा विशाल बन सकेगा? मैं उसी समयका मधुर स्वप्न, संगीतमय स्वप्न देखा करती हूँ।

" उस समय लड़ाई नहीं, गंदी राजनीति नहीं, कोई दास नहीं; देश, रंग, जातिका चोगा नहीं—वह दुनिया रहनेलायक होगी।"

हम दोनो देरतक चुप रहे। उसकी दृष्टि द्वीपरके उसपारके क्षितिजको भी पार कर रही थी।

" भविष्यका वह संगीतमय स्वप्न पूरा करनेके लिए ही मैं जीना चाहती हूँ सारका!"

उसकी छातीकी धड़कन मैं स्पष्ट सुन रहा था। उसमें संगीत भी था पर मैं उसे समझ नहीं रहा था।

खोखोल प्रोफेसर

१

" हुइस्या, हुइस्या, ती नियें बईस्या;
या नियें त्रानू, ती नी बेसपकिस्या ॥
* [हुइस्या, हुइस्या, मत डर पा तू,
मैं ना छेड़ूँ, मत घबरा तू,]

यह गाते जाते। ताल मिलाकर ताली पीटते। चारों तरफ घेर कर खड़े रहते, बीचमें कोई अकेला अथवा जोड़ी बाँधकर नाचता होता। नाचनेवाले जब थकने लगते तो कतारमें चले आते और किसी दूसरेको नाचनेके लिए बीचमें ढकेल दिया जाता।

यह समारोह प्रत्येक दिन संध्या समय हुआ करता। इस समयके लिए लड़के, युवा, युवती, बूढ़े, बूढ़ी सब बच्चे बन जाया करते।

रूसके विभिन्न भागोंमें जितने तरहका नाच ख्याति-प्राप्त है प्रायः सब कीवकी सड़कोंपर हुआ करता। नाचनेवाले बहुधा अपने निजी वेशमें रहते। वहाँ पूरे यूरोपीयसे लेकर ठेठ भारतीय पोशाकसे मिलती जुलती सब तरहकी पोशाकें मिलतीं। तुर्किस्तानकी पोशाक

---

* रूसी भाषामें 'हुइस्या' शब्द उत्साहित करनेके अर्थमें प्रयुक्त होता है—कुछ कुछ 'उछलो, कूदो, मौज करो' के समान।

तो भारतके ग्रामीण जुलाहों जैसी रहा करती। वे भी अपनी जबानमें कुछ गाते और साथ ही साथ अपने विचित्र तालमें ताली पीटते जाते। मुझे उनकी भाषाका कोई शब्द समझमें नहीं आता पर जान पड़ता था मानो वे गा रहे हों।

" सानी सप सैंया,
हैं या यार; हैं या यार,
शाइस्तानां साँइ देंदा,
है या यार, है या यार ॥

नाचके क़िस्मोंकी कभी भी कमी नहीं रहा करती। यह तातारी, उजबेकी, कोजाकी, उक्रैनी, बेलारूसी सब ढंगकी होती।

लोगोंको सड़क और विशेषकर बुलवार (खूब चौड़ी सड़क जिसके बीचमें वृक्षोंकी कतारें रहती हैं और विश्राम करनेके लिए स्थान बने होते हैं) में जुटानेका भी बड़ा निराला ढंग था। कोई एक युवा खींच कर बजाया जानेवाला हारमोनियम गलेमें लटकाकर बजाता चलता, उसके बगलमें चार छः लड़कियाँ आ जुटतीं और गाने लगतीं; फिर वे अपनी टोली बनाकर निकलते। वे जहाँ जहाँसे होकर गुजरते लोग उनके साथ हो लिया करते और चौराहेपर पहुँचते पहुँचते खासा बड़ा मजमा जुट जाया करता। यह जुलूस जब पाससे निकलता तो बहुत कुछ अपने देशकी होलीकी टोली-सा दिखलाई देता।

इस टोलीमें किसीके पाँवमें स्लीपर, किसीके पाँवमें बूट हुआ करता, कोई पंपशू पहने रहता और कोई बिलकुल ही नंगे पाँव रहा करता।

सारी मंडलीको देख कर तथा उनके नाच-गानोंके क़िस्मोंकी तायदाद देखकर यही प्रतीत होता कि संसारके किसी भी सभ्यसे सभ्य अथवा वीरानसे वीरान देशका व्यक्ति वहाँ पहुँच जाय तो वह थोड़ा बहुत अपने मन मुताबिक मन-बहलावका मसाला अवश्य ही पा लेगा।

२

कीववासियोंके आमोदका यह ढंग हमारे साधारण जीवनकी सख्ती बहुत दूर तक भुला दिया करता। हम लोगोंने अपना डेरा शहरके पूर्वी हिस्सेमें लिया था। यहाँके मकान छोटे छोटे और नीची छतवाले थे किन्तु विशेष प्रकारकी बेरियोंकी लताओंसे ढके रहनेके कारण वे सुन्दर दीखते थे। उन्हीं लताओंके बीचसे सड़कपर चलते हुए लोगोंका भी हम निरीक्षण किया करते।

पुरुष भारतीय मिरजईकी काटका कुर्ता पहने रहते, फर्क यह रहता कि गलेके चारों ओर तथा छाती तक वह कसीदा किया हुआ अथवा छपा रहता। यह सफेद मिरजई ओछे पैंटोंपर पहनी गई होती और बेल्टके स्थानपर सुनहली, रुपहली या और किसी रंगकी चमकती हुई डोरी बँधी होती। सरकी टोपी कोजाक और पांडिताऊ ढँगका मिश्रण रहता।

औरतोंके पहनावेका निचला भाग घाँघरेसे बहुत कुछ मिलता जुलता रहता और ऊपर चादर जैसी कोई चीज वे ओढ़े रहतीं। चेहरेपर यूरोपीय औरतोंके समान पुरुषत्व भावके स्थानपर एशियाई लोगोंसे मिलता जुलता लज्जा, शरम, संकोचका ही भाव अधिक झलका करता।

पहली झलकमें कोई भी यह कह उठता कि कीव अवश्यही यूरोपीय और एशियाकी दो महान आर्य तथा मंगोल संस्कृतिकी वास्तविक त्रिवेणी है। एशियाई तथा यूरोपीय दोनों सभ्यताओंके वास्तविक मिलन-स्थानका सुन्दर अजायबघर कीवकी अपेक्षा शायद ही और कोई दूसरा शहर बन सकनेका दावा कर सकता है।

इसके सिवा शहरकी बनावट और सजावटमें भी यूरोप तथा एशिया दोनों ही महाद्वीपोंकी सुन्दर कलाका मिश्रण दिखाई देता था। शहर द्नीपर नदीके किनारे बसा है; ये किनारे कहीं यूरोपीय 'के' और कहीं भारतीय घाटके समान दीखते थे। शहरके भीतर भी पैरिसीयन ढँगके बुलवारके

साथ साथ लखनऊके चौक हाथ मिला रहे थे।

नगरके एक किनारे ऊँची-सी 'लेनिनकी पहाड़ी' थी। उस पहाड़ीसे सारा शहर दिखाई देता और वहाँ सर उठाए पुराने रूसी गिर्जाघरोंके साथ साथ आधुनिक कारखानोंकी चिमनियाँ गर्दन ऊँचा किए खड़ी मिलतीं। शहरके जिस हिस्सेमें हम रहते चिमनियाँ भी उधर ही थीं। उन्हें देख कर कारखानेके जीवनकी सख्ती और बेलाका सूखा चेहरा याद आ जाता और हमें अपना घर बदल डालनेकी इच्छा होने लगती।

हम लोगोंका ध्यान अक्सर ही शहरके पश्चिमी हिस्सेकी ओर विशेष-रूपसे खिंचा करता। क्रान्तिके पहले यह धनी लोगोंका मुहल्ला था। यहाँ उक्रैन और पोलेंडके बड़े बड़े जमीन्दारोंकी इमारतें थीं। ये इमारतें बड़े ही सुन्दर तरीक़ेसे बनाई गई थीं और उनमेंसे कई राजप्रासाद जैसी दिखाई देतीं। इस भागकी सड़कें भी काफी चौड़ी थीं। संसारके किसी भी सुन्दर शहरके सुसज्जित मुहल्लेसे कीवके इस टुकड़ेकी तुलना की जा सकती थी। बेलाके साथ साथ मैं भी शहरके इस हिस्सेमें आकर रहनेकी तैयारी बहुत बार कर चुका था; पर यह बात अब तक कल्पनामें ही सीमित थी।

३

हम लोगोंकी यह कल्पना हठात् एक दिन वास्तविकतामें परिणत हो गई। हम दोनों एक मकानके फाटकसे गुजर रहे थे। उसी फाटकसे एक मोटर निकल रही थी। हमारा ध्यान उस ओर नहीं था। उस मकानका हाता पार करनेके पहले ही मोटर हमारी बगलमें आकर खड़ी हो गई। एक सफेद बालों और खिचड़ी दाढ़ीवाले 'सज्जन' उसे चला रहे थे। उन्हें कोई भी आदमी 'सज्जन' की उपाधि दे सकता था। सोवियत रूसमें यह उपाधि किसीका मज़ाक उड़ानेके लिए ही दी जाती है, पर उनका पहनावा और चेहरेका हाव-भाव इस ढँगका था कि कोई भी उनका मज़ाक उड़ानेका साहस नहीं कर सकता था।

उन्होंने बेलाका बाल पकड़ उसका मुँह अपनी ओर फिराते हुए कहा—

" तूने शादी की और उसकी खबर तक मुझे नहीं दी ? "

शरमसे बेलाका मुँह लाल हो आया। उसने मुझे उनकी ओर दिखाते हुए कहा—" हमारे प्रोफेसर ! और यह है साश्का ! "

" आपसे परिचय प्राप्त कर बड़ी खुशी हुई। मेरा नाम है प्रोफेसर सिदोरेंको। " उन्होंने हँसते हुए कहा और खूब कस कर मुझसे हाथ मिलाया। वे कुछ देरतक अपनी हँसी नहीं रोक सके।

" हाँ साश्का ! साश्का ! बड़ा ही सुन्दर नाम है। निश्चय ही तेरा दिया हुआ है बेला ! तुम्हारी उम्रके और तुम्हारे स्वभावसे मिलते जुलते जितने नवजवान हों सबका नाम साश्का ही होना चाहिए। इस साश्काको कहाँसे बझा लाई ? "

"हिन्दुस्तानके जंगलसे—" बेलाने हँसते हुए उत्तर दिया। प्रोफेसर जी खोल कर हँसते रहे। वास्तवमें ही उन्हें इस प्रकार हँसना आता था।

उन्होंने हमें हमारे घरतक पहुँचानेके लिए मोटरमें बैठा लिया। हम लोगोंकी कोठरियाँ देखीं। उन्हें पसन्द नहीं आईं। कामके बारेमें पूछा। बेलाने उन्हें सारा किस्सा कह सुनाया। वह भी उन्हें पसन्द नहीं आया।

"यह सब तुम्हारे लिए नहीं।" उन्होंने कहा—"तुम मजदूर-समाजके लिए और भी उपयोगी साबित हो सकते हो। तुम्हारी शक्तिका समुचित उपयोग न होना देश और तुम्हारे निज दोनोंहीके प्रति अन्याय है। यह काम और यह घर तुम दोनोंको इसी क्षण छोड़ देना होगा। "

उन्होंने हम लोगोंका सामान मोटरमें लादना शुरू किया। बहुत-सी चीज़ोंके बारेमें कहा—" ये तो हमारे घरमें भी तुम्हें मिलेंगी—इन्हें और किसीके इस्तेमालके लिए यहीं छोड़ दो। "

जितना कुछ सामान मोटरमें आ सका साथ ले हम लोग प्रोफेसरके घर रहने आ गये।

४

प्रोफेसर सिदारेंको वैज्ञानिक दुनियाके जीव थे। साधारण लोग जिस दृष्टिसे इस संसारको देखा करते हैं उससे उनकी दृष्टि बिलकुल ही भिन्न थी। यदि यह कहा जाय कि उनमें साधारण संसारकी समझ बूढ़े हो जाने पर भी सात वर्षके बच्चेसे कम थी तो कोई अत्युक्ति न होगी।

उनके दिमागमें गैसका फौर्मूला भरा रहता। उसीके सुलझानेमें उनके मनकी सारी शक्ति खर्च हुआ करती। अपनी जवानीमें ही उन्होंने एक प्रतिज्ञा की थी—ऐसी किसी चीजका आविष्कार करना जिसके लिए यदि अपने जीवन तकको भी दे डालना पड़े तो उसे सफल कहा जा सके। उनका कालेजका जीवन समाप्त ही हुआ था और वे अपनी ज्ञान-वृद्धिके लिए एक अच्छी प्रयोगशाला बनवानेके बन्दोबस्तमें ही थे कि महासमर छिड़ गया। ये पकड़कर आस्ट्रियन फ्रंटपर भेज दिये गये। वहाँ इन्होंने मस्टर्ड गैस जैसे विषैले गैससे निरपराध आदमियोंको दोजखकी आगसे भी भयंकर पीड़ा सह छटपटा कर मरते देखा। इन्होंने उस गैसका काट कोई विरोधी गैस निकालना चाहा। दिमागमें फौर्मूला ढूँढ़ते रहे। उसीके पीछे इतने पागल हो गये कि स्वप्नमे भी कभी कभी फौर्मूला ही बका करते। यही था उनकी खिलती जवानीका वह समय जब साधारण संसारके युवकोंके स्वप्नमें औरतें अपना विशेष स्थान बनाने लगती हैं। इस उम्रमें ताजा खिला हुआ चेहरा, काली बड़ी बड़ी आँखें, नरम चमड़ा, विशेष प्रकारकी वास्तविक तथा खयाली शक्लें युवकोंको हैरान किये रहती हैं और उनका मन पढ़ने लिखनेसे खींच कर दूसरी ही ओर लगाया करती हैं। प्रोफेसर व्याख्यान देते होते हैं पर विद्यार्थियोंके सामने कुछ दूसरा ही नाचता होता है। सिदारेंको जवानीकी इस लहरसे बिलकुल अपरिचित रह गये।

रूसी क्रान्तिने उनको वैज्ञानिक फौर्मूलाओंके प्रयोग करनेका मौका दिया। सोवियत सरकारको आक्रमणकारियोंके गैससे अपने देशके मजदूर

किसानोंकी जान बचानेकी आवश्यकता थी। इसी विचारसे किसान मजदूरोंकी सरकारने सिदारेंकोके लिए जैसी वे चाहते थे उस प्रकारकी प्रयोगशाला बनवा दी। ये कई प्रकारके गैसके क्षेत्रमें सफल हुए। सोवियत सरकारने इन्हें पहले प्रोफेसर और आगे चलकर एकेडमिसीयनकी (विद्वानोंके लिए सोवियत सरकारकी सबसे बड़ी पदवी) पदवी दी। इनकी प्रयोग-शालामें दूरदूरके विद्यार्थी और प्रोफेसर आकर काम करने लगे।

पर अब तक प्रोफेसर सिदारेंको (अपनेको वे एकेडमिसीयनकी अपेक्षा प्रोफेसर कहलाना ही अधिक पसंद करते थे) अपने वास्तविक लक्ष्यपर नहीं पहुँच पाये थे। मस्टर्ड गैसका विरोधी गैस अब तक आविष्कार करनेमें वे समर्थ नहीं हुए थे। जिन नये गैसोंका उन्होंने आविष्कार किया था वे मस्टर्ड गैससे भी भयानक थे और लोगोंका प्राण उसकी अपेक्षा कहीं शीघ्रतासे ले सकते थे। अपने आप लिया हुआ दायित्व और भी अधिक बढ़ गया था। अब उन्हें अपनी इच्छा न रहते हुए भी आविष्कृत गैसोंका विरोध ढूँढ़ निकालना था।

अकसर ही ऐसा होता कि उन्हें अपनी प्रयोगशालामें ही हफ्तों बंद रहना पड़ता। यदि नींद बहुत ज्यादा तंग करती तो वहीं मेजपर सर रख फौर्मूला सोचते सोचते थोड़ा आराम कर लिया करते। कपड़े भी कभी कभी इन्हें पंद्रह दिन बाद बदलनेकी फुर्सत मिलती।

मस्टर्ड गैसकी समस्याने उनके जीवनको ही बदल डाला था। बेला प्रायः ही कहा करती—" इन्हें संसारके रसातल जानेकी परवा नहीं, परवा सिर्फ गैसकी है। हम, तुम कोई भी आदमी इनके लिए जीवित नहीं, जीवित है सिर्फ उनका गैस। इनकी दुनिया सिर्फ गैससे भरी है। ये आदमियोंका प्राण बचाने चले थे पर मारनेके लिए उससे भी ज़हरीले गैस बना दिये। तारीफ़ तो यह है!"

प्रोफेसर सुनकर हँसने लगते और कहते—" ठीक कहती हो! बहुत भारी जिम्मेवारी है। अब आराम करनेका वक्त नहीं।"

वे प्रयोगशाला चले जाते ।

बेलासे अब वे अपनी प्रयोगशालामें ही काम लिया करते । दोनों एक दूसरेके स्वभावसे बहुत पहलेसे ही परिचित थे, इस लिए उन्हें कोई दिक्कत नहीं होती । पर मुझे कभी कभी यह अवश्य ही मालूम होता कि बेला जितनी अच्छी तरह उन्हें समझ पाती है वे उसे नहीं समझते । वे कभी कभी स्वयं ही कहा करते—" तुम्हारे बारेमें कौन-सा फौर्मूला काम करता है यह जाननेमें मेरा दिमाग़ ही काम नहीं करता । "

बेला कभी कभी उनपर नाराज हो जाती । खास कर वैसे मौकेपर जब वे उससे पूछते—" अच्छा । यह तो बताओ, तुम्हें तो मैं यहाँ पढ़ा लिखा रहा था, तुम्हें मैंने कोई तकलीफ़ नहीं दी, फिर भी तुम अनजाने लोगोंके बीच भटकने क्यों चली गई ? "

बेलाकी त्योरी चढ़ जाती—" अगर इस तरहका आप प्रश्न करेंगे तो मैं फिर चली जाऊँगी । "

" अच्छा, जाने दो, नहीं पूछूँगा । तुम्हारा विज्ञान ही मेरी समझके बाहर है । "

फिर दार्शनिकोंकी भाँति थोड़ा सोच कर कहते—" ठीक कहती हो । तुम लोगोंकी दुनिया ही अलग है, उसे मैं नहीं समझता । इसलिए उसमें दखल देना भी ठीक नहीं । "

इसके बाद वे मौन हो जाते ।

५

प्रोफेसरके घर आ जानेपर हम लोगोंके रहने खाने आदिका सिलसिला बिल्कुल ही बदल गया । उनका घर बहुत बड़ा था । हम लोगोंके वहाँ जानेके पहले केवल एक ही कोठरी शायद काममें लाई जाती थी, नहीं तो पूरा घर ही एक प्रकारसे वीरान पड़ा रहता । अब वह धीरे धीरे फिरसे राजप्रासादका स्वरूप लेता जा रहा था । हम लोगोंमें प्रत्येकके खाने सोने

और काम करनेके कमरे अलग अलग थे।

भोजनके मामलेमें भी बड़ा परिवर्तन हो गया था। अब रोटीके लिए लंबी कतारके पीछे जाकर नहीं खड़ा होना पड़ता। वह हम लोगोंके घरपर ही पहुँचा दी जाती। दूसरे खाद्य पदार्थोंके लिए भी हमें बाहर जानेकी जरूरत नहीं पड़ती थी। घरमें टेलिफोन लगा था, वहाँसे ही इन्सटिटयूटकी दुकानको कह देनेपर सब चीजें, (आवश्यकता पड़नेपर तैयार भोजन भी) घरमें पहुँचा दी जाती थीं। ये सुविधायें स्वयं मजदूर सरकारने समाजके अधिक उपयोगी व्यक्तियोंके लिए कर रखी थी।

विदेशी और कभी कभी सोवियत अखबारोंमें भी मजदूर राज्यके ही भीतर रहने-खानेके इस विभेदको लेकर काफी चर्चा चला करती। कुछ लोग 'समानता'के सिद्धान्तकी आड़ लेकर कहा करते कि यह विभेद उचित नहीं। सोवियत-विरोधी दल इसे 'पूँजीवाद' की सिफत मानते और यह प्रचार करने लग गये थे कि मजदूर-राज्यमें भी अब एक उच्च-वर्ग, धनीवर्ग, 'पूँजीवादी वर्ग' बनता जा रहा है जो और देशोंके उसी प्रकारके वर्गसे भिन्न नहीं है।

पर फिर भी जहाँ तक मैं देख पाता और देशों और सोवियत-राज्यमें जमीन आसमानका अंतर था। सबसे बड़ा विभेद तो यही था कि सोवियत-राज्यमें जिन लोगोंका रहने खानेकी विशेष सुविधायें प्राप्त थीं वे उन सुविधाओंको अर्थशास्त्रकी परिभाषाके भावमें 'पूँजी'के रूपमें न तो परिणत कर सकते थे और न उसके आधारपर समाजके किसी वर्गका शोषण कर सकते थे। उन्हें वे सुविधायें उनकी कार्य-क्षमता बढ़ानेके लिए दी गई थीं जिस क्षमताकी समाजकी भलाईके लिए नितान्त आवश्यकता थी। सोवियत सरकारकी नीति निर्धारित करनेवालोंके लिए समानताका अर्थ 'शोषणका न होना'के सिवा और कुछ नहीं था।

व्यावहारिक दृष्टिसे भी देखनेपर यही पता चलता था कि उस

अर्थके सिवा समानताका और दूसरा अर्थ हो भी नहीं सकता था। यदि कुछ देरके लिए इसका अर्थ बिलकुल एक-सा भोजन और एक प्रकारसे रहनेकी व्यवस्था लिया जाए तो यह तो इस हास्यास्पद सीमा तक पहुँच जायगा कि यदि उस सिद्धांतका वास्तवमें पालन हो तब तो निरोग लोगोंको भी रोगियोंके ही समान बार्ली और साबूदानेपर रहना पड़ता और सब किसीको बिना उनकी खट्टे, तीते, नमकीनकी रुचिका खयाल रखे एक प्रकारका ही भोजन करना पड़ता। यह प्राकृतिक नियमोंके विरुद्ध साबित होता।

इसके सिवा सारा समाज ही आलसी बन जाता। चाहे उनका काम कैसा भी क्यों न हो भोजन और रहना एक-सा ही मिल जाया करता तब तो साधारण मनुष्यके भीतर अपनेको काममें अधिक दक्ष, कार्य-कुशल बनानेकी प्रवृत्ति ही नहीं रह जाती और इसका नतीजा यही होता कि समाज अवश्य ही पतनकी ओर जाता।

वैसी हालतमें कमसे कम प्रोफेसर सिदारेंको जैसे विद्वान् कुशल वैज्ञानिकोंके लिए तो कुछ भी कर सकना असंभव हो जाता। उनका वह बहुमूल्य समय जिसमें वे गैसका निरीक्षण किया करते थे रोटीकी दुकानपर समानताका नियम पालन करनेमें नष्ट होता। शायद क्रान्तिके बाद कुछ दिनों तक यह मौका उनके सामने वास्तवमें ही आ गया था। ऐसा क्यों, उस समय ऐसे मौके उनके ही जैसे रूसके सब कुशल वैज्ञानिक, इंजीनियर और विद्वानोंके सामने आये थे। नतीजा यह हुआ था कि देशके सब कल कारखाने और शिल्प-विज्ञान चौपट हो चला था। इतना ही नहीं, इसका असर इतना खराब हुआ था कि कितने विद्वानोंने आत्म-हत्या तक कर ली थी। ये आत्महत्यायें दैनिक जीवनके कष्टसे नहीं बल्कि इस कारणसे की गई थीं कि वे विद्वान् सोवियत-प्रणालीकी उस सिफतको क्षणिक न मान स्थायी मान रहे थे और अपनी शक्तिके समुचित उपयोग करनेका मौका पानेकी उम्मीदसे हाथ धो चुके थे।

प्रोफेसर सिदारेंको उस सीमातक हताश नहीं हुए अवश्य किन्तु उनके मनपर भी उसका कुछ कम असर नहीं हुआ था। वे उस मानसिक धक्केको बड़ी मुश्किलसे बर्दाश्त कर पाये थे और उसका खयाल शायद उन्हें उस समय भी सता रहा था। नहीं तो वे हम लोगोंको अपने घरमें बुला लानेमें वैसी जल्दबाज़ी नहीं करते।

हम लोगोंके वहाँ आ जानेपर उन्होंने अपने घरका सारा इंतजाम हम लोगोंपर छोड़ दिया। इंस्टिटयूटसे जो रकम उन्हें मिलती थी उसका हिसाब भी उन्हें स्वयं नहीं देखना पड़ेगा, यह सोचकर उन्हें निहायत खुशी हो रही थी। अपनी मोटर भी मेरे ज़िम्मे लगाते हुए उन्होंने मुझसे पूछा—" चलाना तो जानते हो ? "

" हाँ। "

" लेकर कीवके एक दो चक्कर रोज लगा आना। उक्रैन तुमने देखा नहीं है, वह भी तुम्हें भली भाँति देख लेना चाहिए। मुझे अब मोटर-की जरूरत नहीं पड़ेगी, मैं इन्स्टिटयूटसे बाहर नहीं जाना चाहता। "

६

एक बार प्रोफेसर सिदारेंकोके आफिससे उनके कई आवश्यक कागज गायब हो गये। डाँट बेलापर पड़ी। बेला मेरा मुँह देखती। मैं अवाक् था।

संयोगसे दूसरे दिन मेजपर दैनिक अखबारके नीचे प्रोफेसरको उनके आवश्यक कागज़ मिल गये। बेलाका कान पकड़ उन्होंने कहा—" तू तो अच्छी सेक्रेटेरिन है। अखबारके नीचे कागज़ रखती है और आलमा-रीमें ढूँढ़ने जाती है। "

बेला सोचमें पड़ गई। इसमें सन्देह नहीं था कि कागज़ चोरी हुआ था और फिर मेजपर ला रखा गया था। मैं भी कई आदमियोंपर सन्देह करने लगा।

प्रोफेसर सिदारेंकोके कई आविष्कार ऐसे थे जो सिवा उनके और लाल सेनाके एक विशेषज्ञके और किसीको भी मालूम नहीं। पर उन्हें आश्चर्य होता जब वे कुछ दिनोंके बाद किसी फैसिस्ट वैज्ञानिक पत्रिकामे उससे मिलती जुलती बातें छपी हुई पाते। ऐसे मौकोंपर वे कहते—"अजीब शैतानी है! हमारी प्रयोगशालाकी वे सारी बातें जान लेनेमें समर्थ होते हैं। मालूम पड़ता है ठीक हमारे ही ढँगका गुप्त प्रयोग वे भी कर रहे हैं। पर आश्चर्यकी तो बात यह है कि हम अपने निराले प्रयोगोंकी कुछ बाह्य रेखाएँ सोवियत वज्ञानिक पत्रिकाओंमें भेजनेका विचार ही करते रहते हैं तबतक इन फैसिस्ट पत्रिकाओंमें वे निकल जाती हैं।"

अपनी इस शंकाका समाधान करते समय उन्होंने हम लोगोंके सामने एक पूरा व्याख्यान ही दे डाला—"वैज्ञानिक और विशेष कर रूसी वैज्ञानिकोंका भाग्य ही ऐसा रहा है। जीनीन विचारेको देखो—वह सबसे पहला आदमी था जिसने ऐनेलाइन रंगका आविष्कार किया, लेकिन उसे कौन जानता है? बेचारेको सारी ज़िन्दगी काजानमें बितानी पड़ी और आखिर आखिरतक पैसे पैसेके लिए मुहताज रहा। आज जर्मन पूँजीपति उसके आविष्कारका फायदा उठा रहे हैं। दिमीत्री इवानोविच मेंडेलेयेफ़को देखो जिन्होंने एलिमेंट्सकी समय-परिवर्तन-प्रणाली निकाली, लेकिन उनका सारा जीवन बीता एक महाजनके लिए शराब बनाते रहनेमें। हमारे पोपोवको ज़ारकी सरकारने तीन सौ रूब्ल दिये और उनके आविष्कारको और किसीके नामसे अमर कर दिया।

"विदेशमें देखो—बेचारे अँग्रेज़ बेस्मरको भिखारीकी हालतमें मरना पड़ा और उनके आविष्कारसे कुछ दूसरे ही शीसे और लोहेके कारबार-द्वारा राजा बन रहे हैं। फैरेडेको जिसने संसारका रोशनी और बिजलीसे संबंध कराया बुढ़ापेमें पेंशन देनेसे इन्कार किया गया।"

वे कुछ और कहना चाहते थे किन्तु बेलाने उन्हें रोका।—

"लेकिन अब तो कमसे कम हमारे यहाँ हालत बदल गई है। सोवियत रूसमें वैज्ञानिकोंकी वह अवस्था नहीं। यहाँ न तो उन्हें भूखों मरना पड़ता है, न उनका यश ही छीन या खरीद कर और किसीको दिया जाता और न उनके प्रयोगमें किसी प्रकारका खर्च देनेमें आना-कानी की जाती है। यह तो वैज्ञानिकोंका स्वर्ग होना चाहिए।"

प्रोफेसर बड़े गौरसे बेलाकी बातें सुनते रहे। फिर हकार-सूचक सर हिलाते हुए बोले—"ठीक कहती हो बेला। लेकिन मैं तो पुरानी दुनियाका आदमी ठहरा। अपने भाग्यके हठात् इस प्रकार चमक जानेकी बातपर मुझे विश्वास नहीं होता। आखिर ठहरा तो खोखोल प्रोफेसर ही न!"

सोवियत-विरोधी

१

धीरे धीरे प्रयोगशालाके प्रायः सब आदमियोंसे मैं परिचित हो गया। उनमेंसे कितने प्रोफेसरके घर आया करते और कितनोंके घर मैं स्वयं जाया करता। उन लोगोंमें मुझे सबसे अधिक आकर्षित किया करती एक जर्मन विवाहिता स्त्री—फ्राउग्राफ।

इसके पति हेरग्राफ विख्यात इन्जीनियर थे और उन दिनों द्रेप्रोस्त्रोयमें संसारका सबसे बड़ा पानीके जोरसे चलनेवाला बिजली-घर तैयार करवा रहे थे। द्रेप्रोस्त्रोय एक गाँवके जैसा था इसीलिए फ्राउग्राफके लिए वहाँ रहना कठिन था। वे बचपनसे ही बर्लिनमें पाली पोसी गई थीं और संसारके आधुनिकसे आधुनिक ऐश आरामोंसे सिर्फ परिचित ही नहीं बल्कि उनकी अभ्यस्त हो गई थीं।

कीवमें उनकी जरूरतें थोड़ी बहुत पूरी हो जाया करती थीं, इसी लिए वे वहीं रहा करतीं। यहीं उनका प्रोफेसर सिदोरेंकोसे भी परिचय हो गया था। प्रोफेसरको तो इनसे बातें करनेका कम ही अवकाश मिला करता पर प्रयोगशालाके और लोगोंसे उनकी मित्रता हो गई थी। जो लोग प्रोफेसरके निकटवर्ती होते उनसे ये निकटका सम्बन्ध रखनेकी चेष्टा किया करतीं। मुझे जबसे प्रोफेसरकी मोटर मिली मेरे साथ इनकी सबसे अधिक घनिष्ठता हो गई थी।

उनकी अवस्था अब भी वैसी थी कि युवतियोंमें उनकी गिनती की जा सकती थी। जिस दिन वे अपना भली भाँति शृंगार करतीं उस दिन तो एक बच्चेको भी उनके युवती होनेमें सन्देह करनेका कारण नहीं रह जाता। उनके बाल स्वाभाविक ही सुनहले थे पर रँगे रहनेके कारण रंग और भी गाढ़ा और चमकता रहता। शहरके अच्छेसे अच्छे नाई और बाल-विशारदोंकी कलाका प्रदर्शन उनके बालोंको घुँघराले बनानेमें हुआ करता। मुखकी आकृति लंबी पर क़दके अनुपातमें थी और देखते ही कहा जा सकता था कि वे उत्तरी जर्मनीकी रहनेवाली हैं। शरीरके काट और गठनका आकर्षण जितना किसी सुन्दर स्त्रीमें होना संभव है वैसा ही था। कपड़ोंके काट और सिलाईके त्रुटिहीन रहनेके कारण उनकी शोभा और भी अधिक बढ़ जाती थी।

स्वभावकी खास सिफत यह थी कि उनका अति स्वतंत्र स्वभाव अक्सर निर्लज्जताकी सीमापर पहुँच जाया करता। इसके लिए बादमें उन्हें अपने आपपर झिझक होती हो ऐसी बात भी नहीं थी। वे अपने आचरणका वास्तविक वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए कहतीं—

"सौन्दर्यको समाज-भयके कारण ढक रखना पाप है। उसका ढका रहना ही भारी अनर्थ है। वह देखने और उपभोगके लिए बनाया गया है।"

"फिर पशुता क्या है?" यदि कोई पूछ बैठता तो वे उत्तर देतीं—

"मनुष्यमें पशुता है इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। समाजका आडंबर इसे ढकनेका व्यर्थ ही प्रयत्न किया करता है।"

सिनेमा-अभिनेत्रियोंके रहने और पहनावेका पैमाना उनके लिए आदर्श था। उस पैमानेके साथ ही साथ इनका अपना पैमाना बदला करता। यदि उनके पति कभी दखल देनेकी चेष्टा करते तो दोनोंमें भयानक झगड़ा हो जाया करता। कभी कभी ये झगड़े इतने बढ़ जाते कि मालूम पड़ता उनका अंत ट्रैजेडीमें (दुःखान्त) ही होकर रहेगा।

पति जब हार मान लेता तो ये उसे समझातीं—" वाल्टर ! तुम जानते नहीं। छाती ढक रखनेका फ़ैशन बहुत पुराना पड़ गया है।"

एक दिन उन्होंने यह भी कह दिया था,—" अपने पतिके साथ घूमने निकलना तो अठारहवीं सदीकी प्रथा थी। आजकलका फ़ैशन ही कुछ दूसरा है।"

थिएटर, संगीत, साहित्य, सिनेमा आदिको ये अपने लिये बनाया गया समझती। इधर रूस आनेके बाद उसका दायरा उन्होंने राजनीति तक बढा लिया था।

रूसी लोगोंको ये 'दुम' (= मूर्ख) कहा करतीं। वजह यह थी कि ये बर्लिनके फ़ैशनको अपने पीछे पीछे चलता हुआ देखा करतीं, पर रूसवाले इन्हें देखकर अपना फ़ैशन नहीं बदलते थे। उक्रैनियाके फ़ैशन बदलनेकी इन्होंने लाख चेष्टा की पर एक भी युवतीका फ़ैशन अपनी इच्छानुसार बदल पानेमें समर्थ न हुई। इसीको ये संसारका अंत आ गया कहा करतीं।

साधारण जन-समाजसे जहाँ तक संभव होता ये दूर रहा करतीं। उनके बारेमें कहतीं —" उनके शरीरसे बहुत अधिक दुर्गन्ध निकला करती है।"

धीरे धीरे इनके हिलने-मिलनेका दायरा सिर्फ़ विदेशी लोगोंमें सीमित हो गया था, पर उनसे भी इनकी पटरी नहीं बैठा करती थी क्यों कि इनके मौसिमके अनुसार वे अपना फ़ैशन बदलनेको तैयार नहीं रहते थे।

चुपचाप अकेले बैठ नहीं सकती थीं, इसीलिए इधर आकर राजनीतिमें दिलचस्पी लेने लगी थीं और उसी कारणसे एक सीमित रूसी लोगोंके दायरेसे उन्हें संपर्क रखना ही पड़ता था।

पति सिर्फ़ रुपया देने और अगले महीनेका फ़ैशन सीख जानेके बहाने इनके पास महीनेमें एक बार आया करता। वह इन्हें कई दृष्टिसे नापसंद था। वह सबसे प्रसिद्ध ऐक्टर नहीं जिसकी बीवी होनेका ये गर्व कर

सकतीं। वह संसारका ख्यातनामा धनी भी नहीं कि ये उसका अगाध घन दोनों हाथोंसे लुटाया करतीं। और सबसे बड़ी बात यह थी कि वह इनके जैसी आधुनिक स्त्रीके निकटतम संसर्गमें रहनेका गर्व हर तरहके समाजके सामने और हर मौकेपर प्रकाश करनेमें हमेशा चूक जाता था।

२

पहली दृष्टिमें वे मुझे बिलकुल ही पसंद नहीं आईं। उनके पाउडर पुते चेहरेकी अपेक्षा बेलाका स्वाभाविक चेहरा हजार गुना सुन्दर जान पड़ा। शायद यह बात फ्राउ ग्राफकी परखमें आ गई थी क्योंकि और लोगोंकी अपेक्षा मेरे प्रति उनका व्यवहार कुछ भिन्न और अत्यन्त ही नरम रहा करता।

अपने घर वे मुझे कई बहानेसे बुलाया करतीं। उन्हें जर्मन लोगोंसे भी सुन्दर जर्मन बोलनेवाला मैं ही मिला था। मेरे मोटर चलानेकी कुशलता उन्हें सबसे अधिक पसंद आई थी और वे मेरे बातचीतके ढँगको सबसे उत्तम करार दिया करतीं। उन्हें ठीक ठीक समझ सकनेवाला, उनकी कलाकी बारीकीका पारखी पहला आदमी उन्हें मैं ही मिला था। इसके सबूतमें वे कहा करती—"तुमने पहले दिन कहा था, मेरी भौंह ठीक तलवारकी शक्ल और उसकी लचकके समान नहीं। यह बारीकी कितने आदमियोंको सूझ सकती है ? मैं फ़ैशनमें अपना सानी नहीं रखती, फिर भी तुम मेरी भी कमी निकाल सकनेमें समर्थ हुए !"

मेरी तारीफ़की झड़ी लग जाती। कभी कभी तो वह इस हदपर पहुँच जातीं कि उन्हें, यह सोचकर कि अपने झूटपर उन्हें खुद ही विश्वास नहीं, जीभ दाँतोंसे काटना पड़ता। मैं अपने व्यवहारसे दिखाया करता कि उनके तारीफ़के प्रति बिलकुल ही अन्यमनस्क हूँ पर प्रत्यक्ष कहा करता—"आपके इस सर्टिफिकेटके लिए मैं बहुत ही कृतज्ञ हूँ, और आपकी यह सराहना मेरे लिए गर्वकी बात है।"

वे स्पष्ट समझ जातीं कि मैं व्यंग कर रहा हूँ और उनके प्रति बिलकुल ही आकर्षित नहीं; उनकी परवा करनेकी बात दूर रही, शायद उन्हें कुछ नफरतकी दृष्टिसे भी देखता हूँ। ऐसे मौकोंपर उनका मेरे प्रति व्यवहार और भी अधिक नरम हो जाया करता। जब उनके घर जाता तो वे दरवाजा खोलनेके साथ 'प्यारे' कह कर मुझे संबोधन किया करतीं और मुझसे गलेसे गले मिलतीं। इसका नाम उन्होंने 'इटालियन प्रणाली' दे रखा था। बैठकमें मुझे गद्देदार दीवानपर बैठातीं और स्वयं मेरी बगलमें बैठ मेरे हाथोंको अपने हाथोंमें ले खेला करतीं।

कमरेमें और किसीके न रहने और कितनी बातोंके बिलकुल साधारण रहनेपर भी वे मेरे कानोंमें कहा करतीं। कभी कभी कानाफूसीके समय जान-बूझकर अपने बाल आगेकी ओर फेंकतीं और उनसे मेरी आँखोंको ढक देनेका प्रयत्न किया करतीं।

मेरे यहाँ जब कभी पहुँच जानेकी उन्होंने स्वतंत्रता ले रखी थी, पर शामको रोज अपने यहाँका ही निमंत्रण रखतीं। जिस दिन शामको उनके यहाँ नहीं जाता, मेरे कमरेके टेलिफोनकी घंटीका बजना बंद नहीं होता। फिर मुलाकात होनेपर कहतीं—"मैं जानती हूँ, तुमने दूसरा घर ढूँढ़ लिया है। क्या वह मुझसे अच्छी है? इस सारी दुनियामें मेरे जितना तुम्हें कोई भी नहीं चाहता!"

ये शब्द उनके मुँहसे अभिनेत्रियों जैसे काँपते हुए बनावटी स्वरमें निकलते। मुझे कोई संदेह नहीं रह जाता कि वे बातें पहले पहल मुझे ही नहीं कही गई हैं। मेरे स्थानपर जो कोई भी दूसरा उनका दिल बहलानेवाला वहाँ जाता वे ठीक वैसे ही स्वरमें उससे कहतीं और संभव है उन्होंने उसे पहले पहले बहुत बार कहा भी हो क्यों कि इन बातोंको नाटकके पार्टके समान कहनेका उन्हें अभ्यास हो गया था।

"तुम मुझे अँगूठी कब देने जा रहे हो?" यह बात भी अभ्यासके ही अनुसार उनके मुँहसे निकली, लेकिन मैं थोड़ा काँप उठा।

"तुम्हें बुखार तो नहीं? थोड़ी ब्रैंडी दूँ,—नहीं लिकर ठीक होगा।" इसी बहाने वे मेरी नब्ज़ देखने लगतीं और कभी कपार अपनी गोदमें रख दबाने लगतीं।

"अपने पतिको आप हमेशा ऐसे ही धोखा दिया करती हैं?" मैं पूछता।

"धोखा! मेरी जवानी देख पानेसे अधिक उसे क्या चाहिए? क्या वह इस योग्य है कि मैं उसे धोखा दे सकूँ? बेवकूफ़ और कायर तो अव्वल दर्जेका है, पर रुपये कमानेमें चालाक है। बुद्धिमानी सिर्फ़ एक मामलेमें दिखलाता है, वह यह कि अपने कमाये हुए सब रुपये मुझे खर्च करनेके लिए दे देता है। इसके लिए मेरे मुँहपर हँसीकी रेखा देख लेना उसके लिए पर्याप्त है,—ज़्यादासे ज़्यादा तो 'डॉके शॉन' (अनेक धन्यवाद) क्यों प्यारे..."

शुरू शुरूमें मैं उसे पगली विलासी औरत समझता पर आगे चलकर पता लग गया कि बोर्जुआवर्गकी विशेष श्रेणीकी औरतोंकी एक खास किस्म हुआ करती है और उस किस्मकी सब विशेषतायें फ्राउ ग्राफ़में पूर्णतया विद्यमान थीं।

मैं मन-बहलावके लिए उनके यहाँ अकसर जाया करता। मेरे लिए वे एक सामान्य निर्दोष मनोरंजनकी सामग्रीके सिवा और कुछ नहीं थीं।

उनके घरसे लौटनेमें कभी कभी देर हो जाया करती। बेला उस समय तक जागती मेरी प्रतीक्षा किया करती। मोटर खड़ी होनेकी आवाज़ पाते ही वह दरवाजेपर आ जाती और मुसकराते हुए आधा खोलकर पूछती—

"फ्राउ ग्राफके यहाँसे?"

मैं हिचकते हुए 'हाँ' कहता।

वह मेरी हिचकपर हँसने लगती और बाल पकड़कर खींच देती।

प्रोफेसर सिदोरेंको भी मेरे देरसे लौटनेकी परवा नहीं करते। बेला दूसरे दिन सुबह चायके समय जब आधा उलहना और आधे हँसी-भरे शब्दोंमें

फ्राउ ग्राफकी मेरे साथकी दोस्तीके बारेमें चर्चा करती तो वे खिलखिला कर हँस पड़ते और कहते—"वह भी अजीब ढँगकी औरत है। उसका फौर्मूला और भी विचित्र है!"

३

फ्राउ ग्राफ प्रोफेसर सिदारेंकोके अविष्कारोंके विषयमें बहुत ज़्यादा दिलचस्पी लिया करतीं। उनकी श्रेणीकी औरतें बहुधा भोग-विलास, आमोद-प्रमोद, हँसी-खेलकी बातें छोड़ और सब मामलोंके प्रति उदासीन रहती हैं; विज्ञान तो उनके लिए सूखा विषय होनेके कारण एक प्रकारसे घृणाका विषय रहता है। फ्राउ ग्राफकी प्रकृति इससे थोड़ा भिन्न होनेके कारण मुझे अस्वाभाविक दीखती और आश्चर्य होता। शुरू शुरूमें उनके और खब्तोंके समान इसे भी मैं एक 'खब्त' समझा करता और उस ओर विशेष ध्यान नहीं देता।

पर यह मैं जानता था कि उनके घरपर महीनेमें एक बड़ी दावत हुआ करती है। वैसे मौकोंपर पंचवर्षीय योजना पूरी करनेके लिए बाहरसे आये विदेशी विशेषकर इकट्ठे हुआ करते हैं। सोवियत यूनियनके लोगोंसे वे भिन्न प्रकृति और विचारके लोग थे, इससे अधिक और कुछ उन्हें देख कर मेरे मनमें विचार नहीं आया करता। मेरे एशियाई होनेके कारण उनमेंसे कई लोगोंको मेरा वहाँ उपस्थित रहना अखरा करता पर सोवियत भूमि होनेके कारण वे इसे प्रकाश नहीं करते। कभी कभी उस भावकी झलक प्रकट हो जानेपर उसे ढकनेका प्रयत्न अति शिष्टाचारके जरिये करते। इस कलामें वे सबके सब निपुण थे।

ऐसे दावतके मौकोंपर खूब नाच-रंग मचता और शराब पी जाती। लोग इसे कामकी थकावट दूर करना कहा करते। प्रोफेसर सिदारेंकोको पहले कई बार निमंत्रण दिया गया था पर एक तो स्वयं ही उन्हें फुर्सत नहीं और दूसरे कभी आये भी तो औरतोंकी दृष्टिमें वे बड़े ही 'मनहूस'

साबित हुए, इसलिए अब उनका भी वहाँ जाना बंद हो गया था।

ईस्टरकी छुट्टियोंके मौकेपर खूब धूमधामसे दावतकी तैयारी की गई। फ्राउ ग्राफने उसके विषयमें कहा—" इस बार शैंपेन पैरिसेस, बिअर म्यूनिचसे और वाइन सीधे इटलीसे आवेगी। खास खास आदमी उसे लेकर आवेंगे।"

गंभीर हो कानके बिलकुल निकट अपना मुँह ला उन्होंने मुझसे कहा—

" लेकिन तुम्हें एक बातका खयाल रखना होगा। बहुत लोगोंकी राय थी कि तुम्हे इस मौकेपर निमंत्रण न दिया जाए लेकिन मैं अड़ गई। मैंने कहा—यदि मेरा 'प्यारा' नहीं तो मैं भी नहीं। लेकिन उन्होंने एक शर्त करा ली है। उस मजलिसकी बातें तुम भूलकर भी और कहीं न कहना। यह मेरे लिए,—मेरा खयाल रख कर,—तुम मुझे चाहते हो,—मैं जानती हूँ,—इसका खयाल रखना।"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। अपना पाउडर मेरे गालोंपर पोतते हुए उन्होंने कहा—" सोवियत सरकार बहुत अत्याचार कर रही है। देखो न, निर्दोष खेलकी भी मनाही है। अगर कोई रूसी यूरोपका नाच नाचता हुआ पाया जाय तो तुरत उसके पीछे गे० पे० ऊ० लग जाती है। तुम्हीं बताओ,—इतने शुष्क जीवनसे कोई यदि पागल हो जाय तो क्या उसमें तुम्हें आश्चर्य होगा?"

उस दिन उनकी कानाफूसी देरतक बंद नहीं हुई—

" मैं तो कभी कभी 'रोमैंस' सोचा करती हूँ। हम तुम दोनों यहाँसे भाग चलें। रुपयोंकी कमी नहीं। और कितने दिनों तक जवानी यहाँ बरबाद करोगे और मेरी जवानी बरबाद होते देखोगे? हम लोग वियेना,—नहीं सीधे पैरिसमें जाकर घर बसायँगे। रहनेके लिए बढ़ियासे बढ़िया विला,—चढ़नेके लिए रोल्स रौयज़ कार, प्रमोदके लिए 'ल्ग्राँद थियात्र,' खर्च करनेके लिए दोनों ओरकी पाकटोंमें भरी हुई थैली! बताओ, क्या और भी कोई दूसरा स्वर्ग हो सकता है?"

उनकी दलीलसे मैं प्रभावित तो न हुआ पर उस ओर विचार अवश्य ही जाने लगे। घर लौटने पर जब बेलाने मेरे गालोंमें पाउडर लगा देखा तो कहा—"साश्का, तुम बदलते जा रहे हो!"

उसकी आँखें सजल हो आई थीं।

४

फ्राउ-ग्राफ़के यहाँकी दावत नवाबशाहीके जमाने जैसी हुई। पहलेसे अगर उनके यहाँके हाव-भावसे कोई परिचित न होता और अचानक उस दावतके हालमें जा खड़ा किया जाता तो वह उसे दावतकी अपेक्षा 'स्टेजपरका नाटक' नाम देना अधिक उपयुक्त समझता। सजावटका ठाट, मिलनेका तरीका, बातचीतका ढँग,—सभी बातें फ्रांसके चौदहवें लूईके जमाने जैसी थीं।

घरकी मालकिन स्वयं दरवाज़ेपर मिलीं। हाथ मिलाते ही उन्होंने अलग ले जाकर मुझे विवाहित स्त्रियोंसे 'शेकहैंड' का तरीक़ा सिखाया। उस तरीक़ेमें झुककर हाथ चूमनेकी प्रणाली थी। मैंने उससे साफ़ इनकार किया। उन्होंने धमकी दी—फिर मैं तुम्हें 'प्यारे' न कह 'विद्रोही' कहा करूँगी। मुझे यह ज़्यादा पसंद था।

सब अजनबी इकट्ठे हुए थे, लेकिन सादगीमें अकेले पड़ जानेके कारण मैं ही उनकी जमातमें अजनबी बन रहा था। सारा घर तंबाकूके धूँएँसे भरा था। लोग एक दूसरेके हाथमें हाथ डाले शराब पीते हुए उस दिनसे 'बंधुत्व' कायम कर रहे थे।

मैं अपना परिचय आप अभिनेताओंकी भाँति देनेमें असमर्थ था। यह काम हेर ग्राफ़ने किया। वे ही आजके भोजके प्रधान नायक बन रहे थे। उन्होंने शीशेके ग्लासमें बुलबुलाता हुआ शैंपेन लाकर दिया। उनके पाँव लड़खड़ा रहे थे। मेरे सामने जो हाथ बढ़ाया वह भी काँप रहा था। मैंने उनसे कहा—"आप तो जानते ही हैं, मैं कभी पीता नहीं।"

"आजका दिन उस 'कभी'से अलग है।" उन्होंने लड़खड़ाती जबानमें उत्तर दिया। मुझे भय होने लगा कि मेरे कपड़े कहीं शैंपेनसे खराब न हो जायँ। मैंने उसे ले लिया। अब वे बोतल ले आये और कहने लगे—"आपका खाली गिलास देखूँ?"

मैं उठ कर दूसरी जमातके बीच जा बैठा। उधर भी हेर ग्राफ जाने लगे किन्तु इस बार उनकी स्त्रीने उन्हें डाँटा। नशेमें भी वे अपनी स्त्रीका हुक्म नहीं टाल सकते थे।

"लेकिन उमर खय्यामके वंशजोंको भी शराबसे परहेज हो सकता है, यह बात मेरी समझमें नहीं आती।" एक नये आगन्तुकने हेर ग्राफ्के तरफसे वकालत की।

किसीने उनकी बातोंकी ओर ध्यान नहीं दिया। जिस नई जमातके बीच आ बैठा था उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुनने लगा। वे लोग जर्मन भाषामें बातें कर रहे थे और एक दूसरेको 'महाशय' कह कर संबोधन करते थे। सोवियत भूमिपर भाई या साथीके स्थानपर यह संबोधन बड़ा अजीब-सा कानोंमें खटका करता। पर प्रोफेसर सिदारेंकोका नाम बार बार आनेके कारण मैं सावधानीपूर्वक उसे सुनने लगा।

ट्रेप्रास्त्रोयमें काम करनेवाला बर्लिनका एक इंजीनियर कह रहा था "तुम उसकी चिन्ता न करो। मेरे ऊपर आगेके लिए भी वह भार छोड़ दो। उनका कोई भी ऐसा काग़ज़ नहीं जिसे मैं उनके घरसे उड़वा नहीं ला सकता।"

"लेकिन हेर रिटर!" जर्मनीसे ताजे आये एक चतुर आँखोंवाले व्यक्तिने कहा—"यदि इस प्रोफेसरका प्रयोग सफल हुआ तो हमें बहुत बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। इतने दिनोंसे इकट्ठा किया हुआ मस्टर्ड गैस, जिसपर हमें बहुत बड़ा भरोसा है, नष्ट हो जायगा। और कोई वैसा ज़बर्दस्त हथियार दूसरा हमारे हाथमें है नहीं। समस्या..."

"माफ कीजिएगा फौन क्रूगर!" बीचमें टोकते हुए रिटरने कहा—

" प्रोफेसर सिदारेंकोका प्रयोग सफल होना ही तो कोई बड़ा ख़तरा नहीं। उस प्रयोगके अनुसार उन्हें बड़े बड़े कारखानोंमें बड़ी मात्रामें गैस तैयार कराना होगा। उन कारखानोंका निरीक्षण तो हमारे हाथमें ही है। ऊपरसे हुक्म आता है सल्फरिक एसिड तैयार करवानेका तो मैं अमोनियाको पानीमें घोलकर स्टॉकमें रखवाने लगता हूँ। यह पता उन्हें ऐन ज़रूरतके मौकेपर लगेगा। पंचवर्षीय योजनाके अनुसार तैयार किए गये कारखानोंमें भी हम लोगोंका संगठन बहुत मज़बूत है। बिजली-घरोंपर तो हमारी ऐसी छाप है कि जिस घड़ी सिगनल मिले,—पाँच मिनटके अंदर अंदर सब चौपट! द्रप्रोस्त्रोय, जहाँ रूसी सरकारने करोड़ोंकी पूँजी लगा रखी है, चंद घंटोंके बीच मिट्टीमें मिला दी जा सकती है। इतना ही क्यों, सोवियत सरकारके खाद्य पदार्थोंके स्टोरोंको भी जलानेका समुचित प्रबंध किया गया है। जबतक उन्हें पता लगे कि कहाँसे तुत्ती लगाई जा रही है तबतक तो भूखके मारे लाखों आदमी सड़कोंपर लोट जायँगे। वे ही लोग विद्रोह खड़ा कर देंगे। सोवियत सेना उन लोगोंको दबानेमें मशगूल रहेगी, हम लोगोंका दख़ल जमानेका काम आसान हो जायगा। मैंने तो आपसे कह दिया,—हमारी फैसिस्ट सेना रूसपर आक्रमण करनेके लिए तैयार हुई नहीं कि डोनके कोज़ाक, साइबेरियाके किसान, उक्रैन और दूसरे सब प्रान्तोंकी भूखी जनता स्वयं ही सोवियत-सत्ता नष्ट कर देगी। "

" मान लीजिए, उसमें आप सफल न हुए,"—गुप्तचर विभागके नायकने कहा—" रूसी जनतापर मुझे स्वयं ही कम विश्वास है। वह किस समय क्या करेगी कुछ कहा नहीं जा सकता। आप यह बतलाइए कि सेना और कल कारखानोंके कितने नायक आपका साथ देंगे? उनमें कितने हमारे वर्गीय भाई हम लोगोंकी ओर हैं?—मेरा मतलब जमींदार और पूँजीपतियोंके वंशजोंसे है। "

" इसका ठीक ठीक ब्यौरा एक सप्ताहके ही भीतर आपके पास मास्को

पहुँचा दिया जायगा। मैं केवल उक्रैनके बारेमें आपको इतना इतमीनान दिला सकता हूँ कि यहाँके पुराने सब रईस और उनके वंशज यहाँ तक तय कर चुके हैं कि हमारी विजय होनेपर उनमेंसे कौन किस जगहकी जमींदारी खरीदेंगे। वे स्वयं ही इसके लिए बहुत अधिक उत्सुक हैं। यदि और कोई मदद न मिली तो भी केवल उनकी ही मददके आधारपर आप यह निश्चय रखिए कि जिस दिन हमारी जर्मन फैसिस्ट सेना सोवियत-सीमापर पहुँचेगी उसी दिन शामको उसका कब्ज़ा कीवपर हो जायगा और रातको हम लोग बॉल-डास नाचते होंगे।"

मैं अब तक वास्तवमें उन दोनों सज्जनोंकी बातें सुन रहा था। पर प्रत्यक्षमें उधरसे अन्यमनस्क हूँ ऐसा दिखाता हुआ फ्राउ ग्राफकी एक दोस्तिनसे रूसी बैलेट और इटालियन ऑपेराकी चर्चा कर रहा था और वे उन्हींमेंसे प्रख्यात लोगोंकी जीवन-गाथायें मुझे सुना रही थीं।

दावत सरकारी तरीकेपर ख़त्म करनेके पहले हेर ग्राफ़ने खड़े होकर उस दिनकी दावतकी सफलताके बारेमें एक छोटा-सा व्याख्यान दिया और सब लोगोंको शराबसे भरा गिलास ले 'सोवियतको फिरसे पूँजीवादी राष्ट्र बनाने, उक्रैनपर जर्मन आधिपत्य जमाने और वहाँ इकट्ठे हुए लोगोंके लखपती, करोड़पति बननेकी उम्मीदकी सफलकामनाके हेतु' पीनेको कहा।

मैंने तुरन्त वहाँसे विदा ली। मेरा माथा भारी हो चला था। दरवाज़ेपर फ्राउ ग्राफ़ने कहा—"कहो, आजका दिन कैसा सुन्दर रहा!" उन्होंने मेरे कंधेपर हाथ रखा और वे 'प्यारे' कहकर अपने गालका पाउडर लगाने आ रही थीं कि "चुड़ैल! राक्षसी!" कहकर मैंने उन्हें ढकेल दिया। उतने ज़ोरोंका सर-दर्द जीवनमें पहले ही पहल मैं महसूस कर रहा था।

५

बाईके झोंकेमें मोटर चलाता घरकी ओर चला। रात आधीसे अधिक बीत चुकी थी। रास्तेपर एक भी आदमी नहीं। यदि होता भी तो

शायद उस धुनमें मुझे नहीं सूझता। कोई मोटरके चक्केके नीचे नहीं आया, इसीलिए अंदाजा लगा पा रहा हूँ कि चारों तरफ अवश्य ही बिलकुल सन्नाटा रहा होगा।

शायद उस मौसिमके हिसाबसे सर्दी भी अधिक थी; पर मुझे सारे शरीरमें जलन-सी मालूम हो रही थी। वह पूरा पूरा जल-भुनकर जल्दी खाकमें नहीं मिल रहा था इसीलिए शायद गुस्सा भी आ रहा था। घर पहुँचकर देखा—मोटरमें आग लग उठनेकी तैयारी थी। वायरिंगके दो-एक तारोंसे धुआँ भी निकलने लगा था। उसे बुझा दिया।

सीढ़ीपर बड़ी देर तक खड़ा मालूम नहीं क्या क्या सोचता रहा। फ्राउ ग्राफको प्रोफेसरके घरमें प्रवेश करानेका सारा दोष मेरा था। मेरी संगतिका ही नाजायज फायदा उठा वह प्रोफेसरके आवश्यक काग़ज़ चुरा शत्रुओंके हवाले किया करती थी।

आँखोंके सामने लड़ाईका दृश्य नाच रहा था: सोवियत यूनियनपर शत्रुओंने हमला किया है, लड़के और स्त्रियाँ जहरीले गैसकी शिकार बन रही हैं, तोपोंके गोलोंसे हजारोंकी संख्यामें वीर जवान भुने जा रहे हैं, शहरोंकी सड़कोंपर पिघला हुआ लोहा बह रहा है,—उसकी बाढ़ शायद मेरे नज़दीक तक आने लगी।

मैं अपने आपको कोसने लगा था। अवस्था बर्दाश्तके बाहर होती जा रही थी। दूसरेकी तो बात ही दूर रही, अपना चेहरा प्रकाशमें नहीं आने देना चाहता था। मनमें एक बार आया—"क्या रास्ता बंद हो गया है?"

उत्तर मिला—"अब भी उम्मीद है! पर जल्दी......"

आज बेला दरवाजेके पास नहीं मिली। 'उसका तो मैंने ही खून किया, अब वह मिलेगी कैसे?'—कहता हुआ मैं घरमें दाखिल हुआ। बेलाके कमरेसे उसके नींदमें साँस लेनेकी आहट आ रही थी। 'शायद वह अभी भी बचाई जा सके' सोचकर सीधे टेलिफोनके पास आया।

सारा शरीर काँप रहा था। इच्छा हुई—‘ सीधे गे० पे० ऊ० को सारी बातें बतला दूँ, वे अपना सम्हाल लेंगे, अभी भी मौका है ! ’ पर याद आया—‘ वे क्या इतनी जल्दी विश्वास कर लेंगे ? मामला क्या इतनी जल्दी शान्त हो जायगा ? प्रोफेसर क्या फिर पहलेकी तरह मेरे ऊपर विश्वास करेंगे ? और बेलाके लिए क्या उसका ‘साश्का’ बना रहूँगा ? ’

“ अभी तो शायद वे मुझे भी जेल ले जायें। एक खास अफ़सर इस मुकद्दमेकी जाँच करेगा। जिरह महीनों चलती रहेगी। मैं भी विश्वास-घाती,—फिर जनता,—मज़दूर जनता किस तरह मेरी बाते सुनेगी ? ”

मेशिनगनका ‘ त...त...त...त... ’ शब्द मनमें गूँज रहा था और उसीकी तरतराहटसे कपार ठनक रहा था। कौन लोग भूने जायँगे ? मैं यदि चुप रह जाता हूँ तो क्या नतीजा होगा ? प्रोफेसर, बेला, मैं... नहीं सिर्फ़ हम तीनों ही क्यों, बहुतसे,—सोवियत भूमिमें जितनोंको जानता हूँ, सब उस बर्बरताके शिकार बन जायँगे,—उन्हीं लोगोंमें,—बेलाको तो मार ही डाला—तान्या...तान्या......यह तान्या कौन ? हाँ वही...जहाज़में मिली थी, वह भी ख़त्म हो जायगी ! ”

आज बहुत दिनोंके बाद उसका चेहरा आँखोंके सामने आया। मैंने टेलिफोन हाथमें ले लिया। उधरसे लड़कीकी आवाज़ आई ! बेला... नहीं तान्या होगी। मैंने काँपते हुए स्वरमें कहा—“ गे० पे० ऊ० ! ”

कुछ ही देर बात सादी पोशाकमें एक व्यक्ति हमारे दरवाजेपर आ खड़ा हुआ। उसे मैंने सारी बातें कह सुनाईं। उसने कहा—“ तुम अच्छे ‘ तवारिश ’ हो। ”

यह व्यंग नहीं; खुफियाके मुँहसे निकले शब्द नहीं, मज़दूरके मुँहसे निकले शब्द थे।

पहले पहले ‘ तवारिश ’ जिस दिन सुना था उसकी याद करने लगा। काँप उठा। सारी रात नींद नहीं आई।

६

" तवारिश " के यहाँ जाऊँगा। उसीने तो कहा था कि प्रोलेटारियाटको मनुष्य प्यारा है। यहाँ यदि कोई मनुष्य कुछ समयके लिए हानिकारक प्रवृत्ति रखता है, समाजके लिए खतरनाक साबित होता है, तो भी उसका जीवन जेलोंके सींकचोंके भीतर बंद रख यंत्रणा दे बरबाद नहीं किया जाता बल्कि उसे फिरसे शिक्षित बनाकर समाजोपयोगी बनाया जाता है। भला ' अपराधियों ' के प्रति ऐसा सुन्दर व्यवहार! अवश्य ही मजदूर-राजमें वैसे सेनाटोरियम (स्वास्थ्य-सुधारके स्थान) होंगे जहाँ ' अपराधों ' को धोया जाता होगा।

"मेरे लिए यही रास्ता है। प्रोफेसर मुझे अपने यहाँसे चले जानेके लिए कहें, उसके पहले ही मुझे यहाँसे चल देना चाहिए। उतने सुन्दर महान हृदयको मैंने तकलीफ पहुँचाई है, अब और अधिक यहाँ रहना ठीक नहीं।

" लेकिन यह सब तो मुझसे अनजानमें हो गया। मैं तो अपने लिये धन नहीं चाहता था। मैंने किसी ज़मीन्दारीका बंदोबस्त नहीं किया, अकेलेके लिए सुखी जीवन नहीं चाहा,—इस प्रकारकी इच्छा रखनेवालोंसे मैं अनजानमें कुछ कह रहा था,—यही हमारा अपराध है। इसकी वास्तविक प्रायश्चित्त ' तवारिश ' के ही पास हो सकेगा। "

ये ही बातें सोचता देर तक बिस्तरेपर लेटा रहा। बेलाने आकर कई बार जगाया। मैं उठा नहीं। उसने कंधा पकड़ जोरोंसे झकझोरते हुए जगानेकी चेष्टा की। हाथ पकड़ खींचने लगी। मैं उसके लिए बहुत भारी साबित हुआ। झुँझला कर मैंने कहा—" जाओ यहाँसे! "

" यह डाँट तो खोखोल अपनी स्त्रियोंको दिया करते थे,—लेकिन ज़ारके ज़मानेमें। " वह मुसकराने लगी—" अब तो वह ज़माना बीत गया। "

उसने गुदगुदी दी। मैंने करवट बदल ली।

" प्रोफेसर साहबको चाय दे आऊँ । " कह कर वह चली गई लेकिन दो मिनट बाद फिर लौट कर कहा—" उठो ! "

इस बार मैं उठ बैठा। उसने पूछा—"आखिर तुम्हें हुआ क्या है ?"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया । वह अपने आपपर झुँझला कर कहने लगी—" मैं क्या करूँ ? "

मुझे दांतोंसे कंधेपर काटा, फिर भी मैं न बोला ।

" तुमने तो वास्तवमें ही मुझे बूढ़ी बना दिया "—वह धीमे शब्दोंमें कहने लगी—" मैं सिगरेट पी पी कर फेफड़ा खराब कर रही हूँ । कहो तो अब झुर्रियाँ छिपानेके लिए पाउडर लगाना शुरू करूँ ।...हाँ, मैं असलमें निकल जाऊँगी । घरसे भी चली जाऊँगी अगर तुम चायके लिए नहीं आए—देखना..." थोड़ी देरमें लौटकर कहा—" चलो, तुम्हारी बुलाहट है ! "

८

" अई ! अई ! सास्का......! " प्रोफेसर साहबने कहा—" यह क्या ? तुम्हारे चेहरेपर तो जर्मन लोगोंका कत्चेनयामर है ?" (रात-भर खूब अधिक मौज करने पर दूसरे दिन जो विशेष प्रकारकी थकावट और आलस आता है उसे जर्मनमें कत्चेनयामर कहते हैं; इसका शाब्दिक अर्थ है—बिल्लियोंकी पीड़ा ।)

" नहीं ! " कहते हुए मैंने जम्हाई ली ।

" नहीं क्या ? यह तो तुम्हारा चेहरा ही कह रहा है । कहीं जाकर थोड़ी देर क्यों नहीं फिर आते ! उक्रैन तो अभी तुमने पूरा देखा नहीं । इस प्रकार मन मारे रहनेसे कैसे काम चलेगा ? "

" मैं भी यही सोच रहा हूँ कि कहीं घूमने निकलूँ । "

" हाँ ! हाँ ! क्यों नहीं । " उन्होंने मुसकराते हुए कहा—" जरूर ! लेकिन बेलाकी तो यहाँ आवश्यकता पड़ेगी । "

" मैं अकेला ही जाऊँगा । "

" बहुत अच्छा, जाओ ! घूमो ! मौज करो ! इसमें सोचना क्या है ? मेरे नामपर जितने रुपये चाहिए ले लेना ! "

उन्हें जल्दी थी । मेरी पीठपर थपकी दे वे चले गये ।

मैं अपना थोड़ा-सा सामान पीठपर बाँध बाहर निकला । दरवाज़ेपर बेलासे टकरा गया ।

" यह क्या ? " उसने पूछा

" घूमने निकला हूँ । "

" लेकिन मुझसे तो तुमने छुट्टी ली नहीं । "

" अब लेता हूँ । नमस्कार..."

" नहीं, मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी । " वह मुझे एक कमरेमें खींच ले चली ।

" मैं स्वार्थी नहीं ! " उसका गला रुँधा था । स्वर काँप रहा था— " कोई भी आदमी लोहेका नहीं । हम-तुम एक ही धातुके बने हैं साश्का ! "

वान्का

१

कीवका रेलवे-स्टेशन वास्तवमें तरह तरहके आदमियोंका एक अच्छा खासा अजायबघर बन रहा था। सिर्फ रूस ही क्यों, सारे एशिया और यूरोपमें ढूंढ़ आनेसे शायद ही कोई वैसी जाति बची होगी जिसका प्रतिनिधि वहाँके मुसाफिरखानेमें उपस्थित न रहा हो। जितने प्रकारकी वेश-भूषा उतने ही प्रकारकी भाषाएँ और भाव व्यक्त करनेके ढंग दिखाई दे रहे थे।

एक जगहपर पूर्वी यूरोपके ऊँची नाक और पतली ठोढ़ियोंवाले यहूदी येवरेई भाषामें चेंचें चींची मचा रहे थे। बातें उनके मुँहसे लच्छेदार वाक्योंमें और इस इतमीनानके साथ निकला करतीं कि किसीको भी यह संदेह करनेकी गुंजायश नहीं रह जाती कि वे मछलीका मोल-भाव तय नहीं कर रहे हैं।

उनके पास ही डोन, द्निपर, द्निस्तर दरेंके कोज़ाकोंके प्रतिनिधि थे। चेहरा जितना भव्य, बातें उतनी ही कम और मैले दाँतोंसे घुल-मिलकर पिसती हुई निकला करतीं। मुसाफिरखानेके गरम होते हुए भी न तो उन्होंने अपने सरपरकी खालोंवाली टोपी उतारी थी और न अपना मोटा ओवरकोट ही उतार कर हाथमें लेनेका कष्ट किया था। उलटे टोपियोंकी घुंडी खोल उनने ठोढ़ी बाँध ली थी और ओवरकोटके चारों तरफ़ बेल्टके

स्थानपर रस्सी बाँध रक्खी थी।

मुसलमानी दुनियांके प्रतिनिधि चुस्त पाजामा पहने थे। शेरवानीके ढंगका लंबा कुरता भी उनके शरीरपर वर्तमान था। पर '.खुदा हाफिज' के स्थानपर रूसी 'दस्विदानियाँ' (विदा) मुँहसे निकलनेके कारण स्पष्ट हो जाता था कि वे रूसमें रहनेवाले मुसलमान हैं।

उक्रैनकी लड़कियोंने अपने पहनावेके रंगनेमें संसारका कोई भी रंग छोड़ नहीं रक्खा था। बेल-बूटोंमें भी इजिप्शियनसे लेकर जापान तकके चलन लगा रक्खे थे। बातें उनकी पूरा मुँह खोलकर हुआ करतीं और आवाज़ टनटनाती रहती।

सजे हुए यूरोपीय लिबासमें भी दो-चार सज्जन वहाँ आ इकट्ठे हुए थे जिनकी ज़बान फ्रेंच, जर्मन या अँगरेजी थी; शायद सोवियट भ्रमणके लिए आया हुआ पश्चिमी यूरोपियन लोगोंका यह छोटा-सा काफला था। इनकी पोशाक यूरोपके लिए साधारण रहनेपर भी यहाँ बड़े ढंग और तरतीबवाली दीखती थी। औरोंकी तुलनामें ये अधिक साफ़ सुथरे और धनी भी दिखाई देते थे, इसी कारण इनके विदेशी होनेमें किसीको संदेह नहीं हो सकता था।

और भी अनगिनत तरहके लोग उस अजायबघरमें वर्तमान थे पर न तो उनकी ओर देखनेकी मुझे फुरसत थी और न हल्ला-गुल्लाके कारण उनका बहस-मुबाहिसा ही स्पष्ट सुन सकता था। मेरा ध्यान सामने टँगी हुए बड़ी-सी घड़ीके काँटेपर था। उसके पाँचपर पहुँचनेमें आधे घंटेकी देर थी। यह समय मुझे किसी प्रकार उस मुसाफिरखानेमें बिताना था। प्लेटफार्म पर जानेवाला फाटक अभी भी खुला नहीं था पर लोग धीरे धीरे उस ओर खिसकते जा रहे थे। मैं भी उसी ओर बढ़ा।

उस लम्बे हॉलके ठीक बीचमें लेनिनकी वक्तृता देनेकी मुद्रामें ताँबे की एक विशाल मूर्ति थी। पहले मेरा ध्यान इस ओर नहीं गया था, पर इस समय उधरसे एक गानेकी आवाज़ आनेके कारण देखने लगा। चीथड़ोंमें लिपटा बारह-चौदह वर्षका एक लड़का गा रहा था। उसी

वेशमें पर उम्रमें कुछ छोटी एक लड़की उसे सुर देती जा रही थी—

" उमरु, उमरु, उमरु या...

आनिक्तोनिय उज़्नायेत गंद मगिलका मया। "

उनके गानेका भावार्थ था—मैं यहाँपर ही मर रहा हूँ, मर जाऊँगा; मर रहा हूँ, मर जाऊँगा: पर कोई भी नहीं जानेगा कि मैं यहीं दफ़नाया गया हूँ। सिर्फ वसन्तके वक़्त कठफोरवा पक्षी (खंजन) जब उत्तरी देशोंसे लौटेंगे तो मेरी क़ब्रपर बैठकर विश्राम लेंगे!

ठीक यही गाना इसी स्वरमें पहले और कभी मैं सुन चुका था; कब सुना था इसीकी याद करने लगा।

२

पिछली सर्दीके मौसिममें कीवके एक रास्तेके फूटपाथपर उसे देखा था। सर्दी कड़ाकेकी पड़ रही थी। वह वर्षों पुराने चिथड़ोंमें लिपटा दाँत कटकटा रहा था। हिम और हवासे बचनेके लिए घुकैया मारकर बैठा था। दाँत कटकटानेकी आवाज़ शायद रास्ता चलनेवाले आसानीसे नहीं सुन पाते इसीलिए वह ऊपरके गानेका सुर गुनगुना रहा था।

मैं उसे अपने घर ले जाना चाहता था पर वह तैयार नहीं हुआ। उसे शायद यह सन्देह हो गया था कि मैं गे० पे० ऊ० का आदमी हूँ और उसे ठगकर जेल भिजवा दूँगा। सोनेका बन्दोबस्त कर लेनेके लिए मैंने उसे कुछ पैसे दिये थे पर दूसरे दिन भी वह ठीक उसी जगह मिला। पूछनेपर उसने उत्तर दिया—" हम लोगोंका अपना बन्दोबस्त हमेशा ही बना रहता है। "

मैंने उन लोगोंके 'अपने बन्दोबस्त'का भी दृश्य एक दिन देखा था। जो सड़कें मरम्मत की जाती होतीं उनपर ही उन लोगोंका डेरा रहा करता। लकड़ीका कोयला गरम करनेवाले टबके चारों तरफ़ ये लेटे रहते और उसे ही आगकी तरह तापा करते। वही स्थान उन लोगोंके 'क्लब'का

भी काम किया करता, क्योंकि वैसे स्थानोंपर ही वे एक दूसरेसे मिला करते, उनका आपसमें परिचय होता और वे अपने आगेके भ्रमणका प्रोग्राम तय किया करते। उनके दलमें कुछ लड़कियाँ भी रहतीं।

ऐसे लड़के-लड़कियोंको रूसी लोग 'बेजप्रिजोर्नी' (मातृ-पितृ-हीन, टूअर) कहा करते थे। उन दिनों रूसका शायद ही कोई ऐसा बड़ा शहर होगा जहाँ ये अभागे 'बेजप्रिजोर्नी' देखनेको न मिलते हों। देशके दक्षिणी हिस्सोंमें उनकी संख्या अधिक होती थी। इसका कारण यह था कि उन स्थानोंकी सर्दी उतनी भयानक नहीं रहती।

उन टूअरोंसे मिलिशिया (रूसमें पुलिसका काम करनेवालोंको 'मिलिशिया' कहते हैं) को भी बहुत तंग होना पड़ता। रास्तोंपर चुरा-छिपाकर लूट-पाट द्वारा ये टूअर अपनी गुज़र करते और यदि उससे काम नहीं चलता तो करुण रसके गीत गागाकर भीख माँगा करते। रेल, ट्राम, मोटरलारियोंमें छिपकर सफर किया करते और मौका मिलते ही मुसाफिरोंका सामान लेकर चलते बनते। पाकेट काटनेमें भी ये काफ़ी होशियार होते। ये उम्रमें तो छोटे होते पर प्रायः बड़े ही खतरनाक हुआ करते। किसीकी जान तक ले लेनेमें इन्हें हिचक नहीं हुआ करती। रूसी मिलिशियाको इन्हीं कारणोंसे अपनी बहुतेरी शक्ति इनके पीछे खर्च करनी पड़ती, फिर भी इन्हें काबूमें रख सकना आसान नहीं था।

चेहरा देखनेपर ये निरपराधिताकी मूर्ति और दयाके पात्र दीखते पर हुआ करते सब घुटे हुए। उनसे और बातें तो दूर रहीं साधारणसे साधारण बात स्वीकार कराना असम्भव दीखता। आवश्यकता न रहनेपर भी स्वभाववश प्रत्येक पगपर ही वे झूठ बोला करते।

उन लोगोंकी अवस्था, प्रकृति आदि देखकर यह जान लेना कठिन नहीं था कि वे सोवियत संस्कृतिसे कुछ बाहरके लोग हैं। सोवियत जनताके आचार-विचार, रहन-सहन आदिको देखते हुए यह आश्चर्य हुआ करता कि आखिर इस प्रकारके अभागोंका उस भूमिपर होना क्यों कर

सम्भव हो सका। वे तो पूँजीवादी राष्ट्रोंमें पाए जानेवालों जैसे थे।

पर थोड़ा ही विचार करनेपर और रूसके महासमरके बादके इतिहास पर एक दृष्टि डालनेपर यह स्पष्ट हो जाया करता कि ये टूअर चार सालके महासमर और उसके बाद तीन साल तक लगातार चलनेवाले गृह-युद्धके अवशिष्ट जीवित स्मारक थे।

टूअरोंके आविर्भावमें सबसे बड़ा हाथ सोवियत सरकारके शत्रु ज़ार-शाही ज़मानेके बड़े बड़े ओहदेधारी सफेद सेना (ह्वाइट गार्ड) के अफसरोंका था। उन्होंने गाँवके गाँव उजाड़ दिए थे, हजारों निर्दोष आदमियोंका क़त्लेआम करा दिया था। देशका कृषि-शिल्प तो नष्ट ही कर दिया था, समाज-व्यवस्थाको भी इतना बड़ा धक्का पहुँचाया था कि उसे सँभाल पाना आसान काम नहीं था।

वान्काके चेहरेपर एक दृष्टि जाते ही ये बातें मेरी आँखोंके सामने एक साथ ही नाच गईं।

३

"पैसे चाहिए?" मैंने उससे पूछा। पाकेटमें हाथ डालकर मनी-बेग भी ढूँढ़ने लगा।

मेरे पास खड़ा एक युवा खोखोल (उक्रैनियन) हँसने लगा। उसने कहा—"इससे क्या लाभ! आज यहाँ बहुतसे विदेशी आये हैं। यह उन्हींके पीछे हैं। अभी पिछले हफ़्ते मैं ऐसे ही लड़कोंको टूअरोंके उप-निवेशमें रख आया था। वे भाग गये। वहाँ इन्हें किसी बातकी तकलीफ़ नहीं,—कपड़े, खाट, भोजन सब कुछ दिये जाते हैं फिर भी ये नहीं टिकते। पहचानमें आ जायँगे इसलिए वे नये कपड़े कहीं बेच देते हैं और अपने पुराने चीथड़े धारण कर लेते हैं। इनके चेहरेसे ही आप क्यों नहीं पहचान लेते कि ये खूँखार टूअर जातिके हैं?"

वह व्यक्ति यह कहकर चला गया। प्लेटफार्मपर जानेका फाटक खोल

दिया गया था। एकाएक बहुतसे आदमी भीतर जानेके लिए टूट पड़े। युवा खोखोल उन्हीं लोगोंके सिलसिलेसे भीतर जानेकी व्यवस्था करनेमें लग गया।

मैंने अपना मनी-बेग निकाल लिया था। रेल-टिकट गेटपर दिखानेके लिए हाथमें ले लिया। मनी-बेगसे दो-तीन छोटे छोटे सिक्के निकालकर वान्काके हाथमें दिये। उस समय भी दो-चार सौ रुब्लके नोटोंके कारण मनीबेग मोटा था। टिकट दिखलाकर गाड़ीमें सवार हुआ। उस छोटेसे कम्पार्टमेण्टमें चार आदमियोंकी जगह थी। रूसी रेलोंमें यह सुविधा है कि दूर सफ़र करनेवाले एक पूरी बेञ्च दखल कर सकते हैं और छोटी-सी रकम और खर्च की जाय तो रेल-कम्पनीसे बिछौने, तकिया, ओढ़ना आदि भी मिल जाता है। इसी बन्दोबस्तके लिए मैं फिर नीचे उतरा। खोखोल युवक चाय पी रहा था, एक गिलास पी लेनेके लिए उसने मुझे भी निमंत्रित किया। चायके पैसे चुकता करनेके लिए मैंने मनी-बेग निकालना चाहा तो पाकेट खाली !

मैं आश्चर्यमें आ गया। लौटकर तुरत जिस कम्पार्टमेंन्टमें चढ़ा था वहाँ गया, प्लेटफार्मपर ढूँढ़ा, जहाँ बड़ी देर तक मुसाफिरखानेमें खड़ा रहा था वहाँ ढूँढ़ा। नहीं मिला। मामला क्या है ? अपने सब पाकेट ढूँढ़ डाले।

"मैंने आपको उसी समय सावधान कर दिया था।" युवा खोखोल कहने लगा—"जो गया वह फिर मिल नहीं सकता। आप इतनी असावधानी क्यों दिखलाते हैं ? खैर, जाकर गे० पे० ऊ० के दफ्तरमें खबर दे दीजिए, वह प्लेटफार्मपर ही है।—नहीं, मैं भी आपके साथ चलूँ।"

कुछ दूर साथ जानेपर उसने कहा—"आप देखते रहिए, जरूर उसीने चुराया है, मैं अभी एक गे० पे० ऊ० को बुलाता हूँ।" वह हाथ झटकारता हुआ आगे चला गया।

मैं नरम गद्दोंवाले कम्पार्टमेण्टके सामने खड़ा था। प्लेटफार्मपर घेरे गये लोहेके सींकचोंके बाहरसे वान्का उस समय भी भीतर झाँक रहा था।

मेरी दृष्टि उसीकी ओर थी। कम्पार्टमेण्टकी ओरसे आवाज़ आई—
"हलो..."

वह आवाज़ मेरे लिए दी गई थी। मैंने उधर सर घुमाया। फ्राउ ग्राफके परिचित एक जर्मन इञ्जीनियर मुँहमें लम्बी सिगार लगाये खड़े थे। उन्होंने पूछा—"कहिए, आप इतने व्यस्त क्यों?"

मैंने अपना किस्सा कहा, उन्होंने सहानुभूति दिखलाते हुए कहा—

"इसमें तो आश्चर्यकी कोई बात नहीं। जिनके हाथमें चोरोंको पकड़नेका काम है, वे ही लोग तो ऐसा कराया करते हैं। गे०पे०ऊ०को विदेशियोंपर हमेशा ही शक रहता है। उनके जानते खून करनेके लिए विदेशी हमेशा ही पाकेटोंमें बम भरकर चला करते हैं। मुकाबिलेमें पूछनेसे तो उनका काम खराब हो जायगा इसीलिए वे दूसरोंसे विदेशियोंके पाकेटकी चीज़ें चुरवा लेते हैं। क्या मनी-बेगमें बहुत-सी चीज़ें थीं?"

"जी नहीं, सिर्फ़ चार सौ रूबलके नोट और कुछ खुदरे कोपेक थे।"

"तब कोई हर्ज नहीं, वे आपको मिल भी सकते हैं। पर यदि उसके साथ कोई ख़त या कोई काग़ज़ हो तो हरगिज़ नहीं मिलनेका।"

वर्दी पहने हुए गे० पे० ऊ० के साथ खोखोल आ पहुँचा। वान्काकी ओर दृष्टि पड़ते ही वर्दीधारी हँसा। दोनों शायद पहलेसे परिचित थे। वान्का पीछे फिरकर भागा।

"इधर गार्ड साहबने भी अपनी सीटी बजाई। मैं पशोपेशमें पड़ गया। चढ़ूँ या गाड़ी छोड़ दूँ। अन्तमें गाड़ीपर सवार हो लेना ही तय किया। गाड़ी धीरे धीरे सरकने लगी कि वान्काको लिये वर्दीधारी भी पहुँच गया। वे भी हमारे ही डब्बेमें सवार हो गये।

वान्काने कहा—"लेकिन मैंने तो नहीं चुराया, तवारिश स्लाविन्स्की!"

वर्दी पहने गे० पे० ऊ० का सदस्य जी खोलकर हँसने लगा—"तुम्हें तो मेरा नाम भी याद है! देखता हूँ, दिमाग़ तो तुम्हारा कम तेज़ नहीं।"

"फिर मुझे आप पकड़कर क्यों लिये जा रहे हैं?"

"क्या तुम्हें कोई तकलीफ़ है? भूख लगी है? चलो अगले स्टेशनपर भर-पेट खाना खिलाऊँगा।"

"मैं तो जेलमें नहीं रहूँगा।"

"यही तुम्हें कैसे मालूम कि तुम्हें जेलमें रक्खूँगा?"

"और आपका काम ही क्या है?"

"तुमने बहुत अच्छा कहा!" वे फिर हँसने लगे। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि अपराधीके साथ अफ़सर इस प्रकार हिल-मिलकर बातें कर रहा है! वान्काके हाथमें हथकड़ी नहीं, कमरमें रस्सी नहीं, चुरानेके लिए उसे धमकी नहीं।—आख़िर वह काबूमें ही कैसे रहेगा?

सचमुच स्लाविन्स्कीने अगले स्टेशनपर भोजन मँगवाया। उन्होंने मुझे भी भोजन करनेके लिए बाध्य किया। वान्का बिना किसी हिचकके तीन आदमियोंका खाना खा गया। फिर कम्पार्टमेण्टके बरामदेमें खिड़कीसे बाहर झाँकने लगा। इस वक़्त सर्दी भी लगने लगी थी। वान्काने अपना चीथड़ा बेंचपर ही छोड़ दिया था।

"क्या सर्दी उसे बिलकुल लगती ही नहीं?" मैंने पूछा।

"नहीं," स्लाविन्स्कीने हँसते हुए उत्तर दिया—"इसे अभ्यास हो गया है।"

"ऐसे लोगोंका सँभालना तो बड़ा मुश्किल होता होगा?" मैंने उनकी चुप्पी भंग करनेके लिए पूछा।

"हाँ, ज़िन्दे बाघको पकड़नेकी अपेक्षा यह कम कठिन नहीं। समाजके प्रति क्रोध इनके भीतरसे हटाए नहीं हटता। जिस समाजसे इन्हें बदला लेना था वह तो यहाँ नष्ट कर दिया गया, पर इन्हें यह समझाना कठिन है। इन्हें ज़ारके अफसर अथवा विदेशी सेनाका शिकार बनना पड़ा है। उसीने इनके मनपर इतना बड़ा आघात पहुँचाया है कि वह घाव अच्छा करना इतने दिनोंके बाद भी बहुत कठिन हो रहा है। इन लोगोंका किसी समाजके ऊपर विश्वास नहीं, हरएक आदमीको राक्षसके रूपमें देखते हैं,

कैसी भी व्यवस्था माननेके लिए ये तैयार नहीं।"

"लेकिन इसमें तो नुकसान इनका अपना ही है? ये तो अपना ही जीवन इस प्रकार नष्ट करते हैं।"

"इसमें भी कोई सन्देह है! लेकिन आपको मालूम है, मध्य एशियामें ताआजी नामकी एक बहुत ही दलित और सताई गई जाति रहती थी। उनमें शत्रुओंके प्रति इतना अधिक क्रोध और घृणाका भाव था कि वे युद्धमें जानेके पहले अपने दोनों कान स्वयं काट लिया करते थे जिससे वे भयावने दीखें और उनकी प्रकृति अधिक खूँखार और खूनकी प्यासी हो जाए। हमारे यहाँके इन बेजप्रिजोर्नियोंकी भी यही हालत है। ये जानते हैं कि इनके इस प्रकारसे जीवन यापन करनेके कारण इनकी अपेक्षा अधिक शर्म और कष्ट सोवियत सरकारको है। मज़दूर सरकार ऐसे ना-समझ अभागोंको अपनी समाज-व्यवस्थाके ऊपर सबसे बड़ा धब्बा समझती है, इसीलिए ये लोग और भी अधिक उच्छृंखलता दिखलाते हैं। दूसरे देशोंमें ऐसे हजारों मिलेंगे, पर उनकी कोई परवाह नहीं करता, इसीलिए वे इनके जैसे आततायी भी नहीं।"

उन्हें वास्तवमें दुःख हो रहा था, यह उनके चेहरेसे स्पष्ट हो जाता था।

हम लोग देर तक बातें करते रहे। थोड़ी रात बीतनेपर उन्होंने स्वयं ही कहा—"अब हम लोग सोयें।"

उस डब्बेमें हम तीनोंके लिए बिस्तरे लग गये थे। मैंने ऊपरका बर्थ लिया। नीचे वान्का और स्लाविन्स्की सोये।

खारकोव पहुँचनेके पहले ही मेरी नींद टूटी। स्लाविन्स्की भी उठे। उन्होंने वान्काको जगाया। उसका पता नहीं। उसने बिस्तरा मोड़कर इस प्रकार चादर डाल दिया था कि वह नहीं है, यह संदेह करनेकी गुंजायश तक न रहे। हम लोग चारों तरफ़ टट्टीघर तकमें ढूँढ़ आये पर कहीं भी उसका पता न चला।

"अब सबसे पहले मुझे यह पता लगाना है कि किसीका सामान तो

चोरी नहीं गया ! वान्काकी दृष्टि बगलके डब्बेमें सवार विदेशी लोगोंके सामानपर थी।" स्लाविन्स्कीने कहा।

डब्बोंकी बनावट इस प्रकार थी कि चलती गाड़ीमें भी आदमी इञ्जिनके पाससे गार्डके डब्बे तक घूम आ सकता था। स्लाविन्स्कीने एक चक्कर लगाकर कहा—"नहीं, आज रात चोरी तो नहीं हुई।"

"और वान्काका कुछ पता चला ?"

"नहीं, पर चोरी नहीं हुई इससे संदेह होता है कि वह अभी इसी गाड़ीमें है।"

वे सावधानीपूर्वक एक बार फिर शुरूसे आखिर तक देख आये पर वान्काका पता न लगा।

खारकोवमें उतरनेके पहले मैंने अपना सामान फाटकके पास ला रक्खा। वहाँ उस समय तक काफी अँधेरा था। हठात् मेरी दृष्टि ऊपरकी ओर गई। कोई चीज़ हिल रही थी। मैंने उस ओर स्लाविन्स्कीको दिखलाया। वह स्थान थैलीके जैसा और बहुत ही संकीर्ण था। गाड़ियोंके मरम्मत करनेके कुछ औज़ार उस स्थानपर रखे जाते थे पर उस दिन वह खाली था। पहचानमें आ जानेपर वान्काको उस थैलेसे बाहर निकलना पड़ा। स्लाविन्स्कीने कहा—"यहाँ शायद तुम्हारे लिए बिस्तरसे ज़्यादा आराम था ! ख़ैर।"

४

गाड़ीसे उतर कर ज्यों ज्यों बेजप्रिजोर्नी गारदके नज़दीक पहुँचता गया मेरी छाती अधिकाधिक धड़कने लगी। बहुतसे भाव एक साथ ही बाहर निकलना चाहते थे जिनमें कुछ पसन्द थे और कुछसे चिढ़ थी। बार बार जो भाव मनमें आता था वह यह था कि क्या तान्यासे मुलाकात होगी ?

तान्याके नामके साथ ही साथ इटली छोड़नेके बादका अपना सारा इतिहास आँखोंके सामने आ गया। समुद्रमें जहाजके एक छोरपर रेलिंगका

सहारा लिये उसे खड़ा देखा था। ध्यानपूर्वक उसका चेहरा पहले पहल उसी दिन देखा था। उसकी शक्लकी वह झलक अभी भी उदास नहीं हो पाई थी। उसे मैंने जान-बूझकर और दूसरे मज़बूत भावोंके निकलनेका मौका देनेके लिए एक कोनेमें डाल रखा था।

कीवमें रहते समय उसका एक पत्र भी मिला था, वह उसके चेहरेकी अपेक्षा कहीं शुष्क था। रोस्टोवसे विदा लेनेके बाद फिर साक्षात उसे आज देखूँगा, यही विचार न मालूम क्यों मुझे कँपा रहे थे।

आफिसकी सीढ़ियोंपर था, उसी समय कमरेके भीतरसे उसकी हँसी सुनाई दी। बिना इत्तला दिये ही भीतर चला गया। वह मेजपर बैठ अपने चारों तरफ बैठाये गये नये पकड़े आये बेजप्रिजोर्नियोंकी कोई दिलचस्प कहानी सुन रही थी। हँसीकी रेखायें अब भी उसके चेहरेपर थीं।

"तान्या!" मैंने ही पुकारा।

"अरे! तुम यहाँ कैसे?"

वह उछलकर मेरे पास आ गई और मेरे दोनों हाथ कसकर दबाये।

"देखिए डाक्टर, यही मेरे दोस्त हैं जिनकी चर्चा मैं आपसे किया करती थी। लेकिन मैं तो समझती थी कोजाकोंने तुम्हारा हाड़ हाड़ सुखा दिया होगा, पर तुम तो दूरसे ही चमक रहे हो। और इतनी अच्छी रूसी कहाँसे सीखी? कोज़ाकोंसे? तुम्हारी बेला कैसी है? बेला,—हाँ, यही नाम तो तुमने लिखा था और खोखोल कैसे पसन्द आये? आज ही तो अखबारमें देख रही थी, कई विदेशी इंजीनियर कीवमें पकड़े गये हैं। यह तो बतलाओ, तुम इतनी जल्दी सरसे पाँव तक रूसी कैसे बन गये? अब विदेशियोंकी याद आनेपर तुम्हारी याद पहले पहल नहीं आयगी। और साथमें डोनकी मछलियाँ नहीं लाये?"

मेरे उत्तरकी बिना प्रतीक्षा किये ही वह स्वयं बोलती जाती थी। एक आध बार तोतलाने भी लगी। अपने भावोंको निकालनेका दरवाज़ा

उसे नहीं मिल रहा था। वह कमरेके चारों तरफ़ देख आती पर एक सेकंडसे ज्यादा उसकी दृष्टि कहीं भी नहीं टिकती।

"चलो, हम अपने डेरेपर चलें!" वह मेरा हाथ पकड़ खींच ले चली। रास्तेमें उसने कहा—"तुम्हें यहाँ देखकर विश्वास नहीं होता कि तुम आये हो। और मैं भी......। खैर, जाने दो। डाक्टरके पूछनेपर मैंने कई बार उत्तर दिया था कि तुमसे मेरा साधारण परिचय है, अब तो उन्हें इसपर विश्वास नहीं होगा। खैर, इसे भी जाने दो। कैसे रहे, कहाँ रहे,—सब कह सुनाओ। नहीं, अभी उसकी ज़रूरत नहीं। उसमें देर लगेगी। अभी मैं तुम्हारे रहनेकी कोठरी दिखला दूँ। मैं रहती हूँ उसकी बगलवाली...।"

५

डाक्टर बैठे हुए 'बेजप्रिजोर्नियों' (टूअरों) की परीक्षा लेने लगे। एकसे उन्होंने छाती खोलनेके लिए कहा। उनके कानमें आला लगा था। वह लड़का हिचक रहा था। वान्का उसीके बगलमें आकर बैठ गया था। उसने अपना चीथड़ा तुरत ज़मीनपर फेंक दिया और सीना तान कर डाक्टरके सामने खड़ा हुआ। बिना पूछे ही उसने अपने जीभ और दाँत दिखाये, आँखोंकी पपनियाँ भी उलट लीं।

"देखता हूँ, कई बार तुम परीक्षा करा चुके हो क्यों!" डाक्टरने हँसते हुए कहा—"अब तो तुम्हें ही डाक्टर बनना चाहिए!"

"नहीं, मैं डाक्टर नहीं बनना चाहता...थू..." वान्काने वहींपर थूकते हुए उत्तर दिया।

"ऐसा क्यों?"

"वे हम लोगोंको नाहक तंग किया करते हैं। कुछ रोग नहीं, फिर भी बार बार छातीकी हड्डी खटखटाते हैं,—आँख दिखाओ, तो दाँत,—फिर जीभ! अब हम अँगूठा दिखाया करेंगे।'

इस बार सब बेजप्रिजोर्नी हँसने लगे।

६

"मैं मूर्ख नहीं—" वान्काने पहले दिनसे ही कहना शुरू किया—"गदहा नहीं कि काम करूँगा!"

"फिर करोगे क्या?" तान्याने पूछा।

"तुम्हें आँखें नहीं! देखती हो, जैसे बैठे बैठे सिगरेट पी रहा हूँ वैसा ही पीता रहूँगा।

वान्काको नये आये और भी चार बेजप्रिजोर्नियोंके साथ एक अलग कमरा दिया गया। सबको लोहेकी स्प्रिंगवाली खाट, नयी चादर, तकिया, बिछौना, कंबल दिया गया। पढ़ने-लिखनेकी सुविधाके लिए एक बड़ा-सा मेज और पाँच कुरसिया भी दी गई। कमरेमें बिजलीकी रोशनी लगी थी।

ये लोग वलोद्या नामक एक पुराने बेजप्रिजोर्नीके निरीक्षणमें रखे गये। उसे वहाँ रहते चार वर्ष हो चुके थे। पहले साल वह तीन बार भागा था और उसने एक खून भी उसी उम्रमें किया था पर इधर दो सालसे उसके जीवनने भारी पलटा खाया था। अब उसका रुख कुछ दूसरा ही हो गया था।

पर पहले दिन ही यह स्पष्ट होने लगा कि वलोद्याकी अपेक्षा वान्कामें संगठन करनेकी शक्ति अधिक है। नये चार साथियोंको उसने अपने काबूमें कर लिया और उनका सरदार भी बन गया। वह उन साथियोंके साथ सिर्फ वलोद्या ही नहीं बल्कि समूचे स्कूलके आधिपत्यसे निकल बाहर 'स्वच्छंद' जीवन बिताने जाना चाहता था। उसने अपने चार साथियोंको इस बातमें पक्की तरहसे सहमत कर लिया कि बाहरका जीवन कैसा भी क्यों न हो, स्कूलके जीवनसे कहीं 'सुखकर' होगा।

उसी रात वहाँसे निकल भागनेका उन्होंने निश्चय कर रखा था। जानेके पहले कमरेकी प्रत्येक चीज़ नष्ट कर देना चाहते थे। संध्याके

पहले ही उन्होंने अपने कमरेमें लगे बिजलीके तार दाँतोंसे काट डाले, बल्ब फोड़ दिया, स्विच उखाड़ कर कमरेके बाहर फेंक दिया।

दूसरे कमरेके लड़के ताश, शतरंज, डोमिनो,—तरह तरहका खेल खेलने लगे। वान्काके साथियोंने ताश चुरानेकी समूचे तीसरे पहर कोशिश की पर सफल न हुए। वलोद्या पहरेपर था। अन्तमें वान्काने इसकी स्वयं कोशिश की। लौटते समय वलोद्याने उसे बरामदेमें देख लिया और कहा—"यहाँ तो ताश मुफ्तमें मिलते हैं, दिनको सिर्फ आफिसमें कहने-भरकी ज़रूरत है।"

वान्का अपने कमरेमें लौट आया। रोशनी वहाँ थी नहीं। अपने साथियोंको ले बरामदेमें ताश खेलना चाहा। पर रास्तेपर बैठनेसे दूसरे कमरेवालोंने ऐतराज़ किया। यदि किसी दूसरे वर्गके आदमीने मना किया होता तो वान्का उन लोगोंकी बात कदापि नहीं मानता; पर यहाँपर मना करनेवाले उसीके साथी थे जिनके लिए उसके भीतर 'इज्जत' और भय दोनों ही था। वान्काने अपनी अँधेरी कोठरीमें लौटकर अपने साथियोंसे कहा—"इसीलिए तो कहता हूँ, इन सड़ी दुर्गंधपूर्ण बंद कोठरियोंकी अपेक्षा सड़कपर रात बिताना कहीं अच्छा है। वहाँ रात-भर रोशनी जलती है और ताश क्या, जो भी खेल चाहो खेलनेसे तुम्हें कोई नहीं रोकता।"

वे लोग अपने निश्चयपर दृढ़ रहे। जब आसपासके कमरेवाले सो गये तो वान्काने अपने कमरेका दरवाजा बंदकर अंधकारमें कमरेकी चीज़ें नष्ट करना शुरू किया। उन्होंने चादर फाड़ डाली, कुरसियाँ तोड़ डालीं मेजके पटरे अलग कर डाले,—लोहेकी चारपाई तोड़ नहीं सके पर बड़े परिश्रमसे उन्होंने उसके एक एक स्प्रिंग अलग कर दिये। कई घंटोंतक वे अथक परिश्रम करते रहे। स्प्रिंग जब ढीले नहीं होते तो दाँतोंसे होंठ दबाकर खूब जोर लगाया करते जिससे वे खुद सबके सब पसीने पसीने हो जाते।

और कुछ तोड़ना-फोड़ना बाकी न रहा तो वे एक एक कर खिड़कीके रास्ते बाहर कूदे। वान्काके पाँवमें शीशा गड़ गया। बेजप्रिजोर्नी ऐसे

मौकोंपर ' उह-आह ' तो किया नहीं करते। लंगड़ाता हुआ वह उठ खड़ा हुआ। पर पाँव बहुत कट गया था; धूल छिड़कनेसे भी जब खून बंद नहीं हुआ तो अपने चीथड़ेका एक टुकड़ा फाड़ उससे बाँधने लगा।

वलोद्या इस समय तक जग पड़ा था। उसने अपनी खिड़कीसे वान्काकी ओर संकेत कर कहा—" तुम लोगोंने गलती की। पक्के बेजप्रिजोर्नी तुम नहीं। खिड़कीसे कूदनेकी तुम्हें क्या आवश्यकता थी? तुम्हारा दरवाजा तो किसीने बन्द किया नहीं, खुद तुमने ही उसे भले बंद कर रखा हो। "

वान्का और उसके चारों साथी खिड़कीके ही रास्ते अपने कमरेमें चले गये और सूर्योदयके बाद भी बहुत देर तक सोये रहे।

दूसरे दिन सुबहको अगल-बगलके कमरेवालोंने जब फिर उन्हें चीथड़ोंमें लिपटा पाया तो वे जी खोल कर हँसे। उनके लिए ऐसे अनुभव प्रायः ही हुआ करते थे; आज वे भले ही बदल गये हों पर एक दिन उन्होंने स्वयं भी वैसा ही किया था।

जीवनमें पहले पहल वान्काने अपने साथियोंके बीच अपनेको 'नीचा' पाया। अब वे पहले पहल यह बर्दास्त नहीं कर पाये कि उनके साथी साफ सुथरे सजे सजाये कमरोंमें रहें, सुन्दर नये कपड़े पहनें और वे स्वयं चीथड़ेमें ही रह जायें और उनके ' अपने ' कमरेकी चीजें उस प्रकार टूटी और अव्यवस्थित अवस्थामें रहें।

तुलनाकी भावना जाग्रत होते ही वे अपने कमरेकी टूटी हुई चीजें फिरसे बनाने लगे। बिजलीका तार दो सप्ताह तक दुरुस्त करते रहे पर ठीक बना नहीं। दूसरे लड़कोंमें एकने, जिसने बिजलीका काम सीखा था, मदद की और बटन दबाते ही कमरा उजेला हो गया। वान्काको यह बात बहुत खराब लगी कि उसके हजार बटन दबानेपर भी रोशनी नहीं जली और वही काम उसके साथीने एक मिनटमें पूरा कर लिया। अपनी यह कमी वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

७

हम लोगोंके स्कूलके लड़कोंके छोटे छोटे झुंड शहर घूमने जाया करते। पहले भय रहा करता था कि शहर देखकर कहीं उन्हें अपना पुराना जीवन न याद आ जाये और फिर वे कहीं गायब न हो जायें, पर इधर कुछ दिनोंसे वे बिजलीका काम सीखने लगे थे और उसीमें वे उतने तन्मय रहते कि उनके भागनेकी संभावना कम दीखती। शुरू शुरूमें ऐसा भी हुआ था कि अपनी पुरानी आदतके अनुसार लड़के किसी किसी दुकानसे कोई चीज़ शिक्षकसे छिपा कर चुरा लिया करते, पर अब यह भी बंद हो चला था।

लड़कोंको कभी कभी ट्राममें बैठा कर टहलानेके लिए ले जाया जाता था। एक दिन पाँच लड़कोंको घुमाने ले जानेकी मेरी बारी थी। इन लड़कोंमें वान्का और उसके चार साथी थे। पिछले महिनोंमें उनका स्वभाव अवश्य ही बहुत कुछ बदल गया था। फिर भी वे मुझे अबतक ख़तरेसे बिलकुल बाहर नहीं दीखते थे।

बीच शहर आनेपर वान्का हम सबके पीछे पीछे चलने लगा। एक स्थानपर वह रुक भी गया—शायद किसीसे बातें करने लगा था। बार बार उसकी ओर देखते रहना भी ठीक नहीं था क्योंकि वह अपने ऊपर मेरा अविश्वास समझ जान-बूझकर कुछ उपद्रव खड़ा करनेकी चेष्टा करता जिससे मैं और भी अधिक चिढ़ूँ। हम लोग ट्राममें सवार हुए। वान्का पिछली खिड़कीके पास खड़ा रहा। ट्राम खुली। थोड़ी दूर आगे बढ़नेपर देखा—कोई दस-बारह वर्षकी गंदे कपड़े पहने बेज-प्रिजोर्नी लड़की ट्रामके पीछेके 'ज्वायंट' पर बैठ गई। वान्का उसे देख हँसा करता और उस लड़कीके चढ़ने-उतरनेकी कुशलतापर ताली लगाया करता। लड़की ट्रामके पीछे इस प्रकार छिपकर बैठा करती कि ट्राम कंडक्टर या कोई मुसाफ़िर उसे देख नहीं पाता। ट्राम खड़ी होनेपर

लड़की दरवाजेके पास आ जाया करती और अच्छे कपड़े पहनने-वालोंकी ओर देखा करती। वान्का उसे 'नहीं नहीं' का इशारा किया करता। मैं यह खेल बड़ी देर तक देखता रहा।

चौकपर ट्राम कुछ देरतक रुकी। ट्रामके फाटकसे दो क़दम पर टौर्गसीन (रूसकी वैसी दुकानें जहाँ सोना-चाँदी या विदेशी सिक्का देकर ही चीज़े खरीदी जा सकतीं थीं) दूकान थी। ट्रामके पीछे बैठकर सफर करनेवाली लड़की उसके दरवाजेपर जा खड़ी हुई। वान्काने इस बार भी 'नहीं, नहीं' का इशारा किया। लड़कीको ध्यानसे देखनेपर याद आया मैंने उसे आखिरी बार कीवके स्टेशनपर देखा था। कभी कभी वान्काके साथ फुटपाथपर भी वह गाया करती थी। वान्काके नज़दीक आकर मैंने पूछा—"क्या है वान्का ?"

"कुछ भी नहीं।" उसने सर नीचा कर लिया। वह समझ गया कि उसकी चाल मैं देरसे देखता आ रहा हूँ। टौर्गसीन दुकानसे एक अर्ध-वयस्क विदेशी जोड़ा हाथमें बहुत-सा सामान लिये सड़कपर खड़ी अपनी मोटरकी ओर बढ़ता चला आ रहा था। चाल ढालसे वे अमेरिकन मालूम पड़ते थे। कमसे कम रूसमें उन दिनों उतने अच्छे कपड़े पहननेवाले सबके सब अमेरिकन ही कहे जाते थे। उस स्त्रीके कपड़े इतने सजे धजे थे कि उसे वास्तवमें ही 'एलिगैंट' कहना पड़ता। उसके साथका पुरुष स्मोकिंग सूट (विशेष उत्सवोंके मौके पर पहनी जानेवाली पोशाक) पहने हुआ था।

उस स्त्रीके हाथमें दो बोतलें दीखती थीं। एक काली,—शायद उसमें स्याही रही होगी और दूसरी कीमती शराबकी। वह बिजलीके खंभेके पास पहुँच पाई थी कि उसी समय हमारी ट्राम खुली। दुकानके दर-वाजे पर खड़ी बेजप्रिजोर्नी लड़की ट्रामकी ओर दौड़ी। उससे टक्कर लगनेकी संभावना न रहते हुए भी अमेरिकन स्त्रीकी बोतलें खंभेसे टकरा कर चूर चूर हो गईं। उनके कपड़े बड़े बेहूदे स्थानोंपर गीले हो गये,

साथ ही पाउडर-पुते चेहरेपर भी स्याहीकी बूँदें जा पड़ीं जो बड़ी ही स्याह दीख रही थीं। लाल किये हुए होंठोंपर भी स्याही फिर गई थी। उनके पतिने तुरत ही बेजप्रिजोर्नी लड़कीको लपककर पकड़ लिया। वह ट्रामके पीछे अभी बैठ भी नहीं पाई थी कि उसी समय हठात् पीछे खींच लिये जानेके कारण वह मुँहके बल सड़कपर गिर गई। होंठ कट गये, नाक छिल गई, चेहरा खूनसे भरने लगा। अमेरिकनने बिना उसके मुँहकी ओर देखे उसके बाल पकड़कर खींचे और एक छड़ी जोरोंसे जमा दी। उनकी स्त्रीने गुस्सेमें आ अपने बगलमें दबाया बैग गिर जाने दिया, हाथसे एक बार चेहरा पोंछ उसे चारों तरफसे समान रूपसे काला बना बेजप्रिजोर्नीके बाल अपने मुट्ठीमें पकड़ लिये और ताकत-भर खींचना शुरू किया। लड़की चिल्लाने लगी थी। वान्काने ट्रामसे कूदकर अमेरिकन औरतके बाल पकड़ लिये, उसके चारों साथी पहुँचकर घटना-स्थल घेर चुके थे।

इस वक्त तक चौकपर खड़ी मिलिशिया भी वहाँ पहुँच गई थी। उसे देखकर अमेरिकन औरतको उच्च कंठस्वरमें सब रूसकी चीजोंको अपनी भाषामें गाली देना याद आ गया। मिलिशियाने पहले बेजप्रिजोर्नी लड़कीको छुड़ाकर अलग किया और फिर अमेरिकन स्त्रीके चेहरेकी ओर देखा। अपनी ड्यूटी भली भाँति याद रखनेपर भी उनका स्याही-पुता चेहरा और बेढंगे तरीकेसे गीला हुआ कपड़ा देख वह अपनी हँसी रोक नहीं सका। अमेरिकन सज्जनको और भी अधिक चिढ़ हुई। मिलिशियाने उन्हें डाँटते हुए कहा—"नागरिक, आपको कानून अपने हाथमें ले लेनेका हक़ नहीं था। आप स्वयं इस लड़कीको सज़ा नहीं दे सकते थे। यहाँ सोवियत सरकार है जिसके यहाँ नालिश की जा सकती है।"

आसपास काफ़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। दो-तीन आदमी स्वयं ही पंच बन गये और उन्होंने मामला शान्त कर दिया। अमेरिकन अपनी

मोटरमें बैठ स्त्रीके साथ रवाना हो गये। जाते जाते उन्होंने चिल्लाकर कहा—

"यहाँ शैतानोंका राज्य है।"

"कोई हर्ज़ नहीं नीना!" वान्का बेजप्रिजोर्नी लड़कीको समझा रहा था—"ऐसा तो तू कितने ही बार भुगत चुकी है। रोती क्यों है? कीवमें तो तुझे इससे भी अधिक चोट लगी थी, उस वक्त तो बहादुरकी तरह तूने सम्हाला था, तेरे मुँहसे एक बार भी 'उह' नहीं निकली। चल हमारे साथ चल। नीना अपनेको निरपराध समझ रही थी। उसने तो उस दिन कुछ चुराया नहीं फिर उसके ऊपर मार क्यों पड़ी? हाँ, वह ट्रामके पीछे पीछे छिपकर चली आ रही थी,—पर ऐसा तो उसने बहुत बार किया है, किसी अमेरिकनने उसे उसके लिए टोका तक नहीं; रूसी तो खैर उस ओर ध्यान देते ही नहीं।

पार्कमें टहलते टहलते उसने कहा—"वान्का, आज तूने मार खिलाई है।"

"यह कैसे?"

"ये अच्छे कपड़े पहननेवाले जेब काटे जानेपर ही ठीक रहते हैं। तूने आज उन्हें बझाए नहीं रखा, नहीं तो मैंने उन्हें..."

वह दाँत पीसने लगी। फिर कहा—"अब तो वान्का, तू भी बदल गया। अच्छे कपड़े पहननेमें तुझे शरम नहीं आती?"

मुँह-हाथ धोकर थोड़ा शान्त होनेपर उसने कहा—"लेकिन ट्रामके पीछे वैसे बैठना क्या सचमुच ही उतना बड़ा अन्याय है जिसके लिए मैं इतनी पीटी गई?"

"जानती है नीना!" वान्काने थोड़ा सोचकर कहा—"हम क्या करेंगे? हम अपनी ट्राम बनाएँगे और उसपर मज़ेसे चढ़ेंगे। ट्राम हमारी होगी। मैं उसके भीतर बैठूँगा। तू उसे हाँकेगी, क्यों?"

अपराधियोंकी शिक्षा

१

बेजप्रिजोर्नियोंका स्कूल बहुत ही निराले ढंगका था। शिक्षक और विद्यार्थी दोनोंके ही दृष्टिकोण और प्रकारके स्कूलोंमें पाये जानेवालोंसे बिलकुल ही भिन्न थे। चोरी, डकैती, बदमाशी, शैतानी, झूठ, मार-काट आदि जितने सामाजिक दृष्टिसे दुर्गुण हुआ करते हैं उनका यहाँ एक विशेष ढंगसे अध्ययन किया जाता और इन दुर्गुणोंके दूर करनेका रास्ता निकाला जाता था।

इस प्रकारके स्कूलोंको यदि हम सोवियत सरकारकी 'हैवानसे आदमी बनानेवाली प्रयोग-शालाएँ' कहें तो अधिक उपयुक्त होगा। उस प्रयोगशालाके संचालकोंकी दृष्टिमें मनुष्य जितने भी प्रकारके सामाजिक अपराध करता है, वे वास्तवमें मानवी स्वभावके लिए अस्वाभाविक हैं और यदि किसी किसी मनुष्यका दुष्ट स्वभाव बन जाता है तो इसमें उस मनुष्यकी अपेक्षा ज़्यादा अपराध उस समाज-विशेषका होता है जिसके बीच वह रहता है। उसी समाज-विशेषका दबाव,—उसका दंड-विधान मनुष्यको पक्का अपराधी,—मनुष्यसे हैवान बना देता है। उसकी सुन्दरसे सुन्दर मानवी भावनाएँ नष्ट हो जाती हैं।

इसमें भी मज़ा तो यह है कि वे मानवी भावनाएँ—अपनी वह मनुष्यता, 'अपराधी' स्वयं ही नष्ट करने लगता है।—ऐसा क्यों? जिस

समाजमें वह सताया गया होता है उसके ऊपर क्रोध रहनेके कारण। यह क्रोध कितना भयानक होता है, इसका अन्दाज़ लगाना भी बातोंकी तहमें गये बिना कठिन ही है। पर क्रोध किस सीमा तक पहुँच जाता है, इसका अन्दाज़ पहली ही दृष्टिमें लगाया जा सकता है। साधारणतया यह उस सीमा तक पहुँच गया होता है जब मनुष्य अपने आपको नष्ट कर देनेका निश्चय ही नहीं बल्कि प्रण-सा कर लेता है। मनुष्य जिस आघातसे अपने आपको नष्ट कर लेनेका प्रण कर ले वह आघात कितना बड़ा होता होगा?

बेजप्रिजोर्नी स्कूलोंका सबसे पहला काम होता था, अपराधियोंकी यह गलत प्रतिज्ञा भंग करना। यह काम आसान नहीं होता। उस प्रतिज्ञाके पीछे 'अपराधी' अपनी सारी शक्ति लगा दिया करता है। सिर्फ़ दुष्ट भाव ही नहीं बल्कि उस व्यक्तिकी रही सही मानवी भावना भी उस प्रतिज्ञाको भंग होनेसे रोकती है। 'समाजने हमें नीचा गिरा दिया है,' यह वास्तविकता होते हुए भी मन जल्दी स्वीकार नहीं करता। उसका उत्तर हुआ करता है—'लेकिन मैं तो नीच नहीं—'। समाज-बुद्धि कहती है—'तुम नीच जरूर हो।' इसी बुद्धिकी जिस समय विजय होती है—'मैं नीच नहीं' यह भाव दब कर नष्टप्राय हो जाता है और उसके स्थानपर आता है—'अगर मैं नीच हूँ तो मुझे नष्ट हो जाना चाहिए'। एक बार—'हम अपनेको नष्ट करेंगे'की भावना आ जानेपर मनुष्यके बाह्य कार्य समाजके लिए बहुत ही अधिक हानिकारक होने लगते हैं। धीरे धीरे अपनेको नष्ट करनेकी क्रियामें,—समाजको अधिक हानि पहुँचानेमें समर्थ हो रहा हूँ यह सोचकर अपराधीके मनमें आनन्द होता है। इस आनन्दके कारण उसके भीतर वह शक्ति आती है जिसके बल बर्फ़पर बिना यथेष्ट कपड़ोंके सो रहनेपर भी वह ज़िन्दा रह सकता है। इस प्रकारके कार्य उसके लिए 'साधना' बन जाते हैं।

शिक्षककी सत्शिक्षा—'तुमने झूठी प्रतिज्ञा की'—जैसी बातोंपर अपराधीका विश्वास नहीं जमता। वह समाज-विरोधी कार्यको ही सत्यके अधिक निकट समझता है और उसे ही जायज करार देता है। 'अपराधी' समाजको हानि पहुँचानेको बहुत बड़ा और ऊँचा सिद्धान्त मानने लग गया होता है, इसीलिए उसकी प्रतिज्ञा तोड़नेमें काफी समय और परिश्रम लगता है।

'अपराधियों' की वह विशेष प्रकारकी प्रतिज्ञा ज़ोर कर नहीं तोड़ी जा सकती और न उसे दुत्कार या धिक्कार कर उसका ज़ोर कम किया जा सकता है। इस 'ज़ोर' 'दुत्कार' 'हुक्म'में 'अपराधी' आधिपत्य देखता है। मन ही मन वह बहुत पहलेसे ही सब प्रकारके आधिपत्यको,—चाहे वह अपनेपनके भावके कारण ही क्यों न हो, ठुकरा चुका होता है। इसीलिए, जोर दुत्कार आदिका असर उसपर और भी अधिक खराब होनेकी संभावना रहती है।

इन्हीं विचारोंके कारण खारकोवके उस बेजप्रिजोर्नी स्कूलके सब संचालक एक बातमें पूरी तरह सहमत थे कि बेजप्रिजोर्नियोंको सुधारना सिर्फ़ सोवियत सरकारसे ही नहीं बल्कि सारे मानव-समाजसे लिया गया सबसे बड़ा जवाबदेहीका काम है।

२

बिजलीकी करामात देखकर बेजप्रिजोर्नी स्कूलके सब विद्यार्थी आकर्षित होते थे। धीरे धीरे वे यह भी देखने लगे थे कि उन सबके स्विच दबानेपर रोशनी हो जाया करती है। अब वे क्रमशः सोचने लगे थे—"ऐसा क्यों होता है?" वे बिजलीके भीतर छिपी हुई शक्ति देखना चाहते थे। दूसरे शब्दोंमें, वे उसका विज्ञान जानना चाहते थे।

उनकी जाननेकी इस उत्सुकताने उनका ध्यान और सब बातोंसे खींचकर इस ओर लगा दिया था। इसी उत्सुकताके मारे उन्होंने अपने

यहाँकी बिजली तैयार करनेवाली मशीनके पुरजे पुरजे अलग कर डाले। उन पुर्जोंको फिरसे ठीक उनके अपने स्थानपर बैठा देना आसान काम नहीं था, पर विद्यार्थी उसपर भिड़ गये थे। बाहरके मिस्त्रीको उसे ठीक करनेके लिए बुलानेके पक्षमें वे नहीं थे। पर साथ ही उसे जल्दी ठीक कर लेनेकी उन्हें उत्सुकता भी थी क्योंकि उसके बिना उनका शामका खेल तथा विनोदका कार्य-क्रम लगभग एक सप्ताहसे चौपट हो रहा था।

अन्तमें हार कर उन्हें एक मिस्त्रीको बुलाना पड़ा। मिस्त्रीने मशीन ठीक कर दी। लड़कोंने उसे चारों तरफसे घेर लिया। मिस्त्रीने लड़कोंसे ही उस मशीनको कई बार सिलसिलेसे खुलवाया और तैयार करवाया। जाते जाते उसने लड़कोंसे कहा—"भाई टेक्निक (शिल्प-कला) ही सब कुछ है। उसके सामने आदमियोंकी गिनती कुछ नहीं।"

"हम यह टेक्निक सीखेंगे।" लड़कोंने एक स्वरसे कहा।

"बड़ी अच्छी बात है।" उन्हें उत्तर मिला।

उन दिनों खारकोवमें ट्रैक्टरका विशाल सोवियत कारखाना तैयार हो चुका था। उसीके एक विभागमें बिजलीके काम सीखनेकी भी सुविधा थी। बेजप्रिजोर्नी स्कूलके संचालकोंने कारखानेके संचालकोंसे बात करके इन लड़कोंकी उस कारखानेमें काम सीखनेकी व्यवस्था कर दी।

पर वह कारखाना स्कूलसे कुछ दूर था। विद्यार्थियोंको रोज पाँच मील जाना आना पड़ता था। साथ ही वे यह भी देखते थे कि मोटरसे जाना-आना बड़ा आसान था पर उनके स्कूलके पास मोटर नहीं थी। स्कूल-संचालकोंके सामने जब उन्होंने मोटरकी माँग पेश की तो उन्हें उत्तर मिला—पहले मोटर बनाना तो सीखो। खुद बनाकर उसपर चढ़नेमें ज्यादा आनन्द है!

स्कूलके पास ही कई गाँव थे। उन गाँवोंमें कुछ मज़दूर भी रहा करते थे। उन्हें ले जाने और लौटा लानेके लिए कारखानेसे रोज़ाना लाल रंगका

'बस' आया करता था। विद्यार्थी अपने जीवनकी उन मज़दूरोंके जीवनसे तुलना करते और अपने जीवनमें बहुत-सी कमी पाते। रोज़ाना मज़दूरोंकी संगतिमें काम करते करते उनके न जानते हुए सिर्फ़ उनका बाहरी लिबास ही नहीं बल्कि आन्तरिक प्रकृति भी बदलती जा रही थी। वे अपने जीवनसे मजदूरोंका जीवन अधिक सुखी मानने लगे थे और इसीलिए अपना जीवन भी उन्हींके ढंगपर बदल लेना चाहते थे।

विद्यार्थियोंकी मोटरपर चढ़नेकी बहुत अधिक इच्छा देखकर मज़-दूरोंने अपनी इच्छासे उन्हें एक दिनके लिए अपनी मोटर दे दी। मज़ा एक बार चख चुकनेपर पैदल कारखाने जाना विद्यार्थियोंको और भी खलने लगा। उन्होंने आपसमें तय किया—ये मज़दूर मोटर बनाते हैं और इसीलिए उसपर चढ़ते हैं; हम लोग भी मोटर बनाएँगे और उसपर चढ़ेंगे।

कुछ जो उनमें होशियार गिने जाते थे उन्होंने कहा—"हम उससे भी अच्छी और सुविधाकी चीज़ें बनाएँगे। क्या बिजलीके उपयोगसे वह चीज़ नहीं बन सकती?"

"जरूर बन सकती है।" सारी जमातने उत्तर दिया।

"तो फिर बनाएँ।"

उन्हें अपने ढंगकी न छोड़े जा सकनेवाली धुनने आ घेरा।

३

खारकोवकी नगर-सोवियत इधर कुछ दिनोंसे स्वयं ही शहरके पूर्वी छोरसे आसपासके गाँवोंको मिलाते हुए ट्रेक्टर-फैक्टरी तक ट्राम-लाइन बनानेका विचार कर रही थी। यह लाइन लगभग दस मील लंबी होती। पर दूरीकी उतनी बड़ी समस्या नहीं थी जितनी रास्तेमें पड़नेवाले नालोंकी। उनके कारण बहुतसे पुल तैयार करनेकी आवश्यकता थी और मिट्टी सख़्त थी।

पर ट्रेक्टर-फैक्टरीमें काम करनेवाले मजदूरोंकी संख्या दिनपर दिन बढ़ती जा रही थी। कारखाना आरम्भ होनेके चंद महीनोंके ही बीच यह संख्या पैंतीस हज़ार तक पहुँच गई थी और अभी उसके और भी बढ़नेकी संभावना थी। इतने मजदूरोंके रहनेका बंदोबस्त उतनी जल्दी कारखानेके पास ही कर लेना बड़ा कठिन था। जितने मकानोंकी आवश्यकता थी उनके बनानेमें अभी कुछ वर्ष लग जाते। फिलहाल आसपासके गाँवोंके मजदूरोंको कारखाने तक पहुँचानेकी समस्या बड़ी विकट होती जाती थी। कितने ही गाँवोंतक मामूली सड़क भी नहीं थी और जहाँ थी वहाँके लिए भी मोटर-बसोंकी संख्या बहुत कम थी।

मज़दूर शहरसे अपने गाँवोंको मिलाते हुए कारखाने तक ट्राम-लाइन निकालनेके लिए बहुत ज़ोर लगा रहे थे। ऐसे मौकेपर बेजप्रिजोर्नी स्कूलसे ट्राम-लाइन बनानेका प्रस्ताव आया तो मज़दूर और नगर-सोवियत दोनोंने ही उसका स्वागत किया। स्कूलके लड़कोंने सिर्फ़ सड़क और पुल बनानेका ही भार अपने ऊपर नहीं लिया था बल्कि नगर-सोवियतको यह भी आश्वासन दिया था कि उन लड़कोंमें बहुत-से बिजलीका काम सीख चुके हैं जो फिटिंगका काम आसान कर देगा। इतना ही नहीं, वे अपनेमेंसे कुछ आदमियोंको भावी ट्राम-लाइनमें काम करनेके लिए भी देनेवाले थे। लड़कोंका यह प्रस्ताव कामको बहुत आसान कर देता था, क्योंकि उन दिनों सारे रूसमें काम करनेवालोंकी बड़ी कमी थी। जितने मज़दूर मिल सकते थे उनकी शक्तिका उपयोग राष्ट्रके लिए सबसे आवश्यक मेशीनें तैयार करनेवाले कारखानोंमें किया जाता था। ऐसे मौकेपर स्कूलके पाँच-छः सौ लड़कोंकी मदद नगर-सोवियतके लिए कम नहीं थी।

हिचक सिर्फ़ स्कूल-संचालकोंको थी। भीतर ही भीतर उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि उनके छात्र इतनी बड़ी जिम्मेदारीका काम पूरा कर सकेंगे। पर नगर-सोवियत, कारखानेके मज़दूर और अपने छात्रोंके

निर्णयके सामने उन्हें झुकना पड़ा । स्कूलके लड़कोंके प्रतिनिधि मजदूरोंके साथ शर्ते कर आये थे । उसके अनुसार कामका बँटवारा कर लिया गया था ।

साथ ही मज़दूर और विद्यार्थियोंमें समाजवादी प्रतिद्वंद्विताकी शर्तें हुई थी । समाजवादी मातृ-भूमिके लिए अधिक उपयोगी साबित होनेके लिए पढ़ने-लिखने, कला-कौशल, सामाजिक व्यवहार आदिके मामलेमें परस्पर सहायता पहुँचाते हुए आगे आनेकी प्रतिद्वंद्विता करेंगे । मज़दूरोंने अपनी शर्तोंके नीचे लिखा था—" अपने पिछले जीवनसे छुटकारा ले अब सोवियत नागरिकोंमें आगे आनेकी चेष्टा करनेवाले, समाजवादी मातृ-भूमिको शक्तिशाली बनानेमें मदद करनेवाले, मजदूर समाजका सर सभ्यताके क्षेत्रमें और भी ऊँचा करनेवाले बेजप्रिजोर्नी स्कूलके छात्र ज़िन्दाबाद ! "

विद्यार्थियोंने उसके नीचे और भी जोड़ दिया था—" हमें नये जीवनका रास्ता सुझानेवाले, बिजलीकी कलाके साथ चारकोलके पासके अन्धकारमय अभागे जीवनसे निकाल कर मनुष्यके प्रकाशमय जीवनमें आनेकी कला बतानेवाले ट्रैक्टर-कारखानेके मज़दूर ज़िन्दाबाद ! "

यह गुरु और शिष्यके बीचकी शर्तें थीं जिनपर दोनों ओरके प्रतिनिधियोंने हस्ताक्षर किये । सबसे नीचे नये सीखे हुए बच्चेके दस्तख़तोंमें लिखा था—" नीना '

वह स्कूलके लड़कियोंके दलकी प्रतिनिधि थी ।

४

नीनाका इतिहास जान लेना आसान काम नहीं । उसका चेहरा देख कर मुझे राजीन्सकी गाँवके कोजाकोंके बीचकी लीजाकी याद आती । मैं दोनोंमें समानता ढूँढ़ने लगता । सिवा आँखोंके और कोई समानता दोनोंमें नहीं दीखती । शब्दोंका उच्चारण कभी कभी कोज़ाक ढंगका

दाँतोंके बीचसे निकलता हुआ रहता। हाव-भावमें उक्रैनकी अपेक्षा किसी कोजाक गाँवमें वह अधिक शोभा देगी, इससे अधिक मैं कुछ पहचान नहीं पाता था।

उसने जीवन व्यतीत किया था बेजप्रिजोर्नीका। उसका इतिहास सोवियत यूनियनके शहरोंकी नई सड़कोंपर गरम चारकोलसे लिखा गया होगा। नए पड़े हुए बरफ़को जब वह अपना गद्दा बना कर सोती होगी तब उसपर उसके दाग़ अवश्य ही उखड़ जाते होंगे पर वे दाग़ भी तो वसंतकी उष्णता पाकर कभीके स्नोके साथ ही विलीन हो गये होंगे।

यदि वह ज़ारके ज़मानेके किसी ज़मींदार अथवा ओहदाधारीकी कन्या रही होती तो अवश्य ही गिरजाघरोंके पादरियों द्वारा लिखे मोटे रजिस्टरोंमें उसका नाम होता। कहीं न कहीं बचपनकी ली हुई दीवारोंपर टँगी और अब कीड़ोंके द्वारा खाई जाती हुई तसवीर होती। ख्यातनाम व्यक्तियोंके बहुत-से परिचित होते हैं, वे खोज खबर लिया करते।

ऐसी कोई भी बात नहीं हुई, इसीलिए नीनाका इतिहास भी अज्ञात था। उसे उसके जाननेकी भी आवश्यकता नहीं थी। प्रकृतिने उसे जितना आघात पहुँचाया था, मनुष्य-समाजने उसके प्रति जितनी कठोरता दिखाई थी और इन दोनोंका सामना करनेके लिए उसे अपनी जितनी शक्ति खर्च करनी पड़ी थी उसके कारण भावुकताका नामोनिशान भी उसके भीतरसे जाता रहा था। पिता-माता कौन-सा सुख-दुख पहुँचाया करते हैं, यह अज्ञात था और इसीलिए अनुसंधान करनेकी बात भी कभी उसके मनमें नहीं उठी थी।

किसी बोर्जुआ उपन्यासकारसे भी वह परिचित नहीं जो अवश्य ही किसी न किसी प्रकारका पिता-माता उसके लिए ढूँढ़ देनेमें समर्थ होता। पर ये पिता-माता भी उसके लिए कौनसे उपयोगमें आते? यदि उपन्यास-कार उन्हें राजसिंहासनपर बैठा हुआ बतला देते तो भी नीना अभी राजसिंहासनकी उत्तराधिकारी नहीं बनने जा रही थी।

इतना होनेपर भी गे॰ पे॰ ऊ॰की दृष्टिसे किसी बातका छिपे रह जाना बहुत कम ही संभव हुआ करता है। जबसे वह उस स्कूलमें भर्ती कर ली गई थी तबसे विशेषरूपसे गे॰ पे॰ ऊ॰को उसका इतिहास जाननेकी उत्सुकता हुई थी। कीवका जो गे॰ पे॰ ऊ॰ वान्काको स्कूलमें भर्ती कराने आया था उसीने नीनाको भी पहचाना। उसके उस लड़कीको पुकारनेका ढँग भी अलग था। उसने सिर्फ़ नीना न कह बड़े अदबके साथ पुकारा —" नीना पेत्रोवना!"

बिजली लगनेकी भाँति नीना चौंक पड़ी। बचपनकी विस्मृत बातें एक क्षणके लिए झलक गईं। उस गे॰ पे॰ ऊ॰ के कथनानुसार नीना पेतर पोक्रूस्का नामक एक कोज़ाककी कन्या थी। पेतर सोवियत सेनाके पक्षमें गृह-युद्धके समय क्रीमियामें लड़ रहा था। उन्हीं दिनों डेनीकीनके सैनिकोंद्वारा वह गिरफ्तार किया गया था। उसे कौम्यूनिस्ट सेनाका भेद बतलानेके लिए तरह तरहकी यंत्रणायें दी गईं और अन्तमें उसका सर धड़से अलग कर काले सागरमें फेंक दिया गया था। पेतरके गाँव-वालोंका कहना था कि मृत्युके कुछ पहले ही उसकी स्त्रीका देहान्त हो चुका था। हाँ, एक छोटी-सी बच्ची बच रही थी जिसे अपने भाग्यके ही भरोसे आगे जीवित रहना था। उस मारकाट, भगदड़ और दुर्भिक्षके ज़मानेमें अपने निजी बच्चोंकी ही ख़बर रखनेकी लोगोंको फ़ुर्सत और सहूलियत नहीं रहा करती थी, बिना मा-बापके बच्चोंकी तो बात ही जुदी है।

नीनाको बचपनकी इतनी घटनायें याद नहीं। याद सिर्फ़ इतनी रह गई थी कि दक्षिणी रूसके किसी हिस्सेमें खरबूज खूब होते हैं, खानेमें वे मीठे लगते हैं, पर तोड़कर खानेवालोंको किसान बुरी तरह पीटा करते हैं। रेलमें चढ़ जानेपर आगे ले जानेकी सारी जिम्मेवारी इंजिनपर रहती है और भूख लगनेपर भीड़वाले स्थानोंमें वह जा खड़ी होती है। लोग जल्दबाज़ीमें रहते हैं और वहाँपर यदि खानेकी कुछ सामग्री चुरा ली जाती है तो खरबूजके खेतोंकी अपेक्षा पकड़े जानेकी कम संभावना रहती है।

आगे चलकर उसने यह भी सीख लिया था कि यदि मुसाफिरका ध्यान दूसरा बटाये रखता है तो उसका पाकेट मार लेना आसान होता है।

स्कूलमें भर्ती होनेके बाद उसके जीवनने भारी पलटा खाया था। पहले वह धूलमें पड़ी रहती थी और अकसर होटलोंकी खिड़कियोंसे मॉगनेपर फेंके गये सूखी रोटीके जले हुए किनारोंसे उसे पेट भरना पड़ता था। अब वह महसूस करती थी कि धूलमें पड़े रहनेकी अपेक्षा चारपाई-पर लेटना अधिक सुखकर है, और रोटीके जले किनारोंकी अपेक्षा सूप और तश्तरी-भरा खाना अधिक सुखकर और स्वादिष्ट होता है। इतना ही नहीं, कमरेमें कुरसीपर बैठकर उतनी स्वादिष्ट चीजोंके खानेपर मारकी तो बात ही दूर रही, कोई आँखे भी लाल नहीं करता। लोग उलटे पूछते हैं—" और भी कुछ चाहिए ? "

५

तान्या उसे स्वयं पढ़ाया करती है। शुरू शुरूमें उसे गुड़ियोंका बहुत अधिक शौक़ था, तान्याने उसकी इच्छानुसार उसे खरीद दीं थीं। अब उधरसे भी उसका जी ऊब गया है। अब फूलोंका उसे खूब शौक हुआ है। सुबह उठ कर खिले फूलोंसे अपने बाल सजाती है और तब तान्याके पास किताब कापियाँ ले पढ़ने आती है।

नीना जिस समय तान्याके पास पढ़ने बैठती है, उसका सौन्दर्य देखने योग्य होता है। गाल उगते सूर्यकी लालीसे प्रतिद्वंद्विता करते होते हैं। चमकती हुई बड़ी बड़ी आँखोंके ऊपर काले धागोंकी भाँति सजी हुई भौंहे उत्सुकतापूर्वक कभी किताब और कभी तान्याकी ओर अपना पासा खोलकर फेंकती हैं। उसके मुँहकी आवाज़ प्रभातके पक्षियोंसे भी अधिक मीठी निकलती है। स्वाभाविक घुँघराले बाल कंधोंको दूर तक ढकते हुए झूलते होते हैं। सड़क परकी नीनाको देख कर इस नीनाको पहचान लेना कठिन था।

औरतें और विशेषकर सुन्दर औरतें किसी दूसरी औरतको बिना किसी ऐबके सुन्दर कहना स्वाभाविक ही पाप समझती हैं, पर तान्या बार बार मुझसे पूछा करती—" नीनाके समान स्वाभाविक सौन्दर्य और कहीं देखा है ? ऐसी आँखे ! यह है वास्तविक कोज़ाक सौन्दर्य ! "

इधर स्कूलके लड़के जबसे ट्राम-लाइन निकालनेकी सोच रहे थे, नीनाको ट्राम चलाना सीखनेकी चिन्ता लगी थी। उसने अपनेको ड्राइवर और समान उम्रकी संगिनीको ट्राम-कण्डक्टर बनाना तय किया था। स्कूलके संचालकोंने शहरमें इसकी व्यवस्था भी कर दी थी।

नीना पहले पहल जिस दिन ट्राम चलानेका सबक लेकर आई थी आनन्द भीतर थामे नहीं थमता था। अपने संगियोंको सुनानेके बाद उसने तान्याको सुनाया। मैं वहाँ पहुँचा तो फिर मेरे सामने दुहराया—" घंटी... टुन...टुन...टुन...। बायाँ हाथ अपनी ओर दायाँ हाथ सामने...। बिजलीका घोड़ा दौड़ चला। हमें इच्छा होती है कि उसको हमेशा ही दौड़ाते चलें। उसकी चाल घोड़ेसे कहीं अच्छी और आवाज़ घोड़ेकी टापसे भी मधुर...। मुझे मालूम होता है जैसे आज पहले पहल ट्राम देखी है। "

थोड़ी देर रुक कर उसने कहा—" ये स्कूलवाले जल्दी लाइन क्यों नहीं तैयार करते ? मैं एक साँसमें शहरसे यहाँ तक ट्राम दौड़ाती चली आऊँगी और आवाज़ कैसी सुन्दर होगी...टुन...टुन...टुन...। सब कोई सामनेसे हट जाओ। "

वह चारों तरफ खड़े लोगोंकी भीड़ चीरने लगी।

६

ट्राम लाइनका काम बड़े जोर-शोरसे आरंभ हुआ। स्कूलके लड़कोंकी उम्र और शक्तिका खयाल रखते हुए जिस कामके लिए इंजीनियर लोगोंने दो सप्ताहका कार्य-क्रम बना रखा था, उसे लड़के दो दिनमें पूरा किया करते।

लड़कोंके काम करनेकी धुनकी उपमा केवल पागलोंकी धुनसे दी जा सकती थी। सब समय उनके मनमें ट्राम ही चला करती थी। काम उन्हें सिर्फ चार घंटे करना पड़ता था; इसके लिए उन्होंने अपनी पारी बाँध ली थी। यदि स्कूलके नियममें भोजन, विश्राम, पढ़ने और सोनेका समय निकालना अनिवार्य नहीं रखा जाता तो लड़के शायद उसकी चिन्ता भी भूल जाते।

इस धुनके सामने किसी प्रकारकी भी कठिनाई टिक नहीं सकती थी। शुरू शुरूमें बड़े बड़े मिस्त्री लोगोंकी सहायता लेनी पड़ी लेकिन आगे चलकर उनका काम लड़के खुद ही कर लिया करते थे। लड़कोंने काम शुरू करनेके पहले ही निश्चित कर रखा था—" हम टेक्निकके मास्टर बनेंगे। "

इस बातको उन्होंने स्वाभाविक तरीकेसे अपना लिया था। उसीको यदि यों कहा जाता कि भाई स्टालिनका कथन है कि अभी सोवियतको बचानेके लिए सबसे आवश्यक है कि यहाँके युवक टेक्निकके मास्टर बनें तो लड़के उतने प्रभावित नहीं होते। किसीके कथनपर शिक्षा ग्रहण करनेकी अपेक्षा जीवनसे ही शिक्षा ग्रहण करना उन्होंने बचपनसे सीखा था और वही उनका वास्तविक स्कूल भी था।

कामके ही साथ साथ लड़कोंका जीवन भी आपसे आप बिना किसीकी चेष्टाके ही बदलता जा रहा था। उनके रहनेका तौर-तरीका अधिक सुन्दर बनता जाता था। वे अब उसकी कमी भी महसूस करने लगे थे और साथ ही उसे दूर करनेके साधन भी उनके सामने मौजूद थे। हालमें कारखानेके मज़दूरोंने उन्हें एक ग्रामोफोन भेंट किया था। पहले सप्ताह उन्होंने उसे चौबीस घंटे चालू रखा। खानेके समय तो सुना ही करते, सोनेके समय भी 'दूरका संगीत' सुननेके लिए खेतमें रख दिया करते और पहरेवाला उसे बजाया करता।

बेजप्रिजोर्नी लोगोंके गाने भी मँगाये गये थे, पर वे उनके सुरसे

अपना सुर अच्छा समझते थे। रेकर्ड बनानेवालोंको बुलाकर उन्होंने अपने गाने उतरवाये। जब गाते गाते उनका गला थक जाता तो अपने गानोंके रेकर्ड ग्रामोफोनपर लगा उसीके तालपर कुदाल और फावड़ा चलाया करते।

ट्राम-लाइन बनानेकी काममें नहीं बल्कि वे खेलमें गिनती किया करते थे। उन्हें देखकर यही प्रतीत होता कि केवल वे अपने मनके आनन्दको प्रकट करनेके लिए उतना परिश्रम कर रहे हैं। फावड़ा चलाना भी मनके आनन्दको व्यक्त करनेका एक रास्ता है, यह वे स्पष्ट कर दिखला रहे थे।

और ये वे ही लोग थे जो स्कूलमें भर्ती किये जानेके समय कहा करते—"हम इतने मूर्ख नहीं कि काम करेंगे!"

७

स्कूलके लड़कोंके कामसे यदि असंतोष था तो वह कुलक (ज़ारशाहीके जमानेके जमींदार और महाजन) लोगोंको था। सोवियत सरकारका विरोध करनेमें वे बेजप्रिजोर्नी लोगोंको अपना साथी समझते थे। उन लोगोंने यह भी आशा लगा रखी थी कि बड़े होनेपर अगली पुश्तमें सोवियत-विरोधी कार्योंका नेतृत्व कुलकोंके स्थानपर बेजप्रिजोर्नियोंके ही हाथमें रहेगा। उनकी इस आशापर पानी फिरता जा रहा था।

साथ ही उन्हें थोड़ा आर्थिक घाटा भी था। उन कुलकोंमें कुछने ताँगे बनवा रखे थे। ट्राम होनेपर उनकी उपयोगिता जाती रहती। दूसरी बात थी—कुलक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे चुराये हुए अन्नकी रोटियाँ छिपकर शहरमें मनमाने दामपर बेचा करते थे। शहरसे गाँवमें आना उतना आसान हो जानेपर यह व्यवसाय भी नहीं चल सकता था।

अपने इसी सैद्धान्तिक और आर्थिक विरोधके कारण कुलक रुकावटें लाने लगे। जब उनके कामका ढंग देख उन्हें स्पष्ट हो गया कि वे किसी

भी प्रकार ट्राम-लाइनका निकाला जाना नहीं रोक सकते, तो फिर वे ऐसे अड़ंगे लगाने लगे जिनसे काममें देर लगे।

वे जब आसपास किसी शिक्षकको नहीं देखते तो झाड़ियोंके बीचसे कहा करते—"थोड़ा विश्राम भी करो! काम करते करते थक गये होगे!"

"थकावट किसे कहते हैं? अभी तो काम शुरू ही किया है।" उन्हें उत्तर मिलता।

"अच्छा, देखो तो, तुम्हारे लिए कैसा सुन्दर उपहार लाया हूँ!" वे वोदकाकी बोतलें दिखाते—"इसकी तेजी ठीक तुम्हारी जवानीके समान है। इसके उपभोग करनेकी यही तो तुम्हारी उम्र है!"

उनके इस प्रलोभनमें कई लड़के आ गये। जब ये लड़के निकट पहुँचते तो कुलक कहते—"तुम्हें पत्थर तोड़ते देख हमें बड़ा दुःख होता है!"

लड़के प्रभावित न होते तो आगे कहते—"तुम्हारे जैसे छोटे छोटे बच्चोंको इस प्रकार पत्थर तोड़ते देख हमारी छाती फटी जाती है। मालूम पड़ता है जैसे सोवियत सरकार रूसको रसातल पहुँचा कर ही दम लेगी।"

लड़कोंके चेहरोंपर अविश्वासकी झलक आने लगती। इसका कारण था कि उन्हें बेजप्रिजोर्नी जीवनमें सबसे अधिक दुत्कार और घृणा करने वाले कुलक ही मिले थे। लड़कोंका रुख पहचान कुलक भावुक बन जाया करते। बनावटी आँसू आँखोंमें ला कहते—"मुझसे तो और बोला नहीं जाता। तुम जैसे हमारे निजी लड़के......" उनका गला रूँध आता।

पर लड़के भावुकताको सबसे अधिक अविश्वास करनेके आदी हो चुके थे। तब कुलक उनकी जवानीकी कई तरहकी कमजोरियोंके साथ खेला करते—"भला तुम्हीं बताओ, पत्थर तोड़नेकी अपेक्षा सुन्दर लड़कियोंके साथ नाचना तुम्हें अधिक पसन्द नहीं आयगा? हमारे गाँवमें

ऐसी सुन्दर लड़कियाँ हैं जैसी तुमने जीवन-भरमें न देखी होंगी। उनके इतना निकट रहते हुए भी तुम लोग पादरियोंका-सा जीवन व्यतीत किया करते हो! इतने शुष्क वायु-मंडलमें तुम लोग क्यों कर जीवित रह पाते हो, यही देखकर हमें आश्चर्य होता है!"

८

कुछ लड़कोंको इस चक्करमें आता देख कुलक लोगोंने उन्हें एक दिन अपने यहाँ निमंत्रित किया। अध्यापकोंसे बिना पूछे निमंत्रण नहीं स्वीकार करना चाहिए, यह लड़के जानते थे, फिर भी किसीका आधिपत्य न माननेका उनका पुराना संस्कार उन्हें बाध्य किया करता था। एक दिन चार-पाँच लड़कोंने छिपकर एक कुलकके यहाँ जाना तय किया। संयोगसे नीना उसी रास्ते कामसे लौटी आ रही थी; लड़कोंने उसे भी अपने साथ ले लिया।

निमंत्रणका स्थान वास्तवमें क्रान्ति-विरोधी, सोवियत-विरोधी विचार-वालोंके इकट्ठे होनेका अड्डा था। शहरमें ऐसे अड्डोंका पता लगा लेना गे० पे० ऊ० के लिए आसान था। इसलिए ये केन्द्र गाँवोंमें बनाये गये थे।

इसी केन्द्रसे एक बार ट्रैक्टर-कारखानेके बिजली-घरको ध्वंस करनेका प्रस्ताव पास किया गया था, पर कई कारणोंसे वह कार्यान्वित न हो सका। इस केन्द्रका संबंध सोवियत-विरोधी विदेशियोंसे भी था। कुलकोंके लिए बाह्य संपर्कका वही एक-मात्र जरिया रह गया था और उन्हींके जरिये वे 'दुर्भिक्ष' के जमानेमें मददकी भी आशा रखते थे।

जिस दिन बेजप्रिजोर्नी निमंत्रित किये गये थे, उस दिन दो अँग्रेज भी वहाँ आ जुटे थे। उनके साथ एककी स्त्री भी थी। अँग्रेजोंके प्रति रूसी जनताकी स्वाभाविक चिढ़के कारण ये अपनेको 'अमेरिकन' कहा करते थे। कुलकोंने उनका परिचय देते हुए कहा—

"ये ही वे दयालु सज्जन हैं जिन्होंने रूसी लोगोंको दुर्भिक्षके समय

भूखे मर जानेसे बचाया है। इन्होंने ही हम लोगोंकी सहायताके लिए अमेरिकासे जहाजके जहाज अन्न भर कर मँगाया था। इन्हें ही वर्तमान रूसका त्राता, हमारा त्राता, तुम लोग अपना उद्धारकर्त्ता..."

नीना और उसके साथके एक और लड़केने कुलकको आगे नहीं बोलने दिया। इन दोनोंने उस 'अमेरिकन जोड़े'को पहचान लिया था। नीनाको अब तक पूरा विश्वास हो गया था कि ये वे ही लोग थे जिन्होंने बिना किसी ज़रूरतके ट्रामके पीछेसे खीचकर उसे पीटा था। उसका खून गुस्सेके मारे गरम होता आ रहा था। उसने कहा—"ये आपके त्राता भले ही हो सकते हैं, पर हमारे जैसे उद्धारकर्ता हैं उसपर थू..."

"तुमने इन्हें नहीं समझा, बेटी!" कुलकने टोका।

"मैं तुम्हारी बेटी नही, ख़बरदार!"

"फिर क्या हम दुश्मन हैं?" अमेरिकन औरतने टूटी फूटी रूसीमें कहा। "हाँ चुड़ैल!" नीना क्रोधमें आ कहती गई—"तू दुश्मन है। मैं तेरे चेहरेपर थूकना चाहती थी पर अब देखती हूँ तू इसके भी योग्य नहीं।"

वह एक लड़केके साथ उठकर चली गई। कुलकने उसे पागल करार दिया। विदेशियोंने इसका समर्थन किया। वोदकाके जोशमें कई बेजप्रिजोर्नियोंने भी हुंकार भरी।

दूसरे लड़कोंने उस सभाकी खबर मिलनेपर कुलकोंका व्यंग-चित्र बनाकर अपने काम करनेके स्थानपर टाँग दिया। इसमें कुलकोंको गधेके रूपमें दिखाया गया था। एक तरफसे ट्राम आ रही थी और कुलक—"हेंकों, हेंकों..." कर उसे डराना चाहते थे और कह रहे थे—"इधर नहीं, इधर नहीं!" ट्राम उधर ही बढ़ती जा रही थी।

९

ट्राम-लाइन तीन महीनेके भीतर ही बनकर तैयार हो गई। बिजलीके

खंभोंपरकी फिटिंगका काम अधिकतर विद्यार्थियोंने ही किया था। इस कलामें वे इसी अर्सेमें मिस्त्रियोंसे भी अधिक दक्ष बन गये थे। जिन खंभोंपर कारीगरोंको सीढ़ीद्वारा चढ़नेकी आवश्यकता होती, लड़के यों ही चढ़ जाया करते। अपनेको खतरेमें डाल कर किया जानेवाला सार काम विद्यार्थियोंने ही हँसते खेलते पूरा किया था।

लाइनके उद्घाटनका एक दिन निश्चित किया गया। उसके उपलक्षमें स्कूल खूब सजाया गया। बिजलीद्वारा सजावटकी बहार खूब बढ़ाई गई। छोटे छोटे कमरोंमें भी बीस बीस बल्ब लगाये गये। मेज-कुरसीकी तो बात ही अलग रही, चारपाई तकमें उन्होंने बल्ब लगाये, यहाँ तक कि स्कूलकी एक बिल्ली तकके गलेमें उन्होंने बिजलीकी बत्ती लटका दी!

उद्घाटनके एक दिन पहले सब आवश्यक बातोंकी जाँच भी कर ली गई। बिजलीका करंट गंभीर स्वरमें—'भन्—न्—न्—न्—न्—' करता हुआ पास करने लगा। सबसे पहली ट्राम शहरकी ओरसे स्कूल तक लानेका भार नीनाने अपने ऊपर लिया था। उस दिन सारी रात स्कूलका कोई भी लड़का खुशीके मारे नहीं सो सका। नीनाको तो अक्षरशः झपकी तक नहीं लगी। वह बार बार अपने सिरहानेकी बत्ती जला घड़ी देखा करती और प्रत्येक बार उसे आश्चर्य होता कि रात उतनी लम्बी क्यों हो रही है। एक बार उसने जान-बूझकर घड़ीके काँटे तेज कर दिये; उसके मनकी गतिके अनुसार वे बहुत सुस्त चल रहे थे।

सुबह हुई। रातमें स्नो नहीं गिरी थी, इसलिए ट्राम-लाइन साफ करनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी। एक दिन पहलेका स्नो जम कर सख्त हो गया था। नीना अपनी संगिनीके साथ उसीपर शहरकी ओर दौड़ चली। वह यह भूल गई कि शहर ले जानेके लिए उस दिन एक मोटरकी व्यवस्था की गई थी। रास्तेमें वह कहती जा रही थी—"बस, आज ही यह अन्तिम बार शहर पैदल जाना है। वहाँ एक बार

बिजलीके घोड़ेपर सवार हुई कि फिर उसपरसे कभी नहीं उतरूँगी। देखना तुम, मैं ट्राम कितनी तेज़ चला सकती हूँ।"

उसी तेज़ीकी धुनमें वह दौड़ती दौड़ती शहर पहुँची। ट्राम खूब सजाई गई थी। पीछे एक रेडिओ और सामने लाऊड-स्पीकर भी फिट कर दिया गया था। ट्रामकी घरघराहटमें नीनाका मधुर कंठ-स्वर नही सुना जा सकता था, इसलिए उसके गाने ग्रामोफोन रेकर्डपर उतार लिये गये थे और उसके ट्राम चलाते समय रेडियोसे उसी गानेके सुनाये जानेकी व्यवस्था की गई थी।

उस ट्रामको घेरकर उतने सबेरे भी शहरके बहुतसे आदमी इकट्ठे हो गये थे। नीना ज्यों ही ड्राइवरकी जगह आ कर खड़ी हुई उसके साथी कंडक्टरके साथ उसका फोटो ले लिया गया। फिल्मवाले भी उसकी तसवीर लेते जा रहे थे। लाल पलटनका एक जत्था उसके पास ही बैंड बजा रहा था। उन्हींके संचालकने एक बार जोरोंसे चिल्लाकर कहा— "...हुर्रा...तवारिशी..."

लोगोंने इसे दुहराया। टेक्निक विजयके संबंधमें नारे लगाये जाने लगे। अभी वे हवामें गूँज ही रहे थे कि कंडक्टरने सीटी बजाई। बड़ी देरसे नीना उसकी प्रतीक्षामें थी। उसके मनमें पहलेसे ही ट्रामकी घंटी टुन...टुन... कर रही थी। अब उसने वास्तवमें टुनटुनाया। सब लोगोंका ध्यान उसके छोटे हाथोंकी ओर था। उन्हीं हाथोंसे थोड़ी खड़खड़ाहट हुई और ट्राम चल पड़ी। भीड़ पीछे—'हुर्रा...' चिल्लाती रही।

रेडियोमें नीनाका प्रिय गान सुनाया जा रहा था। वह स्वयं भी गाती जा रही थी। ट्रामकी रफ्तार उसने तेज की...पन्द्रह...बीस...पच्चीस... तीस...पैंतीस किलोमीटरकी रफ्तार की। अब भी उसे संतोष नहीं था। कंडक्टर भी साथ ही झूमती चिल्लाकर कह रही थी—"और भी तेज! और भी तेज..."

ट्राम अपनी रफ्तारकी आखिरी सीमापर पहुँचा दी गई। नीना अपनी

संगिनीकी ओर देखती और हँसती। अपने भीतरके आनन्दकी गुदगुदी उनके सम्हाले नहीं सम्हल रही थी।

रास्ता एक स्थानपर अँग्रेजी अक्षर S के आकारमें घूमकर जाता था। वहाँ पहुँचनेपर ट्रामने थोड़ा झटका दिया। दोनों लड़कियाँ तलमलाने लगीं।

“ नशेमें भी ऐसी मस्ती किसीने न देखी होगी ! ” नीनाने कहा।

टेढ़ा रास्ता पार होनेको ही था कि लाइनपर बहुतसे लकड़ीके सिलपट दिखाई दिये। नजदीक पहुँचनेपर नीनाने भी देखा। भयसे उसके रोंगटे खड़े हो आये। ब्रेक लगाना असंभव था। जोरोंका टक्कर लगा। गाड़ीके सब काँच टूट गये। नीना रास्तेके किनारे फिंक गई। अचेत। कंडक्टर भी बेहोश। ट्रामकी घिरनी अलग हो गई थी। रेडियो चूर चूर।

झाड़ीके भीतरसे दो-तीन आदमी खिलखिलाकर हँसे और वहाँसे चलते बने। निस्तब्ध।

१०

सौभाग्यवश दुर्घटना-स्थल स्कूलसे अधिक दूर नहीं था। विद्यार्थी बड़ी ही उत्सुकतापूर्वक नीनाके ट्राम लानेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नियत समयके बहुत पहलेसे ही वे रास्तेकी ओर टकटकी लगाये थे। जब निश्चित समय पर भी ट्राम न पहुँची तो वे अधीर होने लगे। उन्हें अक्षरशः छटपटी मालूम पड़ने लगी।

एक शिक्षककी अनुमति मिलते ही उनमेंसे कई दौड़ पड़े। घटना-स्थलपर पहुँचने पर पहले तो वे अवाक् हो रहे पर लाइनके आसपास सिल-पटोंको देख कर सब समझ गये। जो लड़के कुलकोंके यहाँ निमंत्रित किये गये थे उनमेंसे कई सुबहसे ही लापता हो गये थे। सब लोग खुशीमें मस्त थे। इसलिए किसीने उनकी खोज नहीं की थी।

नीना और उसकी संगिनीको टाँग कर लड़के स्कूल ले आये। थोड़ी देरमें वे दोनों ही होशमें आईं—उन्हें चोट अधिक नहीं लगी थी। नीनाने होशमें आते ही पहला प्रश्न किया—"और ट्राम?"

"वह आ रही है।" उसे उत्तर मिला।

लाइन साफ करके और जल्दीमें जो कुछ मरम्मत की जा सकती थी करके ट्रामको लड़के ले आये। उसीको मञ्च बना वहाँपर एक सभा की गई। कारखाने और नगर-सोवियतके भी प्रतिनिधि स्कूलके लड़कोंको बधाई देने आये थे। नगर-पार्टी कमिटीके मन्त्री और इलाकेके सेना-नायक भी उपस्थित थे। एक एक कर सबके व्याख्यान हुए। पार्टीके मन्त्रीने अपने व्याख्यानमे कहा—"सब प्रकारकी पूँजियोंमें आदमी ही सबसे अधिक क़ीमती है। सोवियत सरकार और बोल्शेविक पार्टीने हमें आदमीकी कदर करना सिखाया है। हमने यह सीखा है, इसका प्रमाण आपका स्कूल है। पर हम लोगोंका सीखना अभी पर्याप्त नहीं हुआ है। अभी हमारे यहाँ पुराने पूँजीवादी समाजके अवशेष बचे हैं जिनसे बहुतेरे आदमियोंको छुटकारा पाना मुश्किल हो रहा है। हमें उन्हें भी आदमी बनाना होगा।

"बोर्जुआ समाजमे मनुष्यकी कीमतकी अपेक्षा कोयले जैसी साधारण वस्तुओंकी भी अधिक कीमत समझी जाती है। वहाँके बड़ेसे बड़े समाज-हितैषी लोक-सेवक अधिकसे अधिक करते हैं तो अभागे दूअरोंके लिए सूखी रोटीका एक टुकड़ा फेंक देते हैं; देशोद्धारके इच्छुक लेखक दो आँसू बहा दिया करते हैं और यही बहुत हुआ मान अपना कर्तव्य पूरा हुआ समझने लगते हैं, अपनेको बधाईका पात्र मानने लगते हैं।

"हमारे यहाँ यह परिपाटी नहीं। समाज-विरोधी हानिकारक प्रवृत्ति, जिसे आप गुंडापन ही क्यों न कहें,—इसके खिलाफ़ इस प्रकारकी संगठित दृढ़ लड़ाई, विरोधी और हानिकारक प्रवृत्तिको जड़-मूलसे उखाड़ फेंकनेकी चेष्टा आप सिवा अपने यहाँके और कहीं नहीं पायँगे।

" हमारा ट्राम-लाइन निकालनेका काम कितना भी सामान्य क्यों न हो, उसके द्वारा हमारा बहुत बड़ा प्रयोग सफल हुआ है। इसके द्वारा आपने टेक्निक सीखा, आपकी कार्य-क्षमता बढ़ी,—यह तो हुआ ही, साथ ही इस थोड़ेसे समयमें समाज-विरोधी दुष्ट प्रवृत्तिसे हटाकर जिन लोगोंको समाजोपयोगी काममें लगा दिया गया है, जिन्हें सोवियत नागरिक बना दिया गया है, जो आज किसी भी सभ्य समाजमें सर ऊँचाकर चल सकते हैं—क्या उन लोगोंके इस सुधार-कार्यकी महत्ता नापी जा सकती है ?

" हमारा प्रयोग सफल हुआ। लेकिन ट्राम उलट गई। तवारिश नीनाको चोट आई। किसके कसूरसे ? टेक्निकके ? कदापि नहीं। बहकाये गये, अपना हित नहीं समझनेवाले, अपनेको नष्ट करनेकी इच्छा रखनेवाले आदमियोंके कारण यह बाधा आई। हमारा आगेका काम है कि हम उन्हें भी आदमी बनायें जिससे हमारा प्रयोग पूर्णतया सफल हुआ कहा जा सके। साथियो, आजके सारे रूसकी आँखें आपके इन्हीं कार्योंकी ओर है,—आपका यह प्रयोग मनुष्य-इतिहासमें अद्वितीय है।"

विद्यार्थियोंके भी व्याख्यान हुए। उसमें उन्होंने उन्नतिका सारा श्रेय स्कूलके शिक्षकों, ट्रैक्टर-कारखानेके मज़दूरों और सोवियत नेताओंको दिया। इलाकेके सेनापतिने उसे ग़लत बतलाया और श्रेय विद्यार्थियोंको देते हुए कहा—" भूतपूर्व अभागे बेजप्रिजोर्नी और अब सोवियतके 'रईस' ज़िन्दाबाद।"

यह नारा बहुत देर तक गूँजता रहा।

नये जीवनकी ओर

१

बेजप्रिजोर्नी (टूअर) अब वास्तवमें ही रईसोंका जीवन व्यतीत करने लग गये थे। ट्राम-लाइनके सिलसिलेमें ही उनमेंसे बहुतेरे इंजीनियर बन गये थे और उनके कामोंकी उपयोगिताके अनुसार उन्हें पारिश्रमिक भी बहुत अधिक मिलता था। जमा करके रखना उनकी प्रकृतिके विरुद्ध था। खर्च करना भी उन्होंने बड़े ही सभ्य ढंगसे सीखा था।

अपने लिए उन्होंने सिनेमा और नाटक-घर बनवाये थे और अक्सर वे ख्यातिप्राप्त गान-वाद्य-नृत्य-विशारदोंको निमंत्रित किया करते। खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, रहने-सहनेके सिलसिलेमें उन्होंने कोई कमी नहीं रख छोड़ी थी। उनकी शानका अन्दाज़ा केवल इस बातसे लगाया जा सकता है कि उनके भोजनकी तो बात ही दूर रही जलपानके समय भी नौबत बजा करती अथवा कंसर्ट (अनेक वाद्य यन्त्रोंका साथ साथ बजाया जाना) हुआ करता था।

पर ये थे सोवियतके रईस। रहन-सहनका दर्जा बहुत ऊँचा चढ़ा लेने-पर भी वे आराम-तलब नहीं बने थे। आराम उनके लिए प्रकृति-विरुद्ध बात थी। काम करनेका उत्साह अब भी भीतर उमड़ा करता था। ट्राम-लाइनके सिलसिलेमें उसके बाहर निकलनेका एक मौका मिला था,

उन्हें अपने भीतर छिपी शक्तियोंको प्रकाशमें लाने और उनका विकास कर पानेका एक सुयोग मिला था। पर इतनेसे ही उन लोगोंको सन्तोष नहीं था ; ट्राम लाइन 'ऐडवेंचर'को वे बहुत ही मामूली गिनने लगे थे और उसे बड़े पैमानेमें सामूहिक रूपसे लिए जानेवाले सामाजिक 'ऐडवेंचर' की भूमिका-मात्र मानते थे।

इतिहासका अध्ययन मुश्किलसे मुश्किल काम सरपर लेनेके लिए उन्हें उत्सुक बनाता जाता था। उसीसे उन्हें यह भी पता चला था कि कई शताब्दियोंसे लोग व्हाइट-सी और बाल्टिक सागरको नहरद्वारा मिलानेकी बात सोच रहे थे पर वह किसीसे भी संभव नहीं हो सकी। उन दिनोंके ज़ारने इसके लिए हज़ार प्रयत्न किये पर नहर तैयार करनेमें वे सफल नहीं हो सके थे। काम करनेकी परिस्थिति इतनी भयंकर थी कि लोग उस कामको असंभव समझ छोड़ बैठे थे। बेजप्रिजोर्नी रईसोंको यह काम अपने उपयुक्त जँचा।

इतिहासके ही अध्ययनने उन्हें यह भी सिखलाया था कि यदि रूसके पश्चिमोत्तर कोनेपर यह नहर तैयार हो जाय तो इससे उसके आसपासके प्रान्तोंकी आर्थिक परिस्थितिमें बहुत अधिक सुधार हो जायगा, वहाँकी जनता बहुत बड़ी संख्यामें सुखी बन जायगी; साथ ही बड़ी बात यह होगी कि समाजवादी मातृभूमिकी रक्षाके समय वह इतनी उपयोगी साबित होगी कि उसकी महत्ताका अंदाज़ लगाना आसान काम नहीं। सोवियत मातृ-भूमिको आर्थिक और सैनिक दोनों ही दृष्टिसे मज़बूत बनानेमें इस नहरके तैयार करनेके समान उस समय दूसरा कोई बड़ा महत्त्वका काम नहीं था।

उन्होंने इस संबंधमें पहले आपसमें चर्चा की, फिर शिक्षकोंकी राय ली। उन्हें उस नहरका 'ऐडवेंचर' पसंद आया। इसमें सोवियत-निवासियोंकी अपनी मातृभूमिके प्रति सबसे बड़ी सेवा तो थी ही, साथ ही इसके बनानेमें बहादुरी, साहस और तत्परताकी परीक्षा थी। यह काम ऐतिहासिक महत्त्व रखता था।

विचार धीरे धीरे धुनमें परिणत हुआ। विद्यार्थी अपने एक-से 'रईसी' जीवनसे ऊबते जा रहे थे। उन्होंने सोवियत सरकारके सामने अपना प्रस्ताव रखा, उसने उसे पास किया, उन्हें बधाई दी और सब प्रकारकी सहूलियतें कर देनेका वादा किया।

अब स्कूलमें सिर्फ एक ही चर्चा चलती—हम ऐतिहासिक नहर तैयार करेंगे। इतिहासमें जहाँ आज तक मनुष्य सफल न हुआ उसी ह्वाइट-सी और बाल्टिक सागरको मिलानेवाली नहर तैयार कर दिखला देंगे। अवश्य।

कितने ही लड़के तो अपने स्वप्नमें अभीसे ही उस नहरमें गोते लगाने लग गये थे।

२

विद्यार्थियोंके स्कूलसे विदा होनेके एक दिन पहले बहुत बड़ा सह-भोज दिया गया। शहर और ट्रैक्टर-फैक्टरीके भी बहुत-से आमंत्रित अतिथि इकट्ठे हुए थे। स्कूल और रास्तोंकी सजावट बहुत कुछ उन दिनोंकी याद दिलाती थीं जब वीरोंको युद्ध-क्षेत्रमें भेजनेके पहले विदाईके उपलक्षमें उत्सव मनाया जाता था। इसका महत्त्व युद्ध-क्षेत्रके लिए प्रस्थान करनेसे कम नहीं था। इसे वे वास्तवमें ही श्रमकी दुनियाका सबसे बड़ा मोर्चा गिनते थे।

सह-भोजके ही समय तुमुल करतल-ध्वनिके बीच खारकोव नगर-सोवियतके प्रधानने ऐलान किया कि नई ट्राम-लाइनका नाम 'नये जीवनकी ओर' रहेगा।

स्कूलके प्रधान शिक्षकने अपने व्याख्यानके सिलसिलेमें कहा—

"...ये विद्यार्थी आज हमारे स्कूलके स्नातक बन रहे हैं, इस उपलक्षमें हमें इजाज़त दीजिए कि हम इनकी सफलताके लिए आप सबकी ओरसे इन्हें बधाई दें।"

उन्होंने विद्यार्थियोंको अन्तिम उपदेशके रूपमें कहा—“ अब आप हमारे स्कूलके स्नातक हुए। यहाँ आपने जीवनका नया पथ अपनाया है, फिर भी वास्तविक जीवन आरंभ करनेकी यह पहली ही सीढ़ी है। वास्तविक कार्य-क्षेत्रमें ही आदमियोंकी असल शिक्षा होती है। बाधाओंका सामना तथा उन्हें विजय करनेके ही सिलसिलेमें आदमी सीखता है। आप यह भी याद रखें कि वही वास्तविक मनुष्य है जो बाधाओंसे डरता नहीं, देह नहीं चुराता बल्कि बहादुरीके साथ उनका सामना करता है, उन्हें दूर भगाता है।

“ आपका बहादुर जीवन बाधाओंसे ही आरंभ हुआ है, इसीलिए आपकी सेनाके सामने ‘ अजेय ’ कुछ भी नहीं। शायद यह शब्द ही आपके कोषमें नहीं। आपकी जो शक्ति व्यर्थ और हानिकारक रूपमें नष्ट हो रही थी उसका रुख स्कूलने फेरकर उपयोगी और लाभदायक कामोंकी ओर लगा दिया है। यहींपर आपके स्कूलकी शिक्षा समाप्त होती है। इसमें आप उत्तीर्ण हुए।

“ अब नये जीवनकी ओर आगे, और भी आगे, फिरसे आगे, हमेशा आगे बढ़ते जाइए। ”

“ जीवनका नया पथ चिरजीवी हो। ”

इकट्ठे लोग एक-स्वरसे चिल्ला उठे।

३

हम लोग उन्हें स्टेशन पहुँचाने गये। मास्को-एक्सप्रेसके खुलनेका समय हो आया था। विदा होनेवाले विद्यार्थी स्कूलमें रह जानेवालोंसे गले गले मिल विदाई ले रहे थे।

हठात् एक गद्देदार डब्बेपर मेरी नज़र पड़ी। वान्का अपने नये नीले सूटमें खिड़कीसे मुँह निकाल अपने बहुत दिनोंसे परिचित तवारिश स्लाविन्स्कीसे हाथ मिलाकर विदा ले रहा था। वान्का इस समय एलेक्ट्रिकल

इंजीनिअरकी हैसियत रखता था। मुझे उसका कीवसे आते समयका औज़ार रखनेके संकीर्ण थैलेमें छिप कर आना याद आ गया।

यह क्या वही वान्का था?

"कौन-सा जीवन अच्छा है?" मैंने उससे पूछना चाहा पर याद आया, वे तो उसके पूर्व जन्मकी बातें हैं, अब उसे याद थोड़े ही होंगी।

उसीके बगलमें नीना बैठी थी। अपनी आडम्बररहित साधारण सुन्दर पोशाकमें ही वह किसी भी पैरिसीयन सौन्दर्यको मात कर सकती थी। कई दिन पहले ही उसने तान्या और मुझसे वादा ले लिया था कि अन्तिम विदाई हम उसीसे लेंगे।

गार्डकी सीटी बजने जा रही थी। हम दोनों उसके सामने जा खड़े हुए। मेरी ओर देख हठात् वह मेरे गलेसे लिपट गई। अपना सर मेरे कोटके कालरोंमें छिपाती हुई उसने एक हाथसे मुझे मनी-बेग देना चाहा।

वह कीव स्टेशनपर गायब हुआ मेरा पुराना बेग था।

"स्मृतिस्वरूप वह तुम्हारे ही पास रहे।" कहते हुए मैंने उसके दोनों गालोंपर थपकियाँ दीं।

वह तान्याकी छातीमें अपना मुँह छिपा लेनेकी चेष्टा करती हुई सिसकने लग गई थी। गाड़ी खुली।

तान्या अपना रूमाल कभी नीनाको दिखलाकर विदा देती और कभी उससे अपनी आँखें पोंछने लगती।

तृतीय खंड

वोल्गा

१

प्रभात ! वोल्गाका मुस्कराता हुआ प्रभात ! उस पारकी रेती सुनहरी बनती जा रही थी, इधरकी जेटी भी उसी रंगमें रंगती जा रही थी। नदीके दूरपरका बड़ा घुमाव सुन्दरियोंकी भौंहोंकी काटका था। नदीके बीचकी रेती आँखोंकी पुतलीका आकार बना रही थी। किनारेके वृक्षोंकी साया उन्हें बरौनियोंकी तरह ढँक रखनेका प्रयत्न कर रही थी। जल-पक्षियोंका एक भारी जत्था हम लोगोंके सरपर उड़ता हुआ वहीं उसी रेतपर जा उतरा।

जेटीपर इकट्ठे युवा-युवती अपनेको अब अधिक न रोक सके। नावके मस्तूलसे उन्होंने गुन बाँधा। पायोनियर (सोवियत यूनियनमें सातसे बारह वर्षके बच्चोंकी एक संस्था है जिनके सदस्योंको 'पायोनियर' कहा जाता है) का एक झुंड नावमें जा बैठा। कौमसोमौल (युवा कम्युनिस्ट) गुन खींचकर ले जाने लगे। थोड़ी दूर जाकर उन्होंने वोल्गाके ही सुरमें शुरू किया......

"प ऊख नियम............
एशियो राजिक
एशियो रास............"

"है" हुमचा। हैं यो। लगा दे जोर। हैं...यो।
और एक वार। हैं...यो। वाह भय्या। हैं...यो।"

वे धाराके प्रतिकूल नाव खींचकर ले चले। नदीके घुमावके पास अनुकूल हवा मिलनेपर सबके सब नावपर चढ़ गये। पालपर नौका आगे बढ़ने लगी। रेतीके पास जहाजसे उनका मेल हुआ। नाव पीछे बाँध दी गई। उसपरके आदमी जहाजपर चढ़ आये।

२

कांदिबोवका गाँव वोल्गाके ठीक किनारे बसा है। नदीमें चलनेवाले बड़े बड़े स्टीमर यहाँ ठहरा करते हैं। जहाज-घाट पुरानी पनचक्कीके पास बनाया गया है। जहाज जिस दिन वहाँ आकर लगता है उस दिन उस स्थानपर एक छोटा-सा बाजार लग जाता है, सारे गाँवमें हलचल मची रहती है, नहीं तो और दिनों वहाँ हमेशा ही सन्नाटा छाया रहता है।

लोग सदियोंसे उस सन्नाटेके अभ्यस्त हो चुके थे। शायद बूढ़े उसे ही पसंद किया करते थे। जाड़ा गर्मी कोई भी मौसम हो लोग सूर्यास्त होते न होते अपने घरोंमें घुस जाते। गाँवके कुत्ते भी वर्षोंसे किसी अपरिचितको घरसे अँधेरेमें न निकलता देख अपने भूँकनेका अभ्यास भूल जाते थे।

हठात् कलखोज (सामूहिक रूपसे खेती) स्थापित होने लगे। कांदिबोवकामें उसका आफिस पनचक्कीवाले मकानमें खोला गया। वहाँ सुबह शाम युवा-युवतियोंकी भीड़ लगने लगी। पहले दो-चार किताबें वहाँकी आफिसवाली मेज़पर रखी रहतीं। स्तालिनग्रादका रहनेवाला कोई युवक उसे गाँव वालोंको पढ़कर सुनाया करता। बड़ी रात तक हा हा ही ही मची रहती। बूढ़े रोज़ ही उन किताबोंके खत्म होनेके दिनका इन्तजार किया करते। वे खत्म भी न होने पाये कि अखबार आने लगे। धीरे धीरे सारा आफिस लाल कपड़ोंसे सज गया, आलमारियाँ आ लगीं सबकी सब किताबोंसे भरी हुई।

बूढ़ोंको भय होने लगा—दुनिया अवश्य ही पगली हो जायगी!

आदमीका इतना छोटा-सा तो माथा, भला वह इतनी किताबोंका बोझ सह सकता है ? युवक जब किसी विषयपर बहस-मुबाहिसा करते, बूढ़े ऊबने लगते और प्रत्येक मुहूर्त ही हाथापाई,—यहाँ तककी लाठी सोंटा चलनेकी प्रतीक्षा करने लग जाते और कहते—"आदमियोंके बीच इतना अधिक झगड़ा करानेवाली चीज़ किताबें ही हैं।"

पर वे लाचार होते जा रहे थे। लड़के तो पहलेसे ही उनके कहनेमें नहीं थे, इधर लड़कियाँ भी कुछ नही सुनतीं और सयानी औरतें तक बिल्कुल आज़ाद हो गई थीं। अब मारनेकी कौन कहे, उनपर उँगली उठाना तक पुरुषोंके लिए मुश्किल था। यह पुरानी पीढ़ीवालोंके लिए सबसे बड़े दुखकी बात थी।

संतोष उन्हें केवल खेतीके हाल-चालसे रहता, वह भी इधर हालमें आकर। पहले वह भी उनके असंतोषका बहुत बड़ा कारण था। कितने लोगोंने जिस दिनसे 'ट्रैक्टर' देखा था उन्हें तरह तरहके दुःस्वप्न आने लगे थे। सुबह उठकर वे एक दूसरेसे पूछते—"कहो, कल रातको क्या स्वप्न देखा ?"

"गाँवमें फूँ फूँ करता हुआ कोई दैत्य आया है। हम बूढ़े तो घरोंमें जा छिपे, लेकिन हमारे लड़के-बच्चे उस दैत्यके कंधेपर चढ़ बैठे। एकने उसकी नाक पकड़ ली। हाँ, सच कहता हूँ, चटसे नाक ही तो पकड़ ली!—और फिर मजा तो यह कि जिधर वह दैत्यको घुमाता दैत्य फूँ-फूँ-हीं-हीं-चीं-चीं करता हुआ दौड़ता! फिर वह दैत्य मिट्टी हाथमें ले लेता, इवानवासिलीवीच, सच कहता हूँ, दस दस मनका चक्का हाथमें उठाता और मलने लगता,—नीचे अनाज गिरने लगता! मेरी इच्छा होती कि जाकर बटोर लाऊँ लेकिन डर, डर..."

"चुप चुप! मैंने भी ऐसा ही कुछ सपनेमें देखा है, पर यदि उसे दैत्य कहूँ तो आज रातको फिर सपनेमें आयेगा। देखो, अब गाँवपर क्या बीतती है ?"

जब खेत काटनेके दिन आये तब उन लोगोंने भी देखा कि गाँवपर बुरी नहीं बीती। अपने सपनेके दैत्यको भी वे भाग्यका दैत्य कहने लगे। बूढ़ेसे बूढ़े लोगोंने भी उस प्रकारकी उपज कभी न देखी थी। अब बनिये महाजनका भी कुछ चुकता नहीं करना था। सारा गाँव ही सालों खाने-पीने, पहरने-ओढ़नेसे खुशहाल रहता, इसीलिए नई पुश्तवालोंकी 'उच्छृंखलता' तक बड़ी नरमीसे बूढ़े बर्दाश्त करने लगे थे।

हालमें लड़कोंने गाँवमें एक सिनेमा-घर भी कलखोजके तरफ़से खोल रखा था। बूढ़े भी वहाँ अकसर पहुँचते। एक फिल्ममें पुरानी-नई पुश्तका अन्तर दिखलाया गया था। पुरानी पुश्तकी कथा 'गोर्की' की 'शेषांश' शीर्षक कहानीसे ली गई थी। बूढ़ेसे बच्चे तक ज़ार-शाहीके ज़मानेकी हालत,—दरिद्रता, अत्याचार, नृशंसताका नृत्य देखकर सिहर उठते थे। एक बूढ़ेने घर लौटते समय कहा—"उस औरतके उस प्रकार पीटे जानेकी घटना तो हमारे अपने गाँवकी है। उस समय कोई राहगीर उस औरतको बचानेके लिए बीचमें कूद पड़ा और उसे भी गाँववालोंने अधमरा कर छोड़ा।"

उस राहगीरको गाँववालोंने फिर कभी देखा नहीं; फिर भी उसकी स्मृति वे भूल नहीं पाये थे। कितने बूढ़ोंको उसका चेहरा भी थोड़ा-बहुत याद था, इसलिए फिल्ममें राहगीरका पार्ट करनेवालेको देखकर कहते—"नहीं, यह वह राहगीर नहीं पर घटना ठीक हमारे ही गाँवकी है।"

नई पुश्तके थोड़े भी पढ़े लिखे युवा-युवती उस राहगीरका पता लगा चुके थे। बड़ी उत्सुकतासे वे उसके अपने गाँवमें आनेकी बाट जोह रहे थे।

३

जहाज जेटीपर आ लगा। एक लम्बे क़द, ओछे पैंट, ऊँचे बूट-लापरवाह लिबासवाले वोल्गाके माँझियोंकी शक्लके व्यक्तिकी ओर इशारा

करते हुए मेरे पास खड़े युवकने कहा—" हमारे देदुश्का गोर्की ! " (गोर्की दादा)

देदुश्काका हाथ पकड़ कर एक छोटी पायोनियर लड़की उन्हें खींचे लिए आ रही थी। दोनों ही खिलखिला कर हँस रहे थे। जहाजसे जेटीपर आनेके लिए तख्ता डाला गया था। वह बहुत ही पतला था। लड़की स्वयं निधड़क उसपर आने लगी और पीछे देदुश्काका आना देखने लगी। वह समझती थी कि आर बूढ़ोंकी तरह वे भी इतने संकीर्ण तख्तेपर पाँव रखनेमें डरेंगे। पर उसकी धारणा निर्मूल निकली। तख्ता पार करनेपर दोनों फिरसे हँसने लगे।

" यह हम लोगोंका कलखोज आफिस है " पुरानी पनचक्कीकी ओर उँगली दिखलाते हुए उसने कहा। " लेकिन यह आप पीछे देखिएगा, पहले चलिए आपको सारा गाँव घुमा लाऊँ। "

थोड़ी दूर जाने पर उसने एक पक्के मकानकी ओर दिखलाते हुए कहा—" यह है हम लोगोंका ग्राम सोवियत। "

" यह जमींदार बरानिकोवका घर...। " एक बूढ़ेने लड़कीको टोकते हुए कहा।

" नहीं, यह हमेशासे ग्राम-सोवियत है "—लड़कीने झुंझलाकर कहा—" ये बूढ़े मालूम नहीं क्या क्या बरानिकोव फरानिकोव फजूल फजूल बका करते हैं। "

" हाँ, यह पहले गाँवके जमींदारका मकान था "—बूढ़ेने फिर टोका।

" कहती हूँ, कि नहीं ! " लड़कीने तीव्र शब्दोंमें कहा—" मैं हमेशासे ही देख रही हूँ, यह घर ग्राम-सोवियतका है। "

" तेरी उम्र क्या है ? " देदुश्काने पूछा।

" आठ वर्ष। "

" तेरा कहना ठीक है, तूने इसे हमेशासे ग्राम-सोवियत देखा है। " देदुश्काने मुस्कराते हुए उसे डिग्री दी।

लड़की विजयीकी भाँति अकड़ कर चलने लगी । वही देदुश्काका हाथ पकड़े आगे आगे चल रही थी । उन दोनोंके पीछे सारा गाँव जुलूसके रूपमें चला आ रहा था । गाँव दिखानेका सारा भार उस लड़कीने अपने ऊपर लिया था । कुछ दूर आगे जाकर उसने अपना स्कूल, स्कूलका पुस्तकालय, भोजनालय आदि दिखलाते हुए सर्दीके दिनोंमें कसरत करनेका घर दिखाकर कहा—" यह हम लोगोंने खुद अपने हाथों बनाया है । "

" बड़ी बहादुर हो ! " देदुश्काने उसकी पीठ ठोकते हुए कहा—" तेरा नाम ? "

" नोरा । "

वह अपना नाम बतलाते बतलाते बच्चोंके लिए लगे खंभेपर जिमनास्टिक करने लगी । दूसरे बच्चोंने भी अपनी कसरतें दिखलाईं । उन्होंने अपने देदुश्कासे भी कसरत कराई । वहाँसे चलते चलते नोराने कहा—" आप तो देदुश्का बड़े अच्छे हैं, हमारे साथ खेलते हैं, पर गाँवके बूढ़े तो हम लोगोंके खेलनेपर बड़े नाराज़ होते हैं । अच्छी बात तो यह है, कि उनकी कोई सुनता नहीं । वे गुस्सेमें आकर अपने सर और दाढ़ीके बाल भले ही नोच डालें, हमें उसकी परवा नहीं । "

सारी जमात हँसने लगी । नोराको पहले आश्चर्य हुआ । फिर उसने सोचा, बूढ़ोंका अपनी दाढ़ी नोचनेका दृश्य बड़ा ही सुन्दर होता है । शायद इसीकी कल्पना कर लोग हँस रहे हैं । वह भी हँसने लगी ।

स्कूलके हातेके बाहर होते समय वह कुछ सोचमें पड़ गई । देदुश्काका हाथ खींचते हुए उसने कहा—" लेकिन एक चीज़ तो आपको दिखलाना भूल ही गई । "

" वह कौन-सी ? "

" हलो ! हलो ! यह हमारे यहाँ दो तरहकी है । एकसे हम लोग कीव, मास्को, खारकोव आदिका गाना सुना करते हैं और दूसरेसे उन

लोगोंसे बातचीत करते हैं।"

"तूने भी कभी इसपर बात की है?"

"यहाँ गाँवमें तो बात कर लेती हूँ लेकिन कीव, मास्को जितनी दूर पर तो मेरा कोई परिचित ही नहीं, बात किससे करूँगी? अब आपको पहचान गई, घर लौट कर आप मुझे 'हलो, हलो नोरा!' पुकारिएगा, फिर देखिएगा मैं कैसी बात करती हूँ।"

सब लोग सिनेमा-घरके पास आ पहुँचे। उसे दिखलानेमें नोराको कुछ संकोच हो रहा था। उसने देदुश्कासे शिकायत की।

"अभी हालमें हम लोगोंने एक फिल्ममें एक स्त्रीको मार खाते देखा था। एक किसान उसे पीट रहा था। उस दिनसे गाँवके बूढ़े कहने लगे हैं कि वह तुम्हारी दादी थी। ये बूढ़े बहुत झूठ बोलते हैं। हमारे बाबूजी ही जब उतने बूढ़े हैं तब मेरी दादी तो और बूढ़ी रही होगी। पिटने-वाली स्त्री तो मेरी माँकी उम्रकी थी। हमारे गाँवके बूढ़े हमें चिढ़ानेके लिए उसे मेरी दादी कहते हैं। मुझे उनपर इतना गुस्सा आता है कि क्या कहूँ। और जो मुज़ीक * उस स्त्रीको पीट रहा था उसपर भी ऐसा गुस्सा आ रहा था कि मेरी दादी हो या न हो, चाहे जिसे भी वह वैसे पीटता हो उस मुज़ीकका मैं सर तोड़ दूँ।"

वह दाँत पीसने लगी। वैसे ही गुस्सेमें उसने कहा—"जो राहगीर उस स्त्रीको बचाने आया था उसे उस पाजी मुज़ीकने पीटा। ऐसे तो ये मुज़ीक पाजी होते हैं। वे हमारे गाँवके बूढ़ोंसे कम पाजी नहीं। सब बूढ़ पाजी......" गोर्कीके चेहरेपर दृष्टि जानेके कारण वह एकाएक रुक गई। गंभीर होकर उसने पूछा—"लेकिन, तुम तो देदुश्का तनिक भी पाजी नहीं!"

---

* किसानोंको चिढ़ानेके लिए मूर्ख जाहिलके अर्थमें रूसी भाषामें 'मुज़ीक' शब्द प्रयुक्त होता है।

देदुश्का खिलखिला कर हँस पड़े।

" और इधरकी सड़कका नाम गोर्कीकी सड़क है। यही सामनेका घर मेरा घर है।"

४

कलखोजके मकानमें सहभोजकी व्यवस्था की गई थी। पनचक्की-वाले हॉल और बरामदेमें मेजें सजा कर रखी गईं थीं। खानेके लिए सबको काठके चम्मच दिये गये थे। भोजन उस गाँवकी विशेषताओंका ख्याल रखते हुए तैयार किया गया था।

किसी विख्यात 'बड़े आदमी' का आगमन हुआ है, यह बात किसीके भी मनमें नहीं थी। लोग स्वच्छन्दतापूर्वक खूब हल्ला मचाते हुए भोजन कर रहे थे। गोर्की भी लड़कोंसे घिरे हुए एक कुरसीपर बैठे थे। व्याख्यानके बदले लोग उनकी कहानियाँ सुन रहे थे। कितने लोगोंने अपने हाथमें रोटी ले ली थी और उनके चारों तरफ जा खड़े हुए थे। वे रोटी खाते और उनकी कथा सुनते।

जिन्हें अपना परिचय देना आवश्यक प्रतीत हो रहा था वे बिना किसी आडम्बरके सीधे देदुश्काके पास पहुँचते और अपना नाम कहते। देदुश्का हँसते हुए उनके साथ हाथ मिलाते। मैं कुछ हिचक रहा था, शायद नोरा इसे समझ रही थी। उसने हमें दिखलाते हुए कहा—" और ये हैं साश्का, देदुश्का।" मेरे बारेमें उसे जो कुछ मालूम था वह कह गई। रूसी ज़बानकी दो-एक भूलें बतलाना भी न भूली।

दूसरी ओर बहुत जल्दी मेजें हटाई जा रही थीं। तुरन्त ही हारमोनिका लिए एक युवक वहाँ बीचमें आ 'याब्लच्की' (एक विशेष प्रकारके रूसी नृत्यका संगीत) बजाने लगा। गाँवके प्रवीण नाचनेवाले एक एक कर अपना कौशल दिखलाने लगे। चारों तरफ घेर कर खड़े हुए लोग नाचकी ही तालमें तालियाँ पीटते पर विश्रामके समय हारमोनिका

बजानेवाला बारबार कहता—" अभी ठीक जम नहीं रहा है। "

कीव, यारोस्लाव, काजान, स्तालिनग्रादके ढंगके नाच दिखाये गये, फिर भी, बजानेवाला असंतुष्ट ही रहा। गोर्की उसके चेहरेका असन्तोष बहुत देरसे परखते आ रहे थे। नाच खत्म होनेके पहले बड़े उत्साहसे वे एकाएक खड़े हो गये। झट अपना लम्बा ओवरकोट फेंक दिया और बाजेवालेसे बोले—" बजाओ तो अब ' निझनी ' के ढँगका !"

बजानेवाला हँसता हुआ उठ खड़ा हुआ।

उसके मेलोडी (स्वर) आरम्भ करते न करते गोर्कीके पाँव ठीक तालमें पड़ने लगे थे। चारों तरफ खड़े लोग ज़ोरोंसे खिलखिला कर तालियाँ पीट रहे थे।

बाजेवालेने स्वयं हार मानी—" निझनीके सामने सब मात ! "

उस मंडलीमें गोर्की जिस प्रकार कूद रहे थे उससे वे पकी मूँछोंके रहते भी लोगोंको छः वर्षके बच्चेसे जान पड़ते थे।

५

क्रान्तिके बादके कांदिवोवकासे गोर्की जितनी आशा रखते थे उससे कहीं अधिक उन्होंने देखा।

उनकी आँखें बड़ी तेज़ थीं। वोल्गा प्रदेशकी कोई भी बारीकी उनसे छिपी नहीं रह सकी थी। यहाँके निवासियोंकी ओर एक बार यदि ध्यानसे निहारते तो मालूम पड़ता, उन लोगोंके हृदयकी तह तक पहुँच गये हों। कहा करते—" ये ही हमारी मातृभूमिके नये आदमी,—रूसको हरी भरी क्यारियोंमें परिणत करनेवाले वास्तविक नये संसारकी सृष्टि करनेवाले हैं। इनका ही जीवन सार्थक है। ये ही संसारके लिए सबसे अधिक उपयोगी हैं। "

दूसरी बार कहते—" यह हम लोगोंका वोल्गा प्रदेश कितना बदल गया है ! जिन लोगोंके चेहरेपर जवानीमें ही झुर्रियाँ आ जाया करतीं थीं

वे अब अधखिले फूलसे दीखते हैं। दरिद्रताके कारण दुर्भिक्षकी तबाहीसे जिनके पेट और पीठ एक हुए दीखते, जो झुककर चला करते, वे ही आज हृष्ट-पुष्ट और सीना तानकर चल रहे हैं। जिनके भीतर क्रोध-ईर्षाकी आग जला करती, भयसे जिनकी आँखें फूल गई-सी दीखतीं, जो हर घड़ी ध्वंस करनेकी सोचा करते, आज वे ही एक साथ हँसते, खेलते, नाचते, गाते हैं।

"प्यार करना इन्होंने सीखा है। जानते हो, किसान धरतीको अपनी सुन्दरी स्त्रीके समान प्यार करता है, बशर्ते कि वह ज़मीन उसकी अपनी हो। आज वे धरतीको सजाते हैं, और भी अधिक सुन्दर उसे देखना चाहते हैं! क्यों? वह उनकी अपनी स्त्री है, वे उसे प्यार करते हैं।

"मेरी भी आज इस वोल्गा प्रदेशमें गानेकी इच्छा होती है जिसमें इसका हृदय खिल उठे, यह और भी अधिक अपना धन, ऐश्वर्य, सौन्दर्य हमारे सामने खोलकर रख दे।"

देदुश्का गोर्कीकी बड़ी बड़ी मूँछोंके नीचे छिपे हुए होंट फड़कने लगे।

६

"तुम्हारी उम्रमें हम लोग दूसरे ही प्रकारकी यात्रा किया करते थे। आजकल तो उसका रिवाज़ ही उठता जा रहा है"। उनका मतलब आवारोंकी तरह यात्रा करनेसे था। थोड़ा ठहर कर उन्होंने स्वयं ही आगे कहना शुरू किया।—"शायद अब उसकी आवश्यकता भी नहीं। वे यात्रायें कड़ुए अनुभवोंके लिए हुआ करती थीं। उनमें मानवी सहृदयतासे तो बहुत ही कम,—दुत्कारसे ही अधिकतर पाला पड़ता था। कड़ुवे अनुभवोंकी तहकी सचाई जानना भी अच्छा था, किन्तु उसमें बहुत अधिक शक्ति खर्च हो जाती है,—शायद खर्चके अनुपातमें लाभ नहीं होता।

कभी कभी ऐसे कड़वे अनुभव भी होते हैं जो सिर्फ़ निर्दयतापूर्वक कलेजेपर आघात पहुँचाते हैं और सिखलाते कुछ भी नहीं। ऐसे अनुभव मनुष्यको ह्रासकी ओर ले जाते हैं। उनसे बाज़ आना ही अच्छा होता है।"

"कितने अनुभव ऐसे होते हैं जिन्हें भूल जानेकी आवश्यकता पड़ती है। यदि उन्हें न भूला जाय तो मनको वे इतना ज़हरीला बनाते जाते हैं कि आदमी सारे मनुष्य-समाजको भीतरसे घृणा करने लग जाता है। आदमियोंके समाजके समान गंदी चीज़ उसे और कुछ दिखलाई ही नहीं पड़ती। उसकी मानवता और भी अधिक अंधकारमें छिपने लगती है। मनुष्य-जीवनके उस बीभत्स अध्यायका ज्ञान भी सबके लिए आवश्यक नहीं।"

मुझसे वे कभी कभी मेरा भ्रमण वृत्तांत सुना करते। एक बार बीचमें ही उन्होंने टोका—"तुमने अपना नाम क्या बतलाया था?"

"साश्का।"

"ठीक कहा, साश्का! मुझे तुम्हारे नामके साथ साथ कभी कभी याश्काकी याद आ जाती है। बहुत दिन पहले आवारागर्दीके ज़मानेमें उससे मुलाकात हुई थी। उससे मैंने बहुत कुछ सीखा था। शायद उसीने पहले पहल सिखलाया था कि कलाका ज्ञान समाजमें पिसे जानेवाले लोगोंका हृदय चीरकर देखनेपर होता है। लेकिन, इस अनुभवके लिए मुझे बहुत कुछ झेलना पड़ा था।"

"आज हमारे यहाँकी हालत बदल गई है। मुझे भी इस तबादलेको ठीक ठीक पहचान पानेमें कभी कभी कठिनाई होती है। समाजको बदलनेकी चेष्टामें मनुष्य भी उसके साथ बदलते जा रहे हैं। यह परिवर्तन अच्छेकी ओर ले जायगा। इसने अभीसे ही मनुष्य-समाजके पूँजीवादी शोषण और आमानुषिक अत्याचारके हलसे कुरेदे हृदयपर मलहम लगाना शुरू किया है। उसका घाव बहुत कुछ अच्छा हो चला है।

"लेकिन इस नई दुनियाको अमेरिकन यात्रियोंकी तरह चंद दिनोंमें

हवाई जहाज या डाक-गाड़ीसे अध्ययन नहीं किया जा सकता। इसके भली भाँति अध्ययनके लिए मैं अपनी जवानीवाली पैदल यात्राको ही अधिक उपयोगी मानूँगा। तुम्हें मालूम है—मेरी यात्राओंकी चालपर ही रूसमें माल और पैसेंजर मिली पार्सल-गाड़ियोंको लोग माक्सिम कहा करते हैं। मैंने जहाज भी ठीक उसी माल-गाड़ीकी तरहका चुना है। रेलसे दूसरे दिन ही हम लोग 'निझनी' पहुँच जा सकते हैं, पर इस जहाज-द्वारा सफर करनेपर हमें वहाँ पहुँचनेमें दो सप्ताह लगेंगे।"

७

स्तालिनग्राद पहुँचते पहुँचते वोल्गाका दृश्य बदलता जा रहा था। संध्या हो रही थी। दूरके मकान सूर्यकी अंतिम किरणोंमें स्नान कर रहे थे। नदी-किनारेके पेड़ घनी छायामें मुँह छिपाते जाते थे। उनके बीचसे कहीं कहींपर ठंडी गीली झाड़ियोंकी गंध आ रही थी। वहाँ मछलियाँ उचकती हुई दिखलाई देतीं थीं।

हमारे नीचे वोल्गाका रंग आकाशके लाल बादलोंके कारण बहते हुए खूनके समान दीख रहा था। अभी अभी लाल सेनाके एक अफ़सर जिस प्रकारकी घटनाओंका ज़िक्र कर रहे थे उनके अनुसार वोल्गाका रंग लाल होना ही अधिक मुनासिब था। उन्होंने स्तालिनग्रादके जर्मन आक्रमणकारियोंसे रक्षा किये जानेकी बात बतलाई थी। उसी लड़ाईमें उनके अपने तीन सगे भाई मारे गये थे पर इसका उन्हें जरा दुःख नहीं था। वे कह रहे थे—"मुझे उनका दुःख नहीं, क्यों कि मैं जानता हूँ कि उन्होंने अपनी जान क्यों दी। वे स्वयं भी इससे वाकिफ़ थे। यह जीवनके नामपर मृत्यु है। उस मृत्युका मतलब जीवनको प्यार करना है।"

जिस भावसे प्रेरित हो उनके मुँहसे ये बातें निकल रही थीं उसके द्वारा वोल्गा किनारेके लोगोंका एक विशेष प्रकारका स्वभाव प्रदर्शित होता था। ठेठ भाषामें इस स्वभावको 'चिमड़ा' कहना अधिक उपयुक्त

होगा। उनके चेहरेका हाव-भाव गंभीर था। नसें तनीं थीं। पहली झलकमें ही चेहरा यह प्रदर्शित किया करता कि एक बार जो भला या बुरा यह व्यक्ति ठान लेगा उसे बिना पूरा किये दम नहीं लेगा। बाधायें उसके भीतर हिचकके बदले उत्साह लाया करेंगीं।

उनके जहाजसे चले जानेपर देदुश्काने कहा—"पिजारेंकोको तुम्हें खूब ध्यानसे देखना चाहिए था। उनके चेहरेपर वोल्गा किनारेके बहादुरोंकी सिफ़तें हैं। अपने विषयमें ऐसे व्यक्ति कुछ नहीं कहा करते। इन्होंने खुद स्तालिनग्रादकी रक्षामें किस प्रकारका भाग लिया यह अपने मुँह तुम्हें नहीं बतलाया। जर्मन लोगोंकी मशीनगनके मुँहका आग उगलना रोकनेके लिए ये ही सबसे पहले कूदे थे। कितनी ही गोलियाँ अगल-बगलसे सनसनाती निकल गईं; कई अगर हाथ-पाँवमें लगीं भी तो उसकी परवा नहीं। पर इस प्रकारकी बहादुरी कर दिखलानेके बाद अपने मुँहसे उसकी चर्चा तक नहीं!

"ये माँ वोल्गाकी मूक आराधना करनेवाले हैं। क्रान्तिने इन्हें जाग्रत किया है। उन्होंने तुम्हें ठीक ही कहा है। और मनुष्योंकी भाँति इनके भीतर भी जीवनका मोह मृत्युसे प्रबल है। लेकिन उनका 'मरना' भी सोवियत भूमिके नये जीवनके मोहका द्योतक है। ऐसे लोग अपने प्राण देनेको 'त्याग' नहीं कहा करते, समाजके लिए अपनेको मिटा देनेका अहंकार नहीं किया करते, बल्कि समाजके जीवनमें ही अपना जीवन देखा करते हैं। यही है इनके भीतरकी छिपी हुई शक्ति जिसके आधारपर वोल्गा,—हमारे विशाल वोल्गा प्रदेशकी रक्षाके लिए ये तैयार रहा करते हैं।

"क्या इन्हें भी कोई मार सकता है? ये ईस्पातसे भी सख्त धातुके बने होते हैं। इन्हें ही अमर कहा जाता है।"

जर्मन वोल्गा

१

हम लोग वोल्गा जर्मन प्रजातन्त्रसे गुजर रहे थे। नदीके दोनों किनारों-पर जितनी दूर तक देख पाते केवल अंगूरकी झाड़ियाँ दिखलाई देतीं। चारों तरफ सरपट मैदान। पहाड़ोंकी चहारदीवारी क्षितिजसे मिली रहनेके कारण दिखलाई नहीं देती। कितनीहि अंगूरकी झाड़ियाँ नदीके इतने किनारे रहतीं कि उन्हें जहाजपरसे ही मामूली डंडेसे छुआ जा सकता था। उन झाड़ियोंमें रसीले अंगूरके गुच्छे लदे थे।

प्राकृतिक दृश्य इस प्रदेशका चाहे उतना सुन्दर भले ही न हो पर इतना अवश्य ही स्पष्ट हो जाता था कि वह प्रान्त समृद्धिशाली अवश्य होगा। जमीनका रंग हँसता हुआ काले रंगका था। अंगूरोंकी क्यारियाँ बड़े कायदे और सिलसिलेसे लगी थीं। झाड़ियोंको ऊपर उठानेके लिए टट्टियाँ लगाई गई थीं।

इस प्रदेशके लोगोंकी चाल-ढाल बोल-चाल रूसके और प्रदेशोंसे कुछ भिन्न है। पहली झलकमें ही यह स्पष्ट हो जाता है कि जर्मन संस्कृतिकी छाप उनपर बहुत गहरी है। कितने लोगोंकी घरेलू भाषा जर्मन थी और कितने रूसी भाषा ही जर्मन ढंग पर बोलते थे। गोर्की दादाको उनकी भाषा समझनेमें अकसर दिक्कत हुआ करती थी।

इस प्रदेशमें भी कलखोज स्थापित हो चुके थे, पर इनसे असन्तोष

प्रकट करनेवाले भी हमें यहींपर मिले। ऐसे लोगोंमें एक केलर-परिवार था। रहन-सहन उनकी रूसी लोगोंसे बिलकुल ही मिलती-जुलती थी, फिर भी चाल-ढालमें उस प्रकारका अभिमान भरा रहता जो रूसी लोगोंके लिए स्वाभाविक नहीं होता। उनकी घरेलू भाषा जर्मन थी जिसे वे बड़े अभिमानके साथ बोला करते थे। रूसी जानते थे किन्तु उसे जान-बूझ कर तोड़ मरोड़ कर बोला करते और प्रत्येक बार यह प्रदर्शित करते कि उन्हें इस जबानके बोलनेमें थोड़ी शरम आ रही है।

उस गाँवमें हम लोगोंका जहाज दो दिनों तक टिका रहा। गोर्की दादाको कुछ ज़रूरी काग़ज़ोंका उत्तर देना था, इसलिए वे तो जहाजही-में रहे लेकिन मैंने सारा समय गाँवमें बिताया और रातको केलर-परिवारके यहाँ ठहरा।

मैं सोने जा रहा था कि बूढ़े केलर स्वयं लालटेन हाथमें लिये मेरे सोनेकी व्यवस्था जाँच करनेके बहाने कमरेमें आए और मेरी चार-पाई पर बैठ गए। उनके बाल सफेद हो चले थे। आगेके दाँत भी दो-तीन टूट गए थे जिस वजहसे बोलते समय हवा उनके बीचसे निकल जाया करती और शब्दोंका उच्चारण कुछ अजीब ढंगका सुनाई पड़ता। आँखोंसे चालाकी प्रकट हुआ करती और सारा चेहरा प्रदर्शित किया करता कि उन्हें लोगोंपर आधिपत्य रखनेकी आदत है।

मेरे विदेशी होने और रूसी राजनीतिसे कोई सम्पर्क न रहनेके कारण वे मेरी ओरसे निर्भीक हो गए थे, मेरे ऊपर विश्वास भी करने लग गए थे और इसीलिए खुलकर बातें भी करना चाहते थे। उन्होंने अपना ज़िक्र करते करते रूसकी तत्कालीन परिस्थितिपर एक अच्छा खासा व्याख्यान ही दे डाला—"रूसकी बातें बाहरी दुनिया नहीं जानती। यहाँकी हालत छिपा कर रक्खी जाती है। जिस दिन उसका असली परदा खुलेगा सारी दुनिया यहाँ वालोंको थू-थू करने लगेगी। (यह बात उन्होंने रूसी ढंगसे कही, इससे पता लगता है कि वे कई पुश्तसे रूसमें आकर

बस गये हैं।) जिन लोगोंको यहाँ स्वच्छन्द रूपसे घूमनेकी इजाज़त मिलती है वे पहलेसे ही समाजवादका चश्मा पहने रहते हैं और दूसरे धनी लोग यदि सैर करने आते हैं तो उनके पीछे गे० पे० ऊ० लगी रहती है। आप विदेशी हैं और यहाँकी अवस्था अध्ययन करनेके ख़्यालसे आये हैं, मैं आशा करता हूँ कि आप अभी सोवियत सरकारके चक्रमेंमें न आये होंगे। आयें भी क्यों? आपकी शिक्षा जर्मनीमें जो हुई है।

"अब यही देखिए, जहाँतक साधारण जनताका सवाल है उनके बारेमें हमें कोई भी शिकायत नहीं। रूसी लोग बहुत पहलेसे दरिद्र रहते आये हैं। यहाँपर दुर्भिक्ष अकसर ही हुआ करते थे; इसलिए ये लोग उसके इतने अधिक अभ्यस्त हो गये हैं कि वह खराब हालत इन्हें नहीं खटक सकती। इनके मुँहमें सड़े हुए गुड़का मामूली-सा टुकड़ा डालकर इन्हें मुग्ध किया जा सकता है। सोवियत सरकारने वही किया भी है, इसीलिए इन लोगोंमें तो कोई असन्तोष नहीं है।

" पर अब लीजिए मध्यम वर्गकी बात। उन्हें तो सोवियत सरकारने उजाड़ दिया।—बिलकुल ही उजाड़ दिया। ये लोग किरानीका काम करते हैं, इनका ओहदा मजदूरोंकी अपेक्षा नीचा है, इन्हें मज़दूरोंकी अपेक्षा आधी रोटी और दूसरे उपभोगकी चीज़ें दी जाती हैं और अधिकार भी इन्हें बहुत कम प्राप्त हैं। मजदूर ही उनके आदर्श बनाकर रख दिये गये हैं। सारे मध्यमवर्गको मज़दूर वर्गमें परिणत कर देना सोवियत सरकारने अपना ध्येय बना लिया है। इस वर्गहीको वे मिटा देना चाहते हैं। पर यह है रूसका मध्यम वर्ग। इसे आप हमारे जर्मन लोगोंकी दृष्टिसे निम्न श्रेणी ही गिनिए और इनकी भी बात छोड़िए।

" अब लीजिए हम लोगोंकी बातें। हमारे दादाके ज़मानेसे हमारे खेतमें पाँच सौ मज़दूर काम करते आये हैं। हम लोगोंके रहन-सहन, पहनावे ओढ़ावेका दर्जा बहुत ऊँचा रहता चला आया है। हम ही लोग समाजके अगुआ, उसके गौरवस्वरूप, रहते चले आये हैं। हम ही

लोगोंके मानसिक विकासपर सारे मनुष्य-समाजका मानसिक विकास निर्भर करता है। पर सोवियत सरकार तो हम लोगोंका नामोनिशान तक मिटा देना चाहती है। यह सारे मनुष्य-समाज,—सारी मानवी सभ्यताके लिए कितना बड़ा आघात होगा, क्या आपने इसका कुछ अनुमान किया है?

"सोवियत सरकारके कायम होनेके बादसे आप हमारी दरिद्रताका अंदाज़ा लगाएँ। पहले हम पन्द्रह-बीस विद्यार्थियोंको मास्कोमें उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके लिए छात्र-वृत्ति दिया करते थे, अब अपनी निजकी दो लड़कियोंका खर्च चलाना भी मुश्किल हो रहा है।"

यहाँपर मैंने उन्हें टोका—"क्यों? स्कूलका सारा खर्च तो सोवियत सरकार देती है। पढ़नेवालोंमें अधिकांशके लिए ही तो, सुना करता हूँ, कि छात्रवृत्ति है।"

"यह है साधारण श्रेणीवालोंके लिए। हम लोगोंको तो उक्त श्रेणीवाले घृणा करते हैं, नीच समझते हैं, इसलिए उनके साथ तो हमारे बाल बच्चोंकी नहीं बन सकती। साथ ही, साधारण श्रेणीवालोंके समान सूखी रोटी खाकर तो हमारे बच्चे ज़िन्दे नहीं रह सकते। मेरी लड़कियोंका स्कूलसे सिर्फ पढ़ने-भरका नाता है। यदि हम इससे भी उन्हें रोक सकते तो अच्छा होता, पर यह संभव नहीं। अब देखिए, उन्हीं दो लड़कियोंके पीछे हम लोगोंका दादाके ज़मानेसे इकट्ठा किया हुआ धन,—सोना,—असली सोना खर्च हो गया।

"आगे कैसे चलेगा? नया तो कोई आमदनीका जरिया हमें मिलता नहीं। खेत सब सामूहिक रूपसे जोते-बोये जाते हैं, उसमें हमें सिर्फ अपना निजकी मेहनतका हिस्सा मिल सकता है। यदि अंगूर बेचकर उसकी तिजारत करना चाहें तो उसके लिए यहाँ सख्त सज़ा है। उसे यहाँ 'जूआ' नाम दिया जाता है। सोवियत अर्थशास्त्रियोंकी दृष्टिमें सब व्यापारी जुआरी होते हैं। उन्हें वे जड़-मूलसे उखाड़ फेंकते हैं।

" साधारण लोगोंकी तरह हम सूखी रोटी खाकर जी नहीं सकते, अच्छी रोटीके लिए चिल्लाते हैं तो सोवियत सरकार हमारे ऊपर हँसती है। हम अपने जर्मनीके भाइयोंको अपनी दुरवस्थाके बारेमें लिख भेजते हैं। अभी आपने अखबारोंमें भी देखा होगा कि सारे जर्मनी और आस्ट्रियामें हम लोगोंके लिए आन्दोलन चलाया जा रहा है। 'संकटमें पड़े भाई' के नामसे यह आन्दोलन वहाँ चल रहा है। हिटलर, उसकी नात्सी पार्टी, पोप और सब तरहके गिर्जोंके पादरी इसमें भाग ले रहे हैं। उन्होंने हम लोगोंके लिये धन भी इकट्ठा किया है। यहाँ कितने लोगोंके पास कपड़े, रोटियोंके पार्सल और मनिऑर्डरसे रुपये भी भेजे गये हैं। पर सोवियत सरकारको यह नागवार गुजर रहा है। वे हमसे यह आशा रखते हैं कि जर्मनीसे अपने भाइयोंद्वारा भेजा गया धन हम लौटा दें। कितनेही बेवकूफोंने इसे वास्तवमें ही लौटा दिया है। हमें समझाया जा रहा है कि हिटलर और पोप दोनों हमारे शत्रु हैं। कहिए भला, मैं इसे किस प्रकार मान सकता हूँ? इस दुर्दिनमें वे हमारे सहायक हुए और हम उन्हें ठुकरा दें, बोल्शेविक हमें ऐसी कृतघ्नता सिखला रहे हैं।

" आप मेरा ही उदाहरण लीजिए। सर्दीका मौसम आ रहा है पर ओवरकोट नहीं। तीन सालसे लोगोंने सारे जर्मन वोल्गा प्रान्तमें सिर्फ किसानोंद्वारा पहना जानेवाला ओवरकोट देखा है। फरके बढ़िया ओवर-कोटकी सूरत भी देखनेको नहीं मिली। आप हमारे दुखोंकी थाह नहीं लगा सकते।"

उन्होंने एक दीर्घ साँस ली और साथ ही चौंक भी उठे। शायद अब उन्हें याद आया कि उन्होंने अपना हृदय आवश्यकतासे अधिक खोलकर दिखला दिया है। वे इसे शायद बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे। इसका उन्हें थोड़ा अफसोस भी हुआ। मेरी ओरसे समर्थन या विरोध-सूचक कोई वाक्य न निकलता देख वे 'भली भाँति सोइए' कहकर वहाँसे चले आये।

दूसरे दिन उनका जो स्वरूप और बातचीतका ढंग देखा उससे रातकी बातोंका वास्तवमें ही मेल मिलाना कठिन हो रहा था। वे ही उस गाँवके कलखोजके सभापति थे। स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टीपर उनकी काफी धाक थी। किसानोंसे बातें करते समय वे सोवियत सरकारकी भूरि भूरि प्रशंसा किया करते। इतना ही नहीं, अपने पहनावे-ओढ़ावेमें भी साधारण लोगोंसे अपनी भिन्नताको छिपा रखनेकी पूरी चेष्टा करते।

२

गोर्की दादा नीचेकी डेकपर रेलिङ्गसे पीठ टेके मुँहमें बड़ा लम्बा और मोटा-सा गाँवोंवाला तम्बाकूका पाइप लटकाये आसपास बैठे किसानोंसे बातें कर रहे थे। उन किसानोंसे उन्होंने अपना घर तो ठीक निझनी नौगोरोद बतलाया था पर अपना नाम और पेशा बदल कर कहा था। किसी समाज-विशेषका वास्तविक पता लगानेके लिए अक्सर ऐसा करनेकी उनकी आदत थी। उन्होंने अपनेको सोवियत समुद्री जहाजमें काम करनेवाला खलासी बतलाया था और किसान बड़ी दिलचस्पीके साथ उनसे बाहरी देशोंकी बाते पूछ रहे थे।

हम लोग जिस समय वहाँ पहुँचे एक किसान तम्बाकू हाथमें मलकर और किसानोंको बाँट गोर्कीको देने जा रहा था। उन्होंने उसे ले लिया और दूसरे किसानोंके ही समान अपने होंठमें रखा।

सोवियत सरकारकी किसानोंके प्रति नीतिकी टीका टिप्पणी चलते-चलते मासकी चर्चा छिड़ गई थी।

" सोवियत सरकारने तो हम लोगोंको वास्तवमें शाकाहारी बना दिया। अपनी इच्छासे तो हम कभी बन नहीं पाते, पर बाध्य होकर हमें वैसा करना ही पड़ा, " एक किसानने कहा।

"यह सोवियत सरकारका नहीं कलखोजका कसूर है।" दूसरेने टोका।

"सोवियत और कलखोज दोनों ही पिता-पुत्र हैं।" पहलेने दुहराया।

“ लेकिन यह भी कैसे कहा जाय ? शुरू शुरू तो हम लोगोंने इतना मांस खाया कि हमारे सारे इलाके-भरके लोगोंका पेट दो हफ्ते तक खराब रहा। ” एक तीसरे बूढ़े किसानने कहा।

“ और अब उसीको अच्छा करनेके लिए हम वर्षोंसे शाकाहारी बन गये हैं। ” सबके सब हँस पड़े।

“ लेकिन कसूर किसका है ? ” गोर्की दादाने उन्हें टोका।

यह कसूर साबित करनेके लिए बहुत देर तक बहस चलती रही। वास्तविक मामला यह था कि जब कलखोज स्थापित किये जाने लगे तो गाँव-भरके घोड़े और मवेशियोंको एक साथ मिलाकर उन्हें कलखोजकी सम्पत्ति बना दी गई। जिन धनी किसानोंके पास अधिक घोड़े या मवेशी थे उन्हें उन जानवरोंको सामूहिक सम्पत्ति बना देना अखरता था। उन्होंने उन मवेशियोंको कलखोजमें देनेकी अपेक्षा मारकर उनका मांस खाना अधिक उपयुक्त समझा। दूसरे किसानोंने भी उनकी देखादेखी की। नतीजा यह हुआ कि उस इलाकेके मवेशी लाखोंकी संख्यामें मार डाले गये। लोगोंने बदहजमी हो जानेपर भी उनका मांस नहीं छोड़ा। दो हफ्तोंके बाद उसीका यह परिणाम हुआ कि उस इलाके-भरमें मवेशियोंकी संख्या बहुत कम हो गई और मांसकी बड़ी तंगी पड़ने लगी। वह अवस्था कई वर्षों तक नहीं सुधारी जा सकी।

किसान उसका कसूर ढूँढ़ते ढूँढ़ते धनी किसानोंके सर उसका अपराध मढ़ने लगे। बूढ़े केलरसे यह बात सही नहीं गई। उन्होंने कहा—“ यदि धनी किसानोंका ही कहना सुनना था तो दूसरी बातोंमें भी सुनते। उन्होंने तो यह भी फैलाया था कि सबकी स्त्रियाँ सामूहिक सम्पत्ति बना दी जायँगी, फिर उन्हें भी पीटपाटकर क्यों नहीं खा गये ? ”

“ उस वक्त बदहज़मी हुई थी। ” गोर्की दादाने मुस्कराते हुए उत्तर दिया। सब किसान खिलखिलाकर हँस पड़े। केलर यह साबित करनेकी चेष्टा करते रहे कि कसूर साधारण किसानोंका ही था। गोर्की

दादा बतला रहे थे वह अपराध किसानोंकी अविश्वासी प्रकृतिका था। किसी नई चीज़पर इन्हें जल्दी विश्वास नहीं होता कि वह उनके भलेके लिए है। इसपर केलर उनसे झगड़ते हुए कहने लगे—"लेकिन किसानोंकी अपेक्षा तो मज़दूर कहीं ज़्यादा अविश्वासी प्रकृतिके हुआ करते हैं। मैंने तो सुना है कि कितने ही मज़दूर अब किसानोंकी हड्डियोंसे एक नये प्रकारका तेल निकालना चाहते हैं जिससे उनकी मशीनें साधारण तेलोंकी अपेक्षा अधिक अच्छी तरह चला करेंगी। कौन जाने यह भी कहीं सत्य न साबित हो जाय।"

किसानोंका चेहरा गंभीर होता जा रहा था। वे चाहे केलरकी बातपर भले ही विश्वास न करते हों, पर इन बातोंने उन्हें सोचमें अवश्य ही डाल दिया था। गोर्की देर तक समझाते रहे कि किसानोंके सबसे बड़े मित्र मज़दूर ही हैं। वे किसानोंके लिए आवश्यकता पड़े तो अपनी खाल खींचकर भेंट कर दे सकते हैं और कितनी ही बार उन्होंने वास्तवमें वैसा किया भी है।

केलर निरुत्तर होते जाते थे। उनकी दृष्टि गोर्की दादाके चेहरेकी अपेक्षा उनके ओवरकोटपर अधिक थी। उन्होंने उसे दिखलाते हुए पूछा—"आप मज़दूरोंके इतने बड़े पक्षपाती बने हैं क्योंकि आपके शरीरपर ऐसा सुन्दर विदेशी कोट है। किसानोंको अपनी खाल खींचकर देनेकी बात तो दूर रही, मज़दूर पहले अपना ओवरकोट ही तो उतार-कर दे दें।"

"हाँ, जाड़ेमें कोटोंकी बड़ी कमी है, यदि वे वही हम सबके लिए भेजवा दें तो हम उन्हें अपना सच्चा दोस्त मानने लगेंगे।" कई किसान एक साथ ही बोल उठे।

एक किसान गोर्कीकी ओर इशारा कर बोल उठा—"यह तो इन महाशयोंसे होगा नहीं, जो बीतती है वह तो हम लोगोंपर। इन्हें क्या है? जहाजपर दुनियाकी सैर किया करते हैं; मौज करते हैं।"

उसने धीरेसे गोर्की दादाके कानमें कहा—"हमारे लिए कोट अवश्य भेजवा दें। जाड़ेके मारे हमारे सारे घरके लोगोंका चमड़ा क्या मांस तक फटता जाता है और हड्डियाँ काँपती रहती हैं।"

बाहर पानी बरसना शुरू हो गया था। उसकी बौछार उस मजलिस तक पहुँचने लगी थी। जहाजने भी पुक्की दे दी थी। केलरसे बिदा ले मैं ऊपर गोर्की दादाके केबिनकी खिड़की बंद करने चला गया।

थोड़ी देरमें जब वे अपनी केबिनमें आये तो देखा उनके शरीरपर ओवरकोट नहीं था।

३

गोर्की दादाको किसानोंकी वह मजलिस चेष्टा करनेपर भी नहीं भूल रही थी। उन्हें वहाँपर भारी आघात लगा था जिसकी वेदना उन्हें चैन नहीं लेने दे रही थी। कभी कभी उन किसानोंपर उन्हें बड़ा क्रोध हो आता और वे कहने लगते—

'ये किसान वास्तवमें बड़े स्वार्थपर होते हैं। अपनी क्षुद्र-बुद्धि भुल नहीं पाते। सन्तोष तो उन्हें कभी होता ही नहीं। उन्हें सब कुछ एक साथ ही चाहिए। ज़ारशाहीके जमानेसे अब वे अपनी तुलना नहीं करते। उस समय उन्हें चूँ करनेका भी अधिकार नहीं था। पर अब उन्हें यदि जरा सी चीजकी कमी हो जाती है तो वे राज्य-शक्तिके ख़िलाफ़ होने लगते हैं।

"ये बड़े अदूरदर्शी हैं। देखते नहीं कि सोवियत सरकारने जिस वक्त राज्य-भार अपनाया, देशकी क्या अवस्था थी। पिछड़ा हुआ कला-कौशल, खेतीके पिछड़े हुए साधन; उसपर भी महा समरकी तबाही, फिर गृह-युद्धकी बरबादी; सारे देशमें अशिक्षितोंकी भरमार और सबके ऊपर किसानोंका महा-स्वार्थपर संकुचित स्वभाव,—यहींसे तो सोवियत सरकारको आरंभ करना पड़ा था। देशकी खेती और शिल्प दोनोंके लिए मशीनोंकी आवश्यकता

थी। शत्रु चारों तरफसे घेरते आ रहे थे, उनका सामना करनेके लिए शिल्प-वृद्धिकी और भी अधिक आवश्यकता थी। इसके लिए यदि थोड़ा त्याग न दिखलाया जाता तो वे महान् कार्य कैसे पूरे होते? खाना-कपड़ा आदि-तकमें उसीके लिए तो कमी की गई। ये चीजें उन्हें ज़ारशाहीके जमानेसे अधिक मात्रामें तो आज भी मिल रही हैं, फिर भी उन्हे संतोष नहीं है। उन्हें सब एक साथ चाहिए। वे कहते हैं—'यह शिल्प, कलखोज और मशीन लेकर हम क्या करेंगे। हमें चाहिए ओवरकोट, पहननेके पूरे कपड़े, खाने-पीनेकी चीजोंकी प्रचुरता,—हम उसीसे संतुष्ट रहेंगे।' लेकिन ये समझते नहीं कि इसका क्या नतीजा होगा? करोड़ों नहीं, अरबोंकी जो पूँजी बड़े कष्टसे सोवियत सरकारने शिल्प-वृद्धिके लिए इकट्ठी की थी उससे बहुत-सा खाना, बहुत-से कपड़े मिल जाते, पर नतीजा क्या हुआ होता? देशमें कोई मशीन बनानेवाला शिल्प नहीं रहता। सोवियत यूनियनको विदेशोंपर निर्भर रहना पड़ता, विदेशी जब उसके ऊपर आक्रमण कर बैठते तो हथियारके अभावमें सोवियतको अपनी सत्ता ही मिटा देनी पड़ती। किसान इसे ही पसंद करते हों, यह बात भी नहीं है। यदि उनकी जमीन फिरसे जमींदारोंको दी जाने लगे, तो वे इसे कभी बर्दाश्त नहीं कर पाएँगे। पर साथ ही उसकी रक्षाके लिए त्याग करनेमें भी आनाकानी करते हैं। यह नहीं समझते कि आज वे आधा पेट खाकर बिना ओवरकोटके भी स्वतंत्रताकी ज़िन्दगी बिता सकते हैं। इस हालतमें भी उनकी ज़मीन अपनी बनी रह सकती है। पर बिना मशीन तैयार किये वे स्वतंत्र नहीं रह सकते, ज़मीनपर उनका आधिपत्य नहीं रह सकता।

"ये बातें उन्हें क्यों कर समझाई जायँ?"

४

वे किसानोंको पूरी बात नहीं समझा सके, इसके लिए कभी कभी अपने ऊपर भी खीझते, अपने आपको कोसनेतक लगते—

"लेखक दरिद्रता देखकर पानी-पानी हो जाते हैं; उनके लिए आँसू बहा देना बड़ा आसान होता है। पर परिस्थिति तो आँसू बहानेसे नहीं बचाई जा सकती।

"उस रोगी किसानका चेहरा बार बार मेरी आँखोंके सामने आ जाता है। उसने जो बातें कहीं, वे कानोंमें अब भी गूँजा करती हैं। दरिद्रता है,—स्वीकार करता हूँ, पर उससे बचनेका उपाय? मैंने अपना कोट दे दिया। उससे क्या परिस्थिति सँभल गई? मालूम नहीं, उस रोगीके समान और कितने ही रोगी समूचे सोवियत यूनियनमें पड़े हैं जिनके पास ओवरकोट नहीं। मैं उतने कोट कहाँसे लाऊँगा? सोवियत सरकार ही कहाँसे ला सकती है? उन्हें बिना ओवरकोट जाड़ेसे ठिठुरता हुआ देखना भी अब मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। ज़ारशाहीके ज़मानेमें बर्दाश्त कर पाता था पर अब तो ये इतने अपने हो गये हैं कि देखा नहीं जाता। कैसी दुर्बलता है!"

वे अपनी केबिनमें टहल रहे थे। अपनी दुर्बलताको हजार गालियाँ दे डालते पर वह छूटती दिखलाई नहीं देती। मुझसे वे कुछ खतोंका जवाब लिखवाना चाहते थे पर इस वक्त उसके लायक मिजाजकी गति नहीं थी। उत्तर देना ही होगा, सोचकर एक खत उन्होंने हाथमें लिया पर तुरत ही उसे मेजपर पटकते हुए कहने लगे—

"हाँ, खूब झूठ बोला करो। गोर्की बड़ा है,—न्यूयॉर्कके ऊलवर्थके मकानसे भी ऊँचा है, क्यों? मोटा है,—इस जहाजके पेट जितना मोटा है, क्यों? भारी है,—पहाड़के जितना भारी है; क्यों? मिथ्यावादी!—क्यों सास्का, ये हमें चिढ़ानेके लिए तो ऐसा नहीं लिखते?"

"नहीं देदुश्का।" मैंने सर हिलाते हुए कहा।

"पर देखो न! ऊँचाईके मारे तो इस केबिनकी छतसे मैं टकराता नहीं, मोटाईके मारे दरवाजेमें अटकता नहीं, मेरे बोझसे यह जहाज भी तो एक तरफ नहीं झुकता।" वे प्रत्येक बातको व्यवहारमें साबित करके दिखलाने लगे। उनका यह बच्चोंका-सा सरल व्यवहार देख मैं हँसने लगा।

वे वास्तवमें गंभीर होते जा रहे थे। वे मेरी मेजके पास आ खड़े हुए। सर ऊँचा किये रहनेके कारण ललाटकी सिकुड़न सरके बालोंके पास इकट्ठी होने लगी थी। बड़ी बड़ी मूँछें और भी भयंकर दीख रही थीं। उन्होंने हुक्म देते हुए कहा—"सबको लिख दो कि गोर्की वैसा नहीं, वह मामूली-सा निझनीका रहनेवाला लेखक है।"

वे वास्तवमें किसानोंको भलीभाँति न समझा सकनेके कारण अपनेको किसी परीक्षामें अनुत्तीर्ण हुए विद्यार्थी जैसा मान रहे थे। सोवियत सरकारको भी लिख देना चाहते थे कि उसने उनकी योग्यताके हिसाबसे बहुत अधिक सम्मान दिया है जिसके वे पात्र नहीं।

निझनी

१

लगभग तीन सप्ताहके बाद हम लोगोंका जहाज घूमता-घामता निझनी नवगोरोद पहुँचा। यह शहर बहुत पहलेसे ही वोल्गा किनारे बसे शहरोंमें सबसे प्रमुख रहता चला आया है। मध्य युगमें जब रेल नहीं थी और उपयुक्त सड़कोंकी भी बहुत कमी थी तब एक प्रकारसे निझनी ही सारे रूसका व्यापारिक केंद्र था। यहाँके बाजारमें मंगोल, तातार, उजबेक, मुसलमान, पोल, यहूदी, उक्रेनियन, कोरेलियन, सब तरहके दूकानदार अपने अपने रंगमें रँगे दूकानोंपर बैठे दिखलाई देते थे।

ज़ारशाहीके उत्कर्ष-कालमें निझनीकी समृद्धि बढ़ी थी। एक समय था जब यहाँके बड़े बड़े व्यापारी और शिल्पपर अधिकार रखनेवालोंके फैशनके अनुसार मास्को अपना फैशन बदला करता था। साथ ही वोल्गा प्रान्तमें जितने बड़े बड़े लेखक और साहित्यिक हुए उनमेंसे अधिकांशने अपना लेखक-जीवन यहींसे आरंभ किया।

सोवियत युगमें निझनीकी कुछ कम तरक्की नहीं हुई। मज़दूर राज्यने अपना सबसे पहला मोटर बनानेका कारखाना यहीं खोला। यहाँ कपड़ेके कारखाने भी बनाये गये। शहरकी जन-संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही गई।

इन विशेषताओंके सिवा निझनीको पनपानेमें गोर्कीका भी बहुत बड़ा हाथ था। उन्होंने अपना बचपन,—जिसे उन्होंने अपनी कहानियों-

द्वारा अमर कर रक्खा है, यहीं बिताया था। उनका लेखक-जीवन भी यहींसे आरंभ हुआ था। कोरोलेंकोसे उन्होंने यहींपर अपनी कहानियोंकी भाषा और तर्जके बारेमे शिक्षा ली थी। बचपनमे जो छाप इस शहरकी गोर्कीके मनपर पड़ी थी वह उत्तरोत्तर गहरी ही होती चली गई। वे कहते भी थे—"संसारके जिस किसी हिस्सेका मैं वर्णन क्यो न करूँ, मेरे सामने सबसे पहले वोल्गाका दृश्य नाच जाता है। जितने लोगोंका चरित्र चित्रण करना चाहता हूँ या किया है, वे नये नहीं हैं, जाँच कर देखता हूँ तो स्पष्ट पता चलता है कि बचपनमें निझनीमें जिन लोगोंको देखा था सर्वप्रथम वह चित्र उन्हीं लोगोका है। मेरे लिए संसारमें निझनीमें देखे हुए लोगोंकी दूसरी आवृत्तिके सिवा और कोई नवीनता नहीं।"

गोर्कीने निझनीको प्यार किया था, घृणा भी की थी; उसे छोड़कर निकल भागना भी चाहते थे, किन्तु वह उन्हें चारों तरफसे बार बार घेर लाता था।

इस शहरके प्रति उनके भीतर छिपा हुआ गहरा प्रेम था। गोर्कीके साथ इस शहरके वैसे घने सम्बन्ध रखनेके ही कारण जब उनके लेखक जीवनका चालीसवॉ वार्षिकोत्सव मनाया जाने लगा तब उस शहरका नाम सोवियत सरकारने 'गोर्की' रख दिया। सिर्फ शहर ही क्यों सारे प्रांतका भी नाम गोर्की कर दिया गया।

सोवियत सरकारका यह काम अवश्य ही उपयुक्त था। सोवियत रूसके वर्तमान विकासमें गोर्कीका कितना बड़ा हाथ रहा है, इसका अन्दाज़ा लगाना आसान नहीं। वहाँ तरह तरहके विकास हुए थे। नये नये कल-कारखाने खड़े कर दिये गये थे। नई नई झीले खोद डाली गईं, नदियोंका बहाव पलट दिया गया, हवाई रास्ते निकाले गये, दिनपर दिन हजारों ही तरहके नये आविष्कार होने लगे जिनका महत्त्व वास्कोडिगामा या कोलंबसके आविष्कारोंसे कम नहीं। सोवियत यूनियनकी

इस वृद्धिद्वारा वहाँके बड़े बड़े राजनीतिज्ञों और वैज्ञानिकोंका अनेक दिनोंका स्वप्न पूरा हो रहा था। लेकिन इन सब अविष्कारोंसे भी बड़ा एक और आविष्कार हुआ जिसका महत्त्व सबसे अधिक था। इन आविष्कारोंके करनेवाले मनुष्यका ही पुनः निर्माण करनेका स्वप्न संसारके बहुतसे महान पुरुषोंने देखा है। गोर्कीने भी यह स्वप्न देखा, किन्तु उनकी विशेषता यह थी कि उनका स्वप्न कार्य-रूपमें परिणत हुआ।

गोर्की इस महान लक्ष्य-प्राप्तिका अनुभव कर रहे थे—किन्तु उसमे अपना भाग,—अपना हाथ बहुत तरहसे अस्वीकार करनेकी चेष्टा किया करते। उन्होंने समाजके साथ अपनेको इतना अधिक मिला दिया था कि एक क्षणके लिए भी अपनेको उससे अलग कर देखना उनके लिए बहुत सख़्त साबित होता।

२

उन दिनों उनकी बड़ी झुँझलाई हुई मानसिक अवस्था थी। वे बार बार बंगलेके बरामदेमें बेचैनीसे टहला करते और किसी समस्याको हल करनेका प्रयत्न करते। उनके सामनेकी समस्या थी—

"किसानोंका स्वभाव आखिर इतना स्वार्थी क्यों होता है? मनुष्यकी स्वाभाविक प्रकृति तो वैसी नहीं होनी चाहिए। उन्हें विपरीत दिशाकी ओर ले जानेमें किस शक्तिका हाथ है? उससे उन्हें किस प्रकार बचाया जा सकता है?"

एक साथ ही उन्होंने तीन पुस्तकें लिखना आरंभ किया। अपनी समस्याकी तह तक न पहुँच सकनेपर वे झुँझलाकर कहते—

"मज़दूरोंसे इतनी दूर रहना मेरी भूल है। वे ही हमारे गुरु हैं। उनके यहाँ जाना चाहिए।"

एक दिन शामको उन्होंने कपड़ेके कारखानेमें काम करनेवाले मज़दूरों जैसे कपड़े पहने और घूमने निकले। उन्हें जाननेवालोंको भी उन्हें

पहली झलकमें पहचान लेना कठिन होता। उन्हें उसी प्रकारसे छिपकर मज़दूरोंके अड्डे या शराब पीनेके अड्डोंतक जानेका अभ्यास था। अपनी पुस्तकें लिखते समय उन्हें यह बड़ा आवश्यक मालूम पड़ता था।

शहरमें कारखानेके पास कई चाय-खाने थे। हम लोग जहाँ सबसे अधिक भीड़ थी वहाँ भीतर घुसे। धुएँसे सारा कमरा भरा हुआ था। मेज़ोंपर चायके गिलासोंकी अपेक्षा बियरसे भरे बड़े बड़े लोटोंकी संख्या अधिक थी। मज़दूर छोटी छोटी टोलियोंमें बँटे बातें कर रहे थे। अब उन्हें ऐसा अभ्यास हो गया था कि वे आपसमें गाली-गुफ्ता-क्या, अधिक बियर पिये रहनेपर भी मुँहसे कोई अभद्र शब्द नहीं निकालते थे।

हम लोगोंके आसपास बैठे लोग ऋणकी चर्चा कर रहे थे। द्वितीय पंचवर्षीय योजनाको शीघ्र समाप्त करनेके लिए सोवियत सरकारको कुछ अरब ऋणकी आवश्यकता थी। मजदूरोंके सामने इसकी माँग आई थी। एक मज़दूर कह रहा था—" इसमें क्या सोचना है,—मैं अपनी दो महीनेकी तनख़्वाह दे दूँगा।"

उस मज़दूरके कपड़े और लोगोंसे भी अधिक फटे हुए थे। मज़दूर काम करनेकी पोशाक बदलकर वहाँ आये थे। यह पोशाक उनके थिएटर जाने या समाजमें हिलने मिलनेकी थी। फिर भी वह बहुतसे छेदोंसे भरी थी। उनके घरके वे ही सबसे सुन्दर कपड़े थे जिन्हें वे शायद चार-पाँच वर्षोंसे सम्हालकर पहनते आ रहे थे।

" लेकिन तुम्हें तो कपड़े खरीदने ही पड़ेंगे।" एक दूसरे मज़दूरने टोका—" कितने सालसे तो चिथड़े ही लादे चलते हो।"

" फिर भी चल ही जाता है!" थोड़ा मुसकराते हुए पहले मज़दूरने उत्तर दिया।

" दो महीनेकी तनख़ाह अगर दे दोगे तब तो यहाँ आकर खाने-पीनेके लिए तुम्हारे पास कुछ नहीं रह जायगा।"

" नहीं रहेगा,—मत रहे। उसके बिना भी चल जायगा। लेकिन

स्तालिनग्रादमें ट्रैक्टरका और चेल्याबिन्स्कमें मोटरका कारखाना तैयार किये बिना तो नहीं चलेगा। बिना ट्रैक्टरके तो हमें रोटीकी ही कमी हो जायगी, बिना मोटरके जापानी और जर्मन यहाँ पहुँचने लगेंगे।"

दूसरी ओरके मज़दूर प्रतिद्वंद्विताकी बातें कर रहे थे। हरेक मज़दूर, चाहे उसकी अवस्था कितनी ही खराब क्यों न हो, अपनी एक महीनेकी मजदूरी खुशी खुशी दे देगा। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं था। उनके सामने प्रश्न था कि यह रकम वसूल हो जानेकी खबर मोटरके कारखाने और कपड़ेके कारखानेवाले मज़दूरोंमें कौन पहले सोवियत सरकारके पास भेजता है।

चायखानेसे निकलकर. गोर्कीने कहा—"ये कितनी शांतिसे बातें करते हैं! दो-चार महीने तक आधा पेट खाकर रह जाएँ इसकी इन्हें परवा नहीं, पर दो महीनेकी तनखाह सोवियत-रक्षाके लिए दे देंगे। ये जानते और महसूस करते हैं कि इनका त्याग किस लिए है और उसका क्या महत्त्व है? किसान इसे नहीं समझ पाते, पर उन्हें भी समझानेके लिए मज़दूरोंकी भाषाके सिवा और कोई दूसरी भाषा नहीं हो सकती।"

गोर्कीके इलाकेने ऋणकी रकम सबसे पहले पूरी की। सोवियत सरकार तथा और प्रान्तोंके मज़दूरोंके यहाँसे इसके लिए गोर्की दादाके पास बधाईके तार आने लगे। उन तारोंको गोर्की दादा काँपते हुए हाथोंसे खोलते और कहा करते—

"ये बधाईके तार नहीं,—लेखकोंके ऊपर और भी अधिक भार लादे जा रहे हैं। अब समय आ गया है कि सोवियत लेखक अपनी जिम्मेदारी पूरी तरहसे महसूस करें। और देशोंके लेखकोंकी तरह इन्हें अब किसी परित्यक्ता स्त्रीकी जीवन-गाथा अथवा किसी धनी व्यक्तिकी औरतोंके संबंधमें 'ऐडवेंचर' की कहानी लिखनेका अवकाश नहीं। यहाँके मज़दूरोंके

जीवनके साथ ही साथ उनका मानसिक जीवन भी बहुत आगे और बड़ी तेज़ रफ्तारके साथ बढ़ता जा रहा है। लेखकोंको उनके साथ प्रतिद्वंद्विता करनी पड़ती है। लेखकोंका काम आगे रहना है, उन्हें यह देखते रहना है कि वे कहीं उस समाजके द्वारा लादे गये भारमें पीछे तो नहीं पड़ते जा रहे हैं। लेखककी जिम्मेवारी बहुत बड़ी है। अगर यहाँकी सामाजिक प्रगतिके निरीक्षणमें वे एक बार चूक जाएँ,—एक बार उनकी भावुकता उन्हें चंचल बना देनेमें समर्थ हो जाय, तो उन्हें उसके सुधारनेमें काफी ताक़त लगानी पड़ेगी: उतने वक़्तमें मजदूर कहीं आगे बढ़ गये होंगे।"

अन्तिम वाक्य उन्होंने अपने हालके अनुभवको सामने रखते और उसपर कटाक्ष करते हुए कहा। उनके पास पुराने और नये लेखकोंके बहुतसे लेख और पत्र आया करते थे जिनमें साहित्यमें पथ-प्रदर्शन करनेकी माँग रहती। वे उनपर खीझते और कहते—"सीखना तो है उन्हें यहाँके मजदूरोंसे, यहाँके साधारण जन-समाजसे,—उनके पास जानेमें इन्हें हिचक क्यों हो रही है? शायद बोर्जुआ संस्कारके कारण अभिमानमें थोड़ा धक्का लग रहा है।"

पुराने लेखकोंके विषयमें वे प्रायः कहा करते—"उन्हें अपना अभिमान छोड़ना ही पड़ेगा। उनका सबसे बड़ा दोष यह है कि वे जीवन जितना सरल है उसे उतनी ही सरलतापूर्वक व्यक्त नहीं करते। ख्वामख्वाहके आडम्बरसे व्यर्थमें जटिल बना देते हैं और उसी जटिलताकी उलझनमें उलझ कर अपने विकासका रास्ता रोक लेते हैं। उनके लिए शब्दाडम्बरके सिवा और कुछ शेष नहीं रह जाता। जनताकी नाड़ी टटोलनेमें उन्हें भय लगता है, देशका वास्तविक प्राण उन्हें सहमा देता है क्योंकि वे उससे अलग,—अपने मरे हुए मानसिक जीवनमें रहना अधिक पसन्द करने लगे हैं।"

इसीलिए पुराने लेखकोंके पास पत्र लिखते समय वे बार बार उन्हें चेताया करते—"शब्दाडम्बर छोड़ना पड़ेगा। साधारण और सरल

बोल-चालकी भाषामें रचनायें हों तो अधिक अच्छा हो, क्योंकि उसमें जन-साधारणके प्राणकी झलक रहेगी जिसके बिना कोई भी रचना सफल नहीं कही जा सकती। ”

नये लेखकोंको वे बराबर प्रोत्साहित किया करते, किन्तु जब उनकी रचनाओंकी भूल सुधारने लगते, तब लाल पेन्सिलके उसपर इतने दाग हो जाया करते कि तिल-बराबर भी जगह नहीं रहती। उनके विषयमें उनकी खास शिकायत यह रहती कि वे लेखक ‘ फोटोग्राफर ’ बनते जा रहे हैं। गोर्की उन्हें ‘ कलाकार ’ के रूपमें देखना चाहते थे। इन नये लेखकोंकी रचनाओंमें गोर्की दादाकी दृष्टिसे जीवन तो रहता, पर भाषा और लिखनेके ढंगकी अवहेलना की गई होती। इसे वे पुराने साहित्यके मास्टरोंसे सीखनेकी सलाह देते।

अक्सर ऐसा होता कि लेखक गोर्की दादाकी कड़ी समालोचनासे घबड़ा जाते और उनसे पूछते—‘ आखिर मेरे भाग्यमें लेखक होना बदा है या नहीं ? ’ गोर्की यह प्रश्न अपने आपसे पूछते रहनेकी सलाह दिया करते। इनकी समालोचनाकी सबसे बड़ी विशेषता यह रहती कि जिस प्रकार वे अपनी रचनाको बहुत ही कड़ी कसौटीपर कस हमेशा जाँचते रहते, अपनी कमी बहुत जल्दी ही महसूस कर लिया करते, उसी प्रकार और लेखकोंमें भी उसी प्रकारकी प्रवृत्तिकी आशा करते।

४

गोर्की दादाके साथ रहनेका पहला नतीजा यह होता कि आदमी अपनी निजकी टीका-टिप्पणी करना आरंभ कर देता। मनुष्य अपने भीतर टटोल कर अपना निजका वास्तविक स्वरूप देखनेकी चेष्टा करता। वह किस अंशमें समाजके लिए उपयोगी और किस अंशमें अनुपयोगी है इसका पता लगाने लगता। अपने जीवनका कोई भी ऐसा कोना बाकी नहीं बचता जिसकी भली भाँति जाँच न होती।

इस प्रकारकी तीव्रता सहन कर पाना आसान काम नहीं था। इसने उनके साथ मेरा एक घरमें रहना बड़ा मुश्किल बना दिया था। वे बाहर जो कुछ भी देखते उसका पूरा पूरा नक्शा अपने मनमें खींच लेते। और इसके बाद एक एक कर उस नकशेका विश्लेषण करने लगते। इस कामके सिलसिलेमें बहुत बार ऐसा होता कि बाह्य समाजका भार, अपने ऊपरका भार और समाजकी त्रुटिको वे अपनी त्रुटि मानने लगते। उनके भीतर ही भीतर बड़ा तूफान आ जाया करता। इसका असर आसपासके रहनेवालोंपर भी पड़ा करता। निकट रहनेवाले लोगोंको संदेह होने लगता कि कहीं उनकी त्रुटिसे ही तो उस बूढ़े लेखकका मन चिन्तित नहीं हुआ?

इस क्षेत्रमें मुझे अपने आपकी जाँच करनेकी आवश्यकता नहीं थी। अपने ऊपर नज़र डालते ही मुझे पता चल जाता कि मेरा स्वभाव बहुत लापरवाह है। दादाके साथ रहनेके कारण जिम्मेवारीका जो भारी बोझ मेरे ऊपर लद रहा था उसे सम्हालना मेरे लिए कठिन था। चारों तरफके वायुमंडलको देखते रहना और अक्सर उसीमें भूल जाना मेरे लिए अधिक स्वाभाविक था और वही सुखकर भी प्रतीत हुआ करता।

इस विभेदने मुझे निझनीमें और अधिक दिन नहीं टिकने दिया। मेरी तबियत दिनों दिन ऊबती जाती थी। मैं अपने अनुकूल समाज और वातावरण चाहता था।

ढूँढ़नेपर भी अपने मनबहलावका साधन मुझे निझनीमें नहीं मिल रहा था। मन अधिकाधिक उचाट होता गया। इस ओर गोर्की दादाका ध्यान नहीं खिंचने देना चाहता था पर उनकी चतुर आँखोंसे कुछ छिपा रखना भी बड़ा कठिन था। शायद मेरे भीतर चलते हुए संग्रामका भी उन्हें पता लग गया था। एक दिन वे हठात् पूछ बैठे—

"बड़ा उचाट लग रहा है, क्यों?"

मैं कुछ उत्तर नहीं दे पाया।

" ड्रामा लिखनेकी अपेक्षा उसे देखना अधिक प्रिय लगता है, क्यों?" इस बार मैंने हुँकारी भरी।

" ठीक कहते हो। लिखनेवाले बदसूरत पर खेलनेवाले बड़े सुन्दर होते हैं।" निझनी छोड़नेकी अनुमति उन्होंने खुशी खुशी दे दी।

५

मैं मास्को जा रहा था। वे स्टेशन तक टहलते चले आये थे। गाड़ी छूटनेमें देर थी। इंजिन-ड्राइवर कुछ देर तक ध्यानसे उनकी ओर देखता रहा। थोड़ी देरमें शायद वह उन्हें पहचान गया। नज़दीक आ उसने सर झुकाकर नमस्कार किया और पाकेटसे कुछ निकालते हुए कहा—" इस बार मैंने मास्कोमें आपके ही नामके थियेटरमें ' नाद्रिये ' (अन्तर्जगत,—गोर्कीका लिखा एक ड्रामा) देखा। यह है लूका (ड्रामाके एक पात्र) के एक महीनेकी तनखाह—"

गोर्की उसकी ओर अवाक् होकर देख रहे थे। ड्राइवर कहता गया—

" सोवियत साहित्य और थियेटरके सींचनेमें इसका उपयोग हुआ तो मैं अपना जीवन सार्थक मानूँगा।"

गोर्कीने ड्राइवरके कोयला और तेलसे रँगे हाथ कस कर दबाये।

मुझे आज दूसरी बार उनकी आँखें भरी हुई दिखलाई दीं।

चतुर्थ खंड

मास्को

१

मैंने मास्कोकी जैसी कल्पना की थी उससे वह भिन्न निकला। यहाँका ‘अक्टूबर स्टेशन’ पैरिसका ‘ल-गार-दु-नौर’ बन रहा था। सब लोगोंको जल्दी पड़ी थी। बोल-चालमें पैरिसियन तर्जकी चुस्ती और फुर्त्ती थी। लोगोंके ललाटपर ज़िम्मेवारीके भारके कारण जिन चिन्ताकी रेखाओंकी कल्पना कर रहा था वे देखनेको नहीं मिलीं। इसके बजाय उनके मुँहपर हँसी थी। उनके कपड़े प्रान्तीय शहरोंकी अपेक्षा अधिक सुन्दर कटे-सिले थे। चाल-ढाल तौर-तरीकेमें भी अधिक तेजी थी।

दिसम्बर महीना था। तीन बजेके ही लगभग सूर्यास्त हो चुका था। इस मौसिमका धुँधला कुहासा अधिकाधिक घना होता जाता था। फाहेके समान बर्फ़ गिर रही थी। फरकी टोपियोंसे लोग कान ढकने लगे थे। ओवरकोटका कालर ऊँचा कर मुँह तक ढक लेते,—सिर्फ आँख और नाकके पासके हिस्से दिखलाई देते थे। साँसकी गरमीसे बकरेके कानके समान दीखनेवाली ओवरकोटकी खूँटपरकी बर्फ़ पिघल कर गीली हो जाती। लोग उन्हें बार बार पिता करते।

ट्रामकी खिड़कियाँ और छत मोटी बर्फ़की तहसे ढकी थी। दोनों ओरकी बेंचोंपर बैठे लोग कापेक (रूसी सिक्का) निकालते, शीशेकी खिड़कीपर जमी बर्फ़को उससे खरोंचते और मुँहसे भाफ देकर आँखोंके

बराबर जगह साफ कर लेते । वहींसे उन्हें बाहरका दृश्य दिखलाई देता और वे ट्रामका चौराहेपर पहुँचना पहचाना करते । उनकी साफ की हुई जगहपर बहुत जल्दी जल्दी बरफकी तह मोटी होती जाती । इसीलिए उन्हें बराबर ही उसे साफ करते रहना पड़ता ।

चढ़नेवालोंकी भीड़का कुछ पूछना नहीं था । हैंडिल पकड़कर ऊपर उठ ही रहा था कि पीछेके लोगोंने ढकेलते ढकेलते गाड़ीके बीचमें पहुँचा दिया । धक्कामुक्कीके कारण शरीरमें थोड़ी गरमी आ गई जो उस समय बहुत ही प्रिय जान पड़ी । यदि मैंने ऊपर लगी हैंडिल न पकड़ ली होती तो शायद उस धक्केने मुझे ट्रामके अगले दरवाजे तक ठेलकर उसीकी राह बाहर उतार दिया होता । अपनी जगह कायम रखनेके लिए मुझे जरा जमकर खड़ा होना पड़ा । संयोगसे मेरे पास ही बेंचपर एक जगह खाली हुई । मैं उसपर जा बैठा । दूसरे लोगोंकी ही तरह बर्फ खरोंचकर बाहर देखने लगा । स्त्री कंडक्टर प्रत्येक चौराहेपर ज़ोरसे चिल्लाकर स्थानका नाम कह दिया करती । मेरे लिए सब बराबर था । यदि कहीं उतरना भी चाहता तो उस भीड़के कारण काफी देरतक मल्लयुद्ध करना पड़ता । एक 'बुलवार'के पास पहुँचनेपर भीड़ कुछ खाली हुई । मैंने ट्राम छोड़ दी ।

बुलवारमें टहलनेके रास्तेपर सैर करनेवालोंकी भरमार थी । दोनों तरफ रखी बेंचोंपर बर्फ जमी हुई थी । फिर भी उसपर बहुत-से जोड़े बैठे हुए थे । कितने तो बिल्कुल निश्चिन्त हो बैठ गये थे । उन्हें बर्फ पड़नेकी कोई परवाह नहीं थी । जल्दी किसीको भी नहीं थी क्योंकि लोग टहलनेकी ही नीयतसे आये हुए थे ।

मुझे सरदी लग रही थी । दस्ताना पहने रहनेपर भी हाथ अकड़ा जा रहा था । अभी थोड़ी देर पहले ट्रामसे उतरनेके लिए उसे पाकेटसे निकालना पड़ा था और उतनी ही देरमें वह काठके समान सख्त हो गया था । घर छोड़कर यहाँ आ प्रेमालाप करनेवालोंको देखकर आश्चर्य हो रहा था ।

कहाँ जाऊँगा, यह मुझे जल्दी निश्चय करना था । और कोई चारा न

देख सामनेके एक चायखानेमें चला गया। वहीं घंटों बैठा रहा।

२

कमरे और चायकी गर्मीसे स्वस्थ होकर बाहर निकला। बर्फ़का गिरना बन्द हो गया था। सर्दीमें गीलेपनका अभाव रहनेके कारण अब वह अप्रिय नहीं थी। थोड़ा आगे बढ़ा। पासकी ही किसी घड़ीमें नौ बजनेकी आवाज़ आई। यही तो रूसमें घूमने जानेका सन्ध्याका समय गिना जाता है! इसी समय बिछावनपर लेट जानेका अभ्यास महीनोंसे छूट चुका था।

स्केटिंग-रिंगसे बड़ा ही सुन्दर संगीत सुनाई दे रहा था। तीरकी गतिके समान स्केट करते हुए जोड़े 'जुट......जुट......जुट' आवाज़ बर्फ़पर करते हुए घेरा लगा रहे थे। मेरा जूता ताजे स्नोपर—'मत......मत......मत' की आवाज़ कर रहा था। स्केटिंग-रिंगमें ही जुटना मुझे अन्तमें तय करना पड़ा।

३

शीशेकी तरह चिकनी सख़्त जमी हुई बर्फका मैदान देखकर स्वाभाविक ही स्केट करनेवालोंके (बर्फपर दौड़नेका स्पोर्ट) पाँव फड़फड़ाने लगते हैं, हृदयकी धड़कन तेज़ होने लगती है और दिल छूटकर बाहर कूद आना चाहता है। इस मज़ेका अनुभव स्केटिंग जाननेवाले ही पूरी तरह कर सकते हैं। बर्फ़पर दौड़नेका लोभ इतना प्रबल होता है कि लोग सारे संसारका सुख भी किनारे रख उछलकर स्केटिंग रिंगमें पहुँच जाते हैं।

फाटकके पास ही किरायेपर स्केट दिये जाते थे, उसके लिए अपने पाँवोंका माप बतलाना पड़ता था। मैंने भी अपना ओवरकोट और बूट रखनेके लिए देकर स्केट ले लिया। एकतालिस नंबर पाँवमें ऐसा बढ़िया फिट हुआ मानो वह मेरे लिए ही खास तौरसे बनाया गया हो।

खुशीके मारे उछलता हुआ बर्फ़पर आया। इस साल पहले पहल स्केट करने उतरा था। पाँव काँप रहे थे। पहले कुछ कदम तक शरीरके भारके अंदाज़पर खयाल रखना पड़ा पर मैदानके बीच पहुँचते न पहुँचते सब आपसे ठीक हो गया। यह ठीक तैरनेके समान होता है। तैराकोंको हाथ-पाँव चलानेके बारेमें सोचना नहीं पड़ता कि कौन पाँव और कौन हाथ कैसे चलाया जाय, वे स्वाभाविक ही चलने लगते हैं। ठीक उसी प्रकार स्केटिंगमें भी पैर आगे बढ़ने लगते हैं। रिंगके एक किनारे लाल सेनाका एक स्कैड्रन स्केट करनेवालोंके मुआफिक बाजा बजा रहा था। उस बाजेका 'टैक्ट' पैरोंको और भी अधिक हलका कर देता था। उनमें एक प्रकारका 'स्प्रिंग' आ गया-सा महसूस होने लगा।

बड़ी तेज़ रफ्तारसे आगे बढ़ता, एकाएक मुड़ता, फिर पीछेकी ओर घूम जाता,—आगेकी अभ्यास की हुई कलायें एक एक कर याद आने लगीं। एक खास तरहसे साँपोंकी तरह लचकदार शक्लमें पीछेकी ओर दौड़नेका अभ्यास न होनेके कारण जो तेज गति चाहता था और जितनी लचक पावोंमें चाहिए थी नहीं आ रही थी। पर जितना कुछ हो रहा था उसीमें मग्न हो आँखें मूँद पीछेकी ओर हटता जा रहा था। हठात् किसीसे टकरा गया। अपनी समान उम्रकी लड़कियोंके एक जोड़ेका तलमला कर बर्फपर गिरना अपने गिरनेके साथ ही मालूम पड़ा। हम लोग उठे। उनके कपड़ेकी बर्फ झाड़ते हुए मैं 'इजविनीचे' (माफ कीजिएगा) बुदबुदा रहा था और वे 'निचीवो' (कोई हर्ज़ नहीं) कह रही थीं। 'पइद्योम्चे' (चलिए, साथ चलिए) कह कर उन्होंने मुझे बीचमें ले लिया और हम लोग आगे बढ़े।

"आप लोगोंको चोट तो नहीं लगी?" मैंने पूछा।

"स्केटिंगसे भी बढ़कर कोई बढ़िया मज़ा होता है? यहाँ क्या चोट लगेगी?" उन्होंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

उनका कहना ठीक था। हम लोगोंने एक साथ कई प्रकारसे स्केट

करनेका अभ्यास किया। कभी एक टाँगपर बैठकर गये, कभी जोड़ा बना, कभी तीनों आगे-पीछे हो। हम लोगोंको गर्मी लगने लगी। कोटका बटन खोल हम लोगोंने रिंगके किनारे रखी एक बेंचपर थोड़ा विश्राम लिया। तीनों ही हाँफने लगे थे। मुँह बन्द कर ठंडी हवामें साँस ली।

बर्फ़पर 'फौक्स ट्रौट' नाचनेकी मेरी प्रिय मेलोडी बाजावालोंने आरंभ की। मैं उपयुक्त संगिनीकी खोजमें निकला। जाते जाते मैंने उन दोनों लड़कियोंसे फिरसे माफी माँगी। उन्होंने कहा—"यह तो आपकी बड़ी ख़राब आदत है। माफी माँगनेसे हमें बड़ा गुस्सा आता है। रोज़ आकर हमें वैसा ही गिराया कीजिए।" हमें उसीमें मज़ा आता है।'

रिंगके बीचमें अधिक कुशलता-पूर्वक स्केट करने वाले लोग जुटे थे। सारे संसारके कुशल स्केट करनेवालोंकी प्रतिद्वंद्विता में प्रथम आनेवाली सोन्याकी चर्चा चल रही थी। कई लड़कियाँ उसीके समान कला-पूर्ण नाच दिखलानेकी चेष्टा कर रहीं थीं। हम लोग चारों तरफ खड़े हो अपने अपने हाथके दस्ताने खोल उनके लिए तालियाँ पीटा करते। नृत्य-कला सिखलानेवाला यदि अपनी किसी शिष्यासे बहुत अधिक प्रसन्न होता तो उसे गोदमें ले, कभी ऊपर उठा, उसके साथ नाचने लगता। हम लोग उस जोड़ेकी कुशलतापर हृदयसे मुग्ध हो तालियाँ पीटा करते।

स्केटिंग-शिक्षक इसके बाद कला सीखने वालोंसे स्केट करते हुए अँग्रेजी संख्या आठ (8) की जैसी शक्ल तैयार करवाने लगे। इसका मैं पहले ही अभ्यास कर चुका था। शिक्षक महाशयने इस परीक्षामें मुझे पास घोषित किया और नृत्य-वर्गमें दाखिल कर लिया। उन्होंने ही हम लोगोंके जोड़े लगा दिये। मुझे उसी जगह अपने क्लबका सदस्य भी बना लिया।

मेरी संगिनी ठीक मेरे ही कदकी और मेरे ही समान दुबली-पतली थी। स्केटिंग वह मुझसे थोड़ा ही अधिक जानती थी। नृत्यकी ऐसी कोई शक्ल नहीं थी जिसमें मैं उसका साथ न दे पाता होऊँ। नृत्यकी नई नई

शक्लें ढूँढ़ निकालनेमें वह बड़ी ही प्रवीण थी।

हम लोगोंके ही जैसे दस जोड़े और थे। एक साथ 'वाल्च' नाचते हुए हम लोग सारे रिंगका ही चक्कर लगाने लगे। देखनेवाले कहते—"ज़िन्दगीका मज़ा तो ये ही लूटते हैं।"

उनकी ये बातें ही मुझे फिरसे इस दुनियामें ले आतीं। नहीं तो, उस दिन स्केटिंगमें इतना मस्त हो गया था कि कोई भी चिन्ता मनमें नहीं रह गई थी। मैं वास्तविक आनन्दकी उस अवस्थामें था जिसका अनुभव वा अन्दाज़ा बरफका खेलाड़ी ही लगा सकता है।

स्केटिंग-रिंगमें दो-तीन सौ आदमी रहे होंगे पर उन चन्द घंटोंके ही बीच कोई अपरिचित नहीं रह गया था। उस रिंगमें पहले पहल स्केट किया है, इसपर स्वयं ही विश्वास करना कठिन हो रहा था। बारह बजेका घंटा सुनाई दिया। इतनी जल्दी,—वह भी सर्दीके मौसममें जब कि तीन बजे ही सूर्यास्त हो जाता है, आधी रात आ जायगी इसपर कम ही स्केट करनेवालोंको विश्वास हो सकता था। पर डिनामो स्केटिंगके संचालक भी व्यवस्था करते करते थकते जा रहे थे। रिंग बन्द करनेका समय आ गया था।

हम लोग हँसते हुए स्केट उतार बूट और ओवरकोट ले रहे थे। कई 'परिचित' मेरे पास ही बैठे थे। और अधिक परिचय प्राप्त कर लेनेपर स्केटिंग-शिक्षकने मेरा होटल जानेका निर्णय सुन कहा—"इसका मैं सोवियत खेलाड़ी होनेकी हैसियतसे सख़्त विरोध करूँगा। खिलाड़ी खिलाड़ियोंकी कद्र करना यहाँ जानते हैं। और अब स्केटिंग-शिक्षक होनेके नाते मैं क्लबकी ओरसे आपको आज्ञा देता हूँ कि आज मेरे घरपर ही आपको रात बितानी पड़ेगी।"

दूसरे खड़े लोगोंने ताली पीट उनका समर्थन करते हुये कहा—"बहुत ठीक! होटलोंमें तो विदेशी या हमसे अपरिचित लोग ही जाकर टिका करते हैं, आप न तो विदेशी और न अपरिचित हैं, इसलिए होटलमें जानेकी बात सोचकर ही आपने अन्याय किया है।"

मेरी स्केटिंगकी संगिनियोंने भी कहा—" आपको अनुशासन मानना ही होगा। "

४

एक सप्ताहके ही अन्दर मैं मास्कोका ' पुराना वाशिन्दा ' बन गया। शहरके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक कोई भी स्थान ऐसा नहीं रहा जिससे मैं परिचित न होऊँ ! परिचित लोगोंका भी अभाव नहीं था।

वहाँके ' वेचरनाया प्रावदा ' (सन्ध्याके समय निकलनेवाले मास्कोके अखबार) ने मुझे मास्कोका सर्दीके दिनोंका खेल-संवाददाता नियुक्त कर लिया था। काम बड़ा ही आसान और मन लगनेवाला था। मुझे स्केटिंगकी प्रगतिके विषयमें विशेष रूपसे संवाद भेजना पड़ता था और यही काम था जिसके लिये मास्कोमें कुछ दिन रहनेकी इच्छा हुई थी।

रूसी प्रणालीके अनुसार रहन-सहन, खान-पान, वेष-भूषा रखनेके कारण किसी भी बातकी तकलीफ नहीं थी। मकान-भाड़ेकी बिल्कुल ही चिन्ता नहीं, भोजनके लिए एक स्टोलोवाया (भोजनालय) विशेषकर खिलाड़ियोंके लिये ही सोवियत सरकारने बनवा रखा था जहाँ स्पोर्ट-संस्थाकी ओरसे दिये गये भोजनके कार्ड दिखलाने पर भोजन मिल जाया करता था। सैर-सपाटे तथा अन्य दैनिक फुटकर खर्चके लिए अखबारसे काफी पैसे मिल जाते थे। मेरा रहना ' रईसों ' जैसा होता जा रहा था।

विदेशी बने रहनेवालोंको मास्कोमें उन दिनों बेहद तकलीफ हुआ करती थी। बहुतोंका तो जिस प्रकार मैं रह रहा था उस प्रकार रहनेपर दिवाला ही निकल जाता। होटलोंके कमरेके लिए पचास रुपये, दैनिक भोजनके लिये सौ, और सैर-सपाटेके लिये पचास,—कुल लगभग दो सौ रुपये उन्हें रोज़ाना खर्च करना पड़ता। हाँ, रूसी यात्री-संघके जरिये सैर करने यदि आये होते तो बात दूसरी थी,—उन्हें पचीस-तीस रुपये ही रोज़ाना खर्च करने पड़ते। लेकिन, उस हालतमें वे एक महीनेसे अधिक

रूसमें टिक नहीं सकते थे।

मास्कोमें सबसे पहले यह बात झलक जाया करती कि रूसमें सर्व-साधारणका राज्य है। इस धारणाके विपरीत भाव रखनेवालोंके लिये वहाँपर अत्यधिक तकलीफ़ उठाना स्वाभाविक था। यह बहुत कुछ विपरीत धाराकी ओर तैरने जैसा होता, और वह भी सामाजिक बहावमें, जो साधारण बहावसे कहीं अधिक जटिल होता है। यहाँ विदेशी बने रहनेवालोंको केवल शरीरिक ही नहीं मानसिक क्लेश भी बहुत अधिक पानेकी संभावना थी।

समाजमें हिल-मिल जानेके सिवा मैं वहाँकी सरदीका भी अभ्यस्त हो गया था। जो सरदी पहले दिन बूलवारमें मुझे संता रही थी वही अब प्रिय मालूम पड़ने लगी। बरफ़पर बैठकर प्रेमालाप करनेवालोंको देख अब आश्चर्य भी नहीं होता; बल्कि सरदीकी मौसिमका वही वास्तविक फैशन होना चाहिये, इसका मैं पक्का हामी बनता जा रहा था।

शहरमें दर्जनों स्केटिंग-रिंग थे। उनमें चार-पाँच सबसे अच्छे लगे। प्रायः ऐसा हुआ करता कि एक सन्ध्यामें ही सब जगह थोड़ा थोड़ा स्केट कर आता। मेरा वास्तविक कार्यक्रम सात बजे शामको आरंभ हुआ करता और रोज़ाना दो बजे रातको मैं सोया करता। जिस दिन बारह-एक बजे दिनमें संयोगवश थोड़ी धूप निकल आती, सरदी और भी अधिक बढ़ जाया करती। उस सरदीमें गरमानेके लिये अब चायखाना नहीं बल्कि स्केटिंग-रिंगकी शरण लेता।

कुछ खेलाड़ियोंके सीनेपर एक तरहका तमगा झूलता हुआ देखता। ध्यानसे देखनेपर उसपर जी० टी० ओ० तीन अक्षर लिखे दिखलाई पड़े। पूछनेपर लोगोंने उसका अर्थ बतलाया—'श्रम और देशरक्षाके लिये तैयार।' यह एक तरहका स्पोर्ट-पदक था। लगभग बीस तरहके खेलोंमें परीक्षा पास कर लेनेपर यह पदक दिया जाता था।

युवा-युवतियोंके लिए उन खेलोंमें पास होना विशेष कठिन नहीं हुआ करता। मैं भी उसकी तैयारी करने लग गया। इसके लिए

सैनिककी भाँति भी थोड़ी शिक्षा लेनी पड़ती थी। परीक्षाके विषयोंमें निशाना लगाना, ग्रानाड (एक प्रकारका बम) फेंकना, गैस-मास्क लगाकर एक मीलका रास्ता तय करना, आदि बातें भी रखी गई थीं। इनके सिवा ऊँची और लम्बी कूद, सौ गज और एक मीलकी दौड़, तैरना, ग्रानाड लेकर तैरना, स्केटिंग, स्की आदि विषय भी रखे गये थे। तमगेके लिए उतना नहीं जितना कि इन विषयोंमें दिलचस्पी रखनेके कारण मैंने ये परीक्षायें दीं। उत्तीर्ण भी हुआ। नियत दिन बैंड आदिसे सुसज्जित समारोहके बीच दूसरे सौ साथियोंके साथ तमगेसे विभूषित भी किया गया।

उस दिनकी मेरी खुशीका कुछ पूछना ही नहीं था। तमगा लगा कर सब परिचित स्केटिंग-रिंगमें स्केट कर आया। धीरे धीरे यह भी अनुभव करने लगा था कि उस तमगेका स्पोर्टके सिवा और भी कुछ महत्त्व होता है। मनुष्य श्रमको आदरकी दृष्टिसे देखना सीख जाता है। दूसरे देशोंसे सोवियतकी विभिन्नता प्रदर्शित करनेवाली शायद यही सबसे बड़ी विशेषता है। और देशोंमें आलसी निकम्मे लोगोंकी,—दूसरेके श्रमपर जीवित रहनेवालोंकी ही अधिक कदर हुआ करती है। वैसे ही लोग समाजमें श्रेष्ठ और अगुआ गिने जाते हैं। सोवियतमें ठीक इसका उलटा है। वहाँ आलसियोंकी गुज़र नहीं,—दूसरोंके श्रमपर जीवित रहनेवालोंका नामोनिशान भी उठा देनेकी तैयारी है। इज्जत, कदर, श्रद्धा, बल्कि यों कहा जाय कि पूजा भी श्रमकी ही की जाती है।

अब तक सोवियत रूसका जितना कुछ देखा था, जितनी जगहें देखी थीं, जितने लोगोंसे मिला था, जितने लोगोंके बीच रहा था,—सबको वास्तवमें समझ पानेकी यही वास्तविक कुञ्जी दिखलाई देने लगी।

५

आकाश बड़ा ही स्वच्छ,—एकदम निर्मल था। चाँद और कई तारे ठीक हमारे सरपर खिलखिला कर हँसते हुए चमक रहे थे। ऐसी सन्ध्या सरदीके दिनोंमें मास्को बहुत ही कम देखता है।

हम लोगोंने नदी किनारेका रास्ता लिया। मास्को नदी बर्फके कारण स्थिर हो गई थी। पुलोंतक जानेकी आवश्यकता नहीं। जिस किसी स्थानसे नदीकी छातीपर पाँव रखते हुए उसे पार किया जा सकता था।

सामने क्रेमलिन (मास्कोका पुराना राजप्रासाद जहाँ आजकल सोवियतके नेता रहते हैं) का गुम्बज सर ऊँचा किये खड़ा था। हम लोग उसीकी ओर बढ़ रहे थे। रेड स्कायर (क्रेमलिनके सामनेका आँगन) की बर्फ कुछ मज़दूर साफ कर रहे थे। क्रेमलिनकी ओर ठीक बीचमें मौसेलियम (समाधि) थी। बिजलीकी अपेक्षा चाँदके प्रकाशमें ही उसके मुख्य द्वारके पाँच रूसी अक्षर पढ़े जाते थे। लेनिन। लेनिन।

लेनिन-स्मारक में एक रास्ता भीतर जानेका और दूसरा बाहर निकलनेका था। भीतर जानेवाले रास्तेके सामने लम्बी कतार लगी थी। लोग सरदीमें बड़ी शान्तिपूर्वक उस कतारमें खड़े थे। रँग-ढँगसे मालूम पड़ता वे रूसके सुदूर प्रदेशोंसे आए हुए लोग हैं। उन्हें मास्कोवालों जैसी जल्दी नहीं पड़ी थी। बारी बारीसे वे उस स्मारकके भीतर घुस रहे थे। उनके पीछे हम लोग भी जा खड़े हुए और अपनी बारी आनेकी प्रतीक्षा करने लगे।

मुख्य दरवाजेपर लाल सेनाके दो सैनिक चमकती हुई संगीनें लगी राइफल लिये अटेन्शनकी हालतमें खड़े थे। उनके बीचसे हम लोगोंने भीतर प्रवेश किया। रास्ता दाँयें घूमता था। थोड़ी दूरपर ही लेनिनकी समाधि थी। देखनेपर कोई भी उसे जीवित न हो, ऐसा नहीं समझ सकता था। उसकी पोशाक मुझे कमसोमोल (युवा कम्युनिस्ट) जैसी दिखलाई पड़ी। वह गहरी नींदमें स्वप्न देख रहा था। कहीं हमारी आहट न उसे सुनाई दे जाये, इस भाँति निःशब्द हम लोग दूसरे दरवाजेसे निकल आये।

उस समाधिके पास ही क्रेमलिनकी दीवार थी। इस दीवारके पास भी बड़े बड़े प्रोलिटारियन नेताओंके भस्म गड़े हैं। संसारके बड़े बड़े मज़दूर-

नेताओंका यह समाधि-स्थल है जिनका स्वप्न सोवियत यूनियनके रूपमें वास्तविकता बन चुका है ।

लेनिनकी समाधिकी दाईं ओर कुछ दूरपर गिर्जेके आकारकी एक और इमारत थी । उसीके सामने ज़ारशाहीके जमानेकी वधस्थली थी । पिछली शताब्दियोंमें दलितोंके बड़े बड़े नायक-योद्धाओंका सर वहींपर कुल्हाड़ेसे अलग किया जाता था । जिन दो लोहेके खंभोंके बीच काटनेकी सुविधाके लिए सर दबा रखा जाता था वे अभी भी वर्त्तमान हैं और इस वक्त बिलकुल काले दीख पड़ते हैं । पुगाचेव, स्तेंकाराजीनके जैसे किसान-नेता; चेरनीशेव्स्की, दस्तयेव्स्की जैसे लेखकोंके साथी,—कितने ही क्रान्तिवादियोंके खूनसे वह जगह तर हुई होगी । उन लोगोंके भी स्वप्न आज सोवियत यूनियनके रूपमें सफलीभूत हुए हैं !

समाधिकी बाईं ओर 'क्रान्तिका अजायबघर' था । यहाँ क्रान्तिकारी आन्दोलनका विकास संसारके किस देशमें किस प्रकारसे हुआ है, इसका इतिहास दिखलाया गया है, तथा क्रान्तिके जमानेके बहुतसे स्मृति-चिह्न, इकट्ठे कर रखे गये हैं । उसे पार कर हम लोग त्वेरस्काया और अब 'गोर्की सड़क' पुकारे जाने वाले रास्तेपर आये । लोगोंकी बड़ी चहलपहल थी । यह मास्कोके सुन्दरतम रास्तोंमें एक है । चलनेवालोंके चेहरेपर मुस्कुराहट थी, भीतर आनन्द था,—वे विजेता थे । इसके साथ साथ चेहरे यह भी व्यक्त करते थे कि वे श्रमके पुजारी हैं । समाजके विकासमें वे यथाशक्ति हाथ बँटा रहे हैं और इसीलिये उन्हें अपने जीवनसे पूरा पूरा सन्तोष है ।

उस दिन न मालूम क्यों जिस किसीके चेहरेपर दृष्टि जाती मुझे आनन्द और सुखकी ही झलक दिखलाई पड़ती ।

घर लौट कर गरम बिस्तरेपर पक्षियोंके पंख भरे रजाईसे लिपट कर सोया उस समय भी मनमें यही आ रहा था—क्या इससे भी और सुखी कहींका समाज हो सकता है ?

मास्को आँसुओंसे नहीं पिघलता

१

अपनी पुरानी नोटबुकके पन्ने उलट रहा था। शुरूके एक पृष्ठपर नाद्याकी लिखावट मिली। उसका हमेशा हँसता हुआ चेहरा याद आया। समुद्री जहाजपर उसका सदा तान्याको चिढ़ाते रहनेका पूरा दृश्य आँखोंके सामने नाच गया।

नाद्याने विदा होते समय अपना मास्कोका पता मेरी नोटबुकमें लिख दिया था और तीन बार कहा था—'आना। आना। आना।' अब तक उसे क्योंकर भूला रहा, इसीपर आश्चर्य हुआ। उसी दिन सन्ध्या-समय उसके घर जाना तय किया।

बनारसके समान कई गलियाँ पार करनेके बाद वह मकान मिला। दरवाजा खुला था। भीतरकी सीढ़ियाँ सड़ककी रोशनीमें आधी दूर तक दिखलाई दे रही थीं। मैं एकतलेपर चला गया। एक तरफके दरवाजेकी फाँकसे रोशनी आ रही थी। मैं उधरसे ही नाद्याकी हँसी सुननेकी प्रतीक्षा करने लगा, पर वह सुनाई नहीं दी। मैंने दरवाजा खटखटाया।

एक प्रौढ़ा दरवाजेपर आ खड़ी हुई। उनके चेहरेमें फ्राउ ग्राफ जैसी समानता देख मैं चमक गया। होंठ वैसे ही पतले, लाल लिपस्टिकसे पुते, भवें उसी प्रकार मुड़ी हुई, पूरे टॉयलेट (साजबाज) में नाइयोंकी कलाका वही चमत्कार! पर ये कुछ दुबली थीं और शायद इसी कारण कुछ लम्बी भी दीखती थीं। चेहरेपर 'बड़े घराने' की औरतों जैसे

अधिकार जमानेकी कलामें निपुणताके चिह्न थे। शायद उनमें अहंकार रखने और रुआब दिखलानेकी भी आदत थी। पर यह रूसी औरतोंके समान नहीं जो ये भाव सिर्फ मर्दोंको अपनी ओर खींचनेके लिए दिखलाया करती हैं। उनकी उम्र और जीवन-उपभोग करनेकी प्रवृत्तिमें बड़ी असमानता थी। उनके यौवनकी बहुत-सी वासनायें अपूर्ण रह गई हैं इसे वे न तो छिपानेकी कोशिश करती थीं और न यह उनके प्रयत्नसे छिपाई ही जा सकती थी। वे भीतर ही भीतर यह अवश्य महसूस करती थीं कि उनकी वे लालसायें पूरी होनेके दिन बीत गए, फिर भी सिर्फ उम्र कुछ अधिक होनेके कारण अपनी हार मान लेना उनके स्वभावके विरुद्ध था। उन्होंने संक्षिप्त, स्पष्ट, तीव्र पर चटपटे पेरिसीयन ढंगसे कहा—" बोंसुआ—" (गुड इवनिङ्ग)।

मैंने झुक कर उसका उत्तर दिया। शायद मैं आवश्यकतासे अधिक झुक गया था। उन्हें यह पसन्द आया। उन्होंने पूरा दरवाज़ा खोल दिया और पूछा—" इतालियानो "

उन्हें शायद रूसीकी अपेक्षा पश्चिमी यूरोपीय तौर-तरीका अधिक पसंद था। मैंने नाद्याका ज़िक्र किया। उन्होंने मुझे घरके भीतर लेते हुए कहा—

" फिर यही क्यों नहीं कहते कि आप नाद्याके दोस्त हैं ? और अधिक परिचयकी मुझे आवश्यकता नहीं। "

मेरी बाँह पकड़ वे बैठकमें ले गईं। एक सज्जन वहाँ पहलेसे बैठे थे। उनका परिचय उन्होंने दिया—' जेनरल मिखाइलोव— ' और मेरे विषयमें ऐलान किया—

" काउंट कवालियेरो,—इटालियन लेखक—"

मैं उनके 'लाल बुझक्कड़' दिमागकी मन ही मन सराहना करने लगा। खयाल आया, कहीं मेरी काउंटकी पदवीके ही समान तो सामने बैठे सज्जनको जेनरलकी पदवी नहीं मिली है ? इस प्रकारके सन्देहके कारण

भी थे । वे सज्जन जिस प्रकारकी साधारण पोशाकमें थे उसकी अपेक्षा वर्दी पहनकर आना किसी भी देशके जेनरलने उपयुक्त समझा होता । मिलिटरी उजड्डताके स्थानपर बनिया होनेके लक्षण ही इनमें अधिक थे । पेट दोनोंके ही तने होते हैं, इसलिए उससे कुछ अंदाज़ लगाना कठिन था ।

उन्होंने जिस प्रकार मुझसे ज़िरह करना शुरू किया उससे यह भी पता चला कि वे खुफियावालोंके काममें निपुण हैं । उन्होंने कटाक्ष करते हुए पहली दृष्टि मेरी ओर फेरी थी । कुछ देर बाद शायद अपने ही वर्गका समझ कुछ सम्हल गये थे, पर स्पष्ट स्वीकार करनेके लिए तैयार नहीं हो रहे थे । उन्हें मेरा उस मौकेपर पहुँच जाना नागवार अवश्य महसूस होता था, पर जिस समाजके होनेका वे बाहरसे दावा करते थे उसके लिए इस नागवारीका प्रकट होने देना अस्वाभाविक था । इसके लिए वे यदि घुड़कते भी तो घरवालीकी ओर दृष्टि फेरकर । शायद वे उन्हें इशारेसे जतला देना चाहते थे कि इस विदेशीको लाकर खड़ा कर देनेमें सारा अपराध तुम्हारा ही है । और कोई अधिक स्पष्ट तरीका न पा उन्होंने मौसिमकी ओट लेते हुए कहा—" मादाम वासिलियेवना, आजका मौसिम कितना खराब है ! मैं तो कुत्तोंकी तरह अकड़ा जा रहा हूँ । "

" बहुत ख़राब जेनरल ! बहुत ही ख़राब है," मादामने उत्तर दिया । उनकी इस बातमें जेनरलके प्रति सहानुभूतिकी अपेक्षा अन्यमनस्कता ही अधिक थी । मेरा वहाँपर रहना उन्हें अपनी चालके सफलीभूत होनेमें सहायक साबित होगा, शायद यह भी वे इन चन्द मिनटोंमें मन ही मन स्थिर कर चुकी थीं । उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा—" नाद्या कुछ कह नहीं गई है । शायद जल्दी ही लौट आये । क्या कुछ देर प्रतीक्षा करनेका आपको अवकाश है ? "

मैंने अपनी सम्मति जतलानेका इशारा किया । जेनरल इसे बर्दाश्त नहीं कर पाए । मन ही मन वे कुछ दूसरा ही प्लैन तैयार कर वहाँ पहुँचे थे । उन्होंने कहा—

"काउंटको यहाँ बैठनेमें शायद तकलीफ हो रही है। वह सोफा कहाँ गया ?"

वे उसे ढूँढ़ने लगे। वह उन्हें एक कैनवैसकी आड़में मिला। उन्होंने मुझे वहाँ बैठनेका इशारा किया। मैं परदेके पीछे बैठा। मुझे मेज़से एक किताब उठाकर पढ़नेके लिए दी। मैं उसके पन्ने उलटने लगा। पुस्तक नाटय-कलाके विकासपर लिखी गई थी। उसका पहला पेज मैं समाप्त भी नहीं कर पाया था कि अपने सामने दूसरा ही नाटक चलता हुआ मुझे दिखलाई देने लगा।

कैनवैसका पर्दा उस कमरेको दो हिस्सोंमें बाँटनेके लिए टाँगा गया था। मैं जहाँ बैठा था वहाँसे दूसरे कमरेके लोग दिखलाई नहीं देते थे, पर उनकी प्रत्येक हरकत परदेपर स्पष्ट दिखलाई देती थी। इस समय उसपर दो छाया देख रहा था। कुछ देरमें उन्हें एक होते देखा। यह ठीक एक सिनेमाके जैसा और उसीके समान आडंबर, नखरे और कलापूर्ण रूपमें हुआ। उनकी फुसफुसकी आवाज़ आने लगी। ध्यानसे कान देनेपर वे स्पष्ट सुनी जा सकती थीं।

"आख़िर तय क्या किया ?" जेनरलकी आवाज़ थी।

"मुझे बड़ी शरम लगती है।"

"छोड़ो ये नखरे।"

"ये नखरे नहीं।"

"फिर क्या हैं ?"

"आखिर दुनियामें कुछ शीलका चिह्न बाकी रहने दोगे या नहीं ?" शीलकी यह चर्चा मादामके मुँहसे कुछ अस्वाभाविक रूपमें निकल रही थी। फिर भी अभी अपनेको बचानेके लिए उनके लिए यह मेरी ढालका काम कर सकती थी।

"इसका शीलसे क्या सरोकार ?"

मादामके मुँहसे कोई उत्तर नहीं निकला। बाहरसे देखनेपर मालूम

पड़ता था कि उनकी सोचने विचारनेकी आदत बिलकुल ही नहीं होगी। पर इस समय वह धारणा भूल साबित हो रही थी।

"जवाब क्यों नहीं मुँहसे निकलता?" जेनरलने ऐक्टरकी भाँति पूछा—

मादाम इस बार भी चुप रहीं।

"और आज रूसके कम्युनिस्ट कोई शील आचार नहीं मानते फिर भी वे ज़िन्दे हैं या नहीं?" जेनरलने तनकर बैठते हुए कहा।

"मैं उनसे घृणा करती हूँ—" मादामने धीमे शब्दोंमें कहा— "लेकिन फिर भी उनमें तुमसे अधिक शीलका ख़्याल है। तुम्हारी मैं इज्जत करती हूँ, इसीलिए कहती हूँ। और चाहे जो करो इसकी चर्चा कभी न उठाना।"

"लेकिन मेरे लिए उस प्रकार जीना बड़ा कठिन हो रहा है।" इस बार उन्होंने कुछ रोमाञ्चक स्वरमें कहा।

"तुम्हारा तो मैं इसमें सर्वनाश देख रही हूँ। तुम यहाँकी पार्टीमें ऊँचा ओहदा रखते हो, समाजमें तुम्हारी इतनी इज्जत है, तुम आदर्श कम्युनिस्ट गिने जाते हो, लोगोंको जैसे ही पता लगेगा कि तुमने अभिनेत्रीसे शादी की है, तुम्हारी सारी धाक हवा हो जायगी।"

"ये हैं पुरानी दुनियाकी बातें। कौन किससे शादी करता है आज यहाँ किसीको देखते रहनेकी फ़ुर्सत नहीं। दूसरी बात, और देशोंकी भाँति यहाँ अभिनेत्री नीची निगाहसे नहीं देखी जाती।"

"अभिनेत्रियाँ चाहे न देखी जातीं हों पर ज़ारशाही जमानेके रईस और धनी लोग तो नीची निगाहसे ही देखे जाते हैं। उन्हें तो सोवियत समाज खूँखार विषधर साँपसे भी अधिक भयंकर मानता है। सम्भ्रान्त कुलोंकी स्त्रियाँ सड़ी हुई नालियोंसे भी अधिक गंदी समझी जाती हैं। उनसे कोई हिलता-मिलता नहीं, सब नाक-भौं सिकोड़कर किनारे हो जाते हैं। हमारा जीवन तो यहाँ कुत्तोंसे भी गया गुजरा है।"

मादामका बनावटी स्वभाव रहनेपर भी उनकी ये बातें विश्वसनीय जँचती थीं, क्योंकि उनकी आवाज़में सच्चाईकी ध्वनि थी।

जेनरल इन मामलोंको तनिक भी महत्त्व देनेके लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने दलील दी—

" और किसीको पता ही कैसे चलेगा? पुरानी बातें दबा दी गई हैं। नाद्या तो कौमसोमोल (युवा कम्युनिस्ट दल) की सदस्या है ही, मैं तुम्हारे लिए भी पार्टी-टिकट ले सकता हूँ। "

" यह ढोंग मुझसे पूरा नहीं हो सकेगा। " मादामने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा।

जेनरलने उनका हाथ फिर पकड़ लिया और कहा—" यह सब डर कुछ भी नहीं, तुम्हें तय करना ही होगा। "

ये बातें ज़ोर देकर कही गई थीं जिसके सामने दलीलें काम नहीं कर सकती थीं।

" फिर तुम्हीं क्यों नहीं पूछ देखते? "

" नहीं, यह तुम्हें ही ठीक करना होगा। "

मादाम हाथ छुड़ाकर सिसकने लगी थीं। जेनरल उन्हें मेरी ओर उँगली दिखला चुप रहनेका इशारा कर रहे थे।

" तुमने मेरा सब कुछ छीन लिया है, " उनका सिसकना बंद नहीं हुआ—" अब केवल यही एक, छोड़ दो। "

" तुम्हें यह भी ख्याल रखना चाहिए कि मैंने तुम्हारी जान बचाई है। मेरी ही बदौलत तुम आज भी जी रही हो और मौजसे रहती हो। "

" कुछ मेरे लिए नहीं। " अब मादामको थोड़ा क्रोध आ रहा था—" तुमने डाकुओंकी तरह बर्ताव किया है। कम्युनिस्टोंसे बचाया लेकिन अपने स्वार्थकी वेदीपर बलिदान कर दिया। यदि पहलेसे पता होता कि तुम आगे चलकर ऐसा बर्ताव करोगे, तो मैं उस समय जीवन त्याग देना ही अधिक उचित समझती। "

"आत्म-हत्याकी तो चेष्टा की थी" जेनरलने हँसी उड़ाई—"लेकिन सुई भोंक कर ही तो शहीद होना तुम्हारा असली मक़सद..."

"और हमको उसकी याद न दिलाओ। मैं तुम्हें देखना नहीं चाहती।" वास्तवमें मादामके चेहरेसे स्पष्टता प्रकट हो रही थी।

"फिर..." बहुत भारी धमकी थी। जेनरलने आँखें तरेर ली थीं। इसका सामना करना मादामके साहसके बाहर हो गया। वे उसके पाँवोंपर गिर पड़ीं। बहुत मनाया। जेनरल राजी न हुए।

"लेकिन वह तो तुम्हारी ही लड़की हो सकती है।" बहुत धीमे कंठसे सिसकनेके भीतरसे आवाज आई।

"यह कैसे?" कर्कश स्वरमें प्रश्न हुआ।

"दिन गिन लो। उसके जन्मके ठीक नौ महीने पहले तुम मुझे पेट्रोग्रादसे भगा लाये थे।"

"मैं विश्वास नहीं करता। किसी औरतका इन मामलोंमें विश्वास नहीं करता। और तुम्हारा आना वासिलियेवना!" जेनरल जोरोंसे हँस पड़े।

मादामने अपना मुँह छिपा लेनेकी कोशिश की। जेनरलने इस बार उच्च कंठसे कहा—"और जो तुम कहती हो, सच भी हो, तो उसकी मुझे परवाह नहीं।"

सीढ़ीसे किसीके आनेकी आहट सुनाई पड़ी। आना वासिलियेवना उसे देखनेके बहाने दरवाजेके पास गई। आहट छतकी ओर चलती चली गई। शायद दो तलेपर कोई जा रहा था। आना देर तक नहीं लौटीं। जेनरल अपने सामने टँगी एक तसवीरकी ओर देख अपने मोटे 'बास' स्वरमें गुनगुनाने लगे—

"नाद्युश्का पेत्रोवना,
ग्दे वी तेपेर।
पोल जिज्न ज्दाल या,
तोलको वाम विदात॥"

(छोटी नाद्या पेत्रोवना, आप अभी कहाँ हैं ? मैं सारी ज़िन्दगी केवल एक बार आपको देखनेकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ ।)

मैं भी काफी देर तक प्रतीक्षा कर चुका । नाटय-कलाकी किताब मैंने बंद कर दी । नाद्या उस समय तक नहीं लौटी । दूसरे दिन फिर आनेका वादा कर मैं वहाँसे बाहर निकल आया ।

२

अंधेरा रहनेके कारण अपरिचित सीढ़ियोंसे बहुत धीरे धीरे नीचे उतर रहा था । मेरे पीछे पीछे ऊपरके तलेसे और भी कोई नीचे आ रहा था । मुख्य दरवाज़ेपर हम लोगोंकी देखादेखी हुई । वह मेरी ही क़दका कोई युवक था । हाथमें स्केट दबाये बाहर जा रहा था । उसने ही मुझे टोका—" आपको तो पहले पहल इन सीढ़ियोंपर देख रहा हूँ । "

" जी हाँ । मैं पहली बार ही यहाँ आया हूँ । "

" नाद्याके उम्मीदवारोंमें..." उसने ध्यानपूर्वक मेरी ओर देखकर कहा । मैंने नाद्यासे परिचय होनेकी सच्ची बातें कह दीं और पूछा—" आखिर ये लोग हैं कौन ? "

" चोर्तिये ज्नायत (शैतान ही जाने), " उसने स्वाभाविक रूसी तरीकेसे कहा ।

" शैतान तो खैर जानते होंगे, आप उनके पड़ोसी हैं, आपको कुछ विशेष पता तो उन लोगोंके विषयमें अवश्य होगा ? "

" पड़ोसियोंसे वे चिढ़ते हैं—दूर वाले उन्हें अधिक पसंद आते हैं । हम लोगोंसे तो गाहेबगाहे जब कभी सीढ़ियोंपर देखा-देखी हो गई तो ' सलामवालेकुम ' हो जाती है, नहीं तो हम लोगोंका जाना-आना एक दूसरेके यहाँ कतई नहीं होता । हाँ, देखता हूँ, बाहरके लोग यहाँ अक्सर आते-जाते रहते हैं । नाच-गाना, हल्ला-हसरात खूब हुआ करता है । इससे

मालूम पड़ता है कि वे बड़े दिलचस्प लोग हैं । हर वक्त वहाँपर थियेटर ही हुआ करता है ।"

"कितने लोग रहते हैं कि हर वक्त थियेटर चालू रहता है ?"

"रहनेवाले माँ-बेटी दो ही प्राणी हैं पर दोनोंके ही दर्जनों दोस्त हैं। अभी आज नाद्या नहीं है, नहीं तो ऐसा सुनसान हमारा मुहल्ला नहीं रहता। यहाँ रात-भर ग्रामोफोन बजता रहता है और नाच हुआ करता है। हम लोगोंका सौभाग्य है कि हम ऊपर रहते हैं, नहीं तो इतने जोरसे वे लोग नाचते समय पैर पटका करते हैं कि उससे हरवक्त छत टूट कर नीचे आ जानेका भय लगा रहता है। उनके कमरेकी सतह आपने देखी ? वह नाचसे दो सालमें कमसे कम चार इंच घिस गई होगी।" वह हँसने लगा।

"बड़े मज़ेके लोग हैं ?" मैंने उसे सहारा देते हुए कहा।

"भला मज़ेका क्या पूछना है ? जीवनका तो मज़ा ये ही लूटते हैं। हर वक्त हाहा हीही हुआ करती है। बाहरसे आनेवालोंको खूब ठगते हैं।"

"ठगते हैं ! यह कैसे ?"

"कहनेका मतलब कि अपनी मर्जीसे ठगे जाते हैं। मास्कोमे संसारके जितने राष्ट्रोंके प्रतिनिधि हैं, और उनमें ठगे जानेवाले जितने बेवकूफ हैं वे सब यहाँ हाजरी बजाते हैं। वे सबके सब नाद्याकी आँखोंके इशारेपर नाचा करते हैं। अभी एक महीना पहलेकी बात सुनिए,— अमेरिकन दूत नाद्याकी ऐक्टिंग वलशोई थियेटर (मास्कोका सबसे बड़ा ओपेरागृह) में देखकर इतना मुग्ध हो गया था कि पिछले हफ्ते तक सीधे इटलीसे टोकरीकी टोकरी गुलाब फूल मँगाकर भेंटके लिए यहाँ भेजा करता था। फूल तो नाद्याने ले लिए, उपहारकी और भी बहुत-सी चीजें ले लीं लेकिन जब वह बेचारा मुलाकातके लिए आया तो घरमें ले जाकर उसे ऐसा बनाया कि संसारका शायद ही कोई आदमी कभी वैसा बेवकूफ बनाया गया होगा।"

" यह कैसे ? "

" अमेरिकन राजदूत क़दमें लम्बा था। मूँछें बड़ी सजी हुई रखता था। मूछोंकी तारीफ़ कर नाद्याने उन्हें उस्तरेसे एक तरफ़से बिल्कुल ही साफ़ कर दिया, फिर आधा मुँह पुरुषों और आधा स्त्रियोंके जैसा पेंट करना शुरू किया। इसके लिए दोनों विभागके मास्कोके सबसे बड़े थियेटरके पेंटर बुलाये गये थे। पोशाक भी राजदूतके लिए खास तरहसे तैयार की गई थी। स्मोकिंग कोट लम्बाईकी ओरसे बीचोंबीच आधा कर दिया गया और उसमें आधा औरतोंका झुलिया लगा दिया गया था। पाँवोंकी भी सजावट वैसी ही की गई थी। बाँयें पाँवमें जाँघोंतक मोजा पहनाया गया था और दाँयें पाँवमें बिना मोजाका बूट-जूता दिया गया। कमरमें नाचनेवालियों जैसा ओछा घाँघरा। यही तो कहता हूँ, बिल्कुल कमाल किया गया था। चेहरेके औरतोंवाले भागमें कानोंमें कर्णफूल और नाकमें नथिया झुलाना भी नाद्या नहीं भूली थी। ऐसे मामलोंमें उसका दिमाग़ ग़जबका काम करता है। इसका नाम उसने ' इंडियन फैंटासी ' दिया था और कहती थी कि अपनी यूरोप-यात्रामें वह यह कला सीधे लंडनसे सीख कर आई है।

" इस प्रकार सजाकर अमेरिकन राजदूतको उसके घरके भीतर चारों तरफ़ घुमाया और नाद्या उसके पीछे-पीछे ताली पीटती हुई—' क्या मजा है, क्या मजा है, ' कहती हुई लड़कोंको बटोरने निकली। इस घरके विभिन्न मञ्जिलोंपर रहनेवाले जितने लड़के थे सब इकट्ठे हो चले। नाद्याकी सूझ और भी आगे जा रही थी। वह राजदूतको आगे कर उसका जुलूस निकाल रेडस्क्वायर तक ले जाना चाहती थी। और मालूम नहीं, उसने क्या क्या आगेके लिए सोच रखा था। यही तो आपसे कहता हूँ, वह बड़े मजेकी लड़की है। जितने फँसनेवाले बेवक़ूफ़ घरमें आते हैं, किसीको आनेसे रोकती नहीं, उन्हें और आनेके लिए प्रोत्साहित करती है और उनका मज़ाक बना इस प्रकार

मज़ा लूटती है। इतने मज़ेकी लड़की आपने शायद ही और कहीं देखी होगी।"

"और उसकी माँ?" मैंने पूछा—"वह भी क्या नाद्या जैसी ही है?"

"जी नहीं। उससे ठीक उल्टी। आपने दोनोंके चेहरेसे ही पहचान लिया होगा। माँ जितनी गंभीर है, लड़की उतनी ही चंचल। नाद्या सम्भ्रान्त समाजका जितना ही मज़ाक उड़ाती है उसकी माँ उसे उतना ही पसन्द करती है। हमें कभी कभी सन्देह होता है,—कहीं वह अपनी माँको चिढ़ानेके लिए ही तो इतने प्रकारके फ़ितूर नहीं सोचा करती है!"

"तो फिर उसकी माँ वैसी दिलचस्प नहीं?"

"जी नहीं, वह भी अपने ढंगके सिलसिलेमें काफी दिलचस्प है। नाद्या तो दूसरोंको जालमें फँसाकर स्वयं उड़ जाती है, फँसे हुए लोगोंको बनाकर रखनेका काम तो उसकी माँ ही करती है। उपाधियोंकी तो उसके पास भरमार है। वह सब किसीको उपाधिसे विभूषित देखना चाहती है। अदनासे अदना आदमी भी उसके पास क्यों न पहुँचे, लॉर्डकी टाइटल मिलते उसे देर नहीं लगती। काउट, बैरन, जेनरल, सर, मेजरकी तो उसके पास भरमार है। मामूली मज़दूर जो पोंचारा देनेके लिए घरमें जाता है ग्रैंड रोआएल इंजिनियरकी पदवी पाकर बाहर निकलता है। हम लोग आसपासके लोग तो इसी पदवीके डरसे उसके पास जाते नहीं। वह अपने आप 'रानी' कहलाना पसन्द करती है। आप उसे 'नोवा जेम्लिया' (सदा बर्फ़से ढका रूसी आर्कटिकका एक द्वीप—जहाँ आदमी नहीं रहते। रूसी नाम 'नोवा जेम्लिया'का अर्थ है 'नई ज़मीन') की रानी कह दें और फिर देखें वह चुम्बनोंके मारे आपका नाकोंदम कर देगी।

"वह, मालूम नहीं, अपनी किस प्रकारकी दुनियामें रहती है। साधा-

रण मज़दूरोंसे हिल्ना-मिलना उसे पसन्द नहीं। अपने चारों तरफ संभ्रान्त समाज ही चाहती है। यदि यह समाज उसे नहीं प्राप्त होता तो जिस किसी समाजको सम्भ्रान्त मान अपनी कल्पनामें अपनेको उसके बीच देख खुशी होती है। नाद्याको तो बचपनसे ही 'साधारण समाज' के साथ मिलने देनेके वह खिलाफ़ है। जहाँ तक उससे बन पड़ता है अब भी उसे पार्कोंमें जानेसे रोकती है। क्योंकि उसे सन्देह होता है नाद्या अब भी साधारण समाजको सम्भ्रान्त बना डालनेके बजाय स्वयं ही अपनी कुलीनताको साधारण समाजके साथ मिला दे सकती है। आना वासिलियेवना इस सिलसिलेमें अपने सिद्धान्तकी बिलकुल पक्की है।"

हम लोग चलते चलते एक स्केटिंग रिंगके पास पहुँच गए थे। फाटकपर दिवालीके समान बिजलीकी बत्तियाँ जल रही थीं। भीतरसे बाजे बजनेकी आवाज़ आ रही थी, लोग बर्फ़पर पाँवमें स्केट लगाकर दौड़ रहे थे। मेरे साथीने कहा—"खैर, अब मैं स्केट करने जाता हूँ। आप अब तो उनके यहाँ जाया-आया ही करेंगे, उनकी मौजसे स्वयं ही परिचित हो जायँगे।"

"उनका जीवन बड़ा सुखी होगा।" मेरे मुँहसे निकल पड़ा। मुझे सर्दी लग रही थी और उनके घरका गर्म सोफ़ा याद आ रहा था।

युवक हँस पड़ा—"स्वप्नके जीवनको यदि सुखी माना जाय तब तो वे अवश्य ही सुखी कहे जा सकते हैं, पर मुझे तो मालूम पड़ता है कि उन्हें वास्तविक जीवनमें सुख नहीं है, इसीलिए अपने अभिनयके जीवनको ही सच्चा मान अपनेको सुखी समझनेकी चेष्टा करती हैं। अभिनय करते करते उनका जीवन ही अभिनयमय बन गया है। रानी, डचेस, काउण्टेस आदिका पार्ट यादकर अपनेको वास्तवमें ही वही मानने लगी हैं। वे स्वयं महसूस भी करती हैं कि यह सच नहीं है, फिर भी वह अपना प्रिय-सुन्दर मोह तोड़ना नहीं चाहतीं। यही मोह तो उनका सत्यानाश करेगा।"

वह दस्विदानिया (विदा) कहकर स्केट करने चला गया। उसकी बातें इतनी दिलचस्प थीं कि मैं सर्दी महसूस करना भी भूल गया।

३

कुछ चेहरे मुझे वास्तवमें धोखा देनेमें समर्थ हुए थे। नाद्याका बाहरी जीवन देखकर मैं उसे काफी सुखी समझता था। उसके घर कई बार गया और प्रत्येक बार प्रमोदकी नई नई सामग्री उसके यहाँ देखी। थोड़ा अधिक ध्यानपूर्वक देखनेपर मुझे सन्देह होने लगा। नाद्या स्वयं ही बड़ी अद्भुत मालूम पड़ती थी। पहली दृष्टिमें उसका चेहरा चाहे जिस किसीको अत्यन्त ही सरल दिखलाई देता, पर फिर भी थोड़ा सन्देह रह ही जाता कि उसके पीछे अवश्य कुछ रहस्य छिपा है। उसके उतने आनन्दोल्लासके पीछे अवश्य ही कुछ रहस्य है—यह पता लगा लेना बहुत अधिक कठिन नहीं था।

साधारण लड़कियोंसे वह कुछ भिन्न थी। काफी घनिष्ठताके बाद उसकी हँसीका थोड़ा थोड़ा रहस्य मुझे ज्ञात होने लगा। अब मुझे भान होता, मानो उसकी हँसी मुझे ताना देकर कह रही है—

"मैं तुम्हें धोखा देनेमें समर्थ हुई। तुम्हारी आँखोंमें भी काफी धूल झोंक चुकी हूँ, तुम मुझे पहचान नहीं सके। मेरी हँसीका, मेरा निजका रहस्य पहचान पानेसे अभी तुम कोसों दूर हो।"

एक दिन उसने अपनी माँकी उपस्थितिमें ही मुझे खुशखबरी सुनाई—

"साश्का, तुम्हें मालूम है, मेरी शादी होनेवाली है। मैं दुलहिन सजूँगी। गलेमें मोतियोंका हार, हाथोंमें सोनेकी चूड़ियाँ, कानोंमें हीरे-जड़े कर्णफूल होंगे। मेरे कपड़े पेरिसकी काटके रहेंगे, बालोंमें फूलोंका सौन्दर्य स्वर्गकी अप्सराओंको लजाता रहेगा,—मैं परी,—परीसे भी अधिक सुन्दर बन ठनकर बैठूँगी। और मेरे बगलमें कौन होगा, जानते हो? जेनरल! दस हज़ार सैनिकोंको हाँकनेवाला जेनरल,—अपने कम्बलके

लबादेमें; दांत उसके नकली होंगे, सर सफा चट, होंठ खूब मोटे, आवाज़ फौजी, उम्र मुझसे सिर्फ तीन गुनी अधिक। बताओ तो, कैसा मजा रहेगा ? तुम्हें उसका खुशी नहीं। हमारी जोड़ी देखकर सारा मास्को..."

" नाद्या। " उसकी माने आँखें दिखलाते हुए कहा—" मैं तुझे मना करती हूँ, इस तरहका मज़ाक न उड़ाया कर। "

" मैं तुम्हारा मज़ाक तो उड़ाती नहीं। मेरी शादी मास्कोवालोंको कैसी लगेगी, यही कल्पना कर देख रही हूँ।"

" मास्कोवालोंसे हमें क्या लेना है ? "

" क्यों, मेरी शादीमें वे उत्सव नहीं मनायँगे ? मेरे जानते तो मेरी सहेलियाँ बहुत ही खुशी होंगीं। हमारी जोड़ी देखकर हँसीके मारे उनके पेट फूलने लगेंगे। विदेशोंमें भले ही हो, किन्तु हमारी जैसी शादी सोवियत समाजमें तो देखनेको बहुत ही कम मिलती होगी। "

'सोवियत समाज'का नाम सुनकर आना वासिलियेवनाको स्वाभाविक ही चिढ हो जाती थी। उनका हृदय उस समय जल-भुनकर खाक हो जाता था। वे कहने लगीं—" सोवियतका इसमें कुछ आता-जाता नहीं, मैं एरिस्ट्रोक्रैट हूँ और रहूँगी। अपनी लड़कीकी भी शादी ऐरिस्ट्रोक्रैटके साथ और ऐरिस्ट्रोक्रैटिक ढँगपर देखना चाहती हूँ। "

" ऐरिस्ट्रोकैटके साथ कैसे अम्मीजान! जेनरल तो कम्युनिस्ट पार्टीके मेंबर हैं। "

" आज कलकी दुनियाको वह भली भाँति पहचानता है। यहाँ जीवित रहनेके लिए उसकी ज़रूरत पड़ती है,—वास्तवमें उसका हृदय ऐरिस्ट्रोकैटका है, वह एक नहीं हजार सोवियतके द्वारा भी नहीं बदला जा सकता। "

" तब तो साश्का, और भी मज़ा होगा। पुराने ढँगके अनुसार मैं उन्हें गिरजेमें घसीट ले जाऊँगी। पोप हमें आशीर्वाद देंगे, हमारे लिए खास सरमन पढ़ा जायगा, बूढ़े-बूढ़ियोंकी जमात हमें घेरे रहेगी,—वही

जमात तो मैं पसन्द करती हूँ।"

"चुप रह पगली!" उसकी माँने आधा गुस्सा और आधा मखौल उड़ाते हुए कहा—"लोग सुनेंगे तो तेरा मज़ाक उड़ायेंगे।"

"और तुम जो अंधेर रचने जा रही हो उसमें कोई मज़ाक नहीं, क्यों?"

"जो भी हो, मैं तुझे जिन्दा जी मज़दूरिन नहीं होने दूँगी, चाहे इसके लिए हमें अपने आपकी कुर्बानी ही क्यों न करनी पड़े।"

यह मज़दूर और ऐरिस्ट्रोकैटका झगड़ा हज़ार चेष्टा करनेपर भी दोनोंको एकमतपर नहीं ला सकता था। आना वासिलियेवनाकी आदत किसी विषयको लेकर अधिक झगड़नेकी भी नहीं थी। सरमें भयानक पीड़ा हो आनेके भयसे वे उस स्थानसे टल जातीं, आज भी उन्होंने ऐसा ही किया।

वास्तवमें नाद्याको वह जेनरलके हाथ दे देना चाहती हों, ऐसी बात नहीं थी। पर कई कारणोंसे उन्हें नाद्याकी शादी शीघ्र कर देनेकी चिन्ता लग गई थी। उसके उम्मीदवारोंको छाँटते छाँटते अब केवल उनके सामने दो रह गए थे। एक जेनरल और दूसरे बैरन ख्वोस्तोव। ख्वोस्तोवकी उम्र कुछ कम थी। उन्होंने अपनेको पोलैंडका भारी जमींदार बतलाया था और कहा था कि केवल नाद्याकी आँखोंकी मारके कारण ही वह उतने दिनोंसे अपना राजपाट छोड़ मास्कोमें छिपकर दरिद्रताके दिन बिता रहे थे। पता चलनेपर नाद्याने उन्हें भी एक दिन खूब बनाया था। कैसा वर उसे पसन्द आएगा, यह बतलाते बतलाते और अन्तमें उसका ख्वोस्तोवपर प्रयोग करते करते उनका चेहरा पेंट कर बिलकुल बन्दर जैसा बना दिया था। वह भी शाम्पाञ्जीके ढाँचेका। ख्वोस्तोवने उसी दिनसे नाद्याकी आशा छोड़ दी थी। पर आना वासिलियेवनाको किसीको अपने घरसे उस प्रकार बना कर बिदा कर देना अच्छा नहीं लगता था।

वह प्रौढ़ा हो जानेपर भी अपनेको वैसी औरतोंकी श्रेणीमें गिना

करती थी जो केवल प्रेम करने और किये जानेके लिए बनाई गई होती हैं। हाँ, कई युवकोंसे ठोकर मिल चुकी थी, इसी कारण थोड़ा स्वभाव भी बदल गया था। उसके लिए अब प्रेम भावुकताके कारण नहीं, बल्कि आवश्यकताके कारण जरूरी मालूम पड़ता था। अच्छे भोजनके अभावमें साधारण भोजन भी जीवित रहनेके लिए जैसे आवश्यक हो जाता है उसी प्रकारका आवश्यक उसका इन दिनोंका प्रेम था। ख्वोस्तोवसे उसे निजके मामलेमें हताश होनेकी उम्मीद नहीं थी।

अब नाद्याके लिए ख्वोस्तोवके हट जानेपर उनकी दृष्टिमें विचार करने योग्य उम्मीदवार सिर्फ जेनरल मिखाएलोव बच जाते थे। उनके हजार छिपानेकी चेष्टा करने पर भी नाद्याको इस बातका पता चल गया था। शायद जेनरलने स्वयं ही इसका इशारा किया था। इसके लिए उन्होंने कई प्रकारके भय भी दिखलाये थे। वे साम, दाम, दण्ड, विभेद,—चारोंसे काम लेना जानते थे।

इधर पंचवर्षीय योजनाके कारण समूची सोवियत जनताने तो अपना खर्च कम कर लिया था पर पुराने बचे हुए ऐरिस्टोक्रैटोंके लिए ऐसा करना मुश्किल हो गया था। उनमें कितने ऐसे थे जो सिद्धान्ततः अपना खर्च कम करनेके पक्षमें नहीं थे। ऐसे ही लोगोंमें आना वासिलियेवनाकी भी गिनती थी। चाहे उन्हें कितना भी, किसी प्रकारका भी त्याग क्यों न करना पड़े अपने रहन-सहनका दर्जा ओछा करनेके पक्षमें वे नहीं आ सकती थीं। इन मामलोंमें जेनरल मिखाएलोव उनके बहुत ही बड़े सहायक साबित हो रहे थे। वे अपनेको जेनरल नामसे पुकारा जाना पसन्द करते थे और मालूम नहीं कहाँतक यह बात सच थी। कहा करते थे कि वे रिजर्व फोर्सके जेनरल हैं पर उनका वास्तविक कार्य मास्कोके एक बड़े स्टोर-घरमें था। उस स्टोर-घरके वे ही संचालक थे। पूँजी अवश्य ही सोवियत सरकारकी थी, पर उसे अपनानेके लिए मिखाएलोव जैसे लोगोंमें न तो हिचक ही होती थी और न उसे वे अपनी नीतिकी

परिभाषाके अनुसार किसी दृष्टिसे हीन माननेको तैयार थे।

उनके लिए आना वासिलियेवनाके ऐश-आरामके सामान जुटाना भारतके धनी सेठ साहूकारोंका गायोंको मालपुआ खिलानेके जैसा धार्मिक कार्य और कर्त्तव्य बोध होता था। स्टोरकी सबसे नवीन और सुन्दर चीज़ें आना वासिलियेवनाके यहाँ पहुँचती थीं। जेनरलने इसका इन्तज़ाम इस चातुरीसे किया था कि तीन साल बीत जानेपर भी इसकी भनक किसीके कानोंतक नहीं पहुँच पाई थी। पार्टीमें उनकी इतनी धाक थी कि यदि कोई जानता भी होता तो वह उस ओर इशारा करनेकी हिम्मत नहीं कर सकता था।

अब जबसे नाद्याका उन्होंने कुछ दूसरे प्रकारका रुख देखा तो वे आना वासिलियेवनाका सामान जुटाना बंद कर देना चाहते थे। आनाके लिए काम करनेसे बढ़कर हतकइज्जती नहीं हो सकती थी, इसलिए उसका तो सवाल ही नहीं उठ सकता था। जिस ऐशआरामकी वे अभ्यस्त हो गई थीं उसके बिना भी जीवित रहना मुश्किल था। अब अन्तमें उनके सामने दो सवाल थे : या तो नाद्याको जेनरलके हाथ सौंपना और नहीं तो कहीं काम कर अपनी रोजी चलाना और साथ ही सब तरहके ऐशआरामसे बाज़ आना। उन्हें बहुत सोचने-विचारनेपर नाद्याकी ही 'कुर्बानी' मुनासिब जँची।

इस विषयमें शादीकी चर्चाके पहले माँ-बेटीके बीच काफ़ी बहस-मुबाहसा हो चुका था। नाद्या जेनरल मिखाएलोवका नाम सुनते ही जल भुनकर ख़ाक हो जाया करती। उसने अपनी घृणा व्यक्त करनेके लिए उनका नाम ही 'यूडा' रख दिया था जिसका अर्थ उसकी समझमें उसूलको न माननेवाला व्यक्ति था। अपनी माँको भी वह थोड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखने लगी थी और एक बार कह भी डाला था—

"अम्मा, तुम्हारी आदमियत उस यूडेने ही नष्ट की है, उसीने तुम्हें भ्रष्टा बना दिया है।"

अपनी लड़कीके मुँहसे कभी भ्रष्टा कहलानेकी उमीद आना वासि-

लियेवना नहीं रखती थीं। उनका चेहरा लाल हो आया। आँखें उनके स्वभावके विपरीत बड़ी बड़ी बन गईं। वे थोड़ा दाँत पीसने भी लग गई थीं। उन्होंने कहा—"हाँ, आज तुम्हारे सामने भी ऐलान करके कहती हूँ,—मैं भ्रष्टा हूँ। लेकिन इससे क्या हुआ? यदि मैं आज भ्रष्टा नहीं होती तो आज तू उस गद्देपर बैठकर बातें नहीं करती, तेरे बैठनेके लिए टूटी कुर्सी भी नहीं जुटती, तेरे शरीरपर यह लकदक नहीं होती, तू अपनेको चीथड़ोंमें लपेटा करती, इतना ही नहीं, सुबह चारपाईपर दस बजे तक पड़े पड़े तुझे स्वप्न देखनेका मौका नहीं मिला करता। चार बजे सुबह ही कारखानेका बिगुल सुन दौड़ना पड़ता, आधी रातको ही उठना पड़ता; रात-रात भर जागना होता और जरा-सी झपकी, जरा-सी देर होनेपर उस कामसे भी निकाल दी जाती, तुझे सड़कपर भी शरण नहीं मिलती। आज जो इतनी ऐंठकर बातें कर रही है, वे तेरे मुँहपर नहीं होतीं।"

"नाराज क्यों होती हो माँ!" नाद्याने अपनी माँका गुस्सा ठँडा करनेके लिए फ्रेंच तरीका अपनाया—"मैं तो तुम्हारा अपराध नहीं बतलाती, अपराध तो उस यूडेका है जिसने...।"

"और मैं नहीं सुनना चाहती। अपराध उसका नहीं, अपराध आजकल राज्य करनेवालोंका है जिनके भीतर दयाका नामोनिशान नहीं; जिनके लिए आदमियोंके आँसुओंकी कीमत नहीं।"

"यह कैसे?"

"उनकी क्रान्तिने ही मुझे भ्रष्टा बनाया है। मेरा सब कुछ छीन लिया है। मैं और औरतोंकी भाँति नहीं जो स्वेच्छापूर्वक अपनी मौजके लिए भ्रष्टा बना करती हैं। मुझे आज भी अपने जीवनकी वह मोड़ याद है जहाँसे मैं इस रास्तेपर आई जिससे तू भ्रष्टा कहती है। हम लोगोंके घरके सारे सामान कम्युनिष्ट सैनिक जबरदस्ती छीन कर ले गए, खानेका सामान भी नहीं छोड़ा। इसके बदले कहा—होटलोंमें जाकर जहाँ सब लोग खाते हैं खा लो। तुझे तो मैं अपनी सहेलीके यहाँ खारकोव भेज

चुकी थी। मेरे पास रह गये थे दो प्यारे कुत्ते। उन्हें मैंने बचपनसे पाला था। उनके प्रति मुझे इतना मोह हो गया था कि मैं स्वयं बिना खाये रह सकती थी पर उन्हें भूखके मारे भूँकता नहीं देखना चाहती थी। साधारण भोजनकी उन्हें आदत नहीं थी। राज्य-द्वारा खोले गये होटलोंका भोजन उन्होंने सूँघा तक नहीं। मैं उन्हें लेती हुई सीधे लेनिनके पास गई। मैं उतने बड़े घरानेकी औरत खुद लेनिन जैसे मजदूरके पास गई। मेरी आँखोंमें आँसू भर आये थे। लेनिनने उन्हें देखा। मैंने दो दिनोंसे कुछ नहीं खाया था, इसे भी उसने परख लिया। मेरे दोनों कुत्ते भी मेरे साथ थे, भूखसे छटपटा रहे थे। अपने बारेमें तो मैं नहीं बोल सकी लेकिन कुत्तोंके बारेमें कहा, तो लेनिनने हँस दिया। मेजपरकी नहीं, फेंकी हुई रोटीका टुकड़ा जो उस समय आदमी ढूँढ़ ढूँढ़कर खाते थे उसपर उन्हें जीवित रखनेके लिए कहा। दयाका तो नाम नहीं। जानवरोंको इस प्रकार पालकर मार डालना कितना पाप है! मेरा भी लेनिनने कुछ ख्याल नहीं किया। कोई सुनवाई नहीं। लुटेरोंके सरदार कब सुनने लगे! उसका हुक्म कि मैं होटलोंके खानेपर जीवित रहूँ, आगेके लिए भी कायम रहा। मैं थी बड़े घरकी। उस प्रकारका खाना देखा तक नहीं था, छूनेकी तो बात ही दूर रही। अपने घरमें आकर मैंने दरवाजा बंद कर लिया। कुत्ते मेरे सामने छटपटाकर मर गये। मैंने भी आत्म-हत्या कर लेनी चाही पर साहस नहीं हुआ। ख्याल आया तुम्हारा। तुम्हारा सारा जीवन। ये मजदूर भूखे भी जी सकते हैं, उन्हें अक्सर भूखे रहनेकी कितनी ही पुश्तोंसे आदत पड़ गई है। सर्दी, भूख उन्हें हम लोगों जैसी नहीं सताती। लेकिन हमें ईश्वरने सोनेके चम्मचोंसे दूध पिलवाया था। हमारा बसर कैसे मजदूरोंकी तरह हो सकता है? उससे तो मर जाना कहीं अच्छा। तू मुझे भ्रष्टा कहती है, लेकिन यदि मैं भ्रष्टा नहीं होती तो तुझे भी मेरी ही तरह भूखे, सर्दीके मारे जमीनपर पड़े रहना पड़ता। शायद तू तो उतनी तकलीफ बर्दाश्त करनेके पहले

ही हृदयकी गति बंद हो जानेके कारण मर जाती। तुझे मजदूरिन बननेसे बचानेके लिए भ्रष्टा होनेके सिवा और क्या चारा मेरे सामने इन क्रान्ति-कारियोंने रख छोड़ा था?"

वे नाद्याकी उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगीं। शायद बोलते-बोलते कुछ थक भी गई थीं इस लिए थोड़ा विश्राम ले लेना भी आवश्यक था। पर नाद्याने कहा—"कहती जाओ माँ, आज तुम्हारी बातें सुनते सुनते और भी सुननेकी इच्छा हो रही है।"

"मेरा कहना क्या ठीक नहीं?"

"ठीक ही है। आगे कहो।"

"औरतें तो सिपाही नहीं कि लूट मारकर अपना गुजारा चलाये। उनमें तो विदेशोंमें जाकर कारखाना खोल, ऊँची-ऊँची नौकरियाँ कर; जमीनपर कब्जा कर धनी बने रहनेकी ताकत नहीं। रूसी औरतोंके लिए देश छोड़ना भी क्या लेनिनने संभव रक्खा था? फिर मेरे पास क्या था जिसके आधारपर मैं अपनेको, अपने धनी मिज़ाज़ आरामके जीवनको आबाद रख सकती। हम औरतोंके पास उसके लिए अपना शरीर देनेके सिवा और क्या बच गया था? मेरे सामने दो ही रास्ते थे, या तो सारा जीवन—अपनी जवानीसमेत दरिद्रतामें बिताना पड़ता या अपनी आँखोंसे लुभा-लुभाकर लोगोंको अपने यहाँ बुला उन्हें अपना शरीर देना होता। मेरे समान परिस्थितिमें तूने भी ऐसा ही किया होता नाद्या।"

नाद्या रो रही थी। वह कुछ उत्तर नहीं दे सकी। उसकी माँकी आँखोंमें आँसू नहीं थे पर नाद्याको दिखलानेके लिए ले आनेकी चेष्टा कर रही थीं। उन्होंने अपना गला रुँधा हुआ-सा बनाया। इस कलाका उन्होंने बहुत पहलेसे अभ्यास किया था और कहा—"अब हमारे सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं नाद्या। जीवन जैसा कटता है उसे उसी ढर्रेपर चलने देनेमें तेरा भी कल्याण है।"

४

सारा मास्को ही उन दिनों ग़ैर-वर्गके लोगोंपर छीः छीः थू-थू करने लगा था। उसकी दृष्टिमें शोषणद्वारा दूसरोंकी मेहनतपर जीनेवाले लोग इतनी निम्न श्रेणीके थे कि उन्हें मनुष्य नहीं गिना जा सकता था। कितने आदमी तो ऐसे उग्र बन गये थे कि उनकी ओरसे ऐरिस्ट्रोक्रैटोंसे सम्बन्ध रखते हुए विभिन्न तरहके प्रस्ताव पेश होने लगे थे। वे प्रस्ताव बड़े ही निराले ढँगके थे। एकमें यह राय प्रकट की गई थी कि मास्कोके मुख्य चौराहोंपर ऐरिस्ट्रोकैटोंका अजायबघर बनवाया जाय और उनके भीतर ऐरिस्ट्रोक्रैट अपनी ज़ारशाहीके जमानेकी लक-दकमें बैठाए जायँ। प्रत्येक पिंजड़ेपर उनकी तारीफ रहा करे—'मनुष्य-शोषक जंतु'—'समाजको नीचे ले जानेवाले खूँखार प्राणी'—'रुपयोंके गुलाम'—'मनुष्य-हिंसक जानवर' इत्यादि।

इस प्रकारके कई प्रस्ताव वास्तवमें सोवियत सरकारके पास भेजे जानेवाले थे। मजदूरोंके भीतर शोषकोंके प्रति घृणा और प्रतिशोधकी भावना जाग उठी थी। इस मौकेपर भी लोगोंके भावोंका समुचित रूपसे नियंत्रण पार्टीने ही किया। उसीने लोगोंको सुझाया कि जिनको वे हिंसक जन्तु बतला रहे हैं उनके भीतर भी मनुष्यताकी थोड़ी-सी बू संभव है, लोग उसे जाग्रत करनेकी चेष्टा करें। ऐसी हालतमें उदारता और क्षमाकी भावनासे काम करना चाहिए। इतनी रोक थाम करते रहनेपर भी सोवियत समाजका ज़ारशाहीके जमानेके बचे हुए ऐरिस्ट्रोक्रैटोंको धिक्कारना बंद नहीं हो रहा था।

इसी लहरके कारण आना वासिलियेवना और नाद्याके जीवनमें भी भारी परिवर्त्तन आ गया था। उन लोगोंके खानदानका वास्तविक पता सोवियत सरकारको लग गया था। ये रिबुर्शिस्कीके परिवारके थे। यह रिबुर्शिस्की परिवार ज़ारशाहीके जमानेमें मास्कोके बहुत धनाढ्य परिवारोंमें

एक था। उनके पन्द्रह-बीस कपड़ेके कारखाने थे और हजारों बीघे जमीनपर उनका कब्ज़ा था। मास्कोकी बहुत सी दूकानोंमें उनकी पूँजी थी। उनकी आय करोड़ोंकी थी। जितने लोगोंके शोषणपर यह परिवार धनाढय बना था और आगे बनता जा रहा था उनके भीतर इस परिवारके प्रति बहुत ही अधिक प्रतिशोध लेनेकी भावना जगी थी क्योंकि रिबुर्शिंस्की अपने मजदूरों और किसानोंके प्रति अत्याचारके लिए बहुत पहलेसे ही प्रख्यात हो चुके थे। क्रान्तिके बाद ज़ारशाहीके जमानेके जो इस प्रकारके शोषक साइबेरिया भेजे जानेवाले थे, उनमें रिबुर्शिंस्की परिवारका नाम सबसे आगे था, पर वे कई टुकड़ोंमें बँट गए थे और कितने देशका बहुत-सा धन अपने साथ लेते हुए विदेश पहुँचनेमें भी समर्थ हुए थे। उस समय आना वासिलियेवना और उनकी छोटी लड़की नाद्याको मिखाएलोवने ही छिपा रखा था। आनाने स्वयं डरके मारे इस बातकी चर्चा किसीसे भी नहीं की थी और नाद्याको भी इसका पता नहीं था।

उनके असली स्वरूपका पता चलनेके बाद कई आदमी इन लोगोंको वास्तवमें साइबेरिया भेज देनेके पक्षमें थे, पर सोवियत सरकारने वैसा नहीं किया। उनके ऊपर कड़ी दृष्टि रखे रहनेका आदेश देकर ही उन्हें मुक्त कर दिया गया। इस बर्तावका माँ-बेटी दोनोंपर ही दो तरहका असर हुआ। नाद्याने तो आगे भी नाट्य-कलाके स्कूलमें पढ़ते रहना स्वीकार किया पर आना वासिलियेवनाको जितने भी प्रकारके काम सोवियत सरकारकी तरफसे दिये जानेके प्रस्ताव लाये गये उन्होंने सबको ही खारिज किया और स्पष्ट शब्दोंमें बहुतोंके सामने घोषित किया—"ऐंठके ही बल मैं जीती हूँ। मैंने जिस उच्च खानदानमें जन्म लिया है उसकी चाल हमेशासे रस्सीकी तरह रहती चली आई है। रस्सी जल जाती है किन्तु उसकी ऐंठन नहीं जाती। मुझे ईश्वरने मजदूरी करके खानेके लिए नहीं गढ़ा है। जो गढ़े गए हों वे मजदूर बना करें पर मैं...मैं किसी भी तरहकी मजदूरी नहीं कर सकती।"

इसके साथ ही अपना आराम-पसन्द जीवन भी छोड़नेके लिए वे तैयार नहीं थीं। इसके लिए अपने चरित्रको झोंक देनेमें उनके भीतरकी हिचक बहुत पहले ही दूर हो गई थी। वे अब खुले आम और नाद्याकी उपस्थितिमें भी कहा करतीं—"हमारे वर्गवालोंमें पहले आराम और फिर उसके बाद चरित्रका स्थान है।"

सोवियत समाज इसे माननेके लिए तैयार नहीं था। नाद्या भी नहीं। वैसे आचरणको जब फिर एक बार उसने भ्रष्ट साबित करनेकी कोशिश की तो उसकी माँने गुस्सेमें आकर कहा—"पहले अपनी सम्हाल फिर मुझसे बातें कर। तेरे अपने बापका ही कुछ ठिकाना है? तू असलमें किसकी बेटी है, तुझे पता है?"

"रहने दो!" नाद्याका चेहरा लाल हो आया था—"यह तुम्हारे ही जाननेकी बात है और उसका पता अपने तक ही रहने दो।"

"मैं खुद भी क्या जानूँ। हो सकता है तू किसी जेनरलकी होगी, हो सकता है किसी काउंटकी और मुझे ऐक्टरोंका भी शौक था। तू उनकी भी बेटी हो सकती है।"

यह निर्लज्जता नाद्याके बर्दाश्तके बाहर हो गई। इसने वास्तवमें उसके मर्मस्थलमें आघात पहुँचाया। वह बिंधी हुई हरिणीकी भाँति वहाँसे उछलती घरके बाहर चली गई।

५

सोकोलनिकोव पार्कमें उस दिन मैं बहुत सवेरे ही पहुँच गया था। अकेले स्केट करनेमें मन नहीं लग रहा था। चारों ओर परिचितोंको ढूँढ़नेके लिए आँखें फेर रहा था। चायखानेमें मुझे आना वासिलियेवना बैठी हुई मिलीं। इधर कई दिनोंसे उनसे देखा देखी नहीं हुई थी। मैंने उन्हें नमस्कार किया। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया। इधर-उधर देख संकोचवश सहमा हुआ मैं वहाँ गया। उनके सामने एक और व्यक्ति

बैठा था। उसकी पीठ मेरी ओर होनेके कारण मैंने उसका चेहरा नहीं देख पाया था। उसे दिखलाते हुए आना वासिलियेवनाने मुसकुराते हुए जल्दीसे मेरे कानमें कहा—"मेरे नये स्वामी पोलैंडके बैरन ख्वोस्तोव।"

ख्वोस्तोवका नाम पहले भी सुन चुका था, फिर भी आना वासिलियेवनाकी दोनों ही बातें मुझे नवीन ज़ान पड़ी। उन्होंने 'शादी' की थी यह मुझे मालूम नहीं था और ख्वोस्तोवका चेहरा भी विशेष रूपमें नवीन देखा। वह चेहरा बहुत कुछ विदूषकों जैसा था। उसे देखकर हँसी रोक पाना स्वाभाविक ही बड़ा कठिन हो रहा था। 'शादी' की खुशीका बहाना कर मैं जोरोंसे हँसने लगा।

आना वासिलियेवनाने अपना आगेका कार्यक्रम बतलाया। अपने 'नये पति' के साथ उन्होंने पोलैंड चला जाना तय किया था। वहाँके आराम, सोवियत यूनियनके दुख और कई अंशोंमे यहाँके असभ्य जीवनका उन्होंने पूरा-पूरा खाका मेरी आँखोंके सामने खींच देनेका प्रयत्न किया और अंतमें पूछा—"मैं कितनी सुखी होऊँगी, आप क्या उसका अन्दाज लगा सकते हैं?"

मैं चुप रहा। "लेरमंतोवने अपनी जवानीमें कहा था"—उन्हें रोमैन्टिक रूसी कवियोकी बहुत-सी कवितायें हमेशा होंठपर-ही रहा करतीं—"विदा गँदे रूस! विदा...।"

पेरिसियन ढँगसे उन्होंने 'ओरिवुआर' के जैसा 'विदा' उच्चारण किया और कहा—"जिस दिन मैं भी इस गंदे रूससे उसी प्रकारकी विदाई लूँगी, उस दिन मैं कितनी सुखी रहूँगी!"

"वे दिन अधिक दूर नहीं आना वासिलियेवना," ख्वोस्तोवने कहा—हम लोगोंको चाय देनेवाला वहाँ चाय देकर खड़ा हो गया था। पता नहीं उसे आना वासिलियेवनाकी बातें उतनी दिलचस्प मालूम हुई थीं अथवा ख्वोस्तोवका चेहरा जिसपर वह इस समय गौरसे देख रहा था। हठात् उसने ख्वोस्तोवकी ओर हाथ बढ़ाते और मुस्कुराते हुए कहा—

"देखो तो, मैं उसी वक्तसे सोच रहा हूँ और तुझे ही नहीं पहचान पा रहा था। कोल्या, यह बैरनकी उपाधि तुझे कब मिली ? अहा! शादीके बाद ही तो यह उपाधि मिला करती है। पर देख तो, तूने शादी की और उसकी खबर तक हमें नहीं दी। क्या आपसमें भी तुझे यही करना मुनासिब था ? ठहर, और साथियोंको भी बुला लाता हूँ।"

आना वासिलियेवना अवाक् हो सुन रही थीं। चायवालेपर थोड़ी-बहुत घुड़की भी दिखला रही थीं पर उनका ध्यान ख्वोस्तोवपर था। ख्वोस्तोव स्वयं लज्जाके मारे गड़ा जा रहा था। उसका यह शरमाया हुआ चेहरा और भी अधिक हँसानेवाला बनता जा रहा था। चायवालेके और साथियोंको बुला लानेके लिए चले जानेपर वह एक बार उठकर वहाँसे भाग भी जाना चाहता था पर कोटका पॉकेट मेजसे अटक जानेके कारण एक काण्ड हो गया। चायके गिलास लुढ़क गये जिससे आना-वासिलियेवनाके कपड़े गीले हो गये। वे 'फुई फूई' कर एक किनारे जा खड़ी हुई। गिलासोंके टूटनेकी आवाज़से चौंककर स्वयं ख्वोस्तोव चीख उठा था। ठीक इसी समय चायखानेमें काम करनेवाले चार-पाँच आदमियोंने उसे पकड़कर ऊपर उछाला। वे एक साथ बोल उठे—
"मास्को होटलके दरवान अब बैरनकी उपाधि पानेवाले हमारे साथी ख्वोस्तोवकी शादीके उपलक्षमें तीन बार—हिप—हिप हुर्रे !..."

आना वासिलियेवना होठोंको दाँतोंके नीचे दबाकर पत्थरकी मूर्तिकी तरह खड़ी थीं। टलनेके पहले उन्होंने सारी उपस्थित जनताके सामने इस प्रकार दाँत पीसे कि उनकी ऐंठकी प्रत्येक भाव-भंगीसे सब लोग परिचित हो गए।

उपस्थित लोगोंमें कानाफूसी आरम्भ हुई—"ये कमेडियन (हँसानेवाले) हमारे बीच आ बैठे थे। बड़े ही मजेके जीव हैं।"

लोगोंका हँसना देरतक बंद नहीं हो रहा था।

नाद्या

१

स्केटिंगके सिवा यदि और कोई चीज़ इन दिनों मेरा ध्यान सबसे अधिक आकर्षित करनेवाली थी तो वह थी नाद्या। इधर कई सप्ताहसे उसका चेहरा उदास देखा करता था। यह मुझे खटकता था। मास्कोके वायु-मंडलमें यह विशेष प्रकारकी उदासी बहुत ही कम दीखती, इसलिए उसकी ओर और भी अधिक ध्यान खिंचा करता। न जानें क्यों मेरी आन्तरिक इच्छा उसे भी हँसती हुई देखनेकी हो रही थी। उसका इस प्रकारसे उदास रहना सिर्फ अपने निजके वायु-मण्डलमें नहीं बल्कि मुझे सारे मास्कोके वायु-मंडलमें कमी जैसा दीख रहा था।

उससे उदासीका कारण पूछना भी बेकार-सा ही था। वह इसे मुझसे छिपाये रहनेका भी भरपूर प्रयत्न किया करती पर फिर भी कभी कभी दिलकी आँधी रोकना उसके लिए असम्भव हो जाया करता।

एक दिन स्केटिंगके लिए जानेके पहले रास्तेमें उसके घरसे होता गया। सोचा था शायद स्केटिंगमें उसका दिल बहले। वह उस दिन घरमें अकेली मिली। मैं बहुत देर तक उसके पास बैठा रहा। वह बार बार याद दिलाती—"आज स्केटिंगमें बड़ी देर कर रहे हो।"

"तुम्हारे चेहरेने स्केटिंग भुला दिया है। तुम दो तीन सप्ताहसे बड़ी विचारशील बनती जा रही हो।"

" यह औरतोंका स्वभाव ही होता है "—उसने रूखी हँसी दिखलाते हुए कहा—" मौसिमके हिसाबसे हम लोग भी बदला करती हैं। देखते नहीं आज बाहर कैसा कुहासा छाया है। "

वह देर तक इसी ढंगकी बातें करती रही। जो बातें उसे सता रही थीं उसकी चर्चा वह जान-बूझकर नहीं छिड़ने देती। बातचीतका ताँता भी नहीं टूटने देती। मेरे चलनेके समय उसने कहा—" सुबहको जैसा विचार लेकर मैं जगती हूँ, सारा दिन मेरा वैसा ही बीतता है। जिस दिन कोई वैसा खास विचार नहीं रहता मैं बिस्तरेपर लेटी लेटी किताबें पढ़ा करती हूँ। डेढ़ दो घण्टे तक पढ़ती हूँ और उसके ही अनुसार मेरा सारा दिन बीतता है। कल शेक्सपियरका ओथेलो पढ़ रही थी इस लिए सारे दिन डेस्डेमोना बनी रही। आज दस्तयेव्स्की पढ़ा है इस लिए नास्तास्या फिलिपोवना बनने जा रही हूँ पर वह ठीक उतर नहीं रहा है। देखूँ कल कैसे दिन आरम्भ होता है। जो भी हो यदि मौसिम बदला तो तुम मुझे भी बदला हुआ पाओगे। "

दूसरे दिन वह घरपर थी ही नहीं। एक सप्ताह तक गायब रही। माँको जाते समय खत लिख दिया था कि मैं सहेलियोंके साथ मन बहलानेके लिए गाँवोंमें जा रही हूँ। माँके पास जानेके पहले मेरे घर आई और पहली बात सुनाई—" आज किसानोंका मुँह देखकर उठी हूँ इसलिए ऐसी दीखती हूँ। जरा आइना तो देना। " शीशेमें थोड़ी देर देखनेके बाद बोली " नहीं, यह चेहरा तुम्हें भी पसन्द नहीं आयगा। अभी आती हूँ। "

पासके नाईके यहाँसे खूब बाल सजाकर पाउडर लिपस्टिक लगाकर फिर घरके शीशेमें चेहरा देख कर कहने लगी, " हाँ यह ठीक है। "

इसके बाद उसने अपनी कहानी कह सुनाई। पिछले सप्ताह उसने अपनी परिस्थितिपर खूब गंभीरतापूर्वक विचार किया था। जितने उपन्यास और नाटक वह जुटा सकी लाकर उसने पढ़े—नये पुराने सब तरहके।

उसे अपनी तरहकी परिस्थितिमें पड़े हुए बहुतसे चरित्र मिले। उनमें कई-की नकल करनी उसने ठानी। एक उपन्यासमें उसने पढ़ा था—लड़की ऊबकर जंगलमें चली जाती है और चिल्लाती है—"बचाओ "बचाओ," उसकी पुकार सुन साक्षात् भगवानका कलेजा पसीज जाता है और आकर वे उसे उबार लेते हैं। दूसरीको एक अज्ञात अपरिचित युवकने बचाया था; शायद वह किसी राजा या धनी सेठ साहूकारका लड़का था जिसके पास दोनों हाथोंसे उस लड़कीके लिए लुटा सकनेके लिए अगाध धनका खजाना पड़ा था। तीसरीको स्वयं ही जंगलमें किसीका छूटा हुआ खजाना मिल जाता है और वह सारी जिन्दगी सारे संसारको अपने यौवन और धन दोनोंसे ही ललचाती रहती है। नाद्या जंगलमें गई सही पर न तो उसे खजाना मिला, न राजाका लड़का और न भगवान। अठारहवीं शताब्दीके उपन्यासोंने उसे शरण नहीं दी।

अब उसने उन्नीसवीं शताब्दीकी धनी घरके लड़कोंको पढ़ानेवाली मास्टरनी हो जाना सोचा। वैसी मास्टरनियाँ धनी घरके छोटे सरकारका कलेजा चुरा लेनेमें समर्थ होती हैं और अन्तमें पटरानी बन जाती हैं। इसका भी मौका उसके लिए सोवियत यूनियनमें खोजने पर भी न मिला। यहाँ तो वैसे धनी घर ही आबाद नहीं रहे। किसी पादरीकी लिखी किताब पढ़ उसने 'नन' हो जाना ठाना, पर सोवियतमें एक तो उसकी सुविधा नहीं और दूसरे नाद्याका स्वभाव उस ननके शुष्क जीवनको कल्पनामें भी बरदाश्त नहीं कर पाता।

उसने कारखानेमें काम करनेवाली अथवा किसानकी लड़की हो जाना सोचा। कारखानेके फाटकपर देर तक लड़कियोंका चेहरा ध्यानसे देखती रही। वहाँसे चीखती हुई भागी—"ये तो परिश्रम कर अपनी जवानी नष्ट कर रही हैं।" किसानके घरमें कुल दो घंटे टिक सकी। वहाँ उसकी परिभाषाके अनुसार लोगोंको पहनने खाने बोलनेकी तमीज

नहीं। इससे भी अधिक—उनके भीतर भावुकता नहीं, सोचनेकी शक्ति ही नहीं।

अपने ढर्रेके सिवा और सब लोगोंका जीवन उसे नीरस दिखलाई दिया। पर अपने जीवनसे भी उसे एक प्रकारका असंतोष था! क्या करे, कुछ तय कर पाना उसके लिए असंभव हो रहा था।

घरसे भाग कर भी उसने देख लिया था, उससे भी समस्या हल नहीं हो सकती थी। विदेशमें जाकर जीवन व्यतीत करना चाहा; पर उसे भी तो वह स्वयं आँखों देख चुकी थी। दूसरे देश तो सोवियत संसारकी अपेक्षा कहीं अधिक इस मामलेमें गये गुजरे थे। सोवियतमें तो कमसे कम जो औरतें हुनर जानती हों और उस प्रकारके श्रमद्वारा समाजको सहायता पहुँचाती हुई अपना विकास करनेकी इच्छा रखती हों उनके लिए उसकी गुंजायश थी; दूसरे देशोंमें तो साधारणतया विभिन्न रूपमें वेश्या-वृत्तिके सिवा और कोई चारा नहीं रह जाता।

उसने बहुतसे उपन्यासोंमें पढ़ा था वेश्यावृत्तिद्वारा औरतोंने अपना बाहरी जीवन भले ही आमोद-प्रमोदमें पूर्ण बना लिया हो पर अपनेको सुखी कभी बना नहीं पाई। उसके सामने अपनी माँका ही उदाहरण था। उस दिन मेरे घरसे जाते जाते उसने कहा—"मेरा आगेका जीवन सुखी होगा या दुखी उसकी परवाह नहीं। अब मैंने वास्तवमें वैसा महान् रास्ता पकड़ना तय किया है जो हमारे जैसी लड़कियोंके लिए हमेशाके लिए आदर्श बना रहेगा।"

२

नाद्या जैसी प्रवृत्तिवालोंका जीवन दुखी रहनेका एक विशेष कारण था। सोवियत समाज जिस प्रवाहमें बहता जा रहा था उससे उन्होंने अपनेको अलग कर रखा था। जिसकी सोवियतवाले आराधना किया करते उसी श्रमको ये नीची दृष्टिसे देखा करते।

इसमें उनका निजका उतना कसूर नहीं था जितना उस समाजका जिसके प्रतिनिधिस्वरूप वे इस समय भी सोवियत यूनियनमें बच गये थे। धनने उनके माता-पिताकी मनुष्यता जहरीली बना दी थी और इसी जहरका असर इतने दिनोंके बाद भी दूर नहीं हो रहा था।

जेनरल मिखाएलोवकी सहायता बन्द हो जानेके बाद उनकी अवस्था दिनोंदिन खराब होने लगी। नाद्या माँसे बहुत कुछ झगड़ कर थियेट्रिकल सोसायटीमें भर्ती हो गई थी जहाँसे उसे साधारण रूपसे खर्च चलाने-भरकी आय हो जाती थी। पर यह बात न तो आना वासिलिएवनाको मान्य थी और न वे उतने कम खर्चमें अपनेको जिन्दा रखनेके लिए तैयार ही थीं। रूसी लोगोंसे उन्हें आन्तरिक घृणा हो गई थी और उनमें बहुत कम ही ऐसे मिलते जिनसे उनका मतलब सध सकता था। वे अब केवल विदेशियोंकी खोजमें रहा करतीं। इन विदेशियोंसे उन्हें विदेशी रुपये मिलते जिनसे टोर्गसीनसे सामान खरीदा जा सकता था। जो सामान विदेशी पैसेसे एक आनेमें टोर्गसीनमें मिलता वही उन दिनों और दूकानोंमें रूसी सिक्केसे तीन रुपयेमें भी मुश्किलसे प्राप्त होता।

कभी कभी ये विदेशी विशेष कर यात्री आना वासिलियेवनाका घर देख जाते। नाद्यासे भी यह बात छिपी नहीं रही। उसने और कोई चारा न देख आत्म-हत्याकी धमकी दे माँको सड़कपर जानेसे रोकना चाहा।

इन दिनों नाद्या जितना अधिक उपन्यास और नाटकोंके पन्ने उलटती उसकी समस्याएँ उतनी ही अधिक जटिल बनती जातीं। कुछ ठीक ठीक नतीजे पर पहुँचना उसके लिए असम्भव हो रहा था। मुझे नाद्या और उसकी माँको देखकर अनायास ही 'बेजप्रिजोर्नियों'की याद आ जाती। शायद इसका कारण यह था कि दोनोंको ही मैं पुरानी दुनियाका अवशिष्ट माना करता। उनका जीवन पूँजीवादी समाजने अधिक

लापरवाही दिखला कर नष्ट किया था और इन ऐरिस्ट्रोक्रैट्सका इनके प्रति बहुत अधिक परवाह दिखलाकर—पर नष्ट हुई थी मनुष्यता दोनोंकी ही। सोवियत सरकारद्वारा बेजप्रिजोर्नियोंकी समस्या हल होते देख चुका था। उन्हें नये जीवनका रास्ता पकड़ते, समाजोपयोगी कार्योंमें लगते, अपने भीतरकी मनुष्यता फिरसे जाग्रत करते देख चुका था। मास्को आनेके बाद पुराने ज़ारशाहीके जमानेके ऐरिस्ट्रोक्रैट्सकी समस्या देखने लगा था पर उसके सुधारका कोई रास्ता है या नहीं, सोवियत सरकारकी उनके विषयमें क्या नीति रहती है आदि बातें अभी भी देखना बाकी था। हाँ, इतना अवश्य समझ रहा था कि सोवियत समाजके लिए यह ऐरिस्टोक्रैसी एक गंदगी अवश्य रह गई थी जिसे यदि दूर नहीं कर दिया जाय तो आगे उसके विषके रूपमें परिणत हो जानेकी अवश्य ही बहुत बड़ी संभावना थी।

२

गीला गीला स्नो पड़ रहा था। आधा बर्फ आधा पानी, सड़कपर आते आते सबका सब पानी। स्नोके कारण धुँधला कुहासा छाता जा रहा था। रास्तोंपर स्नो और पानीके अनवरत मिलते रहनेसे कीचड़ ही कीचड़ हो रहा था। चलते समय उसकी छींटें पड़ा करतीं। वह भी मास्कोके लोगोंका चलना था। ऐसे मौसिममें लोग जूतोंके ऊपर रबरका दूसरा जूता पहन लेते हैं जिसे वे गालोश कहते हैं। इन गालोशोंमें भी स्नोका पानी भर जाया करता और उनकी आवाज़ 'धप धप' जैसी हुआ करती। सरदीके दिनोंवाली सख्त बर्फपरकी 'टिकटिक' की आवाज जाती रही थी। यह मौसिम था सरदीके विदा लेने और वसन्तके आगमनकी प्रथम सूचना।

रास्ता चलनेवाले नाक भौंह सिकोड़ते हुए जा रहे थे। मौसिमने उनके बहुतेरे कार्य-क्रम रद कर दिये होंगे। रांदेवू (मिलन) का वादा पूरा करनेका यह मौसिम नहीं था। हठात् ऐसा आरम्भ हो गया था कि

पहलेसे थिएटरका टिकट खरीद लेनेका शायद ही किसीको सूझा होगा। घरके बाहर पैदल निकलनेमें ही इस समय बहुत साहसकी आवश्यकता थी, टहलने जानेकी तो बात दूर रही।

मैं अपने कमरेमें ही अकेले टहल रहा था। दरवाजा धीरेसे खटखटाते हुए किसीने पूछा—"आ सकती हूँ?"

नाद्या। आज उसका चेहरा भी बाहरके ही मौसिम जैसा दीख रहा था। यदि कुछ भेद था तो यही कि उसके चेहरेपर बाहरकी जैसी नरमी नहीं।

अपना गालोशे खोलकर उसने कमरेके बाहर ही रखा। ओवरकोट उतारनेमें मैंने सहायता की। वह आकर जंगलेके पासवाली मेजपर बैठ गई। उसके बाल गीले थे, उन्हींके कारण कंधे भी गीले होते जा रहे थे। वह उन्हें आईनेमें अपनी शकल देख सँवारने लगी।

"बड़ा ही खराब मौसिम है?" मैंने कहा।

उत्तरमें वह थोड़ा मुसकराई। उसके चेहरेपर हँसी लानेके लिए मैंने उसे सोकोलनिकोव पार्कवाली 'कौमेडी' की याद दिलाई। वह हँसी—पर अनोखे ढँगसे। मैं उस कौमेडीका विस्तृत वर्णन उसे सुनाने लगा। बिना 'हाँ ना' किये चुपचाप वह सुनती रही। सरके बाल यदि कभी कभी मेरी ओर देखनेमें रुकावट डालने लगते तो वह उन्हें पीछेकी ओर हटा लेती। उसकी दृष्टि मेरी ओर थी; मुँह खुला था, हौंठ अलग अलग थे। वह शायद कुछ कहना चाहती थी लेकिन तुरत ही उसने अपनेको रोक लिया। पाकेटसे रूमाल निकाल उसने अपना चेहरा ढक लिया। रूमाल गीला हो चला। उसका चेहरा ऐसा होता जाता था मानों साँपका विष उसपर चढ़ता जाता हो।

अब मैंने महसूस किया कि जिसे मैं कौमेडी समझ रहा था वह उसके लिए ट्रैजेडी बन रही थी। अपनी माँको चाहे वह जितनी भी नीच क्यों न देखती हो उसके हृदयके भीतर उनके लिए कोमल स्थान था।

मेरी बातोंने उसके उसी स्थानपर आघात पहुँचाया था। अपनी गलती महसूस करने पर मैंने कहा—" तुम्हें मैंने बड़ी तकलीफ दी।"

आँसू अब बड़ी बड़ी बूँदोंके रूपमें ढुलकने लगे थे। मैंने उसे बोलनेके लिए बाध्य किया। वह थोड़ा खिसक कर बैठी। मैं उसका आधा प्रोफील देख पा रहा था। वही बतला रहा था कि " मैं हँसीका नहीं; दयाका पात्र हूँ पर किसीके भी पास मेरे लिए दो आँसू नहीं।"

इस बार उसके बाल मैंने अपने हाथों पीछेकी ओर फेंक दिए। उसका स्नोके समान सफेद चेहरा चमक उठा। उसने उसे रूमालसे ढक लिया। उसके ढक लिए जानेपर सौन्दर्यका पता लगा। कोई भी उसे देखकर कहता—" यह ट्रैजेडी है। इससे बढ़कर संसारमें और कौन-सी ट्रैजेडी हो सकती है। यदि वह बोर्जुआ समाजमें होती तो उसके दिन राजमहलमें डिनर देनेमें, मीठीसे मीठी शराब पीनेमें बीतते। धनीसे धनी आकर उसका हाथ चूमा करते।"

अपनी कल्पनामें इतनी दूर देख जानेपर याद आया—" नहीं, फिर इसमें इस मुहूर्तका सौन्दर्य कहाँ रह जाता! वह तो इसकी बिना प्राणोंकी छाया रहती। आजके जैसा जीवित सौन्दर्य उसमें कहाँसे आ सकता था!"

पता नहीं उसके दुखी चेहरेमें ही क्यों उसके भीतरकी मानवता झलक रही थी। मन ही मन स्थिर किया—" इस चेहरेमें सुख नहीं, पर हृदय है। सुखी पर प्राणरहित चेहरा दुखी किन्तु सहृदय चेहरेकी अपेक्षा कितना कुत्सित दिखलाई देगा!"

उसके बालोंपर हाथ फेरते हुए मैंने कहा—" ये कितने गीले हो गये हैं!"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उससे उस समय छेड़छाड़ न करना ही मैंने अधिक अच्छा समझा। खड़ा हो कमरेमें घूमने लगा। जब जब उसकी ओर दृष्टि जाती तब सोचने लगता—" यदि यही अपने आपको अस्वीकार करनेके बदले स्वीकार करती—यदि अपना सुख औरोंसे भिन्न

न रख उसे सारे समाजके ही सुखमें देख पाती तो यही कितनी सुखी बन सकती थी !"

उसके दिमागमें क्या क्या चल रहा था मुझे पता नहीं पर बड़ी देरके बाद उसने कहा—"मैं ग़ैर हूँ, सारे समाजकी शत्रु हूँ; तुम्हारी भी शत्रु हूँ।"

४

अप्रैलका महीना आ गया। सूर्यमें फिरसे गर्मी आने लगी। महीनोंका जमा हुआ स्नो पिघलने लगा। पहाड़ियों और मैदानोंने अपना सर्दीके मौसिमका सफेद वस्त्र त्याग दिया। मास्को नदीका भी पत्थरके समान सख्त बर्फका वक्षस्थल टुकड़े टुकड़े हो बहने लगा। चारों तरफका दृश्य बड़ी ही उदासी लानेवाला बनता जा रहा था।

स्केटिंगसे विदाई लेनेके साथ स्केटिंग रिंगके भी अधिकांश दोस्तोंसे विदाई ले चुका था। आना वासिलियेवनाके यहाँ जाना बहुत दिनोंसे बन्द कर दिया था। नाद्या कभी कभी स्वयं ही मेरे घर आया करती थी, पर इधर उसने जबसे एक नीग्रो बस-ड्राइवरसे शादी कर ली थी उससे भी मुलाकात बहुत कम ही हुआ करती।

इन दिनों सर्दीके मौसिमके खेलोंका समय बीत चुका था और गरमीके खेलोंका वक्त आ नहीं पाया था। साथ ही दिन भी बहुत लम्बे होते जा रहे थे। सरदीके दिनोंकी लम्बी रात कभी नहीं खटकती थी किन्तु इन दिनोंका लम्बा होता जाना ज्यों ज्यों अकेलापन महसूस करता अधिक ही खटकता था।

मन-बहलावका और कोई चारा न देख सड़कोंपर खूब चक्कर लगाया करता। मास्को नदीके सब पुल नाप आता पर उससे भी तबियत ऊबती जाती। खेल-कूदके दिनोंमें जिनसे सड़कपर मुलाकात होने पर मामूली नमस्कार कर खिसक जाया करता अब उन्हीं लोगोंसे देर

तक बातें करता रहता । आँखें सब समय ही किसी परिचितको ढूँढ़ निकालनेकी खोजमें रहतीं ।

" साश्का ! " नाद्याने पीछेसे पुकारा । " आज मैं तुम्हारे साथ टहलने जाना चाहती हूँ । मुझे गोर्कीपार्क कल्चरमें ले चलो न ! "

रास्तेमें उसने नीग्रोके साथ अपने संबंध-विच्छेद होनेका किस्सा सुनाया। वह स्वयं डस्डेमोना बनना चाहती थी और नीग्रोको ओथेलोका पार्ट करता हुआ देखना चाहती थी। उसका नीग्रोके साथ शादी करनेका मक़सद यही था। पर नीग्रो ओथेलोका पार्ट तो दूर रहा किसी भी प्रकारकी ऐक्टिंगके अयोग्य था। बहुत खींच तानकर नाद्याने उसे सिखलाया भी तो वह ओथेलो जैसे व्यक्तियोंकी चाल अपनानेसे कोसों दूर रहा। वह नाद्यासे अन्ततक—नाद्याके और लोगोंके साथ वास्तवमें प्रेम करने लग जानेपर भी, रुष्ट तक नहीं हुआ। नाद्याको इसी कारण अपने नीग्रोपतिसे अलग हो जाना पड़ा। मुझसे वह कहने लगी—" मैं चाहती थी कि वह मेरी हत्या करे—ठीक उसी भाँति काली मूठके पैने छुरेसे जिससे ओथेलोने डेस्डेमोनाकी की थी; लेकिन यह उससे संभव ही नहीं हो सका। "

उसने मुझे कुछ दुचित्ता-सा देख एक वाक्य धीरेसे कहा—" शायद यह ऐक्टिंग भी मुझे स्वयं ही करनी पड़ेगी। "

५

गोर्की पार्क कल्चर मास्कोका सबसे बड़ा पार्क है। नदी किनारे किनारे यह बहुत दूर तक चला गया है। पार्कके भीतर मन-बहलावकी बहुत-सी चीज़ें हैं। होटल, सिनेमा, थियेटर, तरह तरहके क्रीड़ा-स्थल और विश्राम-स्थानके सिवा एक बड़ी-सी झील और पहाड़ी भी उसके हातेके अन्दर है। उसी पहाड़ीपर लेनिन अपनी अन्तिम रुग्णावस्थामें रहा करता था। वहाँसे सारा मास्को शहर दिखलाई पड़ता था।

सूर्यास्तके कुछ पहले हम लोग उस पहाड़ीपर पहुँचे। और भी थोड़े-से आदमी वहाँ घूमने आये थे। लड़कियोंकी संख्या कम रहनेके कारण नाद्या दूरसे ही लोगोंके ध्यानमें आ जाया करती थी। उसे देखकर सोवियत राजधानीके वास्तविक वाशिन्दोंका थोड़ा टीका टिप्पणी करने लग जाना स्वाभाविक ही था। इस ओर हम लोगोंका ध्यान भी वैसा नहीं खिंचता, पर दो युवतियोंने एक और ही प्रकारकी चर्चा नाद्याको देखकर छेड़ी। वे दोनों हम दोनोंके थोड़े ही पीछे आ रही थीं, इसलिए उनकी बातें हम उनके धीमे बोलनेकी चेष्टा करते रहनेपर भी बहुत स्पष्ट सुन सकते थे।

"यह तो वही..." एकने कहा।

"हाँ। उसी रिबुर्शिंस्की खान्दानकी है।"

"ग़ैर! ग़ैर-वर्गकी है। हम लोगोंके शत्रुओंके दलकी है।"

नाद्याने शायद इसे स्पष्ट सुना; मैंने उसका ध्यान ठीक उन शब्दोंके उच्चारण होनेके समय दूसरी ओर फेर देनेकी चेष्टा की पर सफल नहीं हुआ।

पहाड़ीकी चोटीपर टीनकी एक छोटी-सी छत लगी थी और उसके नीचे चारों तरफ कुछ बेंचें रखी हुई थीं। मैं मास्कोकी ओर मुँह कर बैठ गया।

"मैं अभी आई।" कह कर नाद्या एक ओर चली गई। मैं सूर्यकी अन्तिम किरणोंमें क्रेमलिनके गुम्बजकी सुनहली चमक देख रहा था। अनायास ही मनमें आ रहा था, इन गुम्बजोंने ठीक इसी प्रकार सर ऊँचा कर इसी मास्कोको कितने रूपमें परिवर्तित होते देखा है? एक समय यहाँ ज़ारका आधिपत्य था, आज मज़दूर-किसानोंका आधिपत्य है!

हमारे पीछे आनेवाली लड़कियाँ भी मेरे पासकी ही बेंचपर आकर बैठ गई थीं। पहले वे आपसमें ही बातें करती रहीं फिर हठात् मुझसे पूछ बैठीं—"आपकी संगिनी कहाँ है?"

"अभी आ जायगी।"

वे हँसने लगीं। यह हँसी नाद्याके लिए, थी अथवा मेरे लिए मैं ठीक ठीक कुछ समझ नहीं सका।

बड़ी देर तक उसके लौटनेकी प्रतीक्षा करता रहा। चारों तरफ दृष्टि दौड़ा आता। वह कहीं भी दिखलाई नहीं देती। अँधेरा हो आया। वे दोनों लड़कियाँ भी उठकर चली गई।

मैं भी उठा। मन ही मन स्थिर किया—नाद्या जैसे स्वभावकी लड़कियाँ अवश्य ही नदी किनारेका रास्ता लेंगीं। उसी ओर मैं भी चला। चारों तरफ सन्नाटा था। इस सन्नाटेकी ओर वह क्यों आयेगी? फिर भी आगे बढ़ता गया। दूरपर लकड़ीका बना जहाजोंके टिकनेका एक मञ्च दिखलाई दिया। फिर सन्देह हुआ—वहाँ तो गरमीके दिनोंमें शहरके लोग जहाजोंपर पार्क घूमने आया करते हैं। अभी तो नदीकी बर्फ पूरी पूरी पिघली ही नहीं, जहाज चलेंगे कैसे? पर हवामें गरमी देख कर अन्दाज़ लगाता, शायद आजसे ही जहाजोंका चलना आरम्भ हो गया हो।

वह मञ्चके एक किनारे खड़ी थी। उसकी बोली सुन मैं किनारेपर ही रुक गया। उसकी बातचीत अपने आपसे हो रही थी। बहुत बार ऐसा ही हुआ करता है,—जब मनुष्य अपने भीतरका आवेग और अधिक नहीं रोक पाता तब अपने आपसे बातचीत करने लग जाता है। उसकी बोली उसी भाँतिकी थी। मैं झाड़ीमें चुपके-से छिप गया।

"कल इस समय तक मेरी लाश दफनाई जा चुकेगी। मेरे लिए कोई बाजा नहीं रहेगा, मञ्जिलमें साथ जानेवाले नहीं रहेंगे। आँसू बहानेवाले दोस्त नहीं रहेंगे। माँको यदि पता भी चलेगा तो कह बैठेगी, 'मूर्ख थी! पगली थी! अपनी बेवकूफीके कारण मरी' और बस!

"आँखोंमें मेरे लिए दो आँसू भी नहीं रहेंगे। यदि कोई दिखलाने लायक आदमी संयोगवश उस समय माँके पास होगा तो माँ शायद

बहुरूपियोंकी तरह नकली आँसू भी आँखोंमें ले आयें। दूसरे लोग, जिन्हें कुछ पता नहीं होगा कि मैं कौन थी, कहेंगे—'आहा! अभी तो जवान ही थी! सारा जीवन आगे पड़ा था! सुखका भंडार छोड़ कर मरी! अफसोस!' कौमसोमोल कहेंगे—'अच्छा ही हुआ! मर गई! ग़ैर थी। इसका अफसोस क्या?'

"लेकिन इन बातोंसे मेरा क्या बनता-बिगड़ता है? मैं तो उस समय तक दूसरी दुनियामें रहूँगी। पर मरनेके पहले एक बार अपना चेहरा तो देख लूँ।"

उसने अपने हाथके छोटे बैगको खोल उसमें लगे शीशेमें अपना मुँह देखा—"कल तो मेरी ऐसी शक्ल नहीं रह जायगी? मुर्दा देखनेमें कितना बीभत्स होता है! सुन्दरसे सुन्दर चेहरा भी कैसा बीभत्स बन जाता है! नहीं, मैं अपना चेहरा वैसा बीभत्स नहीं होने दूँगी। कभी नहीं। जीवन जैसा चल रहा है वैसा ही चलता रहे।

"क्या मेरा जीवन कभी पलटा नहीं खायगा? जरूर खायगा। मुझे भी लोग प्यार करेंगे। मैं भी नकली हँसीके बदले सुखसे जी खोलकर हँसा करूँगी। यह सम्भव है।"

आईना उसने बन्द कर लिया।

"नहीं, मैं तो गैर हूँ। सारे समाजकी शत्रु हूँ। मेरे लिए और लड़कियों जैसा सुखी जीवन,—हँसता हुआ जीवन कहाँ?

"उस प्रकारका जीवन ही नहीं तो फिर जीनेसे लाभ क्या? फिजूल ही इस धरतीपर भार बनी हूँ। बस अब अन्त मृत्यु..."

उसने आसमानकी ओर देखा। चाँद बादलोंसे ढका था। उसकी सूरत रोती हुई युवती जैसी हो रही थी।

"मरना! मैं तो कितनी बार मर चुकी हूँ। स्टेजपर कितनी ही ट्रैजेडी खेल चुकी हूँ। अन्तर तो सिर्फ यही होगा कि यह आजकी वास्तविक ट्रैजेडी गिनी जायगी! और बारकी नकली,—आजकी असली होगी।

"फिर मेरी ऐक्टिंग यहीं सीमापर पहुँचती है।" कुछ देर सोचते रहने पर उसे याद आया—"सबसे अच्छा मारूस्याकी तरह मरना होगा। अस्रोव्स्कीके ड्रामामें वह अन्तमें नदीमें डूब कर मरती है। उसकी लाश तो लोगोंको मिली नहीं। मेरी भी नहीं मिलेगी। मेरी भी भद्दी शक्ल संसारके सामने नहीं आयगी।

"फिर...गैर! समाजकी शत्रु..." वह हँसी। आसुओंके बीच हँसी—"पापिन...चल...कूद...कूद...कूद..."

एक उतराती हुई बर्फकी चट्टानपर उसने पाँव रखना चाहा। वह फिसलकर वास्तवमें नदीमें चली गई।

बर्फ गला पानी इतना ठंढा था कि चंद मिनटोंमें ही हृदयकी गति रोक दे सकता था। पहली डुबकीके बाद ऊपर आते ही मैंने उसे मंचपर खींच लिया। वह बेहोश हो गई थी। उसके गीले कपड़े खोलकर उसे अपने ओवरकोटमें लपेट लिया।

उसकी बेहोशी थोड़ी देर तक रही। बोली ठंढ लग जानेके कारण नहीं निकल रही थी। मैंने उसे गोदमें उठा लिया। ओवरकोट और मेरी छातीकी गरमी थोड़ी देर तक लगती रहनेके बाद उसने आँखें खोलीं। मैं उसे उठाकर खड़ा करने लगा। उसने कहा—"नहीं, थोड़ा और रुको, मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है।"

उसकी मूर्खताके लिए मैं उसे डाँटने लगा। उसने कहा—"तुम जानते नहीं, मैं अभिनेत्री हूँ साश्का!"

पंचम खण्ड

सफाई

१

जितना ही अधिक मास्कोका चक्कर लगाता उसकी विशेषतायें उतनी ही अधिक स्पष्ट होती जातीं। शहर और वहाँके वाशिन्दे दोनोंकी एक ही हालत थी—कोई भी स्थिर नहीं; वहाँकी हरएक चीज़ गतिमान थी। मेरे देखते देखते ही शहरके बहुत-से हिस्सोंका स्वरूप पलटता जा रहा था। ईंट और पत्थर बिछी सड़कें मेटलकी सड़कोंमें परिणत होती जा रही थीं, पुराने मकान तोड़कर उनके स्थानपर नई सुन्दर इमारतें खड़ी की जा रही थीं। कितने ही चौराहोंपर घेरे लगाकर उनके नीचे जमीनके नीचे चलनेवाली रेलके स्टेशन बनाये जा रहे थे। यदि कोई ध्यानसे देखनेवाला मास्कोका केवल एक ही चक्कर लगा आता तो उसे स्पष्ट हो जाता कि मास्कोमें आन्तरिक और बाह्य दोनों ही परिवर्तन बड़ी तेज़ रफ्तारके साथ किये जा रहे हैं।

प्रकृति इस काममें सहायताके बजाय बाधा ही पहुँचा रही थी पर लोग उसके खिलाफ़ भी कमर कसकर वैसे ही लड़ते जा रहे थे। सरदी अकसर पानीके बर्फ़के रूपमें जम जानेकी सीमाके तीस पैंतीस डिग्री नीचे चली जाया करती। लोग उसकी परवाह नहीं करते। सड़कोंपर चलनेवाले उस सरदीके सामने अपने हाथोंके मोटे स्नायु दिखला दिया करते। स्नो कभी कभी कई दिन तक लगातार पड़ती जाती, यदि उसे यों ही छोड़ दिया जाता तो रास्तोंपर ट्राम बस आदिके जानेकी तो बात ही दूर रही,

पैदल चलनेवाले भी वहीं धँस जाया करते। सड़कोंपर कई पुरस स्नो जम जाती और लोगोंको सड़कोंपर भी स्की हमेशा व्यवहारमें लाना पड़ता। पर इसका भी इंतजाम था। एक ओर स्नो पड़ती जाती और दूसरी ओर सड़कपर काम करनेवाले उसे बटोरते जाते। रास्ते हमेशा ही साफ रहते। स्नो बटोरकर चौराहेपर लाई जाती और वहाँ एक खास मशीन-द्वारा पिघलाकर बहा दी जाती।

कितने नाले भी बर्फ़से जम जाते। उन्हें भी ऊपरकी बर्फ़की तह तोड़कर साफ किया जाता। उनके नीचेसे बहुतसे स्मृति-चिह्न निकला करते। कितने चौराहोंपर घंटों खड़ा रह मास्कोका वह महकता हुआ पुराना इतिहास देखा करता। पुराने ज़मानेके सागवानके बने घरोंके टुकड़े सड़ी हुई लकड़ियोंके रूपमें निकला करते। पीतल-ताँबेके घड़े निकलते। कभी कभी मनुष्योंकी खोपड़ियाँ तक उन नालोंसे निकलतीं।

उन स्मृति-चिह्नोंपर उन्हें निकालनेवालोंको विचार करने या एक मिनटके लिए भी भावुक बनकर खड़े रहनेका अवकाश नहीं मिलता। उनका अभ्यास ही अनवरत वैसा करते रहनेके लिए उन्हें वाध्य कर रहा था। बाहरके मौसिमके साथकी लड़ाईने उनकी आन्तरिक प्रकृतिको ही उस हद तक बदल दिया था कि उन भावुक बातोंको प्रकट करनेके लिए किसीपर एक मूक दृष्टि भी फेर देनेकी बात उनके मनमें नहीं उठा करती।

उन्हें उस प्रकार काममें लगे देखकर मेरे मनमें अकसर यह प्रश्न उठा करता कि शहरकी सफाईके लिए इतना प्रयत्न किया जाता है, तब इन लोगोंका क्या मनुष्योंके भीतरकी सफाईकी तरफ अन्यमनस्क रह सकना संभव है ? आदमीके भीतरकी गंदगी भी तो वायुमण्डलको इन नालियोंकी गंदगीसे कम दूषित नहीं करती।

२

उन्हीं दिनों सारे सोवियत युनियनमें कौम्युनिस्ट पार्टीकी भी सफाई

चल रही थी। वहाँके अखबार उसी सफाईकी चर्चासे भरे रहते। बड़ी मुस्तैदी और संलग्नताके साथ यह सफाईका काम किया जा रहा था।

इस सफाईके समय पार्टीके सदस्योंके व्यक्तिगत आचरण, सामाजिक व्यवहार, समाजको उन्नत बनानेमें उनके कार्य, उनके अध्ययन, लक्ष्य आदि सब बातोंपर विचार किया जाता। उन्हें अपने सामाजिक उद्भव, राजनीतिक कार्य इत्यादिका सच्चा सच्चा इतिहास खोल कर बतलाना पड़ता और आगेके कामोंका भी ब्योरा सबके सामने रखना पड़ता।

सफाईके कामके लिए ही विशेष सभायें बुलाई जातीं, उन सभाओंमें पार्टीके सदस्य और ग़ैर दोनों ही समान रूपसे भाग ले सकते थे और जिस सदस्यकी सफाई की जाती उसके विषयमें टीका-टिप्पणी करनेका सबको समान अधिकार होता।

सफाईकी इतनी सीढ़ियाँ होतीं कि किसी सदस्यका अपना इतिहास या अपना किसी भी प्रकारका दुर्गुण छिपाये रहना अत्यन्त ही कठिन होता।

प्रत्येक सदस्यको यह साबित करना पड़ता कि पार्टी और सोवियत जनताकी ओरसे दी गई जिम्मेवारीका काम उसने किस हद तक पूरा किया है, और यदि कोई त्रुटि रह गई है तो कहीं जान बूझकर तो उसने उसे नहीं रख छोड़ा है। अपने आपकी टीका-टिप्पणी करनेको भी बहुत ही अधिक महत्त्व दिया जाता। आदमीसे गलती हो सकती है, इसे सफाईमें भाग लेनेवाले भली भाँति समझते, पर सोवियत जनताके सामने उस गलतीको छिपा रखना भारी अपराध गिना जाता।

सदस्यकी शिक्षामें किसी प्रकारकी त्रुटि है या नहीं, इस बातकी भी जाँच की जाती और मार्क्सवाद, लेनिनवाद, क्रान्तिके विज्ञान आदिसे संबंध रखते हुए प्रश्न उससे किये जाते। सदस्योंके लिए बहुत बड़ी परीक्षाके समान यह सफाई थी। इसलिए उन्हें इसके लिए काफी अच्छी तरहसे तैयार होकर आना पड़ता।

जिन सदस्योंकी सफाई निकट भविष्यमें होनेवाली थी, उनमें कईसे मैं

परिचित था। जेनरल मिखाएलोवकी सफाई पहले ही हो जानेवाली थी, क्यों कि वे सफाई-कमेटीके एक विशेष अध्यक्ष बनाकर कई कारखानोंके सदस्योंकी सफाईके लिए भेजे जानवाले थे। इस सफाईके ऊपर उनके आगेके जीवनका बहुत-सा कार्यक्रम निर्भर करता था। वैसे वे स्वभाववश सामाजिक टीका-टिप्पणीको तुच्छ समझनेवाले व्यक्तियोंमें थे, पर इस समय उससे उन्हें गुजरना ही पड़ता, इसलिए वे कुछ चिन्तित भी बनने लग गये थे।

उनकी सफाईके दिन मास्कोकी एक बहुत बड़ी दूकान मोस्तोर्गका बड़ा हॉल खचाखच भर गया था। बहुतसे लोग इस मौकेकी ताकमें थे। यह बात सभाके पहलेकी कानाफूसीसे स्पष्ट होती जाती थी। मिखाए-लोवका दिल उतना ही अधिक धड़कता जाता था, किन्तु वे जिस स्वभावके थे उसके लिए धड़कनको सम्हालते जाना और अपने चेहरेपर हँसीकी रेखायें दिखलाते जाना काबूके बाहरकी बात नही हो सकती थी।

अपना इतिहास और अपने कामोंका ब्योरा उन्होंने इस ढंगसे और ऐसे शब्दोंमें दिया कि किसीको भी उन्हें सच्चा प्रोलेटारियन-सेवक करार देनेमें हिचक नहीं हो सकती थी। पर बिना अध्यक्षोंकी अनुमतिकी प्रतीक्षा किये ही एक मज़दूर उठ खड़ा हुआ,—शायद वह अभी अभी कोई नाला साफ कर बाहर निकला था। उसके शरीरकी बदबू हाथ-मुँह धो लेनेपर भी पूरी पूरी दूर नहीं हो पाई थी। ललाटपर पसीनेकी झलक अभी तक वर्तमान थी। उसने कहा—"यह बुडा भी पार्टीका सदस्य है, मैं आज ही जान पाया हूँ। गृह-युद्धके समय सफ़ेद जेनरल कोल्चककी ओरसे इसीने मुझे कौम्युनिष्टोंका साथ देनेके कारण गोलीसे उड़ा दिये जानेका हुक्म दिया था।"

उस मज़दूरमें वाक्पटुता नहीं थी। अपनी बातें बड़े ही उजड्ड ढंगसे उसने शुरू की थीं,—वे भी जल्दी और उतावलेपनके कारण सिलसिले-वार उसके मुँहसे नहीं निकल रही थीं। एक बात तो तुरत ही

साबित हो गई जिसे मिखाएलोव झूठा साबित करनेकी चेष्टा करनेपर भी समर्थ नहीं हुए। उन्होंने ज़ारशाहीकी ओरसे लड़नेवाले सफेद अफसरका लड़का होना छिपाकर अभी कुछ ही देर पहले अपनेको लोहारका लड़का बतलाया था।

दूसरे किसी भी समाजमें यह अजीब-सी बात लगेगी कि अफसरका लड़का छिपाकर अपनेको लोहारका लड़का बतलाता है! पर तुरत ही मुझे याद आई,—यह था सोवियत-समाज जहाँ लोहारकी इज्जत अफसरसे कहीं अधिक होती है। धनी-समाजमें पले हुए लोग प्लेगकी तरह देखे जाते हैं, उन्हें लोग नालोंके कीड़ोंसे भी गया गुज़रा समझते हैं!

सभामें बैठे लोगोंका रुख एकाएक पलट गया था। सबके चेहरोंपर मिखाएलोवके प्रति घृणा और क्रोधका भाव जाग्रत होता आ रहा था। चारों तरफसे आवाज आने लगी—'ग़ैर! ग़ैर!—यह ग़ैर-वर्गका, शत्रु-वर्गका आदमी है। आज परदा खुला है। छिपकर हमारे बीच चला आया था; और गुस्ताखी तो देखो, सिर्फ पार्टी-सदस्य ही नहीं, उसमें उतना ऊँचा ओहदा दखल कर चुका था!'

'निकालो, निकालो!' की आवाजके बाद 'पकड़ो! पकड़ो!' की आवाज आने लगी। मिखाएलोव गे० पे० ऊ० के हवाले किये गये। उनकी जाँच आरम्भ हुई।

जाँचके सिलसिलेमें उनके सिर्फ ऐरिस्ट्रोक्रैट ख़ान्दान और ज़ारशाहीके ज़मानेमें उनके गुप्तचर-विभागमें ही काम करनेकी बात नहीं, बल्कि और भी बहुत-सी बातोंका, उनके औरतोंके विषयमें ऐडवेंचर तकका, पता चल गया। उनके जासूसी कार्य बड़े ही मनोरंजक और आश्चर्यजनक थे। किसी जासूसी उपन्यास लिखनेवालेको उसके कई उपन्यासोंके लिए अकेले उनके जीवनसे बहुत-सा मसाला मिल सकता था। सोवियतके लोगोंको उसके लिए फुरसत नहीं थी। उन्हें चिन्ता वैसे विषैले जासूसोंसे सोवियत-समाजको मुक्त करनेकी थी। उनकी जाँचका यही सिलसिला आगे भी जारी रहा।

सफाईके ज़मानेके लिए ऐसी बातें अनोखी नहीं गिनी जाती थीं। मिखाएलोव जैसे उदाहरण अक्सर ही पाये जाते थे और उनकी चर्चासे अख़बारोंके बहुतसे कालम भरे रहते थे। मिखाएलोवकी जाँचके सिल-सिलेमें उनका आना वासिलियेवानाके साथ संबंधका पता भी मास्कोवा-लोंको लग गया था। एक अख़बारने उन्हीं दिनों लिखा था—
"ज़ारशाहीके जमानेके ऐरिस्ट्रोक्रैट अब भी 'रंगे स्यार' की तरह हमारे बीच छिपे हैं। शत्रु-वर्गकी जड़ उखाड़ फेंकनेके लिए इन्हें प्रकट कर देना,—प्रकाशमें ले आना, आवश्यक है। इसमें हरएक सोवियत नागरिकको हाथ बटाना चाहिए। ये पूँजीवादके अवशेष केवल हमारी सोवियत सरकारके ही रास्तेमें नहीं, बल्कि सारे मानवीय विकासके रास्तेमें बहुत बड़े बाधक हैं। इसके लिए मोस्तोर्गके मैनेजर मिखाएलोवका उदाहरण ही काफ़ी होगा। सोवियत सरकारकी यह शुरूसे ही चेष्टा रहती चली आई है कि उसकी सीमामें प्रत्येक स्वरूपमें वेश्यावृत्ति मिटा दी जाए। फिर भी, उसका निशान मिखाएलोव जैसे लोग ही मिटनेसे रोक रहे हैं। इससे क्या यह स्पष्ट नहीं होता कि वेश्याकी परंपरा ऐरिस्ट्रोक्रैट समाजका एक आवश्यक अंग है? यदि हमें पूँजीवादकी ख़ूँखार लीलाको नष्ट करना है, तो उसके साथ ही ऐरिस्ट्रोक्रैटोंकी बची-खुची दूषित सामाजिक भावनाको भी जड़-मूलसे उखाड़ अपने समाजसे अलग कर फेंक देना होगा।"

जिस गंदगीको मैं भी बहुत दिनोंसे देखता आ रहा था और जिसके कारण मास्कोके सौन्दर्य, वँहाकी चहल-पहल, वहाँके विनोद, वहाँकी हँसीमें कमी दिखलाई देती थी, वह अब इस पार्टीकी सफाईके ज़मानेमें सबके सामने बहुत ही स्पष्ट रूपमें ले आई गई। सोवियत नेताओंका काम यहींपर समाप्त नहीं होता था। वे और गंदगियोंकी भाँति इस गंदगीको भी दूर करनेमें अपनी बोल्शेविक तत्परतासे लग गये।

नई दुनिया

१

नई दुनियाके लोगोंकी प्रकृति भी धीरे धीरे बदलती जा रही थी। ऐसे लोगोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी जो रोज़मर्रोके जीवनके ऊपर अपनी उड़ान ले जाना चाहते थे। दैनिक भोजनकी ही चिन्तामें अपना समय बिता देना, अथवा जिसे 'ऐशोआराम' कहा जाता है उसीमें अपनेको भुला देना मनुष्यके वास्तविक आदर्शसे बहुत नीचा दीखता था।

ऐसे लोगोंकी लड़ाई प्रकृतिके साथ चल रही थी। रोज़ ही नये-नये अद्भुत चमत्कारपूर्ण कार्योंकी रिपोर्ट अखबारोंमें छपा करतीं। मनुष्यके इतिहासमें उसके प्रकृतिके साथकी लड़ाईके पहलेके बहुतसे रेकर्ड रोज़ाना ही टूटते जा रहे थे। एक दिन ख़बर मिलती, सोवियत वायुयानिक पामीरकी उपत्यका लाँघ गये। दूसरे दिन स्ट्राटोस्फियरमें चौदह मील ऊँची उड़ानकी खबर मिलती। तीसरे दिन उन्होंने उत्तरी ध्रुव विजय किया। चौथे दिन रूससे उड़कर ध्रुव पार करते सीधे अमेरिका पहुँच गये।

ऐसे रेकर्ड दूसरे देशोंके लोग भी तोड़नेका प्रयत्न करते हैं पर उनके मानसिक विचार कुछ दूसरे रहते हैं। उनमें अधिकांशको नाम और रुपये कमानेकी इच्छा रहती है, कितने ही अपने पूँजीपति मालिकको खुश

करनेकी धुनमें रहते हैं और सरकसवालोंके जैसा रेकर्ड तोड़कर दिखलाया करते हैं। यह नई दुनियाके दृष्टिकोणसे मनुष्यके आदर्शसे बहुत नीचा दीखता था।

सोवियत यूनियनमें यदि वैसा कोई भी बड़ा प्रयत्न होता तो उसमें सारे समाजकी शुभ कामना, सब लोगोंकी विजय पानेकी दृढ़-प्रतिज्ञा, रोज़मर्राके जीवनसे ऊपर उड़ान मारनेवालोंको सहायता पहुँचाया करती। जन-समाजकी यह इच्छा बड़े बड़े आश्चर्यजनक चमत्कार दिखलाया करती। आर्कटिक, प्रदेशोंकी विजयमें तो इसका बहुत बड़ा हाथ रहा है। लेनिनग्रादसे आर्कटिक-क्षेत्रमें बर्फ़ जमे समुद्रसे होकर बेहरिंगके मुहाने तककी सबसे पहली यात्रा प्रोफेसर श्मिटके ही सोवियत जहाज सिबिरियाकोवने की थी। दूसरी यात्रा वे 'चेल्युस्किन' जहाजपर उसी रास्ते करना चाहते थे, पर लक्ष्यपर पहुँचनेके लगभग दो सौ मील पहले ही बर्फ़में उनका जहाज अटक गया। वह जहाज डूब गया। प्रोफेसर श्मिट और उनके चेल्युस्किन जहाजके साथी सोवियत नागरिकोंने बर्फ़पर अपने खीमें डाले। बर्फ़का वह मैदान जिसपर खीमा डाला गया था समुद्रके प्रवाहमें बहता जाता था। इतना ही नहीं, बर्फ़में हठात् दरार फट जाने पर लोगोंके बर्फ़में डूब जानेकी आशंका प्रतिपल रहती थी। श्मिटके साथियोंमें दस औरतें भी थीं, जिनमें एककी गोदमें नवजात शिशु था। सारे संसारने समझ लिया था कि अब वे कुल एकसौ-दस आदमी बचाये नहीं जा सकते।

पर सोवियत-निवासियोंकी दृढ़ इच्छा इसे सहन नहीं कर सकती थी,—वे उस प्रकार हिम्मत नहीं हार सकते थे। वे प्रोफेसर श्मिटके बचानेके जितने भी रास्ते हो सकते थे निकाल रहे थे और उन्हें उन सबकी सूचना रेडियोद्वारा देते जाते थे। पर बचानेका काम आसान नहीं था। यदि सिर्फ प्राण देना होता तो सोवियत यूनियनमें बहुतसे वैसे आदमी थे जो बर्फ़पर खीमा डाले हुए लोगोंके लिए अपनेको

न्यौछावर कर देते, पर सिर्फ उससे काम नहीं चल सकता था। आवश्यकता थी धैर्यकी और उससे भी अधिक सारे देशके लोगोंकी दृढ़ इच्छाकी। यह इच्छा यथेष्ट मात्रामें प्राप्त थी। प्रोफेसर श्मिटको भी सबसे बड़ा बल,—सबसे बड़ी आशा यही थी। जो हवाई जहाजके उड़ाके उन्हें बचानेके लिए गये थे, उन्हें भी सबसे बड़ा बल उन्हीं सोवियत निवासियोंकी दृढ़ इच्छाका था। आर्कटिकके उस हिस्सेमें हवाई जहाजसे उड़ना संसारके सब प्रख्यात वायुयानिकोंने असम्भव करार दे दिया था, पर यह सोवियत वायुयानिकोंको हतोत्साह नहीं कर सका। वे चालीस डिग्री ठंढके बीच (४० डिग्री सेल्सियस शून्यके नीचे) उड़े, उनकी मोटरें सोवियत-निवासियोंकी दृढ़ इच्छाके साथ तैयार की गई थीं, वे बर्फ़का हुक्म मान बंद नहीं हो सकती थीं। वायुयानिक बर्फ़के छोटेसे मैदानमें उतरे, पहले औरतोंको ढोकर जमीन पर ले आये, फिर एक एक कर और लोगोंको। चालिस डिग्री सरदीमें और आर्कटिकके तूफानमें चालीस दिनों तक उन लोगोंको बर्फ़पर रहना पड़ा था, पर अन्तमें सोवियत नागरिकोंकी दृढ़ इच्छाने उन्हें बचा लिया।

संसारके किस देशके अन्वेषकोंको जनताकी वैसी सहानुभूति और इच्छाकी एकता प्राप्त रहती है? कौन अपने अन्वेषक और वैज्ञानिकोंको सोवियत यूनियनके समान आदर और उनके योग्य ऊँचा स्थान दे सकता है? ये बातें सिर्फ नई दुनियाँके लिए ही संम्भव थीं।

२

वैसी रफ्तारसे आगे बढ़ते हुए समाजके बीच रहते समय किसी भी अन्य देशवासीको अनायास ही ख़्याल आ जाता—"और हम?—हमारा देश?"

सोवियत समाजके सामने हरएक व्यक्तिको तथा हर किसी समाजको सर नीचा कर लेना पड़ेगा। हिन्दुस्तान तो सदियों पीछे,—रसातलको गया

हुआ दीखेगा। इसमें यहाँके व्यक्तियोंका दोष नहीं दीखेगा बल्कि उस प्रणालीका जिसके चक्रमें उनके जीवनके सब अरमान कुचल दिये जाते हैं, जो उनके भीतरकी क्रियाशील शक्तिकी तो बात ही दूर रही साधारणसे साधारण उत्साह भी कुचल देता है।

निष्पक्ष भावसे देखना आरम्भ करते ही सोवियत और भारत दोनों जगहोंके समाज दो विपरीत दिशाओंमें जाते दिखलाई पड़ेंगे। एक हमेशा नये, सुन्दर, मनुष्य-जीवनकी ओर और दूसरा अनवरत खोखले, भद्दे और अधिकाधिक पशु-जीवनकी ओर।

पर रूसी लोगोंका भी तो अभी कुछ ही वर्ष पहले वैसा ही खोखला, भद्दा पशु-जीवन था। उन्होंने उसे छोड़कर दूसरा जीवन अपनाया है। ऐसे मौकोंपर गोर्की दादाकी बातें याद आतीं—"मैं अपने व्यक्तिगत तजुर्बेके आधारपर कह सकता हूँ कि सोवियतके समान नवीन और मनुष्योचित समाज संगठित करनेके लिए उसके पहलेकी पुरानी और पाशविक समाज-प्रणालीको वैसी ही घृणाकी दृष्टिसे देखना पड़ेगा।"

मेरा ध्यान तुरत ही भारतकी ओर जाता। यहाँ पाश्चात्य सभ्यता नवीन गिनी जाती है, शायद उसमें नवीनताके गुण वर्तमान भी हैं, पर फिर भी वह सोवियत सभ्यतासे बहुत पीछे और पुरानी पड़ गई है। दूसरी बात यह भी दीखती है कि पाश्चात्य सभ्यता अपनी सीमापर पहुँचकर नीचेकी ओर पशुताकी ओर खिंची आ रही है। उदाहरणके लिए अधिक देर रुकना नहीं पड़ता। इटलीकी अबीसीनिया-दखल करनेकी तैयारी आरंभ हो चुकी थी और अखबार इन ख़बरोंसे भरे रहा करते। अपनी साम्राज्य-लोलुपता, पशुता और बर्बरताकी ओर दौड़नेवाली प्रवृत्तिको निर्लज्ज भावसे यूरोपके अख़बारोंमें 'यूरोपीय सभ्यताका प्रसार' नाम दिया जाता।

सोवियतवासी मनुष्यको आपसकी लड़ाईसे हटाकर प्रकृतिके विरुद्ध लड़नेके लिए प्रेरित कर रहे थे और दूसरी ओर फैसिस्ट अपना आर्थिक

घाटा पिछड़े हुए लोगोंका खून लेकर पूरा करना चाहते थे। दोनोंमें अन्तर बहुत बड़ा था। मनुष्य होनेके नाते एकको जितना ही अधिक प्यार किया जा सकता था, दूसरेसे उतनी ही अधिक घृणा करनी पड़ती थी।

३

मैं बहुत प्रकारके समाजमें रह चुका था पर सोवियत समाज उन सबसे भिन्न था। सब समय 'तवारिश' सुननेमें आता। हजाम, शिक्षक, कप्तान, नौकर,—सब तवारिश। यह 'भाई'के अर्थमें प्रयोग किया जानेवाला खोखला शब्द नहीं था। यह उनकी एक दूसरेके प्रति व्यक्त की जानेवाली आन्तरिक भावनाओंका द्योतक था। मनुष्योंका परस्पर कैसा व्यवहार रहना चाहिए, इसका आदर्श उस एक शब्दमें भरा था।

यहाँके समाजमें नौकर और मालिकका विभेद नहीं। इस विभेदके मिट जानेसे मनुष्य-समाजका एक बहुत ही महान् और सुन्दर स्वप्न पूरा हुआ है। दलितोंको बंधन-मुक्त करनेका स्वप्न बड़े पुराने जमानेसे संसारके महान् कलाकार और साहित्यिक देखते आये हैं; जर्मनीके महान दार्शनिक, कवि तथा साहित्यिक गेटेने भी अपने 'फाउस्ट'के जरिए समुद्र-किनारेके एक अति संकीर्ण स्थानमें स्वतंत्र भूमि और स्वतंत्र लोगोंके बीच रहनेका स्वप्न देखा था। आज मज़दूर-समाजने पूँजीवादके दलित और गुलामोंके समुद्रमें अपना छोटा-सा संकीर्ण स्थान नहीं बल्कि एक विशाल महादेश कायम कर लिया है। आज 'स्वतंत्र भूमि और स्वतंत्र लोगों' का दायरा समुद्र-किनारका संकीर्ण स्थान नहीं, बल्कि दुनियाका छठा हिस्सा है।

इस नई दुनियाके समाजका विशाल रूप देखना मेरे लिए अब भी बाकी था। यह मौका पहली मईके अवसरपर मिला।

पहली मई

१

पहली मई ! मज़दूर-एकताका दिन ! अन्तरराष्ट्रीय मज़दूर जागृतिकी जन्म-तिथि ! समाजवादी क्रान्तिका वार्षिकोत्सव ! लाल झण्डेकी विजय ! हँसिया-हथौड़ेके नारे, रक्तपात,—आज़ादीका दिन ! मज़दूर-वर्गका सबसे बड़ा त्यौहार !

इस दिन सारे संसारमें लाल झण्डेके नीचे मज़दूरोंके जुलूस निकलते हैं। प्रोलेटारियाटके लिए लाल दिन और बोर्जुआ (धनी) लोगोंके लिए यह काला दिन रहता है । मज़दूर अपनी आज़ादी घोषित करने निकलते हैं, शोषक बंदूकें लेकर, दाँत पीसते हुए उन्हें गोलियोंसे भून डालनेकी ताकमें रहते हैं। यह क्रान्तिकारी शक्तियोंकी परीक्षाका दिन होता है। यह दलितोंके पुनरुज्जीवन और आज़ादीका, मनुष्यताके युवा-हृदयके विकास, विजय और अपनी शक्तिमें अटूट विश्वासका दिन रहता है ।

सोवियत यूनियनके लिए यही सबसे बड़े उत्सवका दिन है। वे क्रिस-मस और दशहरा नहीं मनाते। ईस्टर और होलीसे उन्हें ताल्लुक नहीं। ये दिन कब पड़ते हैं, शायद क्रान्तिके बाद रूसमें विरले ही किसीने खोज करनेका कष्ट उठाया होगा। यह पहली मई श्रमकी पूजाका दिन ठहरा। इसे वे बड़ी धूमधामके साथ मनाते हैं। लगातार तीन दिनों तक यह

उत्सव जारी रहता है। इन दिनों मास्कोकी सजावटका क्या कहना है! यह है आज़ाद, विजयी, नयी दुनिया बसानेवाले कार्यशील मनुष्योंकी राजधानी। इनके इस उत्सव मनानेके ढंगकी तुलना और कहीं ढूँढ़नेपर भी कैसे मिल सकती है?

इस वर्ष भी इस उत्सवकी तैयारियाँ बहुत पहलेसे ही हो रही थीं। घर, रास्ते, चौराहे, ट्राम, बस, रेल, दूकान,—सब सजाये जा रहे थे। जिधर दृष्टि जाती उधर लाल ही लाल दिखलाई देता। इन दिनों हिम पिघल गया होता है। गरमीके दिनोंकी सब्ज साड़ी पहननेके पहले राजधानी पहले नया लाल वस्त्र पहन लेती है। जगह जगहपर मेले लगने लगते हैं। लोग उछलते-कूदते, गाते-बजाते हैं। चौराहोंपर भी भीड़ लगी रहती है। उत्सवका दिन है, लोग सवारीकी परवाह नहीं करते। कितने मनचले युवक ट्राम-ड्राइवर और युवती कंडक्टरको भी उतार कर बूलवारमें एक बार नचा लेते हैं तब आगे बढ़ने देते हैं। उत्सवके दिन यह सब माफ रहता है।

इस वर्ष भी वे दिन आये। मई दिवसके एक दिन पहलेसे ही धूप निकलने लगी। सूर्यमें नरमी और गरमी थी। लोगोंने मोटी मोटी खालके कालरोंवाले ओवरकोट खूँटियोंपर टाँग दिये। ऐसे दिनोंमें मास्को विशेषकर सुन्दर दिखता है। यहाँ वालोंकी स्वाभाविक गति,—चलनेकी रफ्तार और भी अधिक बढ़ जाती है। पाँवोंमें अब सिर्फ जूतोंसे ही काम चल जाता है। उसपर रबरके गालोशोंकी आवश्यकता नहीं, इसीलिए लोगोंको चलना हलका मालूम पड़ने लगता है।

राजधानीके ही वाशिन्दे अपने ही मुहल्लों और सड़कोंपर अजनबीकी भाँति खड़े हो चारों तरफ अवाक् हो देखना शुरू कर देते हैं। उनके लिए भी बहुत-सी चीजें बिलकुल नई दिखलाई देती हैं। पिछले दिनों तैयार हुए राजपथ आज ही उन्हें पहले पहल खुले हुएसे दिखलाई देते हैं। नये वोल्गा कैनालसे आए जहाजोंपर उनकी पहले ही पहल दृष्टि पहुँ-

चती है पर उनकी सूचना घर घरमें अधिक खाने-पीनेकी सामग्री पहुँचनेके कारण पहले ही मिल गई होती है। मन ही मन जहाजके कप्तानोंसे वे कहने लगते हैं—" आगेसे और भी भर भर कर जहाज लाना, हमारी जरूरतें बहुत बढ़ गई हैं। "

नई इमारतोंपर लाल झंडे देखकर उन्हें उनकी ऊँचाईका अन्दाज़ा मालूम होता है, ज़ारशाहीके जमानेमें तैयार हुई इमारतें उनकी तुलनामें बौनी मालूम होने लगती हैं। इन नई सड़कोंके निकालनेमें,—पुल, नहर, नई इमारतोंद्वारा शहरके अधिक सुन्दर बनाये जानेमें मास्कोवासी अपना हाथ देखते हैं। इसीलिए उसकी खुशी भी उन्हें विशेष प्रकारकी होती है।

जमीनके नीचे चलनेवाली उनकी रेल भी तैयार हो गई। काम न रहनेपर भी सिर्फ उसका सौन्दर्य देखनेके खयालसे ही वे एक चक्कर लगा आते हैं और कहते हैं—" ये सब हमारे बनाये हैं, इन सबके मालिक हम हैं, संसारका और कौन-सा शहर इतना सुन्दर हो सकता है ? "

इसी नई दुनियाकी राजधानीमें पहली मईके उपलक्षमें सभायें होती हैं। लोग अपनी विजय मनानेके सिवा सारे संसारके दलित-वर्गपर दृष्टि डालते हैं और उनके प्रति अपना कर्त्तव्य निर्धारित करते हैं। क्यों ?—सारे संसारके मज़दूर रिश्तेमें उनके भाई लगते हैं।

२

बलशोई थियेटरमें हँसिआ-हथौड़े नामके बिजलीके कारखानेके मज़दूर अपनी सभा कर रहे थे। उस थियेटरके सब दरवाजे, खिड़कियाँ और खम्भे तक बिजलीकी बत्तियोंसे पचीस वर्षोंकी दीवालियोंके एक साथ सजाये जानेके समान जगमगा रहे थे। थियेटरके सामनेके पार्कमें राहगीरोंके लिए उन्होंने एक अपने कारखानेकी नुमायश लगा रखी थी जिसमें बिजलीकी करामात तरह तरहके रूपमें दिखलाई दे रही थी। ठीक पार्कके बीचमें और थिएटरके मुख्य द्वारके सामने बिजलीकी बत्तियोंसे लेनिनके

नामपर बनाया गया द्रेप्रोस्त्रॉयका हाइड्रोएलेक्ट्रिक प्लैंट दिखलाया गया था। द्निपर नदीका बाँध और जलप्रपात बिजलीसे जगमगाते रहनेके कारण बहुत ही सुन्दर दिख रहे थे।

थिएटरके एक दरवाजेपर एक लड़की मुस्कुराती हुई प्रवेश करनेवालोंसे टिकट वसूल कर रही थी। मेरे पास उस तरहका टिकट नहीं था। लड़कीने सर उठाकर मेरी ओर देखा और कहा, 'फिर?' उसका चेहरा मुझे बेलाके जैसा दिखलाई दिया। कीवके इंस्टिटयूटके दरवाजेपर उसे उसी भाँति देखा था। लड़कीने स्वयं ही कहा—"दवाईचे,—हर्ज नहीं, भीतर जाओ।"

समूचा थिएटर-घर लोगोंसे खचाखच भरा था। स्टेजके सामनेके पाँचों मंजिलोंपर तिल रखनेका भी स्थान नहीं था। हजारों आदमी खड़े थे। आज वे सबके सब अपनी सादी पर सुन्दरसे सुन्दर पोशाकमें आये थे। कमसोमोल लड़कियोंकी पोशाक दूरसे ही चमक जाती थी। स्टेजपर बड़ी-सी मेजपर लाल कपड़ा बिछा था और तीन ओर कुरसियाँ लगी थीं। सभापतिके लिए स्टालिन, वोरोशिलोव, कागानोविच और मोलोटोवके साथ सांथ कारखानेमें सबसे अधिक दत्तचित्त हो काम करनेवालों, पार्टीका काम सुचारु रूपसे चलानेवालों और अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेवारी सबसे अधिक समझनेवालोंके नाम पेश हुए। इन सभापति और सभानेत्रियोंका लोगोंने खड़े होकर और ताली बजाकर स्वागत किया। साथ ही इंटरनैशनल भी बज रहा था।

लोगोंके फिर बैठ जानेपर सभाकी कार्यवाही आरंभ हुई। बोलनेके मंचपर एक युवती आई। उन दिनों वह बल्ब बनानेके विभागमें काम करती थी। लोगोंकी करतल-ध्वनिने उसे सहमा दिया था। बीस हज़ारसे भी अधिक आँखें एक साथ उसपर जा लगीं थीं। वह बारबार 'तवारिशी'...कहती और उसे हल्ला शान्त होनेके लिए रुकना पड़ता। अपनेको भली भाँति सम्हाल लेनेपर उसने कहा—

"आज हमारा संबसे बड़े उत्सवका दिन है। हम आज़ादीके साथ इसे मना रहे हैं, पर दूसरे देशोंमें हमारे करोड़ों भाई बहन हैं जो अभी भी गुलामीकी जंजीरमें बँधे हैं, उनके ऊपर होनेवाले अत्याचारोंका पारावार नहीं। हमारा काम, हमारा ध्येय तब तक पूरा नहीं समझा जायगा जब तक सारे संसारके लोग हमारी ही तरह आज़ादीसे मजदूर-वर्गका यह उत्सव मनानेके हकदार नहीं हो जाते।"

उसे बोलनेकी आदत नहीं। हृदयके उद्गार चंद शब्दोंमें व्यक्त कर बैठ गई। और लोगोंके बोलनेका भी वही ढंग रहा। लोगोंने बतलाया कि यदि अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-वर्गकी सहानुभूति और मदद सोवियत यूनियनको नहीं मिली होती तो आज सोवियतका टिक पाना मुश्किल होता, इतने —क्षेत्रोंमें तरक्की करनेकी बात तो दूर रही। दूसरे लोगोंने कारखानेके कामके और भी अधिक सुचारु रूपसे चलानेपर ज़ोर दिया क्योंकि उनका काम जितना ही आगे बढ़ेगा अन्तर्राष्ट्रीय शोषण और दरिद्रताका उतना ही शीघ्र नाश होगा। ज़ारशाहीके ज़मानेके सताये गये वेजप्रिजोर्नीका जीवन व्यतीत करनेके लिए बाध्य हुए कलके मामूली घसकटे इस समय बिजलीघरके इंजीनियर बन गये थे। ऐसे लोगोंके भी व्याख्यान हुए। उनमें व्याख्यान देनेकी बड़े बड़े राजनीतिज्ञों जैसी कुशलता नहीं थी, फिर भी उन राजनीतिज्ञोंसे हज़ार गुना अधिक उपयोगी उनका व्याख्यान था। वे अपने जीवनका उदाहरण देकर लोगोंको समझाया करते, बड़ी बड़ी पोथियोंसे उन्हें कम ही ताल्लुक हुआ था। एक कमसोमलने कहा—"हमें सोवियत-दुनियाका सदस्य होनेका गर्व है और इसी गर्वकी रक्षाके रास्तेमें यदि हमें चीन, भारत, स्पेन आदि देशोंके शोषित लोगोंकी मददमें अपने प्राण दे देने पड़ें तो हम अपना अहोभाग्य मानेंगे।"

यहाँ किसी बड़े विद्वानका, अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी समस्यासे परिचित किसी महान् व्यक्तिका व्याख्यान नहीं था। यहाँ थे सोवियत जनताके अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-समाजके प्रति अपने भीतरके छिपे हुए उद्गार।

सोवियत-जीवनकी और सादगियोंके ही समान ये उद्गार भी बड़े सीधे सादे सरल व्यक्तियोंके मुँहसे और उन्हींके उपयुक्त निष्कपट, निश्छल, भावपूर्ण भाषामें निकल रहे थे । उन उद्गारोंका किसी लेखकके लिए व्यक्त कर सकना असंभव होगा ।

मेरे सामनेकी खिड़कीसे मास्को दिखलाई पड़ता था । जब उसे ये सोवियतवासी अपना कहते, अपनेको उसका मालिक बतलाते तो उनका वह ‘ अपना ’ तथा उनके उस आधिपत्यकी सीमा कितनी विशाल हो सकती है, यह उनके व्यक्त करनेके भावसे ही पता चल जाया करता । वे अन्तर्राष्ट्रीय दलित मज़दूर-वर्गके ‘ उद्धारकर्ता ’की डींग नहीं बल्कि उसके प्रति अपने कर्त्तव्य, अपनी कृतज्ञता प्रकाश कर रहे थे ।

इतना विशाल अन्तर्राष्ट्रीय भावपूर्ण जीवन सोवियत राजधानीमें ही पाया जाना स्वाभाविक और संभव था ।

३

सभाकी कार्यवाही समाप्त होनेके बाद थियेटर आरंभ हुआ । यह भी और देशोंके थियेटरोंसे भिन्न था । यहाँ दर्शकोंमें काम-भाव जाग्रत करना उद्देश नहीं । सभ्य भाषामें भद्दे मज़ाकोंको यहाँ स्थान नहीं । धनी-वर्गके लिए प्रचार भी इसका उद्देश नहीं । ठीक इन भावोंके विपरीत किसीको ‘ मनुष्योपरि ’ बना कर, या किसी व्यक्ति-विशेषकी वीरताको इस चरम सीमापर पहुँचा कर, दिखलाना कि साधारण मनुष्य अपनेको उसके सामने चींटीसे भी छोटा समझें, आदि बातें भी इस नाटकमें नहीं थीं ।

इस नाटकमें सोवियतका निजका कुछ ही वर्ष पहलेका इतिहास था । सोवियत समाज जिन मंजिलोंसे होकर गुज़र चुका था उसीका चित्र सामने दिखलाया जा रहा था । नाटयकारने लाल सेनाके संगठित होनेका प्रारं

मिक स्वरूप दिखलाया था। सबसे बड़ी विशेषता इस नाटककी यह थी कि इसमें मनुष्यको खयाली मनुष्य नहीं बल्कि हाड़ मांससे बने हुए वास्तविक मनुष्यों जैसा दिखलाया गया था। दर्शकोंको यह बतलाना इसकी उद्देश था कि लक्ष्यका स्पष्ट होना, लक्ष्य प्राप्तिके लिए आवश्यक धुन, और प्रत्येक रुकावटको तोड़ डालनेवाली चरित्रकी दृढ़ता,— ये तीनों ही बातें महान् उद्देश्योंकी पूर्त्तिके लिए आवश्यक होती हैं।

सोवियतके लोगोंने अपने संग्राममें यह भी देख लिया था कि धुन और दृढ़ता एकदम अपनी पूर्णताकी सीमापर नहीं पहुँच जातीं बल्कि उनके विकासकी भी सीढ़ियाँ होती हैं। विकासके ही रास्तेमें उनके अपने सुधारका काम जारी रहता है। जनताका नेतृत्व करनेवाले व्यक्तिविशेष पहलेसे ही नेतृत्वके सब गुणोंसे आभूषित नहीं होते बल्कि मौकोंपर उन गुणोंको वे सीखते हैं और अपने समाज-विशेषके भाग्य-निर्णयकी जिम्मे-वारी भलीभाँति महसूस करते हैं। ऐसे मौकोंपर सिर्फ व्यक्तिगत बहादुरीसे, मनुष्योपरि त्याग-भावना अथवा एक व्यक्तिद्वारा ऊँचेसे ऊँचे आदर्शको कार्य रूपमें परिणत कर देनेसे काम नहीं चलता।

लाल-सेनाके संगठित होनेमें, सामूहिक जागृति, व्यवस्था, एकता आदिके साथ साथ संगठनकर्त्ताकी दृढ़ इच्छाका क्या भाग रहा है, यही विशेषरूपसे मंचपर दिखलाना नाट्यकारका उद्देश था।

४

अस्त्र-शस्त्रोंसे भरी लारियों, आर्टिलरी और टैंकोंकी घड़घड़ाहटके कारण चार बजे ही नींद टूट गई। सड़कका दृश्य ऐसा दिखलाई दिया मानों लड़ाई छिड़नेवाली है और सेनापतिने सेनाको तैयार होकर युद्ध-क्षेत्रके लिए रवाना होनेका हुक्म दे दिया है। लड़ाईके सामानसे सुसज्जित मास्को-का गैरिज़न रेडस्क्वायरकी ओर जा रहा था।

गोर्की रोडपर कतारमें खड़े बहुतसे टैंक दिखलाई दिये। लड़ाईमें उपयोग किये जानेवाले इन विकराल दैत्योंको पहले ही पहल देखा था। और देशोंमें ऐसे हथियारोंके पास साधारण आदमियोंको फटकने भी नहीं दिया जाता पर यहाँ ये सड़कपर खड़े थे और कुछ उत्सुक लोग उन्हें देखनेको भी जुटते जा रहे थे। एक बूढ़ा टैंक कमान्डरको आशीर्वाद देने लगा—"तुम सदा युद्धमें विजयी हो। जर्मन जापानी चाहे जो भी आक्रमण करनेका साहस करे उसे तुम मार भगाओ, यही मेरा अशीर्वाद है।"

वह बूढ़ा १९०५ की लड़ाईमें जापानके विरुद्ध लड़ चुका था पर टैंक जैसी चीजें उसने नहीं देखी थीं इसीलिए उसकी जानकारीके लिए वह टैंक कमांडरकी ओर देख रहा था। कमांडरने उसे टैंकोंका इतिहास सुनाया। महासमरके समय सबसे पहले अँग्रेजोंने इसका व्यवहार किया था। शुरू शुरूमें इसका खूब असर रहा पर तुरत ही जर्मन भी इनका बनाना सीख गये। साथ ही इसकी काट भी जान गये।

इन बातोंके बतलाते बतलाते बहुतसे आदमियोंने टैंक कमांडरको चारों तरफसे घेर लिया था। किसीने भीड़मेंसे ही प्रस्ताव किया—"फैसिस्टोंद्वारा आक्रमण किये जाने पर तो हम युद्ध-नृत्य करेंगे ही अभी हम लोग 'याब्लच्की' नाचें। हारमोनिया बजने लगा। टैंकके बगलमें ही छोटा-सा घेरा बना लोग नाचने लगे। टैंक कमांडरको नाचनेके लिए कहना नहीं पड़ा। दूसरे दो जोड़ोंको थकता हुआ देख वह स्वयं ही बीचमें कूद पड़ा और एकदममें ही तीन पार्टनरोंको मात कर दिया। लोग चिल्ला उठे—"दा ज्द्रास्त्व्युते क्रासनाया आरमिया—'लाल सेना ज़िन्दाबाद।"

५

उस दिनका प्रभात और दिनोंकी अपेक्षा अधिक लाल दीखता था। इसका कारण शायद यह था कि मैं लाल राजधानीके लाल चौकमें

ठीक लेनिनके मोसालियमके पास खड़ा था। जिधरसे सूर्योदय हो रहा था उधर ही तिमंजिलेपर दो दो पुरस ऊँचे अक्षरोंमें लिखा था—
" पहली मई—अन्तरराष्ट्रीय प्रोलेटारियटका लाल क्रान्तिकारी दिवस चिरजीवी हो। "

उसके दोनों किनारोंपर लेनिन और स्तालिनके विशाल चित्र अँके थे और हँसिये हथौड़ेका चिह्न बना था।

नौ बजेसे मास्को गैरिज़नकी पैदल सेनाकी टुकड़ियाँ आने लगीं। थोड़ी ही देरमें उनकी संख्या बीस हजार हो गई। वे लोग अपने अपने स्थानपर खड़े थे। उनके नायक भी अपने अपने स्थानसे हुक्म दे रहे थे।

मेरे बगलमें विदेशी राजदूत, भिन्न भिन्न देशोंके मज़दूर-संघोंके प्रतिनिधि, लाल सेना, कारखाने, कलखोज आदिके प्रतिनिधियोंके लिए स्थान था। यह जगह भी लोगोंसे खचाखच भरने लगी। लेनिन-स्मारकपर सोवियट नेताओंके पहुँचनेपर लोगोंने खड़े हो उनकी अभ्यर्थना की। बहुत देर तक करतल-ध्वनि होती रही।

क्रेमलिनके गुम्बजसे इंटरनैशनलके स्वरमें दस बजनेका घंटा सुनाई दिया। अभी उसकी प्रतिध्वनि मिट भी नहीं पाई थी उसी समय क्रेमलिनके एक फाटकसे लाल सेनाके सबसे बड़े सेनापति मार्शल वाराशिलोव, घुड़सवार सेना-विभागके नायक मार्शल बुदयोनीके साथ घोड़ोंपर निकले। क्रेमलिनके भीतरसे दनादन तोपोंकी आवाज़ आ रही थी। लेनिन-स्मारकके पासके बैंडने इंटरनैशनल बजाना शुरू किया। दूरपर हवाई जहाजोंके उड़नेकी घड़घड़ाहट सुनाई देने लगी। यह पहली मईको सोवियट यूनियनकी ओरसे लाल सेनाद्वारा सलामी दी जा रही थी।

" स्मिर्नो—" गैरिसनके नायकने हुक्म दिया 'दायें घूम।' बीस हजार आदमी एक साथ राइट-टर्न हुए। मालूम पड़ता था जैसे एक आदमीका घूमना हो, आवाज बिलकुल एक थी।

"तवारिश कमांदियर" गैरिसन नायकने फौजी सलामी देते हुए कहा—"मास्को गैरिसन पहली मईकी पैरेडके लिए तैयार है।"

"ज्द्रास्तव्युते तवारिशी"—वाराशिलोवकी आवाज आई। "ज्द्रास्ताव्युते...(नमस्ते)" एक स्वरसे बीस हजार आदमी बोल उठे। लेनिन स्मारकके पास पहुँचनेपर वाराशिलोव और बुदयोनी घोड़ोंकी बागडोर तान खड़े हो गये। सब तरहके समुपस्थित लोगोंको सम्बोधन करते हुए उन्होंने कहा—

"हम सोवियत-निवासियोंको शोषण-प्रणालीके विरुद्ध लड़ाइयोंमें सबसे पहले सफलता मिली है। सारे संसारके बोर्जुआ राष्ट्रोंकी सेनाओंसे घिरे रहनेपर भी हम लोग एक नई दुनिया बसाते आ रहे हैं। यह मनुष्योंके रहने योग्य नई दुनिया हम बहुत कुछ बसा चुके हैं। इसकी नींव अजर अमर हो चुकी है।

"पर अब भी बोर्जुआ राष्ट्र अपनी हरकतोंसे बाज नहीं आते। प्रोलेटारियटके त्योहारके दिन हम उन्हें एलान कर देना चाहते हैं कि हरे भरे सोवियत बागीचेमें अपनी सुअरोंकी नाक घुसेड़नेसे फैसिस्ट राज्य बाज आयें। बीस वर्ष पहले हम उन्हें अच्छा सबक सिखा चुके हैं, वही उनके लिए काफी होना चाहिए। उस समय हम आज जैसे मजबूत नहीं थे, फिर भी विजय हमारी ही हुई। आज सोवियत यूनियनकी हमारी यशस्विनी लाल सेना वह बूता रखती है कि एक जर्मनी जापान और इटली नहीं, इनके जैसे कितनोंका वह अकेले तीन गुने अधिक सशस्त्र हथियारोंके जोरसे और हजार गुनी अधिक बहादुरी दिखलाते हुए सफलतापूर्वक सामना कर सकती है। फैसिस्टोंने हमारी सोवियट क्यारी छूनेकी गुस्ताख़ी की नहीं कि लाल सेना उनके घरोंमें पहुँची रहेगी।

"हम अहिंसावादी नहीं। प्रोलेटारियन मातृभूमिकी रक्षाके लिए, संसारकी प्रोलेटारियटको शोषण और गुलामीकी जंजीरसे मुक्त करनेके लिए हम शत्रुओंके रक्तकी नदियाँ बहा सकते हैं। हमारी यह लड़ाई

अपनी रक्षाके लिए है और इसीलिए मनुष्यताकी दृष्टिसे सबसे अधिक जायज है।

"साथियो, आज इस उत्सवके दिन हम संसारके सब देशोंके प्रोलेटारियाट, सब दलित राष्ट्रोंके पास यह शुभ संदेश भेज देना चाहते हैं कि वे अपनेको खूँख्वार पूँजीवादी शोषण-प्रणालीके विरुद्ध लड़ाईमें अकेला न समझें। उनके बंधन-मुक्त करनेमें उनका सबसे बड़ा साथी, वर्गमें भाईका रिश्ता होनेके कारण सोवियत यूनियन और लाल सेना है।

" आज पीड़ित दलित लोग भी मई दिवस मनाते होंगे। उन्हें बोर्जुओंकी गोलियोंका शिकार होना पड़ता है। पर उनके वैसे ही दिन हमेशा नहीं रहेंगे। यह बात लाल-सेनाकी विशाल शक्तिसे ही स्पष्ट होती जाती है।

" हमारी लाल सेनाकी युद्ध-भेरी वे आज सुन सकेंगे। यह उन्हें स्वातंत्र्य-संग्राममें सबसे अधिक प्रोत्साहित करेगी। परवाह नहीं यदि हम उनसे हजारों मील दूर हैं। वे हमें देख रहे हैं, सुन रहे हैं—वे हमारे साथ हैं, हमें लाल सेनाकी मार्चके समय उनकी आवाज सुनाई देती है। मुझे पूरी उम्मीद है, वे हमारे कंधेसे कंधे मिलाकर युद्ध-क्षेत्रमें उतरेंगे।

" तवारिशी, हमारी लाल सेना अन्तर्राष्ट्रीय प्रोलेटारियाटके प्रति हमेशा वफ़ादार रहेगी, उन्हें शोषणसे छुटकारा दिलानेमें हमेशा मदद पहुँचायगी। यही हमारे सोवियत यूनियनकी प्रतिज्ञा है।

" भाइयो ! मजदूरोंका यह उत्सव, दलित-वर्गकी एकताका यह क्रान्तिकारी दिवस...यह पहली मई चिरजीवी हो !..."

लाल सेनाका बैंड जोरोंसे इंटरनैशनल बजाने लगा। उसीकी तालपर इन्फैंट्री मार्च करने लगी। आकाशमें चार सौ वायुयान एक साथ उतर आये थे। रेड स्क्वायरपर बहुत नीचे उतर आ अपनी सलामी बजा वे फिर ऊँचे चले गये और आकाशमें वहाँ रूसी अक्षरोंमें लिखा—'एस, एस, एस, आर' (सोयूज सोवियेत्सकीख़ सोचिआलिस्तिचस्कीख रेस्पू-

विलकीख—जिसे संक्षेपमें सोवियत यूनियन कहते हैं)।

सात मछलियोंके आकारके हवाई जहाज जो लेनिन स्केड्रनके नामसे प्रख्यात थे रेड स्क्वायरपर चक्कर लगाने लगे। ऊपर उनकी मोटरोंकी आवाज़, हवामें इंटर नैशनलकी गूँज और जमीनपर इन्फैटरीकी तालपर मार्च करनेकी आवाज़। लालसेनाका पैरेड आरंभ हुआ।

६

'सागम...मार्श...' गठीले बदनवाले इन्फैटरी (पैदल सेना) कमांडरने हुक्म दिया। थोड़ा आगे जानेपर कहा—'प्रयामो' (सीधे)।

लाल सेनाकी इन्फैन्टरी मार्च कर रही थी। फौलादकी तरह सख्त और धीर भावसे उनके पाँव पड़ रहे थे। धरती काँप रही थी। उनमेंसे कितनोंने ही जर्मन, जापान तथा अन्य राष्ट्रोंके साथकी गृह-युद्धके समयकी लड़ाईमें भाग लिया होगा। चूड़ झील, नीवा तट, कुलीकोवो और लिवोनियाकी लड़ाईकी स्मृति अब भी उनके अन्दर जाग्रत होगी। कितने वोल्गा और द्निपर-तट, कितने उराल और साइबेरियामें अपनी बहादुरीकी स्मृति छोड़ आये होंगे, मास्को और पेट्रोग्राडके संरक्षक रहे होंगे।

यह ऐतिहासिक इन्फैन्टरी थी। इनके पूर्वजोंने सदियों पहले स्वयं अपने तथा दूसरोंको आज़ाद करनेके लिए आवाज़ उठाई थी, वे फाँसी और गोलियोंके शिकार होते रहनेपर भी अपने दृढ़ निश्चयसे कभी नहीं डिगे। इनमें कितने स्तेंका राजिन और पुगाचेवके वंशज होंगे; जारके खिलाफ आवाज़ उठानेवाले दिसंबर-वादियोंकी औलाद होंगे। उतने दिनोंसे ये असफल हुए थे; अक्टूबरकी क्रान्तिने इन्हें महान् विजेता बनाया। आज वे अपने सीनेके ही समान संगीन तान कर अपनी दृढ़ता एवं अपने पूर्वजोंके समान आज भी लड़नेवालोंके प्रति अपनी एकता जतला रहे थे।

इनके बाद घुड़सवार सेनाकी बारी आई। आगे आगे उनकी कंपनियोंके सेनापति नंगी तलवार भाँजते चल रहे थे और उनके पीछे पीछे

उनकी फौज उसी इशारेपर कतारमें आ रही थी। घोड़े भी उन्हीं तलवारोंके इशारेपर चाल चलना सीख गये थे। मनुष्योंके ही समान उनकी टाप एक साथ और कदम भी मिले हुए-से बढ़ते दीखते थे। आज उन जानवरोंको देखकर भी कोई नहीं कह सकता था कि उनके भीतर अदम्य उत्साह नहीं भरा है।

तलवार ऊँची कर घुड़सवार सैनिक ट्रिब्यूनके सामनेसे होकर गुजरते और उनके सेनापति मार्शल वाराशिलोवने जिस सोवियत प्रतिज्ञाका जिक्र किया था उसका वे पूरा पूरा समर्थन करते। यह उनकी तथा उनके घोड़ोंकी प्रत्येक गतिसे स्पष्ट हो रहा था। घुड़सवार सेनाके प्रधान नायक उनकी कुशलताके लिए बार बार 'हुर्रा' कह कर बधाई दिया करते।

अब मेशिनगन, मोटर साइकिल, आरमर्डकार, आर्टिलरी और टैंकोंकी क्रमशः बारी आई। इन अस्त्र-शस्त्रोंमें लाल सेनाकी तरक्की देखने ही योग्य थी। वर्त्तमान युद्ध-प्रणालीमें आवश्यक इन हथियारोंमें शायद ही संसारका ऐसा कोई हथियार रहा होगा जो उस दिन रेड स्क्वाय-रसे होकर न गुजरा हो। फिर भी यह केवल मास्को गेरिजनकी पैरेड थी। ठीक उसी ढंगकी पैरेड सोवियत यूनियनके प्रत्येक शहरमें उसी घंटेमें साथ साथ चल रही थी। शायद गाँव भी उससे बाकी नहीं बचे होंगे। बड़े बड़े शहरोंकी पैरेडकी सूचना रेडियोद्वारा मिलती जा रही थी।

विदेशी राजदूत लाल सेनाकी यह शक्ति देख दाँतों उँगली दबाने लगे थे। युद्धके लिए आगे आनेवाले राष्ट्रोंके लिए यह बहुत बड़े भयका कारण और शान्ति चाहनेवालोंके लिए बहुत हिम्मत बँधानेवाला बन रहा था। यही संसारके प्रोलेटारियन और दलित वर्गकी सहायक, सोवियत मातृभूमिकी रक्षा शस्त्रोंद्वारा करनेके लिए हमेशा तैयार रहने-वाली लाल सेना थी। एक घंटेके पैरेडमें ही उसकी कुशलता, महती शक्ति और तैयारीका पूरा पूरा सबूत मिल जाता था।

इस लाल सेनाके पीछे पीछे चलनेवाले सोवियत यूनियनके सब

नागरिक थे। उनका एक पूरा समुद्र ही उमड़ता हुआ रेडस्क्वायरसे गुजरने लगा। इनमें पार्टिजान, कारखानोंमें काम करनेवाले, स्कूलोंमें पढ़नेवाले, कलखोजनिक, राजकीय मुहकमोंमें काम करनेवाले सब श्रेणीके लोग थे। चारों तरफ लाल ही लाल दीखता था। अपने अपने विजयके नारे उन्होंने लाल कपड़ोंपर लिख रखे थे और उन्हें साथ लेते जा रहे थे। यह था लाल राजधानीके लोगोंका जुलूस। युद्ध-विद्यामें ये लाल सेनाके समान प्रवीण नहीं थे फिर भी उनके पाँव अनाड़ियोंकी तरह नहीं बल्कि सैनिकों जैसे उठ रहे थे। एक ध्येय, एक विचार, एक लगनसे प्रेरित हो नई दुनिया बसानेवालोंका बड़ा ही विशाल, समुद्र उमड़ता हुआ आ रहा था।

"दा ज्द्रास्तव्युते पेरवोवो माया—तवारिशी" (पहली मई ज़िन्दाबाद—साथियो) स्तालिनने अपनी ताक़त-भर चिल्लाकर उनकी अभ्यर्थना की।

"हुर्रा! दा ज्द्रास्तव्युते पेरवोवो माया! हुर्रा—" सारा समुद्र गरज उठा।

"दा ज्द्रास्तव्युते मिरोवई रिवोल्यूचिया—तवारिशी..." (संसार-व्यापी क्रान्ति ज़िन्दाबाद) वाराशिलोवने सेनापतिकी स्वाभाविक आवाजमें कहा—"हुर्रा! दा ज्द्रास्तव्यूते मिरोवोई रिवोल्यूचिया...हुर्रा हुर्रा..." गर्जना घंटों जारी रही। सोवियत-निवासियोंके इस समुद्रका कहीं अन्त होता नहीं दिखलाई देता था।

सारा सोवियत यूनियन ही मार्च कर रहा था। शोषण-प्रणालीके साथ साथ आनेवाली असंख्य तरहकी गुलामी, आतंक आदिकी गन्दगी जिसने मनुष्यतापर सदियोंसे कलंकके धब्बे लगा रखे थे उन्हें धो डालनेके लिए यह पिघले हुए फौलादका समुद्र उमड़ता आ रहा था।

उसकी उस दिनकी गर्जना वास्तवमें ही सारे संसारको सुनाई पड़ती होगी।

लेनिनग्राद

१

मास्कोसे 'क्रासनाया स्त्रेला' (लाल तीर) साढ़े ग्यारह बजे रातको छूटती थी। सारे सोवियत-यूनियनमें सबसे अधिक आरामदेह और तेज चलनेवाली यही एक्सप्रेस मास्को और लेनिनग्रादके बीच दौड़ा करती है। जिस समय मैं उसपर सवार हुआ अभी संध्या हुई-सी ही मालूम पड़ती थी। 'लाल तीर' उत्तर-पश्चिम दिशामें छूटी जा रही थी।

मास्कोकी बिजलीबात्तियोंके ओट होते ही प्रभात हो गया-सा दिखलाई देने लगा। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। खिड़कीसे मुँह बाहर निकाल कर देखा—चाँदनी रातसे भी अधिक प्रकाश। पर चाँदका पता नहीं। आकाशमें बहुत कम तारे टिमटिमा रहे थे। इतने कम तारोंको देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

दूसरे दिन तड़के लेनिनग्राद जा पहुँचा।

२

लेनिनग्रादमें गरमीके इन खास दिनोंमें अँधेरा होता ही नहीं। सड़कके किनोर बिजली नहीं जलाई जाती। आधी रातके समय भी इतना उजेला रहता है कि लोग आसानीसे बिना बत्तीके ही सड़कपर अखबार पढ़ सकते हैं। रात इस प्रकारकी रहनेके कारण प्रभातमें लोगोंको कोई खास विशेषता नहीं दिखलाई देती। अंधकारके दूर हो जानेपर एक प्रकारका

अज्ञात आश्चर्य जो सुबहमें जगनेवालोंको हुआ करता है वह इन दिनों लेनिनग्रादवालोंको नहीं होता। इन दिनों लोग रात-भर टहलते रहते हैं और सुबहके वक्त बिस्तरेपर लेटते हैं।

मैं नेव्स्की प्रोस्पेक्टसे गुजर रहा था। इसका नाम क्रान्तिके बाद '२८ वीं अक्टूबरकी सड़क' पड़ गया है। लेनिनग्रादकी यही सड़क मास्कोकी ट्रेनसे उतरनेपर सबसे पहले मिलती है। मैं सीधे उत्तरकी ओर चला। लेनिनग्रादकी सब सड़कें बिल्कुल सीधी गई हैं और मकान भी तरतीबसे बनाये गये हैं। शहरके सर्व प्रथम बसानेवाले पीटर महान्में सैनिक गुणके साथ साथ कला समझनेके भी गुण थे यह परिचय इस शहरकी प्रत्येक सड़कसे मिल जाया करता है।

नेव्स्की प्रोस्पेक्ट नीवा नदीके तटपर जाकर समाप्त हुआ। उसके एक किनारे ज़ारका शीतमहल था। आज कल वह अजायबघर है। सरसरी दृष्टिसे उसे झाँकता नीवाका पुल पार कर दूसरी ओर गया। उस भागको लोग वासिलियोवका टापू कहते हैं। वहीं नाबेरेजनी (नदी किनारे) सड़क पर मेरे एक मित्र रहते थे। मैं वहीं टिका।

खिड़कीसे बाहर झाँककर देखा। यहाँसे लेनिनग्राद शहरके तीनों ही विभाग दिखाई देते थे। पेत्रोग्रादके हिस्सेकी ओर नदीमें एक टापूपर 'पिटर और पॉलका दुर्ग' था। इस दुर्गका इतिहास बहुत पहलेसे ही सुन चुका था। जारशाहीके जमानेमें भयानक समझे जानेवाले कैदी यहीं बंद कर रखे जाते थे और उन्हें तरह तरहकी यंत्रणायें दी जाती थीं। रूसी क्रान्तिकारियोंद्वारा लिखे गये इस दुर्गके बहुत-से वर्णन पढ़ चुका था। आज कल यह भी अजायबघर और टकसालका काम देता है।

हमारे ठीक सामने घोड़ेपर सवार पिटर महान्की मूर्ति थी। उसके पीछेसे लेनिनग्रादके सबसे बड़े और सुन्दर गिरजाघर ईसाकके बड़े बड़े आलीशान खम्भे झाँक रहे थे। घोड़ेपर सवार पिटर महान्की मूर्ति कलाकी दृष्टिसे भी अद्वितीय समझी जाती है।

इस मूर्तिके विषयमें लिखी गई पुश्किनकी कवितायें याद आने लगीं। इसीके सामने दिसंबर-वादियोंने सबसे पहला विद्रोह ज़ारशाहीके विरुद्ध किया था। वे परास्त हुए थे और उसी स्थानपर गोलीसे उड़ा दिये गये थे। वह क्रान्तिकारी भूमि आज भी वर्तमान है। उस जगहसे टहलनेवालोंकी जमात गुजर रही थी। शायद यह भी रात-भर टहलकर लौटनेवालोंका एक जत्था था। इनके पिता प्रपितामहने क्रान्ति इसी लिए की थी कि ये आनन्दके साथ जीवन व्यतीत कर सकें—उनके टहलनेमें कोई बाधा नहीं पहुँचा सके और जो स्थान सिर्फ़ धनी लोगोंके लिए थे, जो मकान स्वयं ज़ारके रहनेके लिए थे उन सबपर सिर्फ़ उस समयके रूसकी राजधानी पिटर्सबुर्गके ही नहीं बल्कि सारे रूसके ही प्रोलेटारियाटका आधिपत्य हो।

पिटरकी मूर्तिके आगे 'दिसंबर-वादियोंके चौराहे' पर दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट हो रहा था कि क्रान्तिकारियोंके खूनका एक क़तरा भी बेकार नहीं जाया करता। पुराना पिटर्सबुर्ग क्रान्तिके युगमें लेनिनग्राद बन गया है।

मैंने मन ही मन इसे नमस्कार किया।

३

उस दिन मेरा जहाज खुलनेवाला था। जहाजघाट जानेके लिए मोटर दरवाजे पर आ लगी थी। उसपर सामान भी लादा जा चुका था। मैं उसपर बैठने जा रहा था। ड्राइवरके कान चौराहेपर लगे रेडियोकी ओर लगे थे। मैंने कई बार उसे पुकारा पर उसने मुझे थोड़ा रुकनेका इशारा किया। कोई दिलचस्प ख़बर होगी समझ कर मैं भी उस ओर बढ़ा।

रेडियोद्वारा सोवियत वैज्ञानिकोंकी ध्रुव-यात्राका समाचार दिया जा रहा था। उसी सिलसिलेमें रेडियोसे आवाज़ आ रही थी—

"हमारे प्रोफेसर फ्रांचयोजेफ़लैंड (उत्तरी ध्रुवके निकटका टापू) में

हवाकी तेजीकी रफ्तार अपने एक विशेष तरीकेसे जाँचना चाहते थे। इसकी उन्हें गैसके आविष्कारके लिए आवश्यकता थी। हठात् मौसिम पलट गया। ध्रुवके इलाकेमें बड़ा तेज झकोरा आया। बड़े बड़े बर्फ़के ढोंके लुढ़क चले। जहाज लंगर गिराकर मोटी जंजीरसे किनारे बाँध दिया गया। फिर भी इसपरके आदमी झूला झूल रहे थे। किसीके जहाजसे उतरनेकी तो बात ही दूर रही बाहर झाँकने तककी हिम्मत नहीं हो रही थी।

"प्रोफेसर सिदारेंको (मैं चौंक पड़ा) के मुँहपर हँसी थी। शायद वे ऐसे ही मौकेकी ताकमें थे। उन्होंने जो यंत्र थोड़ी दूरपर लगा रखे थे उनकी जाँचके लिए जानेका सबसे उपयुक्त वही समय समझा। लोगोंके मना करने पर भी वे नहीं रुके। अपना यंत्र उन्हें ठीक काम करता दिखाई दिया। पर लौटते समय झकोरेके सामने और अधिक टिकनेकी शक्ति उनमें नहीं रह गई। वे एक तरफ लुढ़क गये। बड़ी देरतक लुढ़कते रहे। जहाजके चार खलासी उन्हें बड़ी मुश्किलसे उठा लाये। प्रोफेसर थोड़ी देर बाद ही होशमें आये। उन्होंने अपने यंत्रमें जो कुछ देखा था उसका बयान कागज़पर लिखा। अब भी उनके सरमें पत्थरोंके चोट लगनेके कारण असह्य वेदना थी। वे मूर्छित हो गये। उनकी हालत कई दिनोंतक खराब रही पर अब जहाज सकुशल लौटा आ रहा है। उनकी हालत भी सुधरती जा रही है।"

४

वैज्ञानिकोंके विषयमें जहाजपरके पार्टी-सेक्रेटरीका व्याख्यान रेडियोद्वारा सुनाया जाने लगा—

"हमारी इस यात्रामें प्रोफेसर सिदारेंकोका प्रयत्न सबसे अधिक सफल रहा। जो सामग्री उन्होंने जुटाई है वह विज्ञानमें कायापलट करनेवाली है और उसीके आधारपर मनुष्यका जीवन भी बदल जाए तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं।

"मनुष्य चाहे जहाँ भी, जिस परिस्थितिमें भी मनुष्यके उत्थानके लिए कुछ करना चाहता है उसके रास्तेमें बाधायें आती हैं—मनुष्यका कर्तव्य है उन बाधाओंसे लड़ते जाना—इसी कामके लिए हमें मनुष्य-जीवन दिया गया है।

"प्रोफेसर सिदोरेंकोने यह जीवन सफल बनाया।"

सड़कपर इकट्ठे लोगोंने उनकी जयजयकार मनाई। मेरे ड्राइवरने भी मोटर स्टार्ट की। इस बार उसे मोटर साइकिलपर आये तार पहुँचानेवाले डाकियेने रोका। उसने मेरे हाथमें एक रेडियोग्राम दिया। मैंने उसे नीचेसे पढ़ा। लिखा था—

'बेला।'

मैं चौंक उठा।

सफ़ेद रात्रिका संगीत

१

" उत्तरी ध्रुवसे स्नेहालिंगन—बेला । "

' मालेगिन ' जहाजसे भेजे गये रेडियोग्राममें ये ही शब्द लिखे थे। बेला प्रोफेसर सिदोरेंकोकी सेक्रेटरीकी हैसियतसे गई थी। कीव छोड़नेके बाद उससे बहुत कम ही चिट्ठी-पत्री हुई थी क्यों कि हम दोनों ही यह विचार रखते थे कि चिट्ठियाँ सिर्फ़ किसी खास कामके लिए ही लिखी जानी चाहिए।

अब वह ध्रुव-विजय कर लौट रही थी। उसे देखनेकी दबी हुई और बहुत बार जबर्दस्ती दबा कर रखी गई उत्सुकता एकबएक जाग्रत हो उठी।

उसकी अगवानीके लिए उसी दिन आर्खान्गेल्स्कके लिए प्रस्थान किया।

२

रेलके डब्बेमें सिर्फ़ दो ही आदमियोंके लिए नरम और साफ़ बिस्तरे लगे थे। मैंने ऊपरका बर्थ दखल किया। मेरे नीचे कोई बेला बजानेवाले सज्जन थे क्यों कि संगीतज्ञोंके चेहरे तथा हाव-भावके साथ ही साथ जब उन्होंने उस डब्बेमें प्रवेश किया था उनके हाथमें एक वायोलिन झूलता हुआ मैंने देखा था।

डब्बेके बरामदेमें रेडियो लगा था। अभी अभी उसमें क्रेमलिनके घण्टेसे ' इंटरनैशनल 'के स्वरमें बारह बजनेकी आवाज आई थी। यही सोवियत रेडियो स्टेशनोंके प्रत्येक दिनके प्रोग्राम समाप्त करनेका चिह्न है। रेडियो बंद हुआ। मैं सोनेकी तैयारी करने लगा।

नीचेके बर्थपर बैठे संगीतज्ञ अब भी कुछ गुनगुना रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा—" यदि मैं थोड़ी देर वायोलिन बजाऊँ तो इसमें आपको आपत्ति तो न होगी ? "

" जी नहीं ! आप शौकसे बजायें " मैंने उपरले बर्थपर चढ़ते चढ़ते कहा—" अफ़सोस इतना रहेगा कि मैं संगीतका पारखी नहीं। "

" ऐसा क्यों ? "

" पहली बात तो यह है कि संगीत मेरी समझमें ही नहीं आता और दूसरी बात है कि मुझे नींद आ रही है। "

उस दिन शामको मिला रेडियोग्राम मेरी आँखोंके सामने नाच रहा था और मैं उसीको अपने दिमागमें यथार्थ बनाकर देखना चाहता था।

३

आगेका स्वर कुछ अस्पष्ट पर अंतमें—

" नि–ध–ध–प–म–ग–रे–सा..." के जैसा।

यह क्या ? यह संगीत तो मैं जानता हूँ। इसे कहीं सुना है। पर उसके आगेकी गत ? बिल्कुल नवीन ! कहीं सुनी नहीं। कहीं सुनी नहीं तो फिर ऐसा चौंक क्यों उठता हूँ ? अवश्य सुनी होगा।

यह तो उत्तरी देशोंका संगीत नहीं। इसमें पूर्वकी उष्णता और लोगोंके हृदयकी गरम आह है। क्या इटलीके किसी ओपेरेमें सुना है ? संभव है गुनो वा वेर्डीकी कीर्ति हो। नहीं, बिल्कुल ग़लत। उसके आगेकी मेलोडी तो इस प्रकारकी नहीं थी।

तब शायद हांडेल, बाख वा बेटहोवेनका स्वर होगा। पर उनके स्टाइलमें तो फिर भी थोड़ा फैशन रह जाता है—यह सादी सीधी मेलोडी तो जर्मन लोगोंकी नहीं हो सकती। यह तो कभी बाज़ारमें बिकते नहीं देखी गई।

यह और भी अधिक उत्तर पूर्वकी होगी। रूसकी। संभव है चाइकोव्स्की गा रहे हैं—'हे सुन्दर निष्ठुर अतीत...'

अतीत। पर इसमें तो और भी एक प्रकारकी झंकार है। फिर भूल। आज क्या मेरा माथा खराब हो गया है? उत्तरकी ओर जाओ। उत्तर और उत्तर! ध्रुव तक पहुँचो।

ठीक कहा। ध्रुवसे ही तो यह सुर आ रहा है। कौन गा रहा है? 'सादको'।

मैं स्वप्न देख रहा था। अपनेको उत्तरी ध्रुवके समुद्री क्षेत्रमें विचरण करनेवाला राजकुमार 'सादको' बना हुआ देख रहा था। वहींपर तो समुद्रमें विहार करनेवाली सफ़ेद रंगकी देव-बाला रहा करती है। वह कितनी सुन्दर है! उसके यहाँ रात्रि कभी होती ही नहीं। काले रंगकी कोई चीज़ कभी दिखाई ही नहीं देती। सब चीजें स्नोकी-सी सफ़ेद हैं।

स्वर आगे सुनाई दे रहा था।

यह उस देव-बालाकी झंकार थी।

झंकार! झंकार! झंकार!

वह मेरे बिल्कुल निकट आ गई। उसके हाथोंमें वरमाला है। वह आलिंगन करने आ रही है। मेरी ही ओर तो आ रही है। मैं ही तो 'सादको' हूँ।

नहीं, नहीं! स्वप्नमें सब बातें ही उल्टी पल्टी दीखती हैं। मैं तो 'साश्का' हूँ। बेलाका 'साश्का।' पर वह देव-कन्या कौन?

फिर स्वप्नकी भूल।

४

" तैयार हो जाओ ! तैयार हो जाओ ! तैयार हो जाओ ! "

यह क्या ? यह तो रेल चलनेकी आवाज़ है । वह सुर कहाँ ? झंकार कहाँ ? और देव-कन्या ? लोप हो गई ।

" तैयार हो जाओ ! तैयार हो जाओ ! " रेल । सब लुप्त हुआ । अंधकार हो गया ।

" तैयार होइए। " नीचेके बर्थपरके संगीतज्ञ मुझे जगा रहे थे। मेरी नींद टूट गई ।

" आपकी तो बड़ी ज़बर्दस्त नींद है ! " उन्होंने कहा—" अब आर्खांगेल्स्क आया । उठिए । तैयार होइए । "

" आप क्या वायोलिन बजा रहे थे ? " मैंने बर्थसे नीचे कूद उनसे पूछा ।

" जी हाँ । " सहमते हुए उन्होंने पूछा—" क्या आपकी नींदमें कुछ खलल पहुँचा ? "

" जी नहीं । ठीक उल्टा । "

वे मुसकराये ।

" आप बजा क्या रहे थे ? "

" चाइकोव्स्कीकी एक सिम्फोनी । "

मैं चुप रहा । उन्होंने समझा शायद मुझे उनका बजाना अच्छा नहीं लगा । वे माफी माँगने लगे—" इसे मैं बहुत कुछ अपने ढंगपर बजाता हूँ । "

" इस सुरका नाम क्या दिया है ? "

" सफ़ेद रात्रिका संगीत "

५

जहाजकी एक केबिनपर लिखा था 'प्रोफेसर सिदोरेंको'। बिना खटखटाये ही मैंने उसे खोल दिया।

वह प्रोफेसरके सिरहाने बैठी उनके सरपर बर्फ़का थैला रख रही थी। मुझे देखते ही उसने अपने हाथ आगे बढ़ा मुझे अपनी ओर चुपचाप खींच लिया।

प्रोफेसर दाँत कटकटाते हुए कह रहे थे—“मैं चला था गैससे लोगोंको बचाने लेकिन उससे भी भयानक गैससे उन्हें मार डाला। मैंने यह आदमीयतका काम नहीं किया......” वे डेलिरियमकी हालतमें आगे कहते गये—“कहाँ सफल हुआ? मेरा सारा प्रयत्न ही असफल हुआ। मज़दूरोंका उतना रक्त उनकी कमाईके रूपमें मुझे मिला—मैंने उससे इंस्टिच्यूट बनाया—लेकिन आदमी मारनेके लिए...असफल...”

वे बड़ी देर तक ये बातें बकते रहे। जिन भावोंको आजतक उन्होंने किसीके सामने व्यक्त नहीं किया था वे ही इस समय फटकर बाहर निकल रहे थे।

बड़ी देर बाद उन्हें होश आया। उठा कर वे डेकपर लाये गये। सामने सोवियत जनता खड़ी थी। उन्हें शायद इस समय पूरा पूरा होश आ गया था। माइक्रोफोन अपने सामने खींचते हुए उन्होंने कुछ कहना चाहा पर—'तवारिशी...' कह कर ही चुप हो रहे। डाक्टरोंने उन्हें बोलनेसे मना किया। सामने खड़े लोग जोरोंसे तालियाँ पीट उनके नामका जयजयकार कर रहे थे। प्रोफेसरने इशारेसे मना किया और धीरेसे कहा—“मेरा गैसका प्रयोग अभी सफल नहीं हुआ।”

“आपकी सफलता असफलता सबमें सारा सोवियत-यूनियन आपके साथ है।” सामने खड़े लोग एक स्वरसे चिल्ला उठे।

उनकी आँखें सजल हो आईं। उनके मनमें चलते हुए विचारोंका पता लगाना कठिन था पर चेहरा चमकता जा रहा था। मालूम पड़ा जैसे बहुत दिनोंसे वे जो प्रयोग करते आ रहे थे और अंतमें जिसकी सफलताकी आशासे हाथ धो हताश हो बैठ रहना चाहते थे ठीक उसी समय उनका प्रयोग सफल हो गया है।

६

डाक्टरोंकी रायके मुताबिक और वैज्ञानिकोंके विदा हो जानेपर भी प्रोफेसर सिदोरेंको जहाजपर ही रहे। पूरी तरह चंगा होनेमें उन्हें अधिक समय नहीं लगा। उन्होंने अपना आगेका कार्यक्रम तय कर लिया। वे इस बार 'नोवा जेमलिया'में अपना यंत्र लगाना चाहते थे और वहीं उन्हें अपने प्रयोगके सफल होनेकी पूरी उम्मीद थी।

उन्होंने बेलाकी ओर देखा। उसका चेहरा कहता हुआ दिखलाई दिया—

"मुझे हिचक नहीं।"

७

सूर्यने अभी अभी समुद्रमें डुबकी लगाई और तुरत ही वह फिर बाहर निकल ऊँचा चढ़ने लगा। वैसे पता लगाना कठिन था पर घड़ी देखनेपर पता लगा—आधी रातका वक्त रहा होगा। सूर्य आकाशके एक किनारे सफेद बादलोंसे लुका-छिपी खेल रहा था।

जहाजकी सीढ़ी हटाई जाने लगी। मुझे याद आया—'मैं तो उससे विदा लेने आया हूँ।'

मैंने उसकी समुद्र-जलके समान साफ़ नीली आँखोंमें देखा।

"अरे! तुम्हें मिलने भी नहीं आता!" कहते हुए प्रोफेसरने हम दोनोंका आलिंगन कराया।

धक् धक् ! धक् धक् !

परिचित हृदय-स्पंदन। प्रत्यक्षमें ही स्वप्नकी देव-बालाकी झंकार। वही निराला सुर, ताल, गत। 'सफ़ेद रात्रिके संगीत' से भी मधुर। सारे ब्रह्माण्डका केन्द्रीभूत सुख। जवानीका सुन्दरतम अनुभव।

और भी धक् धक्।

पर क्षणिक।

जहाज खुला। मैं कूद कर जेटीपर आ गया। भारसे लदा जहाज धीरे धीरे आगे बढ़ा। मैं उसके साथ साथ चला। उसने हाथ आगे बढ़ाया। वह मेरे पास तक नहीं पहुँच सका। मैं तेजीसे चलने और उसके बाद ही दौड़ने लगा। जेटीके छोरपर जा पहुँचा।

आगे समुद्र ही समुद्र।

वह आँखोंके ओट हो गई।

कुछ देरमें जहाज भी आँखोंके ओझल हो गया।

समाप्त